The Gunjan

(Multi Disciplinary Quarterly International Refered/Peer Reviewed Research Journal)

PATRON

Shri Manvendra Swaroop, En. Gaurvendra Swaroop

Secretary - Dayanand Shikshan Sansthan, Kanpur

Dr. A.K. Dixit (Principal-D.A.V. College, Kanpur) **Dr. Anoop Kr. Singh** (Principal-P.P.N. College, Kanpur)

Editor-in-Chief

Dr. Vidya Verma

Principal, Government Degree College, Sumerpur-210502 Hamirpur (U.P.)

Editor

Dr. Seema Mishra

Asst. Prof., Dept. of B. Ed., Dr. V. S. I. P. S., Kidwai Nagar, Kanpur (U.P.)

Peer-Reviewed Board (International)

◆**Dr. Ram Babu Gautam,** New Jersi 220, Wheeler Street, Clifsite Park, New Jersi-07010 (America), ◆**Dr. Sirish Kumar Pandey,** Ul Litawashka 37, 51-354, Ursaw, Poland, ◆**Dr. Alok Agarwal** Chinmay Degree College, Ranipur, Haridwar (U.K.) ◆ **Dr. Filip Rodriguez-e-Melo** S. S. Ambiye Government College of Arts & Commerce, Virnoda, Pernem, Gova ◆**Dr. S. K. Batra** S. M. J. N. (P.G.) College, Haridwar (U.K.) ◆**Prof. Anil Kr. Mishra** D.B.S. College, Kanpur, ◆**Dr. Manoj Kr. Garg** D.N. (P.G.) College, Fatehgarh, ◆**Dr. Chandra Dev Yadav** B.V. (P.G.) College, Farukhabad,◆**Dr. Vinod Mohan Mishra** Buddh (P.G.) College, Kushi Nagar, ◆ **Prof. B. C. Kaushik** V. S. S. D. College, Kanpur, ◆**Dr. Suman** S. N. Sen Balika (P.G.) College, Kanpur,◆ **Dr. M. H. Siddiqi** Halim Muslim (P.G.) College, Kanpur ◆ **Dr. Mahendra Singh** K.K. Mahadyalaya Etawah ◆ **Dr. Geeta Asthana** Jwala Devi Vidya Mandir (P.G.) College, Kanpur ◆**Dr. Ritambhra** A.N.D. College, Kanpur, ◆ **Dr. R. P. Chaturvedi** R.S.G.M. (PG) College, Pukharayan, ◆ **Dr. Ratna Gupta** D. W. T. Centre, Kanpur, ◆ **Dr. S. C. Mishra** B.R.D. (P.G.) College, Devriya ◆ **Dr. Alok Kr. Singh** T. D. (P.G.) College, Jounpur. ◆ **Dr. Pradep Kr. Gupta** D.S.N. (P.G.) College, Unnao.

Peer-Review Board

Hindi-

Dr. R.B. Vanishree Govt. (P.G.) College, Pakala (AP)
Dr. Arti Dubey L.Y.D.C. Kaimganj, Farrukhabad
Dr. Rakhi Upadhyay D. A. V. (P. G.) College, Dehradoon (Uttarakhand)
Dr. Amar N. Tiwari B.V. (P.G.) College, Farukhabad
Dr. Sofia Rajan Govt. Arts & Science College, Tanur, Kerla State
Dr. Jitendra Kr. R.S.G.M. (P.G.) College, Pukhrayan

English-

Dr. Shobhna Srivastava B.L.V.Mahavidyalay, Sarsaul, Maharajpur-Kanpur
Dr. Neeta Kulshestra S.V. (P.G.) College, Aligarh
Dr. Savita Gupta R.S.G.M. (P.G.) College, Pukhrayan, Kanpur
Dr. C. P. Singh D.B.S. College, Kanpur
Dr. Indu Mishra M.M.V. Kidwai Nagar, Kanpur

Sanskrit-

Dr. Preeti Vadhwani T. D. (P. G.) College, Auriya
Dr. Shobha Mishra V.S.S.D. College, Kanpur
Dr. Archna Pandey B. V. (P.G.) College, Farukhabad
Dr. Archna Srivastav M. M. Vidyalaya, Kanpur
Dr. Megha Sharma J.D.B. (P. G.) College, Kota

Education-

Dr. Swati Singh D.G.P.G. College,Kanpur
Dr. Reena Chandra D.A.V. College, Dehradoon
Dr. Veenu Anand D. G. (P. G.) College, Kanpur
Dr. Pragya Srivastava M.M.V. (P.G.) College, Kanpur

Political Science-

Dr. Brajesh S. Sonker K.K.(P.G.) College, Etawah Barabanki (U.P.)
Dr. Pappi Mishra D.G. (P. G.) College, Kanpur
Dr. Neeraja Choudhary D.A.V. (P.G.) College, Dehradoon (Uttarakhand)
Dr. Anamika Verma Mahila Mahavidyalaya, Kanpur

Dr. Pratima Gangwar J.D.V.M. Girls (P.G.) Collge, Kanpur
Dr. Shiv Narain Yadav R.S.G.M. (P.G.) College, Pukharayan, Kanpur
Dr. Sachin Jaiswal V.S.S,D. College, Kanpur

Sociology-

Dr. Mridula Sharma D.A.V. (P.G.) College, Dehradun
Dr. Shailendra Kr. Singh B.V. (P.G.) College, Fkd.
Dr. Nishi Prakash S. N. Sen (P.G.) College, Kanpur
Dr. Anshuman Upadhyay R.S.G.M. (P.G.) College, Pukharayan, Kanpur
Dr. Satyam Dwivedi D.A.V. (P.G,) College, Ddn (UK)

Economics-

Dr. Vandana Dwivedi P. P. N. College, Kanpur
Dr. Anju Srivastava M.M.V. P.G. College, Kanpur
Dr. Parwat Singh R.S.G.M. (P.G.) College, Pukharayan, Kanpur
Dr. Manju Lata Dwivedi V.S.S.D. College, Kanpur
(Smt.) Tanu Varshney S.V.P.G.College, Aligarh

Phychology-

Dr. Surbhi Mishra Juhari Devi P.G. College, Kanpur
Dr. Renuka Joshi D.A. V. College, D. Doon (U.K.)
Dr. Pratibha Srivastava M.M.V. College, Kanpur

Math-

Dr. P. K. Tripathi D. A.V. College, Kanpur (U.P.)
Dr. A. K. Singh V. S. S. D. College, Kanpur (U.P.)
Dr. A.K. Srivastava D. B.S. College, Kanpur (U.P.)

History-

Dr. Mamta Gangwar M. M. V. P.G. College, Kanpur
Dr. Sanjay Mahashwari S.M.J.N. (PG) College, Haridwar (U.K.)
Dr. Arvind Kr. Tripathi D.S.N. College, Unnao
Dr. Shalini Gangwar J.D.G. (P.G.) Collge, Kanpur
Smt. Suman Shukla Govt. M. M. V. Kannouj

Drawing & Painting-

Dr. Vandana Sharma M. M. V., Kanpur
Dr. Jyoti Agnihotri Juhari Davi PG Colge, Kanpur
Dr. Achal Arvind Maa Bharti (P.G.) College Kota, Rajasthan
Dr. Sarika Bala A. N. D.N.N.M.M. College, Kanpur

Physics-

Dr. K. K. Srivastava D.B.S. College, Kanpur
Dr. A. K. Agnihotri B.N.D. College, Kanpur
Dr. Navneet Mishra B. N. D. College, Kanpur

Chemistry-

Dr. Alka Srivastava D. G. (P.G.) College, Kanpur
Dr. Atul Tiwari D. B. S. College, Kanpur
Dr. Dhananjay Singh P. P. N. College, Kanpur

Zoology-

Dr. Sandeep Shukla D. B. S. College, Kanpur
Dr. Sangeeta Ansari A. N. D. College, Kanpur
Dr. Anjali Srivastava D. G. P. G. College, Kanpur

Botany-

Dr. Archna Srivastava D.G. P.G. College, Kanpur
Smt. Seema Anand S.V.(P.G.) College, Aligarh
Dr. Jainendra Kumar K.K.(P.G.) College, Etawah

Geography-

Dr. Pramod Kr. K.K.(P.G.) College, Etawah
Dr. Ram Naik Srivastav R.S.G.M. (P.G.) College, Pukharayan, Kanpur
Dr. Hem Singh Ojha K.K.(P.G.) College, Etawah

Music-

Dr. Mohini Shukla Juhari Devi (PG) College, Knp.
Dr. Nishtha Sharma M. G. (P.G.) College, Firozabad
Smt. Kajal Sharma Agra College, Agra

Home Science-

Dr. Ranju Kushwaha Ju. Devi (PG) College, Kanpur
Dr. Archna Saxena A. N. D. N. N. M. M., Kanpur
Dr. Alka Tripathi D. G. (P.G.) College, Kanpur
Dr. Richa Saxena Juhari Devi (PG) College, Knp.
Dr. Byuti Dixit Mahila Mahavidyalaya, Kanpur

B. Ed. -

Dr. Ankur Singh D. W. T. Centre, Kanpur
Dr. Pragya Srivastava M.M.V., Kanpur
Dr. Reeta Srivastava A. N. D. College, Kanpur

Managing Editor & Publisher-
Sarveish Tiwari `Rajan'
World Bank Barra, Kanpur-208027

सभी संपादकीय दायित्व पूर्णतः अवैतनिक हैं।

नोटः प्रकाशित आलेखों के विचारों से संपादक व प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नहीं है। समस्तवाद का क्षेत्र कानपुर होगा।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, प्रबन्ध संपादक एवं मुद्रक **सर्वेश तिवारी 'राजन'** द्वारा सुपर ग्राफिक्स एण्ड प्रिन्टर्स, के–444, विश्व बैंक बर्रा, कानपुर–27 से मुद्रित एवं सुपर प्रकाशन के–444, 'शिवराम कृपा' विश्व बैंक बर्रा, कानपुर–208027 से प्रकाशित। संपादक : **डॉ. सीमा मिश्रा** मो.–09044808861। सम्पर्क: 8896244776,9335597658, ई–मेल: super.prakashan@gmail.com, Website: www.superprakashan.com

ISSN : 2349-9273

सम्पादक की कलम से .....

कृतिम बुद्धिमत्ता – वरदान या खतरा

विज्ञान और तकनीकी प्रगति ने आज जिस तीव्र गति से संसार को बदला है, उसमें सबसे उल्लेखनीय भूमिका कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence – AI) की है। यह एक ऐसी तकनीक है जो मशीनों को सोचने, निर्णय लेने और मनुष्यों की तरह कार्य करने की क्षमता प्रदान करती है। आज यह तकनीक हमारे दैनिक जीवन से लेकर वैश्विक नीति निर्धारण तक प्रभाव डाल रही है। परन्तु इस तकनीकी वरदान के साथ कुछ ऐसे पक्ष भी जुड़े हैं, जो मानवता के लिए खतरे का संकेत दे रहे हैं।

AI का उपयोग अब केवल विज्ञान प्रयोगशालाओं या शोध संस्थानों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह आम जनता के जीवन में गहराई से प्रवेश कर चुका है। शिक्षा के क्षेत्र में यह तकनीक छात्रों को उनकी गति और जरूरत के अनुसार सीखने में मदद कर रही है। स्मार्ट क्लासरूम, डिजिटल मूल्यांकन और अनुवाद जैसे क्षेत्रों में AI ने शिक्षा को सुलभ और प्रभावी बना दिया है। स्वास्थ्य सेवाओं में AI आधारित स्कैनर, डिजिटल हेल्थ रिकॉर्डस अैर रोबोटिक सर्जरी के माध्यम से रोगों की शीघ्र पहचान और उपचार संभव हो पाया है। टेलीमेडिसिन की सहायता से यह तकनीक ग्रामीण क्षेत्रों में भी चिकित्सा सुविधाएं पहुँचा रही है।

कृषि और औद्योगिक क्षेत्र में भी AI ने उल्लेखनीय परिवर्तन भी किये हैं।AI आधारित सेंसर, ड्रोन और स्मार्ट उपकरण किसानों को जलवायु मिट्टी और फसल की स्थिति के बारे में सटीक जानकारी देते हैं। वहीं उद्योगों में उत्पादन लागत कम करने, गुणवत्ता बढ़ाने और दुर्घटनाएं घटाने में यह तकनीक मददगार बनी है। इसके अलावा दैनिक जीवन में वॉयस असिस्टेंट जैसे (Google Assistant, Siri) ऑनलाइन खरीदारों में सुझाव ट्रैफिक की जानकारी और बैकिंग में धोखाधड़ी की पहचान जैसे कार्यों में AI अत्यधिक सहायक है।

लेकिन इस प्रगति के साथ कई गंभीर चिन्ताएं भी जुड़ी हैं। सबसे पहले बेरोजगारी की समस्या AI आधारित ऑटोमेशन के चलते फैक्टियों, बैंकों और कार्यालयों में मानव श्रम की आवश्यकता कम होती जा रही है। यह विशेष रूप से निम्न कुशल और अर्ध कुशल श्रमिकों के लिए संकट उत्पन्न कर रहा है। इसके अतिरिक्त AI जिस डेटा पर कार्य करता है, उसमें गोपनीयता का उल्लंघन और गलत हाथों में जानकारी जाने का खतरा बना रहता है। यदि संवेदनशील डेटा का दुरुपयोग हो तो, व्यक्ति की स्वतंत्रता और सुरक्षा को गंभीर चुनौती मिल सकती है।

AI के साथ नैतिक और सामाजिक प्रश्न भी गहरे होते जा रहे हैं। क्या एक मशीन यह तय कर सकती है कि कौन जीवित रहेगा और कौन नही? स्वचालित हथियार, निगरानी तंत्र और चेहरा पहचानने की तकनीकें मानवाधिकारों का उल्लंघन कर सकती है। साथ ही, यदि AI को प्रशिक्षित करने वाला डेटा पक्षपातपूर्ण हो, तो निर्णय भी पक्षपातपूर्ण हो सकते हैं, जिससे समाज में असमानता और अन्याय को बढ़ावा मिल सकता है।

इन सभी पक्षों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता न तो न तो पूर्णतः वरदान है और

न ही पूर्णतः खतरा। यह एक उपकरण है, जिसके उपयोग और दिशा पर ही इसका मूल्य तय होता है। आवश्यकता है कि सरकारें, वैज्ञानिक, शिक्षाविद् और समाज मिलकर इस तकनीक के लिए नैतिक कानूनी और सामाजिक दिशानिर्देशों तैयार करें। अगर इसका विकास पारदर्शी, मानवीय और विवेकपूर्ण तरीके से किया जाए, तो यह तकनीक मानवता की सबसे बड़ी सहयोगी बन सकती है। लेकिन यदि इसे नियंत्रणहीन रूप से अपनाया गया, तो यही तकनीक आने वाले समय में मानव अस्तित्व के लिए संकट भी बन सकती है।

इसलिए समय की मांग है कि हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग एक जागरुक और जिम्मेदार समाज के रूप में करें। तभी हम इसे कृत्रिम नहीं बल्कि सजग बुद्धिमत्ता बना पाएंगे – एक ऐसी बुद्धिमत्ता जो मानवता के हित में कार्य कर करें, न कि उसके विरुद्ध।

– डॉ. सीमा मिश्रा
सम्पादक – 'दि गुंजन'
(मल्टी डिसिप्लिनरी क्वार्टरली इण्टरनेशनल
रेफ्रीड / पियररिव्यूड रिसर्च जर्नल)
एवं
असिस्टेन्ट प्रोफेसर – बी. एड. विभाग,
डॉ. वी. एस. आई. पी. एस. इन्स्टीट्यूट,
किदवईनगर, कानपुर–208011 (उ.प्र.)

Index

- Dr. Vidya Verma : Chief Editor, `The Gunjan' (Multidisciplinary Quarterly International Refreed / Peer Reviewed Research Journal) & (Principal : Government Degree College, Sumerpur-210502, Hamirpur (U.P.).

&

- Dr. Seema Mishra : Editor - `The Gunjan' (Multi Disciplinary Quaertery International Refreed / Peer Reviewed Research Journal) & Assistant Profrssor, Dept. of B. Ed., Dr. Virendra Swaroop Institute of Professional Studies, Kidwai Nagar, Kanpur-208011, (U.P.)

1-	**Working Women : Challenges, Issues and Remedial Measures**	- Prof. Pratibha Srivastav	**07**
2-	**A Study of the Women Characters in the Novels of Anita Desai**	- Dr. Chandra Prakash Singh	**12**
3-	**Building Employability Skills through Extracurricular Activities : A Review of the Research and Best Practices**	- Priti Bapu Netke	**18**
4-	**The Real and Ideal World in the odes of John Keats**	- Sanjai Kumar - Dr. Vijay Singh	**21**
5-	**A Study of Stock Market Theories**	- Dr. Vijay Kumar Gupta	**25**
6-	**The Importance of Forestry in Environment : A Review**	- Dr. Sunil Kumar Mishra	**31**
7-	**The Impact of Technology on Translation and Literature**	- Dr. Rashmi Dubey - Siddiqui Sheeza	**43**
8-	**Aurobindo Ghosh's Spiritual and Political Reading of the Bhagavad Gita**	- Ravi Kant Mishra - Dr. Chhaya Malviya	**48**
9-	**Studies on Ethanol Production from Molasses and Immobillization procedures by Zymomonas Mobilis**	- Dr. Abha Singh	**52**
10-	**Transforming Lives : Educational Empowerment of Tribal Women in India**	- Anita Verma	**54**
11-	**Constituent Assembly Debates : Language, Identity and the Making of Indian Democracy**	- Prof. Sudha Rajput	**62**
12-	**Life Skills : A Foundation for Holistic Human Development in Educational Settings**	- Prof. Shashi Bala Trivedi	**66**
13-	**Navigating New Realities : Climate Change and Migration Challenges in Amitav Ghosh's Gun Island**	- Shubham Mani Tripathi	**70**
14-	**A Critical Study on Religious views in the work of A. K. Ramanujan**	- Shashank Yadav - Dr. Chhaya Malviya	**77**
15-	**Marriage, Gender and Identity in *Mango-Coloured Fish***	- Neelam Nishad - Prof. Nandita Singh	**83**
16-	तुलसी का सीता–त्याग सम्बन्धी मौन	– डॉ. मीरा देवी	**92**
17-	आगरा जनपद में जल उपलब्धता का भौगोलिक	– डॉ. राखी	**95**

	विश्लेषण		
18-	कानपुर शहर के यू.पी. बोर्ड उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के आत्मबोध का तुलनात्मक अध्ययन	– डॉ. सीमा मिश्रा	100
19-	ग्रामीण शिक्षा में नवाचार और कानपुर जिले में ग्रामीण शिक्षकों की भूमिका	– नेहा गुप्ता	104
20-	प्रौद्योगिकी और शिक्षा : डिजिटल शिक्षा का उभरता स्वरूप	– डॉ. गोपाल कृष्ण भारद्वाज	107
21-	स्वराज्य पार्टी में पंडित गोविन्द वल्लभ पंत जी का योगदान	– राकेश कुमार वर्मा	110
22-	समकालीन हिन्दी कवयित्रियों की कविताः व्यष्टि–समष्टि की यात्रा	– प्रो. (डॉ.) दीपिका कटियार	114
23-	बौद्ध एवं जैन धर्म के मध्य अंतर्सम्बन्ध : एक तुलनात्मक अध्ययन	– डॉ. रामेन्द्र कुमार	118
24-	डॉ. सुमन राजे कृत आत्मकथा 'आत्मकथाओं से बाहर' के आधार पर तुलसी के काव्य के आत्म कथात्मक स्थलःएक अध्ययन	– डॉ. आरती दुबे	121
25-	बैंकिंग व वित्तीय सेवाओं में इन्टरनेट के प्रयोग से बदलता ग्रामीण परिवेश	– डॉ. राकेश कुमार	125
26-	हिन्दी आदिवासी उपन्यासों में लोकगीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	– पटेल शीतलबेन ईश्वर भाई	128
27-	भगवान महावीर की शिक्षाओं का सार्वभौमिक महत्त्व	– डॉ. कोमल चन्द्र जैन	133
28-	विभिन्न युगों में नारी	– प्रो. अल्पना राय	137
29-	उत्तर प्रदेश में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में व्याप्त समस्याएँ एवं समाधान : एक विवेचन	– अशोक कुमार पाठक	142
30-	वर्तमान राजनीतिक परिवेश में विश्व कल्याण के सम्बन्ध में महावीर स्वामी के विचार	– पूजा श्रीवास्तव	146
31-	सौन्दर्यशास्त्र और कला सृजन	– डॉ. (श्रीमती) कल्पना गौड़	149
32-	वैदिक शिक्षा पद्धति एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता	– प्रतीक श्रीवास्तव	153
33-	वैदिक गौरव से आधुनिक चुनौतियाँ : भारतीय नारी	– प्रो. (डॉ.) अर्चना श्रीवास्तव	156

◈◈

ISSN : 2349-9273

Received: 02 April, 2024; **Accepted:** 28 May-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

Working Women : Challenges, Issues and Remedial Measures

- Prof Pratibha Srivastav
Head, Dept. of Psychology,
M. M. V. (P.G.) College, Kanpur-208011 (U.P.)

E-mail:
pratibhasri1504@gmail.com

Abstract

Technological advancement during the last few decades have brought marked changes in modern human society. Revent years have increasingly brought a great change in the life of Indian women influencing their attitudes, values, inspirations, feelings as well as participation in various walks of life.

The Women in the present day society is expected to fulfill several roles. They are also expected to be nation builder beyond as conventional roles of as mothers, wives or socializing agents for children. This scenario imposes a greater challenge on them in order to strike a balance between her traditional role demands and occupational needs, confronting her with a number of challenges and issues such as work / family conflict, gender discrimination, career immobility, social isolation, Harassment etc., which have a direct bearing on her health and well being.

The aim of this paper is to highlight such issues and challenges of todays working women and also discuss the role of remedial measures to reduce the issues and challenges and to provide the working women strength, safety and security.

Keywords- ***Working Women, Challenges, issues, Remedial Measures.***

Introduction –

"Women are the backbone of the society". She plays a vital role in the economic development of the country and her contribution is as equal as their counterparts. Without active participation of women in various national, social, economic and political activities, the progress of the country will be stagnant.

Traditionally Indian women had been home makers but in 21st century, due to higher education, better awareness and increasing financial demands of family, women also go out and choose careers. Gandhiji Once said – **"Women is the noblest of God's creation, supreme in her own sphere of activity"** These words are blossoming now.

Employment has given women economic independence and feeling of importance. They now feel that they can stand on

their own and look after the entire family by themselves. This has boosted their self pride and self confidence. Women in India today fully participated in all areas like education, sports, politics, science and technology and many more.

Although Indian women have started working outside their homes, but still there are several issues and challenges that working women face today. As an educated and enlighten person, she has a definite role to play in national development and social progress. This is to be accomplished by her through building correct attitudes towards social and cultural life in children when they are still young and quite receptive to lean.

In workplace, sometimes they are not treated equally. They do not get the same benefits as that of male employees too. Gender bias, unequal pay, security, mental and physical harassment, lack of proper family support are considered as major issues and challenges of working women faces now a days.

Although working women handle their professional life in facing competition and challenges at workplace and personal life managing different household work. Due to such multitasking efforts of women increased stress and mental health related problems the relationship with her soul mate become unbalanced, if proper balancing act is not delivered in both personal and professional life.

Challenges and issues of Working Women -

In wake of 21st century, the role of working women has undergone considerable transformation posing a wide array of problems. Depending on the importance of mediating processes women's employment may result it diverse outcomes like daily hassles, organi-sational stress on one hand and uplift and life satisfaction on the other.

Researchers **(Baruch & Barrett, Thakur & Mishra – 1995)** have found that it is the quality of women's experience in performing her social roles that constitutes the key for understanding the status of their psychological well being. **(See Table)**

Challenges Faced by Working Women -

The above figure state the major challenges faced by working women in 21st century and they are discussed as follows –

Gender Discrimination –

Today there is no field where the women have not shown their worth. From holding highest public office in bureaucracy to holding highest political position, the women have shouldered all kinds of responsibilities with ground success. However, Indian working women still faced barefaced discernment of their work place. Major problem faced by working women are gender – bias, mental or Physical harassment, unequal pay, promotion issues at workplace **(Messing & Elabede, 2003).** In India the potential and capabilities of women have always been underestimated in regard of their recruitments, salary issues and promotion issues. Males are always given preferences and priorities in comparison to female colleagues. **(Latika menon**

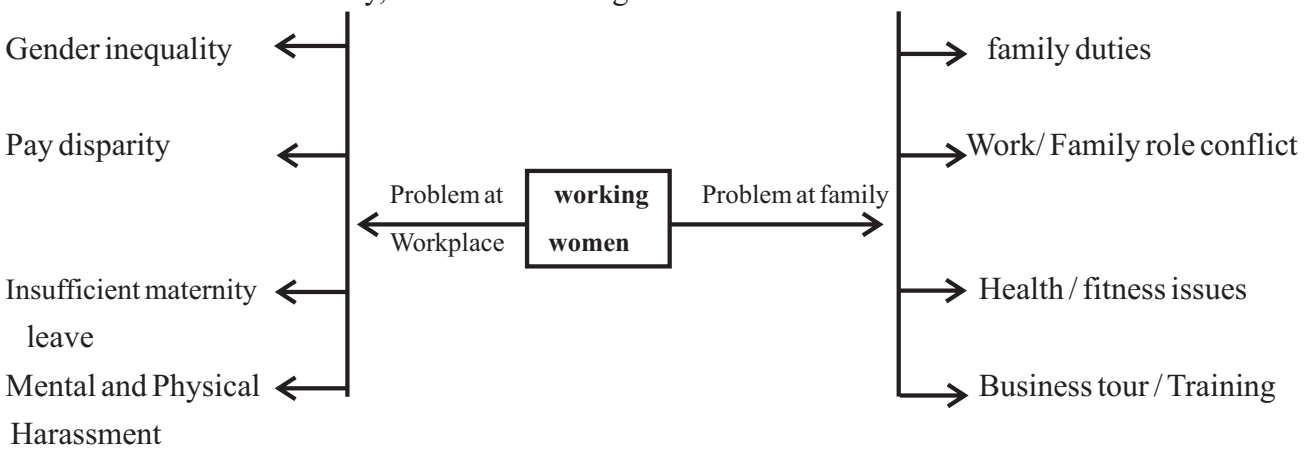

2008).

Work and Family – A Role Conflict –

It is very big Challenge for Indian working women to maintain a balance between their work and family. The issue of work/family has always posed a ground for role conflict. Work / Family conflict has been defined as a form of inter role conflict in which the role pressures from work and family domains are mutually incompatible in some respect.

(Green haus & Beutell-2005).

A women has to play many roles at a given time, like mother, daughter, wife and a member of social cultural association, but at working place her job role is the first and fore most duty. There may be a conflict between her family role with job role. As a result she withdraws from her work due to simple reason like taking care of her children, aged in laws / Parents and other family pressures. Some women avoid promotion in order to avoid the extra stress from balancing family and work. Research has determined that work/ family conflict particularly affect working women especially with long working hours, as a result of which a child's wellbeing suffers due to lack of time with Parents **(Piotrkowski etal – 1997)**, which poses greater family difficulties. **(Ralston-2000)**, and it found to be largely associated with depression **(Googins– 2001).**

Mental and Physical Harassment -

In order to achieve success in career, women feel that they must do better than their male colleagues. This leads to higher expectations and efficiency by their boss. This type of condition creates strain for women. Indian working women also feels unsecure at their workplace. Going our of homes is a big challenge for working women. Commuting long distance, travelling in public transport, long working hours, tolerating indecent remarks of males in the buses and offices, the atmosphere of the office, are some of the problems of womens in additional to their personal and family problems,. In corporate sector, usually women are treated as weak and vulnerable and hence male colleagues and superiors think that they can take any advantage of their female colleagues and Subordinates.

(Porf. Priyanka Panchal.2016)

Stress Related Problems -

It has been observed from the analysis that majority of working women are suffering from stress caused by role conflict or multiple roles. On examing the literature related to women stress and employment, it was found that employment had complex effect on the lives of Indian women. On one hand the multiple role involvement is found to increased wellbeing **(Baruch & Barnett)** while on the other hand it also increases daily hassles and conflict which converted in stress.

By analytical study, it is found that the stress level in working women increase in direct proportionally to their age. This may be because of the additional responsibilities imposed on elder women both in family as well as at workplace. No. of working hours also affects the stress level of working women. This may be due to the nature of work they undergo which leads to physical and mental tiredness. The childcare arrangement is also another aspect of creating stress in working mothers. **(Bhuvaneshwari ; M. (2013).**

Other Issues –

- Lack of Proper family support is a major issue for working women. The household work is still considered as a duty of women only.
- Insufficient maternity leave is another issue that is faced by working women. This effects performance at work as well as their personal lives.
- Poor security at work place is another issue for working women. Women working in corporate sector and other private organizations mostly face the various crimes at their workplace because of lack of security provided to them.
- Unequal pay is another issue for working women. It has been observed that women are paid low salaries as compared to male employees. This creates depression and demotivation in them which also affects her

personal life.

Conclusion and Remedial Measures -

The Objective of the present paper is to discuss the challenges and issues of working women and also discuss the remedial measures to improve it. I would like to conclude by highlighting certain suggestions which can be beneficial in dealing with the problems and issues of working women at the individual, family, organizational and societal level. These are enlisted below –

- ❖ Greater Commitment is required to bring about a change in the organizational culture to provide equal employment opportunities, equitable pay structure for similar jobs and provide avenues for creating job value which will help women to participate and grow in organisation. **(Red wood, 1997).**
- ❖ Stronger enforcement of anti discrimination legislation is required both at the National level, in order to deal with gender stereotypes, and sexual harassment.
- ❖ Introduce more family friendly policies centering around providing adequate opportunities for child care & elder care flexible working hours, sufficient. maternity leave, Job sharing and career break scheme. **(Martinez, 2001).**
- ❖ Organizations need to incorporate more flexi-time policies and reward the needed work experience judiciously which will assist in decreasing absenteeism, turnover, depression and work/ family conflict.
- ❖ Every efforts should be made to develop mental health and well- being. For this, it is important to organise orientation courses centering around training women to adopt the right management strategy to deal with situations and people more resiliently and generate awareness regarding the importance of a balanced nutrition diet, sufficient time for self and recreation to deal with fatigue and burnout.
- ❖ There is need to organise education campaign for women employees about their rights and forming a complaint committee at workplace, which will keep the privacy of the employee complaining and investigate the complaint independently.
- ❖ Creating appropriate work condition to ensure that there is no hostile environment towards women.
- ❖ Providing adequate maternity and paternity leaves and day care facilities for working mothers.
- ❖ Ensuring women do not work late hours, providing safe prick up and drop facility in odd hours.

Role of Positive thinking in managing stress of working women –

It has been observed from the analysis that majority of working women are suffering from stress caused by role conflict or multiple roles. Working women face a big dilemma in managing work-family conflict. This can cause many health issues such as frequent headache hypertension, obesity etc. **(Varsha Kumari -2014).** A stressed person gets easily distracted from his work because of persistence anxieties, doubts and negative thoughts.

Positive thinking is mental attitude that admits into the mind through words and images that are conductive to growth, expansion and success, that expects good and favourable results. The power of positive thinking can change and improve our life. Maintaining positive thinking and attitude will drive us to success, healthy life and happiness. The positive thinking can be developed by positive self-talk, healthy attitudes, following effective fitness programmes, financially sound, hopefulness, new ideas, sense of responsibility etc. We can also develop positive thinking by acquiring new knowledge through stimulating mental activities. In short, positive thinking helps us in reducing stress which in turn leads to improved health. By doing this at last we will find an amount of positive energy that will creates a positive situation for us every day.

(Peale, N.V. 1996) Positive thinking emerges as the most effective and powerful tool to manage stress. The stress can be controlled by –

- ✓ Active coping (e.g. & I have been taking action to make the situation better).
- ✓ Planning – (e.g. I have been trying to come up with a strategy what to do.)
- ✓ Positive reframing (e.g. I have been looking for something good in what is happening).
- ✓ Using emotional support (e.g. I have been getting support from others).
- ✓ Denial (e.g. I have been saying to myself it is not real)
- ✓ Self control (e.g. I tried to keep my feeling to myself).

Role of Yoga and Meditation in managing stress –

Many Psychologist and researchers are evident that Yoga and meditation decreases the level of stress. Through a number of studies, it has been revealed that the practice and training of Yoga has produced relief to physiological, Psychological and other mind related problems, enhanced concentration along with minimizing stress and depression. Now a days Yoga is opening new vistas of life in which one can lead a peaceful life, take the sound sleep and concentration on the desired goal effectively. Women can also control her worries, tensions, distress, conflicts, depression and emotional disturbances. **(Venkatkrishnan, Sri (2021).**

Meditation is a spiritual or vedic exercise which requires the control of the power of concentration and practices. It is a practice of stilling and purifying the mind in order to gain insight. The entire process of meditation usually entails the three stages – Concentration (Dharna), mediation (Dhyana) and enlightment (Samadhi). Meditation plays a positive role in reducing stress level in academic, social and personal field. There are a number of studies that suggests that meditation has the effect of reducing stress and hypertension. **(Pestonjee, D.M. (1992).**

Lastly greater awareness needs to be generated among children, adults and the society at large pertaining to gender sensitization through school curriculum, documentry sources, training programmes, workshops, rallies, campaigns in order to deal effectively with the stereotyped behaviour and discriminatory sensitization practices.

Reference

1. Andal N. (2002) Women and Indian society. Page – 51-53 Rawat publication, New Delhi.
2. Baruch, G.K. & Barnet, R (1986) Role Quality, multiple role involvement and psychological well being in middle aged women. J. of Personality and social Psychology, 51, 578 – 585.
3. Bhuvaneshwari, M. (2013) A case study on psychological and Physical stress undergone by married working women. IOSR J. of Business and management ISSN-2278, vol-14, Issue – 6.
4. Kumar, U. (1986) Indian women and work ; A Paradigm for research, Psychological Studies, 31, 147-160
5. Mishra Kavita (2006) Status of women in modern society Omega Publication, New Delhi.
6. Pestonjee, D.M. (1992) Stress and coping, The Indian Experiences Sage Publication, New Delhi.
7. Mishra, Girishwar (1999) Psychological perspectives on stress and Health, Page 211-213, 40-41, concept Publication, New Delhi.
8. Menon Latika (1998) Women Empowerment and challenge of change. Kanishka Publication, New Delhi.
9. Peale, N.V. (1996) The Power of Positive Thinking. Random house Publication.
10. Priyanka Panchal (2016) The Challenges faced by Indian working women to balance professional and social life in 21st century. Indian J. of Technical Education.
11. Selye, H. (1979) The Stress and life (Rev. Ed.) New York.
12. Thakar G. & Mishra G. (1995) Correlates of daily hassles among dual career women. J. of Indian Academy of Applied Psy.21,93-101
13. Venkatkrishnan, Sri (2012) Yoga for stress management Peacock Book, New Delhi.

ISSN : 2349-9273

Received: 06 April, 2024; **Accepted:** 09 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

A Study of the Women Characters in the Novels of Anita Desai

- Dr. Chandra Prakash Singh
Assistant Professor -
Department of English,
D.B.S. (P.G.) College, Govind Nagar, Kanpur-208006 (U.P.)

Email-
singhdrcp@gmail.com

Abstract

Anita Desai's characters face in establishing their self-identity in their changing social- cultural environment. As a result of their unending inner and outer conflict .Desai's characters fail to attain their quest for self- identity. They remain engulfed in the shadows of their dire situation. However, due to their ignorance regarding the impact of their trauma and subconscious trauma .Anita Desai,s characters fail to achieve their quest for self-identity. Anita Desai brings special attention to the impact of psychological stress in her characters. Her novels correctly depict the exact notion that women need something more food, clothes and accommodation. Patriarchal culture is developed in the hands of Anita Desai through an encounter with the singularity of the Anglicized women of Indian society. She is one of the Indian writers who tried to change contemporary society's clichés with her pen.

Madhushudan Prasad in his book Anita Desai : The Novelist briefly assesses Deasi's female characters: " Anita Desai explores the turbulent emotional world of the neurotic protagonists who smart under an acute alienation, stemming from marital discords, and verges on instantly."

Bereft of the revolting excesses of the feminists ideologies, Anita Desai has silently but steadily and certainly made the marginal move to the centre stage. Gently shaking off the paternalistic and at times condescending liberalism of a Bhattacharya, the abstract mongerings of a Raja Rao, the propagandist tokenism of an M.R. Anand, Anita Desai in both the form and content of her writings leaves unmistakably the feminine imprint without pausing to 'a female sentence.' 'Female time' or some other such inartistic formulation.' Her women are seekers, hankering after what has since long been routine pursuits for their male counterparts but what appears preposterous and appalling in their case. One must hasten to add that the questing protagonists of Desai include a couple of males too. What these protagonists strive for is self-realization, self fulfillment, carving out an identity, a

true image of their individual beings, lateral and figurative space to themselves, to define themselves to make a foray into the outward, to make their own mistakes and retrace their steps if the need be , rather than being chaperoned everywhere. To ask whether they all succeed or not in doing what they endeavour to do is to belittle the enormity of their situation. The singular distinction of the novelist is that she suggests quite a few of her novels, at times overtly, at times covertly, the small but significant change wrought in the perceptions of the other characters in the strivings of the central characters. Even where the note on e which the novels end is stark and devoid of any tangible sign of complacence, they do seem to succeed in jolting one into new perception of reality. While Sita in Where Shall We Go This Sunmer? Does have a sort of family reunion and 'where we go this summer' is no more a disquieting question left hanging in the air, her other artistic siblings- Maya(Cry, the Paeackock), Monisha and Amla (Voices in the City), Sarah Sen (Bye-Bye Blackbird) Nanda and Raka (Fire on the Mountain) and Bim and Tara(Clear Light of Day) are poised tantalizingly at different junctures of the philosophic spectrum. Even the travails of male protagonists in Desai in characters like Deven Sharma (In Custody) and Baumgartner (Baumgartner's Bombay) have been sympathetically attended to.

A common contemporary issue facing every country is the question of women. The new women today challenges the traditional notion 'of angel in house and sexually voracious' image. The new woman is essentially a woman of awareness and consciousness of her low position in the family and society. The feminist criticism has developed as a component of woman's movement and its impact has brought about a revolution in literary studies.

Anita Desai's emerging new woman is contemplative about her predicament and chooses to protest and fight against the general, accepted norms. What is different about these women is that they are prepared to face the consequences of their choices. Anita Desai asserts that her protagonists are new and different : " I'm interested in characters who are not average but have retreated or been driven into some extremity of despair and so turned against ..... the general current"; it is for them a challenge to better their own personal existence.

Anita Desai's protagonistss, brought up to be different, meek and quiet in the face of exploitation, are highly sensitive and intelligent and are desperate to find an outlet to their pangs. Their extreme sensitivity, however, channelizes their mode of liberation in various directions. Clear Light of Day is chosen to evince and examine the wide space that divides the two types of women hailing from the same family- the women who do not act but surrender and so keep the tradition alive, and also the women who choose not to surrender and be meek but break the convention to face their situation and take up a new road where no one can dictate to them.

Bim is the chief protagonist in this novel. Her ambition is two fold: to be emotionally and economically independent. She never wanted to marry: "I can think of hundred things to do instead. I won't marry. I shall earn my own living and look after Mira Masi and Baba and be independent" (140). She would not depend on any one, not even on her father. Had she depended on her father for education she would have been an illiterate : " for all my father cared, I would have grown up illiterate and – cooked for my living. So I had to teach myself history and to teach myself to teach." (155). She gets education in history, a subject with immense significance for her. The past is important as the progenitor of the present. Bimla has confidence much like her creator that " both the past and the future exist always in time present." In an interview, Anita Desai points out clearly "time is presented as the fourth dimension of human existence." The novel revolves around 'Time' drawing different

impression from the characters. Desai says:

"My novel is about time as a destroyer, as a preserver and about what the bondage of time does to people. I have tried to tunnel under the mundane surface of domesticity." It is her opinion of present as the important section of past and future that makes her pursue her ambitions, despite the gloomy atmosphere at home and the burden of responsibility.

Bim's desire to be independent and courageous, and to dress and smoke like a man enables her to grow up strong and confident. It is only because she has trained herself to be different that the much eulogized characteristics of women i.e. weak will, dependence and shyness are alien to her perception. Bim refuses to confine herself to her role as a traditional woman. "Women in our society are still trained from infancy to entertain, to please and to serve men." But Bim was fortunate. Her father was known by his arrivals and exits and the mother through her diabetes and the cards, there was virtually no one to instruct the young girls. The free will and the lack of training in meekness enable Bimla to pursue her ambitions.

Bim has confidence in herself to withstand the shock of the sudden death of her parents, the alcoholic Mira Masi, the tubercular Raja and the mentally-retarded Baba. Bimla alone is left to carry the family away from its perturbed atmosphere. Tara being meek and weak willed, has no help. She has no courage to face the innumerable problems that the family all of a sudden starts to face. This sort of problem and her own business with insecurity and fear drive her towards Bakul. Tara with matrimony succeeds in getting away from the family which had suddenly gone out of control. With the death of Mira Masi and unexpected sudden departure of Raja, Bim feels only disappointed but she never becomes bitter.

The confused condition of Bim's mind disappears, and she is able to consider her inner psyche" by the Clear light of day".(65). Her calmness of mind is the emblem of the quiet before the storm, which is to overtake her soon. The growth of Bim,s self is not yet complete and her mind starts thinking about the past and present. In spite of this, she begins to study a book which turns out to be the life of Aurangzeb. After perusal of the emperor's death, she is highly impressed by two sentences: "Many were around me when I was born. But now I am goining alone" and "strange that I come with nothing into the world, and now go away with this stupendous caravan of sin." Bim thinks of her life in the light of these two sentences and explores its meaning. The image of birds, animals and insects are indications of the landscape of the house. They depict the atmosphere, participate in the emotional tumults of the chief characters, and through their mental states into sharp relief.

The novelist starts with the call of the Koel presenting the soul of the daybreak: "The Koel began to call before daylight. Their voices rang out from the dark trees like an arrangement of bells, calling and echoing each other's call, mocking and enticing each other into ever higher shriller calls."(165), Bim ,an educated unmarried working woman, enjoys financial freedom. Desai appears to demonstrate that violence and operation against women can be diminished if women are financially self-sufficient and self-assured. R. K. Srivastava has rightly said: "the man woman relationship becomes more important due to rapid industrialization, growing awareness among women of their rights and individualities and westernization of attitudes and lives of the people."

Bimla, the eldest of all, incurs upon her all the burden of the family. During the day her father passed his time in the office, and in the evening at the club. But after his death Bim accepts the role of a father to take care of her sisters and brothers and later marrying them. Due to the responsibilities, she has no time for her own love and life even though she has an affair with a doctor. In the novel, she appears as a middle-aged woman teaching history

in a college, living an ascetic life, the only luxury she affords is to buy books.

Bim is fairly representative of the new woman of contemporary Indian urban woman-single, independent, self-assured. At a superficial level, such a woman may be seen as "westernized." Madhusudan Prasad, commenting on this image points out: "This image, combined with the image of Sisyphus, is replete with deeper symbolic significance. A momentous image, it is connected with the theme of the novel illuminating the real character of Bim."

It is her extreme sense of responsibility for the family and for Baba which makes her feel strong and in control of herself. She does not lose her courage with the burden of responsibility. She appears to show that a woman can look after the family much better than any man. Bim is careful and conscious enough not to think of the need of protection or love of any one. She hates Mira Masi who craves for love and protection and is elated to receive it from the children if not from anyone else: "They crowded about her so that they formed a ring.A protective railing about her. Now no one could approach. No threat, no menace…. They owned her and yes, she wanted to be owned."(109) The novelty of Bim is that she had no desire to be owned. She does not want anyone to feel either kindness or responsibility for her.

In spite of all the odds Bim gets success in building up her ambitions, is triumphant in being independent, and it is Tara and Bakul who realize this: Bim had found everything she wanted in life. It seemed so incredible that she hadn't had to go anywhere to find it; that she had stayed on in the old house, taught in the old college, and yet it had given her everything she wanted. Isn't that strange Bakul…..She did not find it- she made it, she made what she wanted." (158)

Bim appears a new woman of the coming years. She is independent and liberated and yet there is no mark of arrogance or superiority in her.Bim is very clear about her aspirations, urges and expectations, yet she is not the one to roll in pity about her alienation. If she felt cheated and stranded and thought Raja and Tara to be selfish, she was ready to forgive them. She was ready to see every flaw of others in the light of understanding. She would have to forgive her parents too, towards whom she was resentful because she could not grasp the disturbed atmosphere of their lives. Bim is able to obtain everything in life without the help of masculine forces due to her confidence in herself. It is in Bim that we recognize the emerging new and independent woman that Simon de Beauvoir delineates: Once she ceases to be a parasite, the system based on her dependence crumbles: between her and the universe there is no longer any need for a masculine mediator."

Bimla and Tara in their quest for identity, liberty and individuality act and react in radical ways to the set conventional construct. Tara is certainly not unhappy in obeying her husband, but the question which finally perturbs her is "how long"? She realizes that she does something that she never likes: She felt she had followed him enough, it has been such enormous strain, always pushing against her grain, it had drained her of much strength, now she could collapse, inevitably collapse.(18)

Tara analyses her position as a young and hopeful girl: I must have used an instrument of escape. The complete escape I could have made-right out of the country."(157) They used him as the direct track of escape because: Bakul was so much older; and so impressive. Wasn't he? And then he picked me, paid me attention-it seemed too wonderful, and I was overwhelmed." (156)

The attention he used to pay her was something she always craved for but never received from anyone at home. So she became meek and her submissiveness and deference were used to keep her at the level of docile and unquestioning wife. Tara feels that it is time for her to stop being submissive. She does not want to make Bakul stoop to come to her level, rather she would stretch out

and reach over to his position.

In comparison, Bim has everything that Tara does not have. And in that she has all this , and not what the society and tradition expects her to be , she is misunderstood : Now I understand why you do not wish to marry. You have dedicated your life to others- to your sick brother and aunt and your little brother who will be dependent on you all his life. You have sacrificed your own life them."(97)

Bim concedes to carry the burden of responsibility in spite of the dismal atmosphere of the house. She does manly duties and breaks the traditional norms and currents. Here Desai seems to suggest the significant sign of new woman. Anita Desai's women are all reflective about their condition. Their protest is not for quality but for the right to be acknowledged as individual capable of intelligence and feeling. They do not look for freedom outside the house but within, without painting their lives in various artificial shades of sentiments.

Thus this leads up to the very concept of' new woman'. The new woman that has been explored in the book reveals that Bim is not the 'ideal' or the best woman. She is new in the dimension of time by being a rebel against the general current of the patriarchal society, and in exploring her true potential, along with the struggle to fulfill her urges and needs. Anita Desai speaks to us not only of the tumult of the human soul but also of its depth, its poetry and pathos. It is through "the quality of the mind and soul alone" (Iyengar 343) that Anita Desai's novels would be a major contribution to literature. That is why the existential predicament in her novels has the unique touch of the universal.

Her tender, flexible, malleable and moribund sensibility whipping inanities into awe become at times, as in Fire on the Mountain, melodramatic to make the story artistically coherent and aesthetically satisfying. The"fire" in Fire on the Mountain and "light" in Clear Light of Day have an insignificant and trivial link with the central plot and have a dim symbolic and metaphorical relevance, which, instead of ennobling and satisfying the artistic sensibility of the readers often bewilders them. Her hold on the reader's mind loosens. The readers instead of identifying themselves with her artistic sensibility, get alienated from it. Desai endeavours to offer the reader a slice of life but fails to impart the required voltage. The action at times denotes poetic and philosophical speculation on existence and essence which the readers are so much repelled by the peculiar psychic set up of her novel that they fail to take stock of the alienated self's existential plight.

Alienation is basically a western concept and in imitating this idea in her novels, Anita Desai remained at heart no less traditional than western. To her alienation is more related to the emotional and mental moods and attitudes. The alienated self in Desai experiences the pangs of emotional isolation, not the spiritual and intellectual angst of Raskolnikov or a Roquentin. The struggle of the alienated self in Desai is more similar to the Kafka protagonist than to the Camus hero. The Camus hero is nauseated and stifled. He seldom delights in his alienated existence as a Kafka hero does. Anita Desai's protagonists encounter it single-handedly. They delight in despair. Nirode in Voices in the City longs to move from failure to failure. The Desai protagonist is not an instance of bureaucratic alienation of Kafka's "K". The alienated self as portrayed in the novels of Anita Desai is not an instance of total alienation. The lone self in Desai novels does not undergo the pang of alienation as does Hemingway's Santiago, who stands isolated from every entity and group, even from God. In Bharati Mukherjee and V.S. Naipaul, it is the sense of "exile" that leads to the alienation of the characters. Anita Desai's novels do not deal with the theme of exile: "exile has never been my theme" (interview, Rajasthan University Studies in English 69) says and individuality. In Mukherjee, it is people in collision, it is cultural confrontation but in

Desai, it is psychic confrontation.Desai's protagonists are emotional orphans. Emotionally maimed, they hail from fractured families. Their parents are either dead or physically or psycho-emotionally. Maya's only memory of her mother in Cry, the Peacock is the photograph on her father's desk (134); the Ray children in Voices in the City, all four of them, are alienated in different degrees from their mother, their only surviving parents, as well as from their father, who is now dead. Sita's mother in Where Shall We Go This Summer? ran away from home leaving her children to the care of a father whose concerns lay outside the family and the cultural situation. The children in Clear Light of Day represent the long absences of their parents and are aware only of exists and entrance." (Stairs to the Attic 113-14)

Like the novelist herself making a bold deviation from tradition in her approach to the fictionalization of artistic ideas and ideals, Desai's characters "carry very little of their parents in them; it is as if they were consciously rejecting where little they may have inherited. They prefer to go in the opposite direction"(116). But heredity figures only marginally in her novels. In tracing the positive and negative effects of heredity on her characters, Anita Desai fails to supply the required voltage. Hence it is not as strong as in the novels of George Eliot or Thomas Hardy. Thus Anita Desai eschews traditional practices and gives free Reins to her individual vision. Cultural alienation is the world phenomena today. When a person leaves his old culture and enters another(modernity) , his old values come into conflict with new ones. The characters of the novels are caught in the cross- currents of changing social values. Women's liberation ideology is the characteristic theme throughout the novels. In the traditional male dominating society, women have many time to situation but at the same time should stress on to educate men regarding women issues, their psychological needs and inculcate a sense of respect and duty towards women as equals. Women empowerment needs to improve the social, economic, political empowerment is the need of the present days as it is one only surest way of making women equal partners.

References

1. Beauvoir, Simon de, The Second sex, p.-412.
2. Dalmia, Yashodhara, An Interview with Anita Desai, The Times of India, April 29, 1999, p.-13.
3. Anita Desai at Work: An Interviews; Ramesh K. Srivastava,Perspectives on Anita Desai, Vimal, Ghaziabad, 1984, p.- 225.
4. Desai Anita. (2010).m" Cry, the Peacock," New Delhi : Orient paperbacks.
5. Desai Anita (2010), "Voices in the City", New Delhi : Orient paperbacks.

ISSN : 2349-9273

Received: 08 April, 2024; **Accepted:** 09 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

Building Employability Skills through Extracurricular Activities : A Review of the Research and Best Practices

- Priti Bapu Netke
Research Scholar
Neville Wadia Institute of Management Studies and Research,
Pune-607802 (Maharashtra)

E-mail:
netke.pritib@gmail.com

Abstract

This paper presents a systematic literature review on the role of extracurricular activities in fostering employability skills among students. The review highlights how participation in such activities aids in developing crucial skills such as leadership, communication, teamwork, problem-solving, and time management. The study further identifies best practices and strategic approaches that educational institutions can adopt to maximize the impact of extracurricular activities on skill development. While evidence suggests a strong correlation between extracurricular involvement and enhanced employability, additional research is necessary to fully understand its long-term effects. This study has significant implications for policymakers and educators in higher education, emphasizing the necessity of integrating extracurricular programs to bolster students' job readiness.

Keywords- ***Employability Skills, Extracurricular Activities, Higher Education, Leadership, Work Readiness.***

Introduction-

In today's competitive job market, academic qualifications alone do not suffice to secure employment. Employers increasingly seek candidates with well-developed soft skills, including leadership, problem-solving, and communication. These competencies are often developed outside the traditional classroom environment through extracurricular activities such as student clubs, sports, volunteering, and internships. Participation in such activities provides students with real-world experiences that prepare them for professional environments.

Despite the growing recognition of extracurricular involvement as a key factor in employability, there remains a gap in the systematic implementation of these programs in higher education. This paper aims to review existing research on how extracurricular activities contribute to employability skills and outlines best practices that institutions can implement to enhance

students' work readiness.

Literature Review Research indicates that extracurricular engagement positively impacts students' overall skill development. Studies by Jones & Abels (2018) and Frenette & Frank (2017) demonstrate that students involved in extracurricular activities exhibit greater problem-solving abilities, adaptability, and leadership potential. However, the extent to which different activities contribute to employability skills varies, highlighting the need for structured program implementation.

A study by Johnson & Wang (2017) found that students participating in student government and debate teams improved their public speaking and decision-making skills, which are essential for leadership roles in organizations. Additionally, Pegg et al. (2012) emphasized the importance of integrating extracurricular engagement into formal education to create a holistic learning experience.

Other researchers highlight that participation in creative extracurricular activities, such as music, drama, and fine arts, can enhance cognitive flexibility, emotional intelligence, and innovation skills. These attributes are highly valued by employers seeking adaptable and innovative employees. Similarly, students engaged in community service and volunteer work develop a sense of social responsibility, cultural awareness, and empathy, which are essential in today's diverse workplaces.

Despite these benefits, challenges exist in ensuring equal access to extracurricular programs. Socioeconomic barriers, time constraints, and lack of institutional support can hinder students' participation, thereby limiting the effectiveness of these initiatives.

Best Practices in Extracurricular Skill Development To maximize the benefits of extracurricular activities, educational institutions should adopt structured approaches, including:

Providing leadership roles in clubs and student organizations – Encouraging students to take on leadership positions helps build decision-making, delegation, and team management skills.

Encouraging team collaboration through sports and group projects – Participation in team-based activities fosters interpersonal skills and the ability to work effectively with others.

Offering mentorship and feedback to students engaged in extracurricular programs – Mentorship from faculty and industry professionals enhances students' personal and professional growth.

Incorporating community service and internship-based experiences into academic curricula – Providing opportunities for students to apply their skills in real-world settings enhances practical knowledge and job readiness.

Developing structured assessment methods – Institutions should implement frameworks to assess the impact of extracurricular activities on students' skill development and employability.

Encouraging participation in interdisciplinary activities – Engaging students in cross-disciplinary initiatives fosters collaboration across different fields, improving problem-solving and creative thinking skills.

Discussion and Analysis While extracurricular activities provide a platform for skill development, institutions must strategically design these programs to maximize their effectiveness. Encouraging structured participation, assessing skill acquisition, and fostering industry-academia collaboration can further enhance employability outcomes.

Moreover, it is essential to address the barriers that limit student participation. Universities should introduce scholarship programs, flexible schedules, and digital platforms to make extracurricular activities accessible to all students. Additionally, partnerships between educational institutions and businesses can create internship and networking opportunities, bridging the gap between academic learning and

professional requirements.

A further issue to consider is the role of digital and online extracurricular activities. With the rise of remote work and virtual collaboration, students who engage in online hackathons, coding competitions, or digital content creation can develop crucial technological and communication skills. Universities should explore hybrid models of extracurricular engagement that allow students to gain practical experience both in-person and in virtual settings.

Challenges and Policy Recommendations -

Limited institutional support: Many institutions do not allocate sufficient resources to extracurricular programs. Universities should integrate these activities into academic credit systems to encourage participation.

Equity and accessibility: Low-income students may struggle to engage in extracurricular activities due to financial constraints. Scholarship programs and subsidies can help bridge this gap.

Assessment and accreditation: There is often no formal system to evaluate extracurricular achievements. Institutions should develop standardized metrics to recognize and reward students' participation in skill-building activities.

Industry engagement: Employers should be involved in designing extracurricular programs to align them with workforce expectations, ensuring students develop relevant skills.

Enhancing digital extracurricular engagement : Universities should integrate online platforms to enable students to participate in virtual extracurricular programs, ensuring greater accessibility and exposure to global networks.

Encouraging research and innovation-based extracurriculars: Institutions can promote student participation in research projects, business incubators, and innovation hubs to develop analytical, entrepreneurial, and technical skills.

Conclusion -

Extracurricular activities significantly contribute to skill development and employability enhancement. However, optimizing these programs through policy improvements, structured mentorship, and research-driven strategies is essential for ensuring long-term benefits. By fostering an environment where extracurricular activities are integrated with academic learning, institutions can better equip students with the competencies required to thrive in today's dynamic job market. Additionally, the future of employability will increasingly depend on students' ability to adapt to evolving professional landscapes. Thus, a continuous effort is required to refine extracurricular programs to align with emerging industry trends and workforce expectations.

References

1. Frenette, M., & Frank, K. (2017). The role of extracurricular activities in developing soft skills. *Analytical Studies Branch Research Paper Series*, (392), 1-31.
2. Jones, M., & Abels, K. (2018). Enhancing student employability through extracurricular engagement. *Journal of Career Development*, 45 (2), 12-25.
3. Johnson, R., & Wang, T. (2017). Extracurricular activities and their impact on student employability. *Higher Education Review*, 30(1), 20-35.
4. Pegg, A., Waldock, J., Hendy-Isaac, S., & Lawton, R. (2012). *Pedagogy for employability*. Higher Education Academy, UK.

ISSN : 2349-9273

Received: 08 April, 2024; **Accepted:** 09 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

The Real and Ideal World in the odes of John Keats

- Sanjai Kumar
Research Scholar-
Department of English,
Singhania University, Pacheri,
Jhunjhnu-333515 (Rajsthan)

E-mail:
sanjaitripathi.12@gmail.com

Research Superviser -
- Dr. Vijay Singh
Associate Professor -
Department of English,
Singhania University,
Pacheri, Jhunjhnu-333515
(Rajsthan)

E-mail:
vijaysu2007@gmail.com

Abstract

The research paper depicts the movement of the speaker between the real and the ideal world. John Keats is one of the greatest poets of the romantic era. Keats often associated love and pain both in life and in his poetry. He repeatedly combines different senses in one image. The vital force behind his poetry was his power to apply imagination to every aspect of life. The series of odes written by John Keats are heavily loaded with sensualities. Most of his odes move between the two worlds; the real world and the ideal world. The real world is where the poet actually lives in and the ideal world is what he desires to be. The structure of his odes explains how he restores the friendly relationship between natural and material world, even in pain. The article depicts how John Keats moves from real world to the ideal world in his Odes. In Ode to Psyche the speaker moves to the ideal world of mind and imagination. In Ode to a Nightingale and Ode on Grecian Urn the speaker returns to the real world because he finds the ideal dissatisfying. Finally in his last Ode, Ode to Melancholy the speaker remains in the real world. He longed for the ideal world but at the end he embraced the natural, finite world.

Key Words- ***Real and the Ideal world, sensuous appeal, friendly relationship, imagination.***

Introduction -

John Keats was a great English poet and one of the youngest poets of the romantic moment. John Keats was born in London on 31 October 1795, the eldest of Thomas and Frances Jennings Keats's four children. Although he died at the age of twenty-five, Keats had perhaps the most remarkable career of any English poet. He published only fifty-four poems, in three slim volumes and a few magazines. But over his short development he took on the challenges of a wide range of poetic forms from the sonnet, to the Spenserian romance, to the Miltonic epic, defining anew their possibilities with his own distinctive fusion of earnest energy, control of conflicting perspectives and forces, poetic self-

consciousness and occasionally, dry ironic wit. At the age of eight Keats entered Enfield Academy. He was not a shy, bookish child; Clarke remembered an outgoing youth, who made friends easily and fought passionately in their defence. At school, Keats drew closer to the headmaster, John Clarke, and his son, Cowden. He became, in fact, one of Clarke's favourite pupils, reading voraciously and taking first prizes in essay contests his last two or three terms. In some part this new academic interest was a response to his loneliness after his mother's death. But he had by then already won an essay contest and begun translating Latin and French. Keats's love for literature, and his association of the life of imaginations with the politics of a liberal intelligentsia, really began in Clarke's school. It was modelled on the Dissenting academies that encouraged a broad range of reading in classical and modern languages, as well as history and modern science; discipline was light, and students were encouraged to pursue their own interests by a system of rewards and prizes.

Keats found comfort and refuge in literature and art. The themes of Keats' works were love, beauty, joy, nature, music and the mortality of human life. Keats' diction is highly connotative. His writing style is characterized by sensual imagery and contains many poetic devices such as alliteration, personification, assonance, metaphors and consonance. All of these devices work together to create rhythm and music in his poems. Today his poems and letter remain among the most popular and analysed in English literature. In 1819, Keats composed six odes which are among his most famous and well-regarded poems. His odes move between the two worlds; the real and the ideal world. Ideal world is one every person has in mind and want to become. They have dreams which may be fulfilled or not depending on the circumstances prevailing. The real world is an entirely different storey, and it is based on events that occur on the ground. Ideal world is designed by a person in a way of comfort but the real-world deviates from the ideal sense depending on the local consequences. The ideal world is our expectation and the real world is actual. Keats has left behind a number of beautiful odes. The most prominent of them are *Ode to Psyche*, *Ode to a Nightingale*, *Ode on Grecian Urn*, and *Ode on Melancholy*. Through these odes, the poet describes the romance of Psyche, melodious songs of the Nightingale, Grecian art and the changing human moods. This article depicts how Keats moves from the real world to the ideal world in his odes.

Ode to Psyche -

Ode to Psyche is a tribute to the Greek Goddess Psyche with which cupid fell in love. He claims to have had a dream about her and cupid, but he isn't sure if it was a dream or a fantasy. In any case, it was a view of reality that may properly be described as a peak of Keats creative intensity, in which the real and the ideal, the factual and the fantasy all came together. The poet proposes to become her priest, to construct her a shrine in the depths of his mind, to adorn her with flowers of verses, and to let his imagination be the gardener of that metaphorical garden of spiritual love, where the breeze and streams, birds and bees will soothe the dryads to sleep. The poet's fancy will produce an endless variety of flowers which means verses.

His creative imagination is even more fertile than an ordinary garden. Such a garden which is the fountain of imagination will be left open for the deity forever. The goddess for whom this temple is being built is transported from her natural state of unreality into the realm of fantasy. The goddess, her temple, and her garden are all clear in the minds' eye but only exist in the imagination. Those who do not comprehend the myth's meaning may accuse it of anthro-pomorphism, but the significance rests in our realisation and experience of the ideal, spiritual, and imaginative phenomena.

His fancy will be the gardener and his verses will be the flowers in the garden. He has projected about his dreams and wishes while universalising the issue. He has worked his way through a

theoretical acceptance of the value of vivid and imaginative experience. His intention is to glorify the imagination which is a means of approaching the immortal world by breaking through the bounds of the transient and the finite.

Ode to a Nightingale -

Ode to a Nightingale reveals the highest imaginative powers of the poet. The song of the nightingale moves from the Poet to the depth of his heart and creates numbness. When he hears the song, he is embraced by the sweetness of his joy and becomes so excessive that it changes into a kind of pleasant pain. He is filled with a desire to escape from world of caring to the world of beautiful place of the world. Keats immortalizes the bird by thinking of the race of it as the symbol of universal and undying musical voice. This universal and eternal voice has comforted human beings embittered by life and tragedies by opening the casement of the remote, magical, spiritual, eternal and ideal.

The poet is longing for the imaginative experience of an imaginatively perfect world. He is trying to escape from the reality and experience the ideal rather than complement one with the other. Keats develops a dialectic by partaking both the states- the fretful here of man and the happy there of the nightingale and serves as a mediator between two. He makes imaginative flight into the ideal world but accept the realities of life despite its fury. Keats soars high with his wings of poesy into the world of ideas and perfect happiness. But the next moment consciousness makes him land on the grounds of reality and he bids farewell to the ideal bird. In fact, no one can escape into the ideal world forever. Imaginative minds can have a momentary flight into the fanciful world. But ultimately one has to return to the real world and must accept the reality.

Ode on a Grecian Urn-

Ode on Grecian urn is an ode in which the speaker addresses his feelings and ideas about the experience of an imagined world of art, in contrast to the reality of life, change and sufferings. This is a romantic poem mainly because of its dominant imaginative quality. The ode of Grecian urn expresses Keats' desire to belong to the realm of the eternal, the permanent perfect and the pleasurable, by establishing the means to approach that world of his wish with the help of imagination. This ode is based on the tension between the ideal and the real. Keats here idealizes a work of art as symbolizing the world of art which represents the ideal world of his wish at an even deeper level. Then he experiences that world is created through imagination. Keats' fascination with the immortality of art is duly counterbalanced with his awareness that it is lifeless. The world of reality and of imagination are explicitly contrasted in this ode.

Keats indicates a contrast between the unchanging 'Urn' and temporal life in the very beginning of the poem but shifting to the other side from where he seems to prefer warm life against the 'cold pastoral' where he finally resolves the duality in his doctrine of beauty and truth. The permanently ideal world that is presented in the urn is lifeless thing when seen from the viewpoint of real life. The real life is complemented and enriched by their ideal.

The poet is seeking for the reality of life to be like that of the ideal world. He is trying to establish the world of his wish with the help of imagination. The poem begins with an address to the Grecian Urn and with almost envious amazement but it ends with the realization that beauty or ideal is also a dimension of the truth of the real.

Ode on melancholy -

One of Keats' greatest insights into the nature of human experience is his *Ode on melancholy*. In this poem, the two conflicting domains of experience manifest as joy and melancholy. The poem has an abrupt beginning which reads like a conclusion after a long mental conflict of the speaker. The conflict has brought the speaker to face a resolution where he begins by declaring his understanding of the dialectics. The general idea of the poem is that sadness is to be

found not in the ugly and painful things of life but in the beauty and pleasures of the world. Logically true happiness would also be found in contemplating the ugly and the painful things. Keats seems to be preoccupied with the idea of seeking a heavy dose melancholy but he finds both problem and remedy in the same object. The remedy for the melancholy for common people would be something that makes them unconscious of sadness and pain. To experience true melancholy, one must stimulate all senses and only more consciousness can make us experience true melancholy and tragedies of life. In this way he has suggested the reader to seek sensuous stimulants of joy to realise how objects of pleasure lead us naturally into the anguish of the 'soul' through the tragic consciousness of their transience. The originality in Keats conception lies in the simultaneity of perception.

Keats finds the solution in his own principle of binaries and propounds the idea of simultaneous understanding and experience that completes the whole of reality. Keats believes that the natural world is the only one, mortals can access and there is no escape from melancholy.

Conclusion -

Keats came to learn that the kind of imagination he pursued was a false lure, inadequate to the needs of the problem and in the end; he traded the visionary for the naturalized imagination and embracing experience. Keats imagination is a means to understand life, a means of quest for the truth and beauty and the most reliable mode of experience and insight. *Ode to Psyche* suggests that Keats longs for the ideal and rejects the natural world. In *Ode to a Nightingale* the poet joins the nightingale and thereby escapes from the suffering and the pain of the world. But later he drives away the nightingale in order to prolong his sympathetic grip on the natural world. In *Ode on a Grecian Urn* the everlasting world of the urn is full of desirable life and passion without any suffering and aging. But the speaker has returned to the more sufficient, finite world, resigned now to embrace the natural beauties. In *Ode on Melancholy*, he urges the reader not to search after the idealistic world but rather to seize and experience the beauty of the transient natural and human world. Keats attitude towards the world is reflected in this article that he no longer desires to escape to the perfect world but desires to live fully in the natural one.

References

1. Cox, Jeffrey. *Keats's Poetry and Prose : A Norton Critical Edition*. London : Norton, 2009. Mental sensation : An Analysis of Keats's Odes - Dawson English Journal.
2. https://www.dawsonenglishjournal.ca / article / mental - sensations - an - analysis - of - keatss - odes.
3. Sharma, K. N. "Ode on a Grecian Urn by John Keats : Summary and Analysis." BachelorandMaster, 11 Nov., 2013.
4. bachelorandmaster.com/britishandamericanpoetry/ode - on - a - grecian -urn.html.
5. Shrestha, Roma. "Ode on Melancholy by John Keats: Summary and Analysis." Bachelor and Master, 2 Aug. 2017.
6. bachelorandmaster.com / britishandamericanpoetry / ode - on - melancholy. html.
7. Shrestha, Roma. "Ode to a Nightingale by John Keats: Summary and Analysis." BachelorandMaster, 11 Nov. 2013.
8. bachelorandmaster . com / british and american poetry / ode - to - a - nightingale.html.
8. Stillinger, Jack. *Twentieth - Century Interpretations of Keats' Odes : A Collection of Critical Essays*, Englewood Cliffs, New Jersey : Prentice-Hall, 1968.
9. "The Real and Ideal in Keats's Odes." Augustine Collective, http://augustinecollective.org › the-real - and - ideal.
10. "The relation between the real and the ideal in the odes of John Keats, " http://repository . bilkent . edu.tr / handle / 11693 / 17189.

ISSN : 2349-9273

Received: 16 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

A Study of Stock Market Theories

- Dr. Vijay Kumar Gupta
Assistant Professor -
Department of Commerce,
Ram Sahai Government Degree College, Shivrajpur,
Kanpur - 209205 (U.P.)

Email:
vijaykumargupta530@gmail.com

Abstract

A detailed analysis of return-volume dynamics is important to gain a proper understanding of issues relating to market efficiency, information flows in the market and microstructure in the market. The purpose of the current study is to shed light on various theoretical models for the relationship between returns, volume and volatility in both a contemporaneous and causality framework to improve the understanding of the microstructure of the stock market. This study will enhance our understanding of market asymmetry, market efficiency and information processing inthe stock market.

Introduction-

Returnand trading volume are two prime indicators of trading activity in a stock exchange, jointly determined by the same market dynamics and may contain valuable information about a security. Most empirical research on stock markets focuses on stock price movements over time, which reflects investors' expectations about the future prospects of the firms. New information causes investors to change their expectations and is the main reason for stock price changes (Fama1970).

Prices and trading volume build a market information aggregate out of each new piece of information. Unlike stock price behavior, which reflects the average change in inestors' beliefs due to the arrival of new information, trading volume reflects the sum of investors' reactions. Differences in the price reactions of investors are usually lost by averaging of prices, but they are preserved in trading volume. In this sense, the observation of trading volume is an important supplement of stock price behaviour. They observed that stock prices are noisy which can't convey all available information to the market dynamics of stock prices and trading volume. Therefore, studying the joint dynamics of stocks prices and trading volume improves the understanding of the microstructure of stock markets.

In literature, we have observed two types of relationships between return and volume:contemporaneous and causal relationships. The contemporaneous relationship between return and volume reveals information about asymmetry of trading

volume in the market. The contemporaneous relationship between volatility (absolute return) and volume reveals information arrival patterns and observations about quality and dispersion of such information. Majority of empirical evidences in financial literature support the positive relationship between volume and volatility (absolute return). In contrast to contemporaneous relationship, analysis of dynamic (causal) relationship between return and volume, which entails an examination of potential causality from past values of volume to present returns, as well as from past returns to present volume, is concerned with issues relation to information efficiency of the market. An indication of causality from past values of volume to returns violates assumptions of the weak-form efficiency hypothesis, since it carries the implication that an investor is able to make systematic profits. Further, causal relationship between volatility and volume can help to discriminate between different hypotheses about market structure.

Thus, keeping in mind the great need for investigating the contemporaneous and causal relationship between returns, volume and volatility, the current study attempts to explore theoretical explanations for the existence of relationships between returns, volume and volatility, which would surely strengthen the researchers in the empirical investigation of relationship between these dynamics. This paper has been organized into 3 sections. Section 1 discusses the importance of relationships. Section 2 provides various theories on contemporaneous and causal relationships. Section 3 concludes the paper.

1. Importance of Price-Volume Relationship-

Return-volume dynamics are of great interest as they may unearth dependencies that can form the basis of profitable trading strategies, and this has implications for market efficiency. Karpoff (1987) has cited four reasons for discussing price-volume relations. First, it provides insight into the structure of financial markets, such as the rate of information flow to the market, how the information is disseminated, the extend to which market prices convey the information and the existence of short sales constraints. Empirical relations between prices and volume can help differing hypotheses about market structure.

Second, the relationship between price and volume is important for event studies that use a combination of price and volume data from which to draw inferences. It means that this relationship can be used to examine the usefulness of technical analysis. If price changes and volume are jointly determined, incorporating the price-volume relation will increase the power of these tests. For example, Richardson et al., (1987) examined trading volume and price changes to tests for the existence of dividend clientele. Thus, the construction of tests and the validity of the inferences drawn depend on the joit distribution of price changes and volume (Karpoff 1987).

Third, the price-volume relation is critical to the debate over the empirical distribution of speculative prices. When sampled over fixed calendar intervals, rates of return appear kurtotic compared to the normal distribution. Two competing hypothesis to explain this are (1) rates of return are best characterized by a member of a class of distributions with infinite variance (the stable partisan hypothesis), and (2) the distribution of rates of return appear kurtotic because the data is sampled from a mixture of distributions that have differnet conditional variances (the mixture of distribution hypothesis). Price-volume tests generally support the mixture of distribution hypothesis. Price data are generated by a conditional stochastic process with a changing variance parameter that can be proxied by volume. Knowledge of price-volume relation can then be used in event studies to measure changes in the variance of the price process from non- event to event time.

Some researchers, have investigated the

role of speculation to price volatility (stabilizing or destabilizing), where speculation is closely related to trading volume. Finally, as Cornell (1981) pointed out, the volume-price variability relationship may have important implications for fashioning new contracts. A positive volume-price variability relationship means that a new future contract will be successful only to the extent that there is enough price uncertainty associated with the underlying asset.

Thus, a good understanding of the relationship between price and volume has significant implications for regulators, hedgers, speculators and other participants in the market. An empirical examination of contemporaneous and inter-temporal relationships between volume and (signed and unsigned) returns may reveal valuable information on different aspects of the dynamics and informational efficiency in equity market.

Therefore, the purpose of the current study is to shed light on various theoretical models for the relationship between return, return volatility and trading volume in both a contemporaneous and linear causality framework to improve the understanding of the micros-tructure of the stock market. The study will enhance our understanding of market asymmetry, market efficiency and information processing in the stock market.

2- Relationship between Returns, Volatility and Trading Volume: Theoretical Framework-

Stock prices change when new information arrives. Thus, if the trading volume is linked to the information flow entering the markets, a relation of price-volume is obtained. Therefore, theoretical explanations mostly correspond to different views of volume related to the information flow. Most of the research has concentrated only on the study of contem-poraneous relationship between return and volume. Only a few studies have examined the dynamic relationship between return and volume. Different schools of research have constructed different theoretical models to explain contemporaneous and dynamic relationships, which are further sub-divided into two stylized facts viz. (a) return per se and volume (b) return volatility and volume.

2.1- Theories of Contemporaneous Relationship between Return, Voatility and Volume-

The various theoretical models developed to explain contemporaneous relationships are given below -

☛ **Short-Selling Constraint Model-** The positive contemporaneous correlation between volume and return per se in the stock market could be explained by the existence of a short-selling constraint, in the form of either a prohibition or differential cost of taking short and long position. The key innovation is that short positions are possible but are more costly than long positions, which implies that the quantity demanded of an investor with a short position in less responsive to price changes than the quantity demanded of an investor with a long holding. Consequently, market activity (trading volume) differs with the direction of price movement, that is, the level of volume associated with a price rise is higher than that associated with a price fall.

☛ **The Supply and Demand Model-** Crouch (1970) employed the basic supply and demand model to explain the positive relationship between volume and absolute return. Starting from the initial position of equilibrium, a price change occurs due to the change in demand. The related adjustment induces transactions to react to the change in demand until a new equilibrium is reached. Thus, trading volume increases as price changes, regardless of the direction of the changes.

☛ **Differences of Opinion Model-** Models of heterogeneous trader behaviour assess the availability of different types of information or the existence of differing beliefs concerning the importance of information. Greater dispersion of beliefs creates excess price variability and excess volume, compared to the equilibrium value. A

greater dispersion of beliefs is a lack of consensus about the true price that should result from revealed information. In particular, Shalen's model associaesvolatility with uninformed traders' dispersion of beliefs, incorrectly formed in response to the noisy liquidity demand of hedgers. This dispersion of beliefs model is relevant for comparing how informed and uninformed traders react to information.

Informed traders have relatively homogeneous beliefs, which they base on their knowledge of the market and the fundamental characteristics of the asset. Thus, informed traders buy and sell within a relatively small range of prices around the fair value of the asset. Uninformed traders cannot observe the transaction of other traders to help them interpret the noisy signals from volume and price changes, resulting in a wider dispersion of beliefs. Therefore, uninformed traders are likely to react to all changes in volume and price as if these changes reflect information, despite their difficulty in differentiating short-term liquidity (hedging) demand from changes in overall fundamental supply and demand. Uninformed traders' frequent revision of their beliefs can also cause the price fluctuations resulting from their trading to disappear more slowly than those of informed investors after new information is revealed. Whostate that traders overreact to one another's trades. Therefore, less informed traders tend to exaggerate price movements, which result in a greater price variability.

However, traders differ in the way in which they interpret this information, and each trader believes absolutely in the validity of his interpretation. They refer to this as the assumption that traders have differences of opinion, and assume that traders start with common prior beliefs about the returns of a particular asset. As information about the asset becomes available, each trader uses his own model of the relation between the news and the asset's returns to update his beliefs about returns. Thus, the Harris and Raviv model predicts that absolute price changes and trading volume are positively correlated.

☛ **The Information Asymmetry Mode-** Wang (1994) claimed that investors are heterogeneous in their information and private investment opportunities. As the asymmetry of information increaes, uninformed investors require a higher discount in price when they buy contracts from informed investors to cover the risk of trading against private information. Therefore, trading volume is always positively related to absolute returns and the correlation increases with the level of information asymmetry.

☛ **Market Microstructure Mode-** The theory of market microstructure suggests that price movements depend on the arrival of new information and the process that impounds this information into market prices. During the trading period, informed traders may arrive at the market with private information regarding the value of an asset. This private signal presents a profitable opportunity to trade at dealers' existing qoutes not yet reflecting this new information. The arrival of new private information induces a sequence of trades that reveal the pricing implication of the unannounced information. This dynamic process of incorporating private information into market price simultaneously affects price movement and trading volume (Chunchi and Xiaoqing, 2000). Consequently, a contemporaneous correlation between return volatility and volume is observed.

2.2- Theories of Causal Relationship between Return, Volatility and Volume-

Causality investigates whether the past of a one time series improves the forecast of the present and future of another time series. Testing for causality help to better understand the micro-structure of stock markets and can also have implications for other markets (e.g. options markets). The various theoretical explantions that predict a vausal relationship between return, return volatility and volume are given below-

☛ **Informational Role of Volume and its Applicability for Technical Analysis -** Another model to investigate the informational role of volume and its applicability for technical analysis. According to this model, prices are noisy and traders cannot obtain the full information signal from price alone. Aggregate supply is fixed and traders receive signals of differing quality. They showed that volume provides information that cannot be detected from price alone and demonstrate how sequences of volume and prices can be informative. Therefore, current trading volume can be used to predict future price movements.

☛ **Tax and Non-Tax Related Motives for Trading -** Tax and non-tax related motives for trading are another explanation for dynamic relation. Tax-related motives are associated with the optimal timing of capital gains and losses realized during the calendar year. Non-tax related motives include window dressing, portfolio rebalancing and contrarian strategies. Lakonishok and Smidt (1989) show that current volume can be related to past stock price changes due to tax and non-tax related trading motives. The dynamic relation is negative for tax-related trading motives and positive for certain non-tax related trading motives.

☛ **The Noise Trading Volume-** The relationship of causality between return and trading volume can also be explained by the noise trading volume. In this model, noise traders are associated with excess volatility and can dominate a market. Their activities are not based upon economic fundamentals and therefore result in a temporary mispricing in the short run. The price, however, reverts to its mean value in the long run because of the disappearance of the trasitory component. Hence, the positive causality relationship running from return to volume is consistent with the positive feedback trading strategy of noise traders who trade on the basis of past price changes. Moreover, the positive causality relationship from volume to return is consistent with the hypothesis made in this model that price change is caused by the trading strategies/ actions of noise traders.

☛ **Sequential Information Arrival Hypothesis-** This hypothesis suggests the gradual dissemination of information such that a series of intermediate equilibria exists. In other words, new information is disseminated sequentially to traders, and traders who are not yet informed cannot perfectly infer the presence of informed trading. Consequently, the sequential arrival of new information to the market generates both trading volume and price movements, with both increasing during periods characterized by numerous information shocks.

☛ **The Mixture of Distribution Hypothesis-** The relationship between volume and absolute returns helps reveal particulars about information arrival, processing procedures and observations about the quality and dispersion of such information. One leading hypothesis in order to explain this relationship is the mixture of distributions hypothesis. The mixture of distribution hypothesis (MDH) implies only a contemporaneous relationship between volume and price volatility because they jointly depend on the rate of information flow to the market. Thus, under the MDH, there shoule be no information content in past volatility data that can be used to forecast volume (or vice-versa) since these variables contemporaneously change in response to the arrival of new information. Under the MDH, asset prices are modelled as a subordinate stochastic process with prices evolving at different rates during identical intervals of time according to the flow of informatin and evolving faster when unexpected information flows into the market. The interpretation of volume as a proxy for the unobservable directing process thus explains the observed positive correlation between the variance of price changes and volume. Further, volatility persistence in return series can also be explained by

MDH. Using trading volume as a proxy for the rate of daily information arrival, volatility persistence vanishes under the presence of trading volume series in the conditional variance equation of GARCH model.

☛ **Rational Expectations Asset Pricing Model-** Speculative trading stems from disagreements among traders over the relationship between the announcement and the ultimate performance of the asset in question. Such disagreements can arise either because speculators have different private information or because they simply interpret commonly known data differently.

Rational expectations model generates disagreement through private information. This model generally involves trading among privately informed traders, uninformed traders and liquidity or noise traders.

Wang (1993) developed an equilibrium model of stock trading inwhich investors are heterogeneous in their information and private investment opportunities and rationally trade for both informational and non – informational reasons. He used the model to study the behavior of stock trading volume and its relationship with returns and observed that different heterogeneity among investors gives rise to different trading volume beavior and return-trading volume dynamics. This implies that trading volume conveys important information about how assets are priced in the market.

3. Conclusion-

It is widely acknowledged in financial literature that trading in asset markets is mainly induced by the arrival of new information and the subsequent revisions of expectations by investors. Trading volume can therefore be thought to reflect information about changes in investors' expectations (Mcmillen and Speight, 2002). Thus, the major motivation for this study came from the fact that the trading volume plays a central role in the pricing of financial assets through the arrival of new information.

Hence, an interesting question arises how trading volume is related to price movements in the stock markets. Various flavors of the return-volume relationship are present in financial litereature. Based on the above, it can be conlcuded that financial literature has documented the various theoretical models of the price-volume relationship especially in developed stock markets. In this way, the current study summarizes various theoretical models on return, volume and volatility relationship, which will support the empirical evidences of researchers on the existence of this relationship.

References

1. Mcmillen D and Speight, A (2002). Return Volume dynamics in UK Futures, Appklied Financial Economics, Vol. 12 (I) 707-713.
2. Fama E D (1970). Efficient Capital Market: A Review of Theory and Emparical Work, The Journal of Finance, Vol 25(2).
3. Richardson M. and Smith (1997). A Direct Test of the Mixure and Distribution of the Hypothesis: Measuring the Daily Flow of the Information, The Journal of Financial and Quantitative Analysis Vol 29 .
4. Karpoff, J.M. (1987). The Relation Between the Price Changes and Trading Volume: A Survey, The Journal of Financial and Quantitative Analysis Vol 22 (1).
5. Cornell V (1981). The Relationship BetweenVolume and Price Variability in Future Market, The Journal of Future Market Vol 1 (3).
6. Wang J. (1993). A Model of Inter Temporal Assets Prices Under Asymmetries Information, Review of Economic Studies, Vol 60 .
7. Crouch R. L. (1970)The Volume of Transaction and Price Changes on the NewYork Stock Exchange, Financial Analysts Journal, Vol 26(4).

ISSN : 2349-9273

Received: 14 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

The Importance of Forestry in Environment : A Review

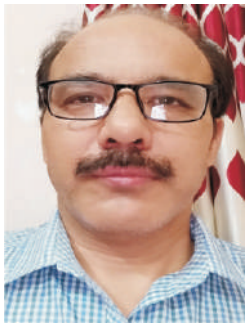

- Dr. Sunil Kumar Mishra
Assistant Professor -
Department of Chemistry,
D. A. V. College, Kanpur-208001 (U.P.)

E-mail:
drsunilkumarmishra9@gmail.com

Abstract

Forests are hugely important for life on earth. This is because it serves as an ecosystem and sustains life for millions of animals and birds that live in the rivers and streams running through these forests. It also does a lot of good to the atmosphere in climate control, as well as supplying oxygen for human substance. There is more to forests than just a massive collection of trees. It is a natural, complex ecosystem, made up of a wide variety of trees that support massive range of life forms. Forestry is the study of this complex interaction, the management of the various components of the forest, the preservation of its natural balance as well as the care of it to ensure its wellbeing. Forests and biodiversity is key to all life forms. The richer the diversity of life, the greater the opportunity for medical discoveries, economic development and adaptive responses to such new challenges as climate change. The most important points in forest preservation called TREES which means ……

Teach others about the importance of the environment and how they can help save rainforests. Restore damaged ecosystems by planting trees on land where forests have been cut down. Encourage people to live in a way that doesn't hurt the environment. Establish parks to protect rainforests and wildlife. Support companies that operate in ways that minimize damage to the environment.

Introduction -

The word **"Forest"** is derived from **latin word** for is meaning **outside the village boundary or away from inhabited land.** Ecologically, it is defined as plant community, predominantly of trees and other woody vegetation, usually with a closed canop.Legally; forest is an area of land proclaimed to be a forest under a forest law.

Forest is a type of Habitat or Biome which has high density of trees. The FAO (Food and Agriculture Organization) defines Forest as a land with Tree crown cover (or equivalent stocking level) of more than 10% and area of more than 0.5 hectare. The Forest is in fact a complex ecosystem with distinct interrelationships of non living organism (the plants, animals,

micro-organisms) and the non- living, inorganic or abiotic part (soil, climate, water, organic debris, rocks) of an environment. Forests can develop wherever there is an average temperature greater than about 10^0 C in the warmest month and an annual rainfall in excess of about 200 mm annually. Forests houses over two-thirds of known terrestrial Species of the world. There are various types of forest of which the Tropical Rainforests are located at latitudes of 10^o north and south of the equator and the latitudes between 53^o N and 67^o N have Boreal Forests, Over 30% of the Earth's surface is covered with forests in modern times where as once they covered 50% of total surface of the World. This has happened mainly because of deforestation caused by human need for wood, food, housing etc.

Environmental activist consider forests as one of the top 5 natural resources on earth. This is rightly so, and today, we shall look at how wonderful our forests are to us, and why we should immediately stop its destruction.

There is more to forests than just a massive collection of trees, that support a massive range of life forms. Quite apart from trees, forests also include the soil that support the trees, the water bodies that run through them and even the atmosphere around them. Forests of the world are being natural wonder that humans have sadly taken for granted.

Forests come in many sizes and forms. For example, piece of land with huge trees and water bodies running though it in a part of Kenya can be called a forest. A good example is the **Amazon Rain Forest**.

"The term we use to describe the variety of living things, animals and plants, their living environments called **'Biodiversity'**. It is believed that the Amazon Forest has the widest biodiversity."

Types of Forests and Classification -

Forests grow in area of abundant precipitation. They can maintain themselves even in area of relatively low rainfall, provided this is distributed with sufficient uniformity. In considering the availability of moisture to the plants, the nature of soil and the mount of transpiration must also be taken into account.

Forests have been classified in different ways. They have been classified according to the Biomes in which they exist, combined with leaf longevity of the dominant species i.e. whether they are evergreen are deciduous. The forests are composed predominantly of Brood- leaf trees, coniferous (needle-leaved) trees or mixed.

1. UNEP-WCMC Classification-

United Nations Environment Programme - World Conservation Monitoring Centre divides the world's Forests into 26 major types, which reflect climatic zones as well as the principal types of trees. These 26 forests categories are used to enable the translation of forest types from national and regional classification systems to a harmonized global one.

Temperate and Boreal Forest types-

1. Evergreen Needle leaf Forest-Natural forest with is greater than 30% canopy cover, in which the canopy is predominantly (is greater than75%) Needle leaf and Evergreen.

2. Deciduous Needle leaf forest-Natural Forest with is greater than30% canopy is predominantly (is greater than75%) Needle leaf and deciduous.

3. Mixed Broadleaf / Needle leaf forest-Natural forest with is greater than30%canopy cover, in which the canopy is composed of a more or less even mixture of Needle leaf and Broadleaf crowns(between50:50% and 25:75%)

4. Broad leaf Evergreen Forest-Natural Forests with is greater than30% canopy cover, the canopy being is greater than75%evergreen and broadleaf.

5. Deciduous Broadleaf Forest- Natural Forests with is greater than30% canopy cover, in which is greater than75% of the canopy is deciduous and broadleaves predominate (75% of canopy cover).

6. Fresh water Swamp Forest Natural Forests with is greater than30% canopy cover, composed of Trees with any mixture of leaf type

and seasonality ,but in which the predominant environmental characteristic is a water logged soil.

7. Sclerophyllous Dry Forest- Natural Forest is greater than30% canopy cover, in which the canopy is mainly composed of sclerophyllous Broadleaves and is 75% ever green.

8. Disturbed Natural Forest- Any forest type above that has in its interior significant areas of disturbance by people, including clearing, feeling for wood extraction, anthropogenic fires, road construction etc.

9. Sparse Trees and Parkland Natural Forests in which the tree canopy covers is between 10 30%, such as in the steppe regions of the world. Trees' of any type (e. g., needle leaf, broadleaf, palms).

10. Exotic Species Plantation Intensively managed Forest with is greater than 30% canopy cover which have been planted by people with species that occur naturaly occurring in that country.

11. Native Species Plantation Intensively managed forests with is greater than 30% canopy cover, which have been planted by people with species occur naturally in that country.

Tropical Forest Types-

12. Lowland Evergreen Broadleaf Rain Forest Natural Forest with 30% canopy cover, below 1200m altitude that display little or no seasonality, canopy being is greater than 70% evergreen broadleaf.

13. Lower mountain forest Natural Forest with 30% canopy cover, between 1200 1800m altitude, with any seasonality regime and leaf type mixture.

14. Upper Mountain Forest Natural Forest with is greater than 30% canopy cover, above 1800 m altitude, with any seasonality regime leaf type mixture.

15. Freshwater Swamp Forest Natural Forests with greater than 30% canopy cover, below 1200m altitude, composed of trees with any mixture of leaf types and seasonality, but in which the predominant environmental characteristic is a waterlogged soil.

16. Semi evergreen Moist Broadleaf Forest Natural Forest with is greater than 30% canopy cover, below 1200m altitude in which between 50-75% of the canopy is evergreen , is greater than 75% are Broadleaf Crowns (between 50:50% and 25:75%).

17. Mixed Broadleaf/Needle Leaf Forest- Natural Forests with is greater than 30% canopy cover, below 1200m altitude, in which the canopy is composed of a more or less even mixture of needle leaf and Broadleaf crowns (between 50:50 percent and 25:75%).

18. Needle Leaf Forest Natural Forest with is greater than 30% canopy cover, below 1200m altitude, in which the canopy is predominantly (is greater 75%) Needle Leaf.

19. Mangroves Tree Natural Forests with is greater than 30% canopy cover, composed of Species of mangrove tree, generally along coasts in or near brackish or salt water.

20. Disturbed Natural Forest Any Forest type above that has in its interior significant areas of disturbance by people, including clearing, felling for wood extraction, anthropogenic fires, road construction etc.

21. Deciduous / Semi Deciduous Broadleaf Natural Forests with is greater than 30% canopy cover, below 1200m altitude in which between 50-100% of the canopy is deciduous and broad leaves predominate (is greater than 75% of canopy cover).

22. Sclerophyllous Dry Forest Natural Forest with is greater than 30% canopy cover, below 1200m altitude, in which the canopy is mainly composed of sclerophyllous Broadleaves and is greater than 75% evergreen.

23. Thorn Forest Natural Forest with is greater than 30% canopy cover, below 1200m altitude, in which the canopy is mainly composed of deciduous Trees with thorn and succulent phanerophytes with thorns may be frequent.

24. Sparse Trees and Parkland Natural Forest in which the Tree canopy covers is between 10-30% such as in the savannah regions of the world. Trees of any type (e.g., Needle Leaf,

Broadleaf, Palms).

25. Exotic Species Plantation Intensively managed Forest with is greater than 30% canopy cover, which have been planted by people with species not naturally occurring in that country.

26. Native Species Plantation Intensively managed Forests with is greater than 30% canopy cover, which have been planted by people with species that occur naturally in that country.

These 26 major types can be reclassified into 6 broader categories-

(i) Temperate Needle Leaf- Temperate Needle leaf Forest cover a larger area of world than any other Forest types. They mostly occupy the higher latitude regions of the northern hemisphere, as well as high altitude zones and some warm temperate areas, especially on nutrient-poor or otherwise unfavourable soils, these forests are composed entirely, or nearly so, of coniferous Species (Coniferophyta). In the Northern Hemisphere pines Pinus, spruces Picea, larches Larix, silver firs Abies, Douglas firs Pseudotsuga and hemlocks Tsuga, make up the canopy, but other taxa are also important. In the southern hemisphere most Coniferous Trees, members of the Araucariaceae and podocarpaceae, occur in mixture with Broadleaf Species that are classed as Broadleaf and Mixed Forests.

(ii) Temperate Broadleaf and Mixed- Temperate Broadleaf and mixed Forests, which include a substantial component of trees in the Anthophyta, cover over 6.5 million km^2 of the earth's surface. They are generally characteristics the warmer temperate latitudes, but extend to cool temperate ones, particularly in the southern hemisphere. They include such Forest types as the mixed Deciduous Forests of the USA and their counterparts in China and Japan, the broadleaf evergreen rain Forests of Japan, Chile and Tasmania. The Sclerophyllous Forests of Australia, the Mediterranean and California, and the southern beech Nothofagus Forests of Chile and New Zealand.

(iii) Tropical Moist- Tropical Moist Forests cover more than 11 million km^2 of the humid tropics and include many different forest types. The best known and most extensive are the Lowland Evergreen Broadleaf Rainforests, which make up over half this area and include, for example: the seasonally inundated varzea and igapo forests and the terra Forests of the Amazon Basin; the Peat Forests and moist dipterocarp Forests of Southeast Asia; and the high Forests of the Congo Basin. The Forests of Tropical mountains are also included in this broad category, generally divided into upper and lower Montane formations on the basis of their physiognomy, which varies with altitude. The Montane Forests include cloud Forests, those Forests at middle to high altitude, which derive a significant part of their water budget from cloud, and support a rich abundance of Vascular and Non-Vascular Epiphytes. Mangrove Forests also fall within this broad category, as do most of the Tropical Coniferous Forests of Central America.

(iv) Tropical Dry- Tropical dry Forests are characteristic of areas in the tropics affected by seasonal drought. Such seasonal climates characterize much of the tropics, but less than 4 million km^2 of tropical dry Forests remain. The seasonality of rainfall is usually reflected in the deciduousness of the forest canopy, with most Trees being leafless for several months of the year. However, under some conditions, e.g. less fertile soils or less predictable drought regimes. The proportion of evergreen Species increases and Forests are characterized as "sclero-phyllous". Thorn Forest, a dense Forest of low stature with a high frequency of thorny or spiny Species, is found where drought is prolonged. And especially where grazing animals are plentiful. On very poor soils and especially where fire is a recurrent phenomenon, Woody Savannas develop.

(v) Sparse Trees and Parkland- Sparse Trees and Parkland are Forests with open canopies of 10-30% crown cover. They occur principally in areas of transition from Forested to non- Forested landscapes. The two major zones in which these ecosystem occur are in the boreal region and in the

maintain a continuous closed Forest cover, so Tree cover is both sparse and discontinuous. This vegetation is variously called open Taiga, Open Lichen Woodland, and Forest Tundra. It is Species- poor, has high bryophyte cover and is frequently affected by fire.

(vi) Forest Plantations- Forest plantation, generally intended for the production of timber and pulpwood increase the total area of Forest worldwide. In 1999 FAO has estimated that total plantation area in developed countries is about 600,000 km^2 and in developing countries. It is about 550,000 km^2 commonly mono-specific and/or composed of introduced tree species. These ecosystems are not generally important providers of ecosystem services such as maintaining nutrient capital, protecting watersheds and soil structure as well as storing carbon. They may also play an important role in alleviating pressure on natural Forests for timber and fuel-wood production.

(2) WWF (World Wide Fund for Nature)-Classification

Basic Classification-

Tropical Rain Forest- These types of forests are characterized by their location near the equator. This is often referred to as 'equatorial forest'. They have year round high temperatures and abundant rainfall which makes them a dense and lush with vegetation. They are vital store houses of biodiversity on the planet.

It has the following major characteristics-

(1) The characteristics of the vegetation are its rank abundance.

(2) The forest is almost impenetrable.

(3) The trees being interlaced with climbing plants of all kind.

(4) Since seasonal changes are scarcely noticeable, there are no special times of following, fruiting or seeding.

(5) Plants and even parts of plants, rest when it seems good to them, while others are in one or another of the different stages of vegetative activity.

Sub Tropical Forests-

These are found to the south and north of the Tropical Forests. The trees here are adapted to resist the summer drought.

In the northern hemisphere much of this broad leaved forest with representative formation in monsoon Asia, Central America and Europe. Here the broadleaved forests are almost entirely deciduous. The valuable timber of these forests is Aguru, sal, salin wood, Accacia catechu, Madhucaindica, hemlock, oaks etc.

Mediterranean Forests-

These forests are found to the south of the temperate regions around the coasts of the Mediterranean, California, Chile and Western Australia. The growing season is short and almost all Trees are evergreen, but mixed hardwood and softwood.

Over the Mediterranean region a special type of vegetation prevails, which is suited to a dry, hot summer, and includes trees and shrubs which are generally evergreen and small-leaved, that is why they are known as evergreen shrubs. It forms a transition between the tropical desert flora and the forests of the warm temperate regions. Grapes, oranges, figs and olives and typical products of the Mediterranean climate. Cotton is an important crop of this zone.

The Temperate Forests-

These forests are found in eastern North America, North eastern Asia, and western and eastern Europe. A green belt of forests occupies the cooler latitude of the North Temperate Zone, consisting of coniferous trees in the North and on the upper slopes of mountains, and of deciduous, shedding their leaves annually before winter so that they are known as temperate deciduous forests or warm temperate belt or Mesophytic forests. Typical examples are maple, oak, elm, bhojpattra, fig dilk-cotton trees, etc. There are well-defined season with a distinct winter and sufficient rainfall.

Coniferous Forests-

Coniferous forests are found in cold, windy region around the poles. The conifers are evergreen and structurally adapted to with stand the long

drought-like conditions of the long winters, whereas the Hard-Wood is Deciduous.

The coniferous forests form a complete ring round the northern continents, north of the region of sub-tropical and temperate steppe. Xerophytes trees mostly belong to this group, spruces, larches, cedars, cypresses, junipers etc. Their leaves are more or less needle-shaped and leathery.

General Characteristics of Forests-

Domination of Trees- Forests are mostly dominated by large plants like Trees. Some trees especially in Rainforests gain a lot of height to get more sunlight. Most of other plants face though competition from large plants as these tend to receive most of the nutrition from the environment. Some plants have evolved to become creeper and climbers to combat this competition. They climb over Trees to reach the sunlight as well.

Forests Canopy- Forests Canopy refers to the cover of Tall Forests. This top portion of a community of Trees or plant Crowns serves as the interface between the atmosphere and the land. The canopy is also the upper habitat for other biological organisms in Forests ecosystems. The structure of forests canopy varies from Forests to Forests because to the availability of nutrients, Trees arrangement and differences in biological species. The Forests canopy is an Ecosystem in itself as it supports a variety of life which is not found in the Forest itself.

Availability of good amount of water- Most of the forests receive sufficient rains to support the organisms which depend on it. It is only in dry season that these may face shortage of water. This rain water forms ponds and streams which supports further life forms like Plants and Animals.

Great Biodiversity- Forests are one of the major Habits which support a great biodiversity of life than any other Habitat. This is attributed to the easy availability of food and shelter. Scientists estimate that more than half of all the world's plant and animal species live in tropical Rainforests. A part of this diversity is the local tribal people who depend on the Forests for almost all their needs.

Forest Floor-The Forest floor is composed of fallen leaves, stems, twigs, branches and bark on the surface of the soil. A forest floor also contains organic substances. The Forest Floor is inhabited by various living organisms, such as the fungi bacteria and other micro-organisms as it is rich in nutrients and mineral continents. The Forest Floor has a significant role in the transfer of nutrients in the life cycle of the forest ecosystem. The leaves that fall on the Forest Floor keep on piling up. These leaves decompose over a period of time and provide essential nutrients which promote the growth of Trees.

Variation in Soil Fertility- The soil of Temperate Forest is fertile because Trees leaves drop to the ground every fall. This litter contributes to the layers of organic material found in forest soil. The old leaves become a source of food for bacteria and fungi. These organisms facilitate the breaking down of the leaves and other organic material. Decomposition enriches the Forest soil as it provides more nutrients to the living Trees and plants in the Forest ecosystem. However, the soil in tropical rain forests has poor quality of the torrential rains. The constant rain erodes and dissolves soil nutrients before the Trees can benefit from them.

Complex Ecosystems- Forests are among the most complex ecosystems in the world. Conifer Forests have the simplest structure: a Tree layer rising to about 98 feet (30 m), a shrub layer that is spotty or even absent, and ground layer covered with lichens, mosses, and liverworts. Deciduous Forests are more complex; the tree canopy is divided into an upper and lower story, while Rain Forest canopies are divided into at least three strata. The Forest Floor in both of these Forests consists of a layer of organic matter overlying mineral soil. The humus layer of tropical soil is affected by the high levels of heat and humidity, which quickly decompose whatever organic matter exists. Fungi on the soil surface play an important role in the availability and distribution of nutrients,

particularly in the Northern Coniferous Forest. Some Species of fungi live in partnership with the Tree roots, while others are parasitically destructive.

Meaning of Forestry

Forestry is the study of this complex interaction, the management of the various components of the forest, the preservation of its natural balance as well as the care of it to ensure its wellbeing.

Good forestry programs also make it possible for humans to get some economic value from it, without hurting the forests in anyway. This way of using the forest is known as **Sustainable Forestry.**

In sustainable forestry, efforts are put into replacing almost all the resources we get from the forests, whiles extra care is taken to ensure that there is very little damage to wildlife and the natural environment. Example: Only old trees may be cut down, allowing younger trees to grow to ensure continuity, and trees are planted to replace the ones cut down.

Forested Area in India

Though the notified forestland in the country is more than 75 million but the actual forested area is much less. The first ever effort to estimate the nationwide forest cover was made by National Remote Sensing Agency (NSRA) in 1983. The estimates showed that country had 21.60 % of its geographical area covered by forests in early seventies, which came down to 19.52% by early eighties thus indicating the loss in forest cover by 2.08%.

Forest Survey of India (FSI), which took over forest vegetation monitoring in the country after wards on 1:2, 50,000 scales has been doing the job every two years. The reports from this surveys show that the state of the forest cover has remained more or less the same between 1982 and 1993.Thanks to the Forest Conservation Act of 1980, which banned clear felling altogether for any purpose. The act also made its mandatory for any party to seek permission of Government of India before any forestland is put to non-forest use. During 1993-95, however, FSI has shown considerable loss of forest cover (0.18%) in the country, which works out to be about 0.1% rate of deforestation per year for this period. As per the latest estimates of FSI (1987) maximum forest cover has been found in Andaman and Nicobar Islands(92.3%) followed by Mizoram, Nagaland, Arunachal Pradesh, Manipur and Meghalaya in that order. Haryana has been shown to minimum forest cover (1.4%). Pondicherry and Lakshadweep has no forest cover at all.

There is an acute shortage of timber and firewood in the country. The wood prices have risen steeply over the last 15 years. Studies conducted in this regard indicate that over the last 20 years, the prices of agricultural commodities have risen by 3 to 5 times, while in case of timber and firewood prices have risen steeply by 20 to 25 times. The country has started importing timber on a large scale putting a heavy burden on Forest exchange reserve. The average annual production of wood per ha, considering the recorded forest area, works out at 0.69m^3 which is much less than the word average of 2.1 m^3 (FSI,1987).

Importance of Forests

Forests are biodiversity is key to all life forms. The richer the diversity of life, the greater the opportunity for medical discoveries, economic development and adaptive responses to such new challenge as climate change.

Below are some more importance of forests:

Habitat And Ecosystems- Forests serve as a home (habitat) to millions of animals. Think of the many types of reptiles (snakes and lizards), wild animals, butterflies and insects, birds and tree- top

animals as well as all those that live in the forest streams and rivers.

Animals form part of the food chain in the forests. All these different animals and plants are called biodiversity, and interaction with one another and with their physical environment is what we call Ecosystem. Healthy ecosystems can better withstand and recover from a variety of disasters such as floods and wildfires.

Watershed- Forests serve as a watershed. This is because almost all water ultimately comes from rivers and lakes and from forest derived water tables. Some rivers running through forests are also kept cool and from drying out.

Climate Control- Climate control and atmosphere purification is key for human existence. Trees and soils help regulate atmosphere temperatures through a process called evapotranspiration. This helps to stabilize the climate. They enrich the atmosphere by absorbing bad gases and producing oxygen. Trees also help to remove air pollutants.

Economic Benefits- Forests are of immense economic importance to us. For e.g. plantation forests provide humans with timber and wood, which is exported and used in all parts of the world. They also provide tourism income to habitants when people visit to see the best of nature.

- Forests provide home to diverse Animal and Plant Species which not only provide biodiversity on the Earth but each Species has an important role in the ecosystem.
- About ¼ of all the medicines that is produced originate from Rainforest Plants. For example Curare (toxic plant) comes from a tropical vine, and is used as an anesthetic and to relax muscles during surgery. Similarly **Quinine** is derived from the **'Cinchona Tree'** which is used to treat **Malaria.**
- Forests provide timber which is used for building houses, furniture etc.
- Forests are the most important component of Earth's Ecosystem as it prevents soil erosion, maintains water cycle, check Global Warming etc. without all these roles performed by forests, the Earth would be uninhabitable.
- Wildlife tourism generates lots of capital which intern increases the revenue of the government.
- Forests still harbour various species of living organisms which are still being discovered. Each animal, insect and plant contains its individual genetic material that has been evolving for thousands of years. Protecting the forests not only preserves a processes of life that started billions of years ago but in also gives us missing clues to various riddled aspects life itself.

Deforestation

Deforestation is when humans remove or clear large areas of forests lands and related ecosystems for non-forest use. These include clearing for forming purposes, reaching and urban use. In these cases, trees are never re-planted. Since the industrial age, about half of world's original forests have been destroyed and millions of animals and living things have been endangered. Despite the improvements in Education, information and general awareness of the importance of forests, people and individuals who still destroy forest lands for personal gains.

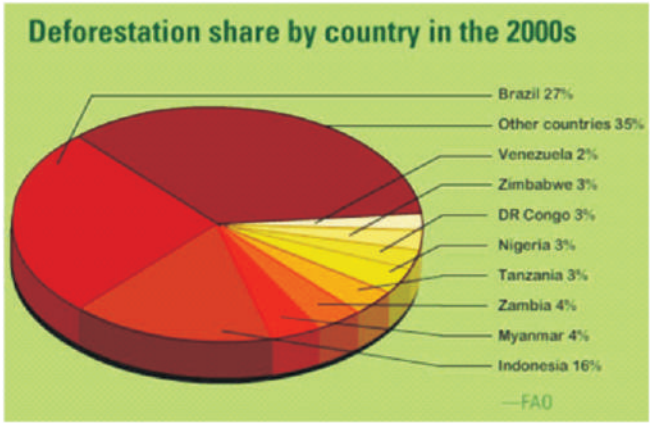

Humans Clear Forest lands but why?-

Trees are cut down (deforestation) for many reasons including:

To be used for farming purposes.

- To be used, sold or exported as timber, wood or fuel (charcoal).
- To make room for mining.
- To make room for human settlement and

urbanization.

Effects of Deforestation

Water Cycle- When forests are destroyed, the atmosphere, water bodies and the water table are all affected. Trees absorb and retain water in their roots. A large part of the water that circulates in the ecosystem of rainforests remains inside the plants. Some of this moisture is transported into the atmosphere. When the process is broken, the atmosphere and water began to dry out.

Loss of Biodiversity- Many wonderful species of plants and animals have been lost, and many others remain endangered. More than 80% of the world's species remain in the Tropical Rainforest. It is estimated that about 50 to 100 species of animals are being lost each day as a result of destruction of their habitats, and that is a tragedy. Many beautiful creatures, both plants and animals have vanished from the face of the earth.

Climate Change- Plants absorb carbon dioxide from the atmosphere and uses it to produce food. In return it gives off Oxygen (O_2). Destroying the forests mean CO_2 will remain in the atmosphere and in addition, destroyed vegetation will give off more CO_2 stored in them as they decompose. This will alter the climate of that region. Cool climates may get a lot hotter and hot places may get a lot cooler.

Soil erosion destruction- Soils are exposed to the sun's heat. Soil moisture is dried up, nutrients evaporate and bacteria that help break down organic matter are affected. Eventually, rain washes down the soil surfaces and erosion takes place. Soils never get their full potential back.

Forest Survey of India-

Forest Survey of India is the successor of "pre-investment survey of forests resources" (PISFR), a project initiated in 1965 by the government of India sponsorship of food and agriculture organization (FAO) and United Nations Development Programme (UNDP). In its report in 1976, the National Commission on Agriculture (NCA) recommended then creation of a National Forests Survey Organization for a regular, periodic and comprehensive forest resources survey of the country, leading to the creation of the FSI.

The objective of the organization is monitoring periodically the changing situation of land and forest resources and presents the data for national planning; conservation and management of environmental preservation and implementation of a social forestry projects.

The objectives of Forest Survey of India are-

1. To prepare state of forest report biennially, providing assessment of latest forest cover in country and monitoring changes in these.

2. To conduct inventory in forest and no forest areas and develop database forest tree resources.

Survey Report of Forest in India, 1991 upto 2015-

India State of Forest Report 2015- The government announced that India's Forest and trees cover has increased by 5,081sq km. while the total forest cover of the country has increased by 3,775 sq km, the tree cover has gone up by 1,306.

India State of Forest Report 2013- The India state of forest report 2013 contains information on forest cover, tree cover mangroves cover and growing stock inside and outside the forest areas. Special thematic information on forest cover.

India State of Forest Report 2011-This new biennial assessment report of India & resources forest recourses published by forest Survey of India provides special coverage to forest cover in hill districts, tribal districts and the north east and also includes a new chapter covering detailed assessment of bamboo resources.

India State of Forest Report 2009- This State of Forest Report 2009 is the eleventh edition in a biennial series published by the forest survey of India. Shows that India's green cover during the period 1997-2007 had grown by 3.13 million hectares. For the first time, India's forests have been mapped into 16 forest type groups and forest and tree cover has been estimated with due

consideration altitudinal levels.

India State of Forest Report 2009- This is the summary of state of Forest Report released today. The eleventh edition in a biennial series published by the Forest survey of India estimates that India's forest and tree cover in 2007 is 78.37 million hectares (23.84% of India's geographical area). This is an increase the previous assessment.

India State of Forest Report 2003- SFR 2003 comprises of seven chapters and a number of annexure. The introductory chapter gives historical information, highlights important features of the report, describes various concepts and explains several important terms used in this report. The chapter on forest cover describes methodology and results of forest cover assessment.

India State of Forest Report 1999- This report is the seven assessment of the forest cover of the country .It provides analytical information on forest plantations, protected area, joint forest management, forest cover in mining areas of Bihar, Madhya Pradesh and Orissa, shifting cultivation in North Eastern region. It also provides an over view of the forest resources in India, with special emphasis on forest cover.

India State of Forest Report 1995- The state of forest report 1995 is the fifth assessment of the forest cover of the country pertaining to the period 1991- 93. It is for the first time that the data obtained from the Indian Remote sensing satellite have been used by the forest survey of India for this assessment.

India State of Forest Report 1991-The state of forest report 1991 is the third assessment of the forest cover of the country based on visual interpretation of land sat imagery pertaining to the period 1987-89.The new feature of this report is the district wise estimation of the forest cover of the country.

Survey Report of Forest Area in U.P.-

Government of Uttar Pradesh has launched the Uttar Pradesh participatory forestry management and poverty alleviation project with the assistance from Japan international co-operation agency (JICA) previously known as Japan Bank of International Co-operation (JBIC). The project period will be of 8 years (2008-09 to 2015-16) at an estimated cost of approximately Rs.575.20 crores out of which JICA loan portion is Rs. 468.20 crores and rest Rs. 107.00 crores will be borne by the state government.

The project aims at the participatory rehabilitation of degraded forests and the enhancement of the livelihood of the local people. Its basic objectives are to restore forests and to augment forests resources. Secure sustainable forest management by improving forest administration. Community organization and active participation of forest dependent communities. It also aims to improve the income of target forest dependents thereby alleviating poverty.

The project is being implemented in fourteen districts of U.P. namely Lakhimpur Kheri, Bahraich, Pilibhit, Mirzapur, Chandauli Sonbhadra , Allahabad, Lalitpur, Mahoba, Hamirpur, Jhansi, Balrampur, Shrawasti and Chitrakoot embracing fifteen territorial forest divisions (Renukoot, Obra, Sona bhadra, Mirzapur, Allahabad, Lalitpur, Mahoba, Jhansi, Hamirpur, Chitrakoot North Kheri, South Kheri , Bahraich, Shrawasti and Pilibhit) and five wild life divisions(Dudhwa, Kataraniaghat, Sohelwa, Kashi and Kaimur).

What can I do to help preserve our forests?-

Sometimes, we are overwhelmed by the extent of damage humans have caused, and we are not sure if an individual can make any impact.

Yes you can, there are millions of people just like you, who are learning about the issue and taking little steps to help. Additionally, many governments, organizations and societies are making great strides in helping reducing deforestation, and encouraging forest plantations. But there is still a lot to do.

Due to the extent and nature of forest destruction, efforts to stop deforestation and preserve them are best achieved at government and organization levels. This means that laws, rules and regulations from countries can help to enforce the

preservation of forests. Laws on farming, timber and wood, as well as land use must be encouraged and enforced.

Here are a few things you can also do to help-

♦ Make a conscious effort to share information with others (friends at school and family members) on deforestation and its' effects. Some of your friends may laugh at you and say it is silly to think that you can solve problems like this. But that is OK, things work better when responsible people don't give up. Stand up for what you believe in.

♦ Join organizations, forest-preservation societies and pressure groups that aim to help preserve the rest of our natural resources. When more people work together, the impact is greater.

♦ Reduce the use of artificial items, recycle more and re-use items. Wood, paper, plastics and many other things we use every day at home can be linked to natural resources being destroyed. This means that if we all recycle more, there will be less dependence on the environment (and trees). It also means that companies and governments will import less raw-material from the forest regions of the world.

Ways to Conserve our Forests-

Some of the ways to conserve our forests are-

☛ Trees should be planted on a large scale on available land. Large scale planting of saplings is called afforestation. When this is done of deforested lands, it is called reforestation.

☛ More forest reserves and botanical gardens should be established.

☛ Allowing animals to graze on the same patch of the land for a long period of time should be avoided.

☛ Measures should be taken to prevent and control forest fires.

☛ Awareness programs should be conducted by people to promote the need to use our forest resources judiciously.

☛ Since paper is obtained from wood pulp, recycling of paper will also help conserve trees to some extent.

Conclusion-

It is well known that the forests help human in many ways like providing oxygen to breathe, keeping the earth cool, provides rains and foods etc. So the need of the hour is to conserve and save forests. So let us plant more trees so that our future generations reap benefits. Forests are commonly referred to as Lungs of the Earth. It is primarily because of the presence of a variety of Plants which due to their high density produce massive amount of Oxygen which enables other organisms to breathe. According to one estimate 1 acre of Forest provides over 6 tons of oxygen per year.

Reference

1. "Forest". Dictionary.com. Retrieved 2014-11-16.
2. Schuck, Andreas; Päivinen, Risto; Hytönend, Tuomo; Pajari, Brita (2002). "Compilation of Forestry Terms and Definitions" (PDF). Joensuu, Finland: European Forest Institute. Retrieved 2014-11-16.
3. "Definitions: Indicative definitions taken from the Report of the ad hoc technical expert group on forest biological diversity". Convention on Biological Diversity. Retrieved2014-11-16.
4. "Forest definition and extent" (PDF). United Nations Environment Programme. 2010-01-27. Retrieved 2014-11-16.

5- "Comparative framework and Options for harmonization of definitions". Second Expert Meeting on Harmonizing Forest-Related Definitions. FAO. Retrieved 2014-11-26.

6. Johnson, F.X.; Pacini, H.; Smeets, E (2013). Transformations in EU biofuels markets under the Renewable Energy Directive and the implications for land use, trade and forests. CIFOR. p. 32. ISBN 9786028693813.
7. Pan, Yude; Birdsey, Richard A.; Phillips, Oliver l.; Jackson, Robert B. (2013). "The Structure, Distribution and Biomass of the World's Forests" (PDF). Annu. Rev. Ecol. Evol. Syst. 44: 59362. doi:10.1146 / annurev-ecolsys-110512-135914.
8. Vogt, Kristina A, ed. (2007). "Global Societies and Forest Legacies Creating Today's Forest Landscapes". Forests and Society: Sustainability and Life Cycles of Forests in Human Landscapes. CABI. pp. 3059. ISBN 9781845930981.
9. MacDicken, Kenneth (2013-03-15). "Forest Resources Assessment Working Paper 180" (PDF). Rome : Food and Agriculture Organization of the United Nations Forestry Department. Retrieved 2014-11-16.
10. Watson, Robert T.; Verardo, David J.; Noble, Ian R.; Bolin, Bert; Ravindranath, N.H.; Dokken, David J., eds.

(2000). "Land Use, Land-Use Change and Forestry". Intergovernmental Panel on Climate Change. Retrieved 2014-11-16.
11. Menzies, Nicholas; Grinspoon, Elisabeth (2007-10-22). "Facts on Forests and Forestry". ForestFacts.org, a subsidiary of GreenFacts.org. Retrieved 2014-11-16.
12. "Introduction: Definition of a Forest". MuseumLink Illinois. Retrieved 2014-11-16. Chape, S; Spalding, M; Jenkins, M (2008). The world's protected areas: status, values and prospects in the 21st century. Univ de Castilla La Mancha. ISBN 0520246608.
13. Nasi, R; Wunder, S; Campos A, JJ (March 11, 2002). "Forest ecosystem services : can they pay our way out of deforestation?" (PDF). UNFF II. Costa Rica.
14. Emerton, Lucy (1999). Mount Kenya : The Economics of Community Conservation(PDF) (Community Conservation research Working Paper). Evaluating Eden Series. University of Manchester Institute of Development Policy and Management. line feed character in issue= at position 17 (help).
15. Henneleen de Boo, Henk Lette (2002). "Economic Valuation of Forests and Nature A support tool for effective decision-making". Theme Studies Series 6 Forests. Ede, The Netherlands: Forestry and Biodiversity Support Group, International Agricultural Centre (IAC), Wageningen.
16. Agriculture, Nature Management and Fisheries (EC-LNV).
17. Bishop, Joshua T., ed. (1999). Valuing Forests A Review of Methods and Applications in Developing Countries. London : Environmental Economics Programme, International Institute for Environment and Development (IIED).
18. Koedoe 55 (1). ISSN 0075-6458.
19. Scholes, R.J.; Archer, S.R. (1997). "Tree-Grass Interactions in Savannas" (PDF).Annual Review of Ecology and Systematics 28: 517544.doi:10.1146 / annurev.ecolsys.28.1.517.
20. Pimentel, David; Pimentel, Marcia H. (2007). Food, Energy, and Society. CRC Press.
21. Ratajczak, Zakary; Nippert, Jesse B.; Collins, Scott L. (2012). "Woody encroachment decreases diversity across North American grasslands and savannas" (PDF). Ecology 93(4): 697703. doi:10.1890/11-1199.1. PMID 22690619.
22. Wilcox, B.P.; Kreuter, U.P. (2003). Woody plant: streamflow interactions as a basis for land management decisions in drylands. Proceedings VIIth International Rangelands Congress. pp. 989996.
23. Scott, D.F. (1999). "Managing riparian vegetation to sustain streamflow : results of paired catchment experiments in South Africa" (PDF). Canadian Journal of Forest Research 29(7): 1149115. doi:10.1139/x99-042.
24. Davidson, A; Elliston, L; Kokic, P; Lawson, K (2005).
25. Margaletic, J (2003). "Small rodents in the forest ecosystem as infectious disease reservoirs". Acta Med World Resources Institute, 1998. The Last Frontier Forests : Ecosystems and Economies on the Edge "FAO. 2010. Global Forest Resources Assessment 2010. Main report. FAO Forestry Paper 163. Rome, Italy". Bibcode:2015NatCC...5..470L. doi:10.1038 / nclimate 2581.
26. "World deforestation slows down as more forests are better managed". fao.org. Food and Agriculture Organization of the United Nation. Retrieved 2 October 2015.
27. MacDicken, K.; Jonsson, Ö.; Piña, L.; Maulo, S.; Adikari, Y.; Garzuglia, M.; Lindquist, E.; Reams, G.; D'Annunzio, R. "Global Forest Resources Assessment 2015" (PDF).fao.org. Food and Agriculture Organization of the United Nations. Retrieved 2 October 2015.
28. “Canada", Global Forest Watch Canada. Retrieved 2014-11-28.
29. "Canada's Forests". Natural Resources Canada. 2014-10-14. Retrieved 2014-11-28.
30. “Wildfires Ignite Forest Management Debate". Wildrockiesalliance.org. Retrieved 3 July, 2013.
31. Brock, Emily K. (2015). Money Trees: The Douglas Fir and American Forestry, 1900-1944. Oregon State University Press.
32. “Forest Land Area". FAOSTAT. World Bank. 12 February, 2014.
33. SHARMA LALIT” Environmental Science”.

ISSN : 2349-9273

Received: 20 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

The Impact of Technology on Translation and Literature

Research Supervisor
- Dr. Rashmi Dubey
Department of English,
D. B. S. College, Govind Nagar,
Kanpur-208005 (U.P.)

E-mail:
rashmidubey@gmail.com

- Siddiqui Sheeza
Research scholar -
Department of English,
D. B. S. College, Govind Nagar,
Kanpur-208005 (U.P.)

E-mail:
688@gmail.com

Abstract

This research paper explores the positive impact of technology on translation and literature. In global era technology has become a central communication process, that is effecting both learning and teaching arena. The emergence of new genre 'Digital literature' improves the effective writing in both translation and literature. Translation is very practical craft and translator is like an artist who performs nicely to make please readers without disturbing the original elements of source text. This can be possible through different platform like social media, blog, tex- speak etc. Now readers and writers share single platform, and can exchange their opinion about text. Technology makes writing easier and simple there is no need of papers, ink, ship charge etc. This study emphasis 'Online collaboration' is a new conceptual field in translation industry. The technology encourages non-professionals to contribute in task of translation. Translation and literature are two sides of one coin, both heavily affected by technology. Digital literature leads authors to express and promote their ideas around the world, and technology can connecte the world irrespective of time and place. The generation of modern period has turned into 'Text speak' or ;Net generation'. Technology is necessity not an option in professional world , and extends human capacities.

Keywords- ***Technology, Collaborative translation, cognitive, collective effort, literature, digital.***

Introduction-

In Global scenario technology is offering methods for accessibility, efficiency in each sector of life, and also concerns about quality translation in literature. Before some decades, for any information one had to visit library , books but now press one finger the whole world before you we have a search engine Google, currently the most useful and popular engine in a few seconds we can visit thousands of pages,pictures and documents. Discipline of translation study is abundance and escape because of Ai and chat GPT, the discipline has become more stable expanded. Over the years this field attained much popularity among

researchers in academy level. The development of technology creates a changes in both teaching and research platform. Arba Bedica refers in research papers that "The positive impact of technology in Translation." Through this research a huge growing translation market creates intercultural technical communication . This study aims to explore the current changes revolving around in the field of translation and interpretation industry such as online callboration translation and computer based translation tools. Basically the purpose of translation to communicate among difference language and cultures and try to decrease the boundation and make universality in literature .The translation study occurred a tremendous changes when different kind of technical tools and methods add and technology widened the area of translation. Recently government of India has launched great AI app to translate regional languages from one to another languages. BHASHINI.GOV.IN. This is a tab called Anuvad. But for a better communication plain language is perfect and understood by everyone. Despite of all technical successes one fact cannot deny that still a large section of our society not proper well use of technology . However, Government and private sector try to help people and make easier ways to understand technology for common sector of our country. (Lindholm and Vanhatalo 2021) "Accessible language often referred to as simple languages such as plain language and easy language, have evolved as variations from the normal ones with the goal ofmaking written accessible communication tools for all of us."

Collaborative Translation-

Collaborative translation means to cooperation between two or more persons indulge in a process of translation, they may be writers, agencies or publishers to make atranslation project. Traditionally, the work of translation was separated and isolated, they rarely talked to others. But the development of technology promoted collaborative translation in which translators share their works with different parties. The method of translation allows translators to contribute their appropriate reasoning in particular situations. "The situation where two or more translators work together to produce one translated product."(O'Brien,2013:17).

Collaborative translation is a literary crucial method of translation. The first benefit of it is to improve efficiency and quality within translate of literature.It available a broader area of perspectives and expertise for a better translation project. Secondly, collaborative translation is more applicable in cultural sensitive issues in translation, deals accurately cultural situations. Thirdly it allows feedback of experts, reviewers and others valuable insights throughout translation. Kiraly considers that translators is "a creative, largely intuitive, socially constructed and multi-faceted complex of skill and abilities".(id,49).Yvone Tsai in his research "collaborative Translation in the Digital age ,2020" considered "that collaborative translation promotes effectiveness and efficiency in translation, and students received extensive feedback for revising their translation." This strategy allows multiple people to work on same project. Before final draft they can evaluate and change and revision from different sources.

Translation and Technology-

English language has four skills , and translation regarded fifth skill of English language because it has become a crucial part of literature and language. The students who learn translation methods are more develop their understanding of cultural issues than other students. Translation is a skill not a static , and cannot define its limits . Mostly universities have put translation as a subject for students in language departments, the purpose of this only to provide professional translators in future. In additional, knowledge of technical translation will help students it may be additional skill that could impact the conclusion of the task.

Traditionally translators were stereotype and introverted individual, they rarely talked to

others. Even they did not share their works with others that was time and money taking process. After invention of technology structure of translation has changed. Now we have computer based methods of translation, technology is offering tools for accessibility, efficiency translation in literature. For example research process resembles to translation process where research takes the help from different magazine, books, articles, newspaper in order to receive the most appropriate conclusion. In both process, dictionaries are the most useful tool for doing research and translation. Earlier dictionaries could available only in hard copy for a single word one had to go through from all pages , and it was very hard to carry it in situation you need that. But technology transformed it in softcopy .Now we have online and electronic dictionaries, and this software easily stored in computer disk. It is possible to save thousand of words and reach to meaning very easily. Technology allows it less expensive than a hardcopy dictionaries because there is no cost of ink, paper, shiping .

Online books and reading materials are available all over internet and smart phones through this readers can go through number of books and magazines. Merriam-webster, provides " users to check the meaning of any words in English, and it has also the cultural phrases, idioms and expressions." For researchers it much convenience to collect data from online sources . Online dictionary has become a source of saving money and time. Oxford dictionary is available online and updated every three months. Not only dictionary but also books, magazines are available in online and internet.

Literature and Technology-

Apparently, literature and technology are separate domains: literature is expression of society, and deeply indulge with creativity and art. Technology removed paper, ink, text now literature produces on digital canvas, media such as blogs, websites, , hypermedia text. Exactly technology deals with science and machine. In digital era both are convergance in one domain new term has merged in 'Digital literature'. Literature has always been developing with technology and represents by modern technology. Evolution of technology has produced changed in traditional reading and writing. In past twenty years it explored numbers of writers. (Baron,2009). Advance technology allows a healthy relationship between readers and writers. Because of internet author can share views, and makes conversation with readers, which encourage a writer to write on relevance topic. It is obvious that writer cannot control how readers understand and transfer the message of their works. Earlier authors is already dead, there is no feedback of readers. Now readers can approach to author through internet, authors also able to make clear readers the message of their works. Alex Goody in his "Introduction: The twentieth-century Technological imaginary" (in Goody, Technology, Literature and Culture, 2011) refers: " Technology is a key defining factor in twentieth-century culture. From the early Fordist revolution in manufacturing to computers and the internet, technology has reconfigured our relationship to ourselves, each other and to the tools and the materials we use." Both readers and writers share a single platform thishappened by technology. Net generation dependonline and computer based resources for thinking ,writing and develop other skills. (Rosen et al.,2010).Internet users can use the online resources for career planning, learning, teaching and communication. Number of universeties now encourage teachers and students to potentially use online resources to improve learning and teaching skill. 'A current literature review explored that technology allows students improves creativity language' skills."(Ahmadi, 2018).

Readers of digital era are habitual to technology every sphere of life have affected by technology . Technology is proved as a miracle in growing field of literature, through it we produce different methods of writing and reading. The traditional literature has been changed, and modern

writers are adopting new ways to express their talent. With the short of time literature moved towards short form of writing. But short form of writing is raising question on the reputation of novel and writing. It becomes quite serious for the creativity of human beings. The world of technology is so complex with in this web world we have to protect the basic qualities of literature- observe, emotions, feel, think are must preserved in technical world. With all qualities of technology we have to accept one fact that machine can never replace human creativity .

Modern literature represents actual reality of society usually discusses issues like gender, metro life, sexuality, race and so on. The best advantage of technology is that writer can write on plenty of topic in a very short time with the help of modern technology. Because of social media writers have platforms such as Twitter, social media authors promote their works without getting any charge. Internet is a best platform to maintain public communication through this the world moving towards universality. The modern translators have elevated position with new genre ,new ideas, and new creative thoughts. Because of technology translation industry has grown as the most innovative discipline on the map of the world ,and many intellectuals consider social media is a crucial part of translation and literature industry.

Methodology-

This study will follow qualitative method because that seeks to analyze the problem in detail. Specific method might include: content analyses of words, phrase, sentences. Discourse analysis studying communication to their social context. The need of translation is increasing at the global level, different methods and tools of technology are directly affect literature and translation. Technology in translation will be used as a tool for this study.

Challenges and Opportunity-

"Technology in translation industry have improved both quality and speed, increasing communication, growing need for technological solutions to the age-old problem of the language barrier" (Nida). In modern period we have refined translation tools, which provide efficiency and quality. For instance Google Translate is most commonly use known app in public platform . Google Translate is a free multilingual statistical machine. This tool translate images, speech, text, videos from one language into another language. (Turovsky, 2016) explored that Google Translate support 103 languages at various stages and serves 200 million people daily. Although, machine translation provides opportuneties to youngsters to make their career in this field ,but some challenges arise the questions to technology. Inspite of quite useful but still not be professional ones. Machine translation is still against human translation. It is obvious that machine translation exponentially faster than that of human translation .

The common human translator can translate, around, 3,000 words in a day, but it places in comparison to machine translation that can translate thousands of words in one minute. Machine translation is can be accurate in the matter of quantitative and statics. But in the arena of literature 100% accurate translation is not possible without human interference. Because literature is directly deals with phrases, verbs and culture of society . Translation of any literary work is possible by human translator not accurate by machine translator. This is the big challenge in the process of translation. After editing, the meaning of original documents will not be accurate. Literature is directly related to specific situations , only professional ones can deal it perfectly. The skill of think, write and communication has influenced by information technology and social media. The generation of modern period has turned into 'Text speak' or 'Net-generation'.

A translator possesses multi talent –a writer, reader, critic.His performance is more difficult than a writer because a writer observes and write in one language but a translator have to maintain a balance between two culture and language. In the

changing atmosphere, a translator have to compete with machine and prove his\her existence. Translation is a practical craft and translator is an artist, and he\she has to transport the original message of text without disturbing the basic elements. For promoting translation Booker award established in 2005, that incourages translators in every language of the world. This paper is about to explore the positive impact of technology on translation and literature. Because of technology the canon of literature is moving towards universality, as Walter Benjamin claims in his work "*TheTaskofTranslator*" that the each language of the world related to the pure language the domestication of translation for target culture. He explored the complexities and challenges of the translators. If we compare that time to modern time so there is a change in the task of translators, technology has made easier the challenges of translation.

Conclusion-

All argument aside, that technology has revolutionized social communication and connection that offers an unrestricted possibility to catch people across the world. Mostly people accept, that effective writing is a crucial factor in professional success. Technology improves effective writing, but we cannot deny negative aspect of this in writing. Technology is hiding the art of writing behind the Ai and chat GPT, and this tendency must be research. We all have to accept that technology heavily affected our life, in the form of computer, text speak and social media. This is a drastically change of time , and we must ready to accept that. Hopefully, next generation will be more depend on technology. Now it is difficult tochoice: either accept all changes positively or reject it. The information technology available resources to the translators and it creates a relationship between translators and the text. This is a new way of translation and literature . Furthermore, the social media and computer with its universal access to read and write , maintain instant communication among readers, writers and translators. Now it time to see the positive factors of technology , and try to learn to maintain quality and creativity in literature and translation.

References

1. Alcina, A. (2008) - Translation Technologies : Scope, tool and resources.
2. Benson, P. (2001) - Teaching and researching autonomy in language learning . Harlow : Pearson Education.
3. Bedard, (2000) - "Translation memory seeks sentence-oriented translator."
4. Baker, james. K (1975) - "The Dragon system- An overview". IEEE Translations on Acoustics, speech, and signal processing 23CD : 24-29.
5. Brau, d (2009) - A better Pencil : Readers, writers, and the Digital Revolution. New work : Oxford university press.
6. Cultural Translation in the Digital age by Yvonne Tsai-2020.
7. M. Laal and M. Laal - "Collaborative learning : What is it?, "Procedia – Soc . Behav. Sci, vol. 31, PP. 491. 495, 2012.
8. Nida, E. (1964) Towards a science of Translating . Netherands : LEIDEN, E.J.Brill. Walter Benjamin, "*ThetaskofTranslator*", 1923.

ISSN : 2349-9273

Received: 24 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

Aurobindo Ghosh's Spiritual and Political Reading of the Bhagavad Gita

- Ravi Kant Mishra
Research Scholar -
Department of English,
Nehru Gram Bharti
(Deemed to be University)
Jamunipur, Kotwa, Prayagraj - 221505 (U.P.)

E-mail:
ravimonu1985@gmail.com

- Research Supervisor -
- Dr. Chhaya Malviya
Associate Professor & Head,
Department of English,
Nehru Gram Bharti
(Deemed to be University)
Jamunipur, Kotwa, Prayagraj - 221505 (U.P.)

E-mail:
chhayamalviya9011@gmail.com

Abstract

Sri Aurobindo Ghosh, a visionary philosopher, nationalist, and spiritual reformer, approached the Bhagavad Gita not merely as a religious scripture, but as a profound synthesis of spiritual philosophy and pragmatic action. This research paper explores Aurobindo's interpretation of the Bhagavad Gita, highlighting how he harmonized the spiritual essence of the text with the imperatives of socio-political activism. Aurobindo's commentary, primarily presented in his seminal work "Essays on the Gita," presents the Gita as a gospel of divine action that supports both inner spiritual realization and outward commitment to dharma (duty).

This paper investigates two primary objectives: first, to analyze how Aurobindo interpreted the Bhagavad Gita as a spiritual text emphasizing inner transformation and divine realization; second, to examine how he used the Gita as a philosophical foundation for political action during India's struggle for independence. The study underscores how Aurobindo's reading diverged from traditional interpretations that focused on renunciation, instead promoting an integral approach where the divine life is realized through dynamic engagement with the world.

Through a close reading of "Essays on the Gita," supported by secondary scholarly sources, this research situates Aurobindo's interpretation within the broader landscape of Indian nationalist thought and Vedantic philosophy. The paper also reflects on the enduring relevance of Aurobindo's Gita exegesis in the contemporary context of spiritual activism. In linking the metaphysical with the political, Aurobindo offers a unique model for integrating personal enlightenment with collective responsibility, embodying a philosophy of action rooted in spiritual consciousness. This research aims to contribute to the ongoing scholarly discourse on the intersection of spirituality and politics, offering insight into how sacred texts like the Gita can inspire transformative action in both personal and national spheres.

Introduction-

The Bhagavad Gita has held a revered position in Indian philosophical and religious thought, being interpreted through various lenses over the centuries. Among its many interpreters, Sri Aurobindo Ghosh stands out as a thinker who provided a unique synthesis of spiritual insight and political vision. Born in 1872, Aurobindo was not only a revolutionary leader in India's early nationalist movement but also a profound spiritual master whose teachings reshaped modern Indian spirituality. His interpretation of the Bhagavad Gita, encapsulated in his work "Essays on the Gita," offers a dynamic re-reading of the scripture that challenges both purely ascetic and narrowly political readings.

Aurobindo viewed the Gita not as a call for renunciation but as a gospel of divine action. For him, the battlefield of Kurukshetra symbolized the field of life itself, where human beings must act according to divine will, integrating spiritual realization with worldly responsibilities. His dual identity as a political leader advocating for India's freedom and later as a spiritual teacher allowed him to merge these domains in his reading of the Gita. Through his writings, Aurobindo rejected the dichotomy between action and contemplation, emphasizing instead a path of Karma Yoga that harmonizes inner spiritual development with outer action.

This research paper delves into Aurobindo's dual reading of the Gita spiritual and political showing how these two aspects are interwoven in his philosophy. By exploring this synthesis, the paper seeks to understand the relevance of his interpretation in both his historical context and our contemporary world. In doing so, it places Aurobindo's thought within the broader intellectual currents of Indian nationalism and Vedantic spirituality, demonstrating the continuing impact of his ideas on modern Indian thought and spiritual activism.

Objectives-

1. To analyze Aurobindo Ghosh's interpretation of the Bhagavad Gita as a spiritual guide for inner transformation and divine realization.

2. To examine how Aurobindo's reading of the Gita provided a philosophical foundation for political activism and national liberation.

Methodology-

The study employs a qualitative research methodology, focusing on textual analysis of Aurobindo's primary work "Essays on the Gita" along with other relevant writings. It integrates historical contextualization with philosophical interpretation, drawing upon secondary sources including biographies, critical essays, and historical analyses to situate Aurobindo's thoughts within the Indian nationalist movement and the broader tradition of Vedantic exegesis. The paper applies hermeneutic and comparative approaches to trace how the spiritual teachings of the Gita were recontextualized to support political engagement and inner transformation simultaneously.

Aurobindo's Interpretation of the Bhagavad Gita as a Spiritual Guide for Inner Transformation and Divine Realization.

Sri Aurobindo's spiritual interpretation of the Bhagavad Gita emerges as a fundamental departure from ascetic readings that emphasize renunciation and disengagement from worldly affairs. Central to his exegesis is the conviction that the Gita advocates for an active, divine-centered life rather than a retreat from the world. In "Essays on the Gita," Aurobindo underscores that the core message of the Gita is not escapism but spiritual evolution through action (Karma Yoga).

Aurobindo posits that the battlefield of Kurukshetra, where the dialogue between Krishna and Arjuna unfolds, is a symbol of the human soul in crisis. The moral and existential dilemma faced by Arjuna represents the inner conflict every aspirant undergoes when confronted with duty and spiritual calling. Krishna's exhortation to Arjuna to rise above grief, confusion, and attachment and perform his duty as a warrior is interpreted by Aurobindo as

an allegory for the seeker who must overcome ignorance and ego to align with the Divine Will.

Spiritual realization, for Aurobindo, is not achieved by withdrawal but by inward transformation and conscious participation in life's duties. The Gita, in his view, teaches the seeker to transcend the dualities of pleasure and pain, success and failure, by cultivating equanimity (sthita-prajna) and surrendering personal desires to the Divine. This practice of selfless action, devoid of egoism and personal ambition, leads to the progressive manifestation of the divine consciousness within the individual.

Aurobindo extends the idea of spiritual realization through the concept of the triple path Karma Yoga (path of action), Bhakti Yoga (path of devotion), and Jnana Yoga (path of knowledge) with Karma Yoga being the central focus in the Gita. He emphasizes that spiritual development involves the integration of all these paths, enabling the seeker to experience the Divine not only in meditation but also in everyday actions. Thus, the ultimate goal is the realization of the inner Self (Atman) and its unity with the Supreme (Purushottama).

Aurobindo's vision of spirituality is rooted in the concept of Integral Yoga, where liberation (moksha) is not an escape from the world but the transformation of human life into divine life. The Gita's message, therefore, is not only metaphysical but also psychological and practical. It offers a roadmap for inner transformation through the dynamic interplay of thought, devotion, and disciplined action. The practice of surrender and the cultivation of inner silence and detachment become tools for this inward journey.

In this context, Aurobindo views Krishna not merely as a divine incarnation but as the inner guide or the immanent Divine within each individual. The call to action from Krishna is a call to discover and manifest one's divine nature through righteous living. This inner spiritual evolution leads to a higher state of consciousness, wherein the individual becomes a conscious instrument of the Divine Will. Thus, Aurobindo interprets the Gita as a spiritual guidebook for the seeker who aspires not just for personal salvation but for the divinization of life itself.

2. Aurobindo's Interpretation of the Bhagavad Gita as a Philosophical Foundation for Political Activism and National Liberation.

While Aurobindo's spiritual reading of the Gita is well acknowledged, his application of its teachings to political action is equally significant. During the early phase of his life, especially between 1905 and 1910, Aurobindo emerged as a key figure in India's struggle for independence. His political writings and speeches invoked the Bhagavad Gita as a source of inspiration and justification for resistance against colonial rule.

Aurobindo interpreted the Gita as a scripture that endorsed righteous warfare when motivated by dharma. He identified Arjuna's hesitation to fight with the moral dilemmas faced by Indian nationalists who were torn between non-violence and the need for assertive resistance. By portraying Krishna's instruction as a divine command to fulfill one's duty without attachment to the outcome, Aurobindo encouraged political activists to see their struggle for freedom as a sacred duty.

In his political essays and editorials, especially in the journal Bande Mataram, Aurobindo often cited the Gita to argue that true patriotism was not separate from spiritual duty. The call for Swaraj (self-rule) was not merely political but also a manifestation of India's spiritual destiny. He believed that India's awakening had to begin with a spiritual resurgence that would empower the nation to reclaim its rightful place in the world.

Aurobindo's integration of spiritual philosophy into political activism distinguished him from other nationalists of his time. While leaders like Gandhi emphasized non-violence as a central tenet, Aurobindo advocated for active resistance, provided it was grounded in higher principles. The Gita served as a framework to

support this standpoint, where action was purified through detachment and aligned with dharma.

After withdrawing from active politics and settling in Pondicherry, Aurobindo continued to influence nationalist discourse through his writings. He envisioned a spiritual nationalism that transcended religious, linguistic, and cultural divisions. For him, political freedom was not an end in itself but a means to realize the spiritual potential of the Indian civilization. In this vision, the Gita's teachings on self-mastery, courage, and divine will became central.

Furthermore, Aurobindo's concept of the nation as a living entity with a spiritual soul (Bhārat Māta) resonated deeply with the masses. He presented the freedom struggle not just as a quest for rights but as a sacred yajna (sacrifice) for the upliftment of humanity. Political leaders were seen as yogis in action, whose personal ambitions must be subsumed under the collective goal of national liberation.

This vision had a profound impact on the shaping of Indian political thought. It infused the independence movement with a sense of divine mission, moral seriousness, and philosophical depth. By rooting political action in spiritual insight, Aurobindo provided a unique ideological foundation that harmonized the material and the metaphysical.

In conclusion, Aurobindo's reading of the Bhagavad Gita goes beyond conventional boundaries. It serves as a spiritual manual for individual transformation and a philosophical charter for collective liberation. His legacy invites us to view politics not as a realm of power alone but as a field of divine service. Through his synthesis of the Gita's message, Aurobindo created a paradigm where the sacred and the secular converge, offering enduring lessons for both spiritual seekers and political leaders.

Conclusion:

Sri Aurobindo's interpretation of the Bhagavad Gita represents a profound convergence of spirituality and political engagement. By rejecting both ascetic withdrawal and materialistic activism, Aurobindo offers a third path: one of integral action rooted in spiritual realization. His vision of Karma Yoga as taught in the Gita becomes a model for living a divine life amid worldly duties. For Aurobindo, the message of the Gita is timeless, applicable not only in the context of ancient warfare but also in modern struggles for justice, freedom, and inner awakening.

In today's world, marked by fragmentation, political unrest, and spiritual longing, Aurobindo's reading of the Gita continues to offer guidance. It bridges the gap between contemplative life and social responsibility, showing that true liberation lies in acting from a place of inner truth and divine consciousness. His interpretation underscores that political freedom must be accompanied by spiritual freedom, making his vision as relevant today as it was during India's fight for independence. By revisiting Aurobindo's spiritual and political reading of the Gita, we not only gain insight into a pivotal moment in Indian intellectual history but also find inspiration for crafting a more integrated and conscious way of being.

Bibliography

1. Aurobindo, Sri. Essays on the Gita. Sri Aurobindo Ashram, 1997.
2. Heehs, Peter. The Lives of Sri Aurobindo. Columbia University Press, 2008.
3. Minor, Robert N. Modern Indian Interpreters of the Bhagavad Gita. State University of New York Press, 1986.
4. Sharma, Arvind. The Gita for Modern Man. Orient Paperbacks, 2009.
5. Maitra, Sisir Kumar. Sri Aurobindo: The Prophet of Life Divine. Bharatiya Vidya Bhavan, 1988.
6. Pandey, Kanti. Meaning and Process of Religion. Motilal Banarsidass, 1987.
7. Chakrabarti, Arindam. The Bloomsbury Research Handbook of Indian Philosophy of Religion. Bloomsbury, 2020.
8. Parekh, Bhikhu. Colonialism, Tradition, and Reform: An Analysis of Gandhi's Political Discourse. Sage Publications, 1989.

ISSN : 2349-9273

Received: 26 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

Studies on Ethanol Production from Molasses and Immobillization procedures by Zymomonas Mobilis

- Dr. Abha Singh
Assistant Professor -
Department of Chemistry,
D.A-V. College, Civil Lines,
Kanpur-208001 (U.P.)

E-mail:
dr.abhasinghknp@gmail.com

Immobilization in Calcium Alginate (197)-

For experiments on sucrose strains ZM4 was selected for immobilization, whereas for fermentation of molasses strain ZM4A was used for Immobilization.

5 ml of dense freshly prepared Inoculum of Zymomonas mobilis was added to 50 ml of sterilized sodium alginate (25% w/v) suspension in water at 40°C, and was kept on magnetic stirrer to make it homogenous. The alginate-bacterial cells slurry was extruded as drops into a 0.1 M $CaCl_2$ solution (1.5%) at room temperature using a syring. The drops were formed into beads upon contact with $CaCl_2$. The beads were stored for 3 hours at 4°C to allow for complete gelation before use. The diameter of bead was around 2 mm. 50 ml of beads were transferred to 200 ml of sucrose medium or molasses medium and kpet for incubation at 30°C for activation of beads.

Immobilization in Open-Pore Agar (198)-

5 ml of dense freshly prepared inoculum of Zymomonas mobilis was added to 50 ml sterilized aqueous solution containing 2% agar and 2% sodium alginate at 40°C. It was dropped into a stirred solution of 2% calcium chloride and the beads were separated. The calcium alginate in the composite beads was leached out by washing with 0.05 M potassium phosphate buffer at ph 7.5 untill the washing was clear. The diameter of bead was around 2 mm. Beads were activated as previously described in this chapter.

Batch Experiments with Immobilized Cells -

The batch experiments were carried out at 30°C in 500 mil Erlenmeyer flasks containing 200 ml of medium (as mentioned In the text) inoculated with 50 g activated beads. At the end of each batch nun when more than 90% of the substrate was utilized, the spent medium was drained and replaced with sterilized medium to start a new batch run. The sucrose medium was of the same composition as used for free calls and molasses medium was used without adding any supplements.

The broth samples were centrifuged and assayed at regular

invertals for ethanol, total sugars and for free cells in the liquid. The dry weight of the entrapped cells in the beads was estimated by dissolution of the known weight of beads in 5 ml of 2.5% KHPO4 at 45°C and estimation of optical density against a blank. This was converted to dry weight from the standard plot.

Continuous Experiments with Immobilized Cells -

A jacketted column reactor (3.5x20.0 cm) with a working volume of 160 ml was used. 100 ml of the activated. Beads were transferred aseptically to the bioreactor. The fresh sterilized medium was Introduced from the bottom of the reactor with a high accuracy peristaltic pump (Waston Marlow, U.K.) The constant volume in the reactor was obtained by an overflow exit line. The samples were taken at suitable intervals till steady state was reached. The samples were analysed for free cell concentration (X_f), total reducing sugar and ethanol concentration. The biomass concentration in the beads (X_g) was estimated at suitable intervals, as previously described.

Analytical Methods -

A flow sheet for analysis of fermentation liquors is given inthe following chart.

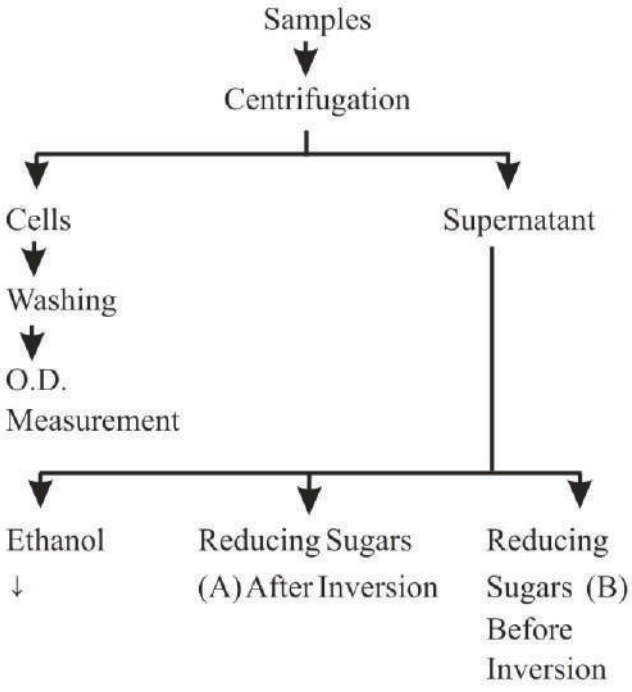

Estimation of Dry Cell Mass -

A known volume of the fermented broth was centrifuged at 4,000 rpm for 10 minutes. The sediments was washed twice with the distilled water and its optical density (O.D.) was measured at 600 nm after suspending in desired volume of water and with adequate dilution. A standard plot was made for calibration of O.D. with dry cell mass (gl^{-1}) as follows.

The biomass was dried in oven at 80°C till constant weight was obtained. Average value of dry cell mass for 3 samples was used. A standard plot was made from O.D. values of each sample and dry cell mass **(See Figure)**.

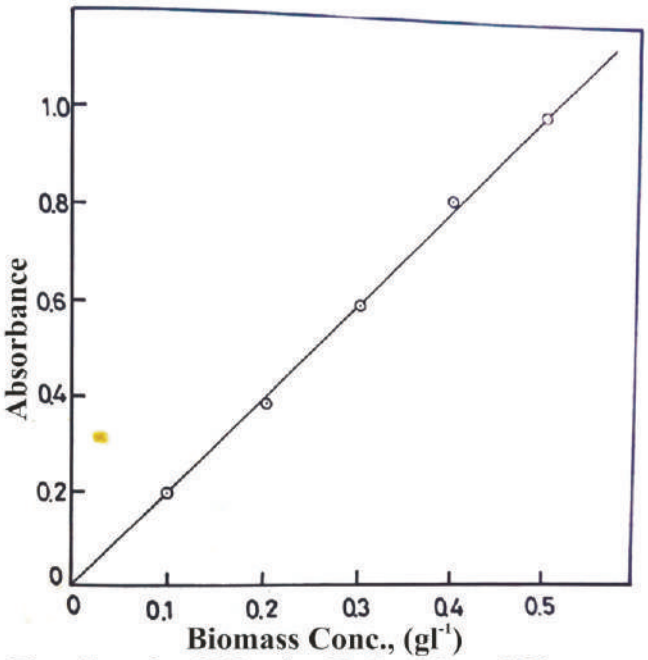

Fig.- Standard Plot for Estimation of Biomass.

References

1. Doelle, H.W. and Greenfield, P.F., Appl. Microbiol. Biotechnol. 22, 405 (1985).
2. Vilkari, L. & Linko, M., Biotechnol. Lett. 8. 139 (1986).
3. Skotnicki, M.L., Warr, R.G., Goodman, A.G. Lee, K.J. and Rogers, P.L., Blochem. Soc. Symp. 48, 53 (1983).
4. Blackbeard, J.R. and Doelle, H.W., Eur. J. Appl Microbiol. Blotechnol, 17, 261 (1983).
5. Lyness, E.W. and Doelle, H.W., Biotechnol. Lett. 5, 345 (1983).
6. Viikari, L., Technical finland. Publication 27, (1980). Research Centre of
7. Lyness, E.W. and Doelle, H.W. Biotechnol. Lett. 2, 549 (1980).
8. Park, Y.K., Mortatte, M.P.L. and Sato, H.H., Biotechnol. Lett. 5, 515 (1983).

ISSN : 2349-9273

Received: 22 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

Transforming Lives : Educational Empowerment of Tribal Women in India

- Anita Verma
Assistant Professor-
Department of B.Ed,
M.M.V. (P.G.) College, Kidwai Nagar, Kanpur-208011 (U.P.)

E-mail:
anitavermakv@gmail.com

Abstract

Education plays a pivotal role in the progression & development of all human being. And women education is a signpost of women empowerment because it not only creates an edifice of confidence and self-esteem rather also enables them to face the challenges and hurdles. Women's education in India is not only a need of the hour rather is necessarily needed to change their women in the society. Tribal community and especially the tribal women are the most marginalized one which faces a plethora of impediments in their day to day life. They in all social communities are more illiterate and susceptible due to which they face lot of difficulties like reproductive health, gender disparity, malnutrition and many other. Due to lack of education amongst tribal women, they are subject to lot of atrocities and exploitation. When primary & secondary survival doings are seen, women work way more than a man but still are subject to gender inequality & other biasness due to the existing patriarchal structure of the society. Though women literacy rate has gradually increased in India, but still tribal women are far behind the national increase of women literacy. The progress of educational system of tribal society will be a magnificent step not only towards the social development and the path of prosperity rather the overall development of society and blessing for the whole mankind.

Keywords - ***Tribal Development, Socialization, Skill Training, Social gap, Functional Literacy.***

Introduction-

Education system should make an individual better suited to the needs of the ever changing dynamic world. The changes in the educational system should also reduce the social gaps by enabling proper recognition to whatever extent one is able to pursue or acquire a skill. The tribal community all over India have been subjected to various forms of deprivation such as alienation from land and other resources. Especially the tribal women though they are away from the main stream of national life, but they are not kept away from the impact of socio – economic changes

effecting the society in general. In this process of change, the tribal woman is forced to adhere to certain norms which may even take away her freedom, her control over the traditional productive system, her house, family and children and even her own life. The fact remains that a large number of tribal women have missed education at different stages and in order to empower them there is a great need of providing opportunities so as to enable them to assume leadership qualities for economic self-reliance and even social transformation. It is often alleged that the level of aspiration of these women as a group is low and they are quite satisfied with what they are and with what they have. It is most often not true only to womenfolk but to everyone who feels helpless and frustrated. However in order to develop and raise their level of aspiration, adequate educational opportunities are to be provided so that they get motivated to participate, support and also ultimately learn to initiate their own programmes of development. Therefore, in this paper an attempt has been made to analyse the present status of educational facilities availed by tribal girls and women. It is also suggested to provide skill and vocational training programmes to tribal women living in rural areas.

Methodology-

The data for the present study have been gleaned from various sources which have been duly acknowledged. Information on Women's Studies enrolment at different levels of University and professional Colleges was obtained through the reports of the University Grants Commission, New Delhi, Census of India, 2001 and the Report on Selected Educational Statistics, Published by the Statistics Division, Ministry of Human Resource Development, Government of India, New Delhi, 2007.

- This study is analytical in nature discusses the condition of tribal education in india.
- The study uses secondary data for the analyses of impact of educational provisions and schemes given by indian government.

Review of Literature-

1. Nayar (1992) conducted a study to examine the reasons for dropouts and non-enrolment of girls in rural areas revealed that 1. Dropout girls were from poor family. 2. Girls could not continue their studies due to pressure of doing household work. 3. The dropout girls also shared their views regarding their keen interest in attending school. 4. Nagative attitudes of parents towards the girl education. Dropout was minimum in the age groups 6-8 years and maximum after class. 5. The study suggested for the appointment of at least one female teacher at every primary level. All girls students must be provided incentives for free books, uniforms and all other stationery items irrespective of caste. Education is basic for the growth of an individual as well as society. Concerning the education of the tribal women, families support must be optimistic, the government should take effective measures for the improvement of tribal women in mainstream schools, changing the behaviour of parents towards the girls' education, upgrading the schools in remote areas. To decrease the impact of poverty on girls' education, stipend must be provided to the enrolled girls to help them continue their studies.

2. Gaur and Rana (2002) The education is a conscious and deliberate process in which one personality acts upon another with the purpose of modifying the development of the others by means of the direct application of the educator's personality and the use of knowledge and skill. Thus, education is conducive process, which develops child's individuality in all aspects-physical, mental,emotional; and social. Education is important for the growth of individual as well as society.Durkhiem defined education as "Education is actually a continuous effort to impose on the child ways of seeing, feeling and acting which he could not have spontaneously."

3. Singh (2003) studied the comprehensive ethnography of the Scheduled tribes and Scheduled castes community. Various tribes such as Aheri,

Ahir, Bangali, Barar, Bauria, Bazigar, Gagra, Gaderia, Gandhila, Gujjar (Muslim), Gujjar (Hindu), Labanas, Nat and Sansi are discussed. The status of women and the literacy rate varies from tribe to tribe. In Bauria tribe, the status of women is low; education is given priority; most of the boys are under- matriculate. The status of women in Gaderia tribe is low, boys and girls study up to secondary level, and dropout is high. Women of Gujjar (Muslim) tribe have low status, they have a positive attitude towards education,but due to poverty, boys and girls are engaged in economic activities. Women enjoy equal status as men in Nat tribes, and the community is very backward in availing the educational facilities, boys and girls, including the elders are uneducated. Thus ,it is concluded that the scenario of education is dismally low in almost all tribes. Some of the tribes like Labanas and Gujjar (Muslim) zhave a positive attitude towards education, but due to an economic condition, they are unable to attend schools, which increases the dropout rate of the children.

4. B.V. Shah (2005) Concluded that the tribals have a positive attitude towards education.They favour the utilitarian aspects of education which will help them in fetching jobs. Government efforts of spreading education among the tribals go in vain due to the poor socio-economic and cultural environment of their homes, education is considered as an important factor in bringing social change. Impact of education differs on different tribal groups. Education has enabled the tribals to participate in the wider economic and political processes. Broadly it is said that though education among the tribals is limited still it has a greater influence on changing the socio-economic, cultural and political aspects of tribals in Indian society. It fosters the leadership qualities among the tribals and in order to bring social and cultural reforms, it has helped the tribals in organizing reformist movements. Both the culture of Sanskritization and modernization is observed among the tribals, which shows the transition from one set of values to another.

4. Thakur (2009) Tribal communities are termed as the most deprived, economically and socially excluded groups. Women of these social groups live in the worst condition as compared to their male members discusses the status of women, it says that men and women are the two different humans being born with different sex, both are equally important, but women are always treated as the second and weaker section of the society, so various means and measures are taken to uplift their status. Tribals women are always neglected, more priority has to be given to these downtrodden, suppressed and the disadvantaged section of the society.

5. Birinder Pal Singh (2010) discussed the comprehensive ethnographic account of seven denotified tribe or Vimuktjatis, criminal tribes, marriage, family, life cycle rituals, and economic activities. Religious attributes, impact of development programmes, it has explained in detail about the history of criminal tribes, how they entered Punjab and settled here why they are called criminals .Tribes like Bangala, Bazigar, Sansi, Barad, Gandhila, Bauria and Nat are discussed separately, the various aspects such as marriage, family, life-cycle rituals, food habits, social divisions, the impact of the development programmes are discussed. Impact of development programmes differs from tribe to tribe. Each tribe has a different scenario of literacy. Broadly, it is observed that the literacy is less in almost all the denotified tribes of Punjab. empowering these women special training programmes must be initiated.

6. Rani et al. (2011) conducted a study to examine the present status of educational facilities availed by tribal women, the data was collected from different sources viz, reports of the university grants commission, New Delhi, Census of India, 2001 and the report on selected Educational Statistics, Published by the Statistics Division, Ministry of Human Resource Development,

Government of India, New Delhi, 2007. It was concluded that education helps women develops self-esteem, self-reliant, capable of building leadership qualities. In the present era of globalization, tribal women are still steeped in the old traditional practices, and superstitions. Education is a vital instrument to bring social change. Female literacy has been increased in the past four decades, and it is also observed that there is a gradual increase in the number of ST girls in acquiring higher education but the fact is that generally, the tribal women had to stop education at various stages so for .

7. Arya & Chauhan (2012) The perspective adopted for educational development among tribal communities fails to address the specific disadvantages characterizing the tribal population. For instance, the population and distance norms formed by the government have not been beneficial to tribal locations because of their sparse population and sporadic Residential patterns. Further, in formulating policies and programmes for tribal education it is essential to understand the complex realities of tribal life and the expectation of tribal's from the system, and this has never been done either by the tribal welfare department or by the education department.

8. Sahu, (2014) Despite the sincere and concerted efforts by the government for the overall development of the scheduled tribes, they are still far behind in almost all the standard parameters of development. They are not able to participate in the process of development, as they are not aware of most of the programmes and policies made for their upliftment. This is mainly due to the high incidence of illiteracy and a very low level of education among the tribal people. Hence, the educational status of the scheduled tribes and the role role of governance in this direction are highly essential.

9. Kaur et al. (2015) discussed women literacy in India and found that though the literacy level of women has increased still a gap is observed between male and female literacy. In 1981 the female literacy was 29.75 per cent, which increased to 65.46 per cent in 2011 along with this gap is found rural and urban female literacy. The literacy rate of SC and ST is less as compared to the general women because of lack of awareness regarding education. The scenario of education of SC and ST women significantly increased due to the sincere efforts by the government and non-government agencies. But still, a lot of improvement is required to raise the educational status of SC and ST women.

10. M.shivaleela (2016) examined the problems related with the access to schools for tribal girls and equality of scheduled tribe women; it also studies on the growth of education among the tribal women, concluded by saying that the status of women varies in all the primitive societies. It is determined by the functions allotted to them, behaviour of males, social attitudes towards them. The tribals in India are always being subjected to different forms of deprivation. Specifically, the tribal women fall victims of the impact of socio-economic changes affecting society. For this the tribal women need to empower themselves and education is considered as an important tool for the development as such different schemes are initiated by the government from time to time for the welfare of the tribal women, but still the educational status is below standard due to various reasons. Therefore problems related to the education of tribal women's has to be looked upon seriously.

11. Suman Kumari (2018) focused on the challenging aspects of tribal women education in India, highlighted the critical issues of tribal women education such as location of village, illiterate parents ,poverty, negative attitudes towards girl's education etc.; concluded that education is essential for the overall development of the individual and society, remove obstacles. In the context of education of tribal women, parents must be optimistic about education. Various measures must be taken by the government for monitoring the working of schools related to teaching methods,

attendance registers, working hours. Teachers motivate the parents for increasing the enrollment of girls in schools. Parents need inspiration for sending their daughters to school rather than only focusing on imparting religious education to girls and decreasing the impact of poverty on girl's education, providing a stipend to the girls' who are already enrolled. Thus this study enables in creating an educational environment and broadening the mindset of tribals. Problems faced by the Tribal Women:

Result and Discussion-

Educational Status of tribal women Female literacy in the world-

The main aim of education is literacy around the world. Literacy is the ability to read and write, which is very less among females in various countries. It is studied that around 10% of the females are illiterate in countries like Afghanistan, Burkina Faso, Somalia and Sudan, and in Colombia, the Dominican Republic, and the Philippines the literacy is about equal.

As per UNESCO,96 girls for every 100 boys are enrolled in primary education in 2008, but in university level, girls are less worldwide, and if we look upon the poorest countries like Afghanistan, Central African Republic and Mali, the number of boys and girls enrollment are equal. In 2015 United Nations General Assembly set 17 goals for the year 2030 which is said as sustainable development goals, it focused on gender equality for achieving the goal of human progress, peace and prosperity, other than this it also targeted on issues like Quality education, no poverty, zero hunger, clean water and sanitation, reduced inequalities.

Prevalence of female literacy in India-

As per the historical analysis, the education status of women in India right from the ancient period to the modern period, have been low except for the Vedic period, which has been considered as the golden period. According to the 2011 census, female literacy is 64.6% as compared to male literacy, which is 80.9%. The literacy among the Scheduled castes female in the year 1961 was 3.29% which increased to 56.50% in the year 2011 as compared to male literacy which was 16.96% in the year 1961 and increased to 75.20%. It is evident from the data that the growth of male literacy is more than the increase in female literacy among the scheduled tribes in India. In 1961 the percentage of literacy of tribes was 8.53%, and in 2011 it increased to 58.96 %. But literacy among the tribal women was 3.16% in 1961, which increased to 49.35% in 2011 according to National Commission of SCs and STs, fifth Report & Census 2011. Thus it is evident from the above data that the literacy rate of ST female is low than the SCs female.

Most tribal's faces a number of challenges which they need to overcome in order to improve their status in society. They intend to discuss here the issues faced by tribal women in particular. Absence of any fix livelihood: Various literature studies reveal that although work participation among tribal women is higher compared to scheduled caste and general population but the livelihoods of the tribal people are neither permanent nor fixed. Most of them do not have a regular source of income, and they live below the poverty level. Tribal people residing in the rural areas pursue diverse low level activities for fulfilling their basic needs. Mostly they are engaged in agricultural activities. Apart from that, they are engaged in pastoral, handicrafts and at times as industrial labourers. Tribal women are mainly not engaged in any kind of continuous work and much like their male counterparts are found to work in agriculture. A meager number of tribal men and women are Educational Status of Tribal Women engaged in government services. Economic conditions of households are related to other aspects of their life. The educational status of girls is measured by different educational indicators such as enrolment, GER, gender parity index in various levels of education for various castes in India viz. SCs & STs in the year 2010-2011. Enrolment of ST girls is low as compared to all the other social

groups. The enrolment of ST girls in the school is 9.57%, and SC girls are 18.9%, and the percentage of all categories is 47.04. The gender parity index of ST girls is high in primary level, but as the level of education increases the gender parity index decreases, which show gender disparity is more. The GER of ST girls declined from 136.7% at primary level to 9.5% at the higher level. Dropout rates of ST girls vary from a lower level of education to a higher level. ST girls of 1 to 5 have a lower dropout rate, and girls student of classes 1 to 8 and 1 to 9 have a higher dropout rate. So it is evident that level of education among the tribal women is low due to various social, economic and cultural factors and special efforts must be paid to remove the problem of literacy of girl child in India. Tribal women are socio-economically and educationally backward section of the society. Their literacy level is far below the level of general people.

Government efforts to upliftment of the Tribal Women The Central and State Government took steps in Accelerating Education of Tribal women in India:- In the post-independence period, constitutional provisions were framed for providing free and compulsory education to children up to the age of 14 years. The National Policy on Education 1986 &1992 for achieving the target of Universal Elementary Education (UEE). In spite of these efforts, the goal of Universal Elementary Education has become a distant dream for the country. Near about 10 million girls of school-going age do not get the opportunity of attending school due to various factors like lack of finance, lack of accessibility to school. The programme started by the government of India is1. SarvShikshaAbhiyan, other initiative taken by the government to encourage more and more children attending school are 2. Free uniforms, 3. Free textbooks andschool bags, 4. Attendance scholarship for girls, 5.Mid-day Meal 6.The PESA (The Panchayats Extension to Scheduled Areas) Act, 1996.7. Initiation of ashram schools in the 1970s.

Observation & Data Analysis-

The data thus collected was analyzed, tabulated and presented in the following pages.

The tribal community all over India has been subjected to various forms of deprivation such as, alienation from land and other forest resources since the British rule. Women by nature have, greater ability to organise people, resources and work. They have greater perseverance adaptability and attitude for discipline and cleanliness. To utilise their creativity, adaptive and organizational ability and to motivate them to participate in education, development of their own group is actually required.A tribal woman occupies an important place in the socio-economic and political structure of her society. They exercise free and firm hand in all aspects related to their social and economic life. But it is still important to emphasize that the tribal woman is in herself exactly the same as any other woman with the same passion, love and fears, the same devotion to the home, to husband and to children. The same faults and the same virtues. Though the tribal women are away from the main stream of national life, but they are not kept away from the impact of socioeconomic changes effecting the neighborhood or society in general. In the process of change, the tribal woman is forced to adhere to certain norms which may even take away her freedom, her control over the traditional productive system, her house, family and children and even her own life. The process of such alienation has an impact on the tribal women. It is often alleged that the level of aspiration of these women as a group is low and they are quite satisfied with what they are and with what they have. It is most often not true only to womenfolk but to everyone who feels helpless and frustrated. However, inorder to develop and raise their level of aspiration, adequate educational opportunities are to be provided, so that they get motivated to participate, support and also ultimately learn to initiate their own programmes of development.

Initiatives for Schedule Tribes In India

Constitutional Provision for Schedule Tribes-

- **Article 15(4) :** empowers the state to make any special provision of the advancement of socially and educationally backward classes of citizens or for SCs and STs.
- **Article 15(5) :** allows the state to make special provisions for backward classes or SCs or STs for admissions in private educational institutions, aided or unaided.
- **Article 29 :** Cultural and Educational rights For STs.
- **Article 46 (DPSP) :** Is to provide the educational and economic interests of the weaker sections of the people, in particular, SCs and STs, and to protect them from social injustice and all forms of exploitations.
- **Article 335 :** allows relaxation in qualifying marks for admission in educational institutes or promotions for SCs / STs.

Educational Schemes for Tribals-

(1) Ekalavya Schools-

- Every block more than 50% ST population or atleast 20,000 tribal persons by 2022.
- Provide grants under Article 275(1)- quality middle & high level education.
- Preserve local arts ,culture and sports + Skill Development.
- Scheme is not new (1997-98) but now expand it –Budget 2018.

(2) Van Dhan Scheme –(Chhatisgarh)-

- Promote enterprise and marketing skills in tribals.
- Van Dhan Vikas Kendra will be formed.

(3) VanbandhuKalyan Yojana; 2014-

- Holistic develpoment and welfare of tribal population.
- Quality Education.
- Sustainable growth.
- Bridging infrastructural gaps,

(4) Other-

- A primary school within one km. of walking distance from habitations of 200 population instead of 300 population.
- Abolition of tuition fee in government schools in all states up to elementary level.

(5) Prayas-PMO-

(6)Tribal Research Information,Education, Communication and Events (TRI-ECE).

(7) National fellowship and scholarship for Higher Education of ST student.

Discussion of the Study-

(1) Women's education assumes particular importance in the context of the country's development as women constitute nearly half of the nation's population. Education enables women to learn basic skills and fosters a value system which helps in uplifting their status in society. For the development of society, inclusive growth of all section is needed, and for this perspective, it is essential to uplift the People, who are aboriginals, a primitive, uncivilized, indigenous, marginalized and deprived section of the society.

(2) These communities are far behind in the process of development. They are economically, culturally, politically, and socially excluded people of India. Women of these Communities are one of the most neglected sections of the society. The main reason for their underdevelopment is lack of education. Recognizing this fact, more priority has been laid on women in five-year plan to promote women's enrolment and retention in school various incentives like free distribution of text-books, school uniforms for girls, providing Mid-Day Meal and attendance scholarship.(Article -46 talks about the promotion of educational and economic interests of Scheduled castes, Schedule Tribes and other weaker sections).

(3) The tribal women though they are away from the main stream of national life, but they are not kept away from the impact of socio – economic changes effecting the society in general. In this process of change, the tribal woman is forced to adhere to certain norms which may even take away

her freedom, her control over the traditional productive system, her house, family and children and even her own life. The fact remains that a large number of tribal women have missed education at different stages and in order to empower them there is a great need of providing opportunities so as to enable them to assume leadership qualities for economic self-reliance and even social transformation.

(4) However in order to develop and raise their level of aspiration, adequate educational opportunities are to be provided so that they get motivated to participate, support and also ultimately learn to initiate their own programmes of development. Therefore, in this paper an attempt has been made to analyse the present status of educational facilities availed by tribal girls and women. It is also suggested to provide skill and vocational training programmes to tribal women living in rural areas

Conclusion-

- Education to women is as essential as to men. It makes women to find the right way to development. Even today in most parts of the country, the tribal women remains steeped in superstitions and ignorance with men presiding over their destiny.
- The main aim of education is to change the cultural norms and patterns of life of tribal women to make them economically independent, to organise themselves to form strong groups so as to analyse their situations and conditions of living, understand their rights and responsibilities and to enable them to participate and contribute to the development of women and the entire society.
- The population of STs is very high in some states and in some states there are no STs. With regard to the literacy rates, female literacy has raised considerably in the past four decades both in urban as well as rural areas. Moreover the percentage of Schedule Tribe girls in higher education has been gradually increasing.
- The fact remains that a large number of tribal women in rural areas might have missed educational opportunities at different stages and in order to empower them varieties of skill training programmes have to be designed and organised. The skill could be for assuming political leadership or for economic self-reliance or even social transformation.

References

1. Nayar, U. (1992). Education of girls in rural areas: A study of dropouts and non-enrolment. New Delhi: National Council of Educational Research and Training (NCERT).
2. Gaur, A., & Rana, P. (2002). Fundamentals of Education. Delhi : Anmol Publications.
3. Singh, K. S. (2003). People of India: An ethnographic atlas of Scheduled Castes and Scheduled Tribes. New Delhi : Anthropological Survey of India.
4. Shah, B. V. (2005). Education and social change among tribals. New Delhi: Rawat Publications.
5. Thakur, S. (2009). Status of tribal women in India: Issues and concerns. New Delhi: Abhijeet Publications.
6. Singh, B. P. (2010). Denotified and nomadic tribes: A sociological perspective. Punjab: Punjabi University Press.
7. Rani, P., Sharma, M., & Verma, S. (2011). Status of educational facilities among tribal women: A statistical overview. Journal of Human Resource Development, 4(2), 78–84.
8. Arya, S., & Chauhan, A. (2012). Educational backwardness of tribal communities in India. International Journal of Social Sciences and Interdisciplinary Research, 1(8), 12–19.
9. Sahu, B. (2014). Scheduled tribes and their education : A critical analysis. Indian Journal of Educational Research, 3(1), 45–52.
10. Kaur, R., Kaur, M., & Kaur, G. (2015). Literacy among SC and ST women in India. Journal of Educational Planning and Administration, 29(3), 143–157.
11. Shivaleela, M. (2016). Educational development of tribal women : Challenges and opportunities. Indian Journal of Tribal Studies, 2(1), 34–42.
12. Kumari, S. (2018). Education of tribal women in India: Challenges and solutions. Journal of Rural and Tribal Development, 6(2), 90–99.

ISSN : 2349-9273

Received: 02 May, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

Constituent Assembly Debates : Language, Identity and the Making of Indian Democracy

- Prof. Sudha Rajput
Professor –
Teacher-Education Department,
Shri Varshney Degree College,
Aligarh-202001 (U.P.)

E-mail:
rajputsudha7181@gmail.com

Abstract

This research paper delves into the intense and foundational debates surrounding language policy in the Indian Constituent Assembly from 1946 to 1949, offering a detailed analysis of how these deliberations shaped the linguistic framework of the Indian state. The Assembly's discussions reflected deeper ideological conflicts over national identity, regional autonomy, and the legacy of colonial rule. Language was not merely seen as a tool of communication but as a fundamental expression of cultural identity, political inclusion, and socio-economic power. By tracing the historical antecedents, examining the ideological positions of key figures, and evaluating the compromises enshrined in the Constitution, this paper highlights the enduring influence of these debates on India's evolving democracy. The post-independence developments, including the anti-Hindi agitations and policy responses, further demonstrate the unresolved and dynamic nature of the language question in Indian politics. Ultimately, this paper argues that linguistic pluralism was not only a political necessity but also a democratic imperative for a diverse nation like India.

Colonial Legacy and the Pre-Independence Linguistic Landscape-

British colonial rule entrenched a dual-language system in India, privileging English for governance, law, and elite education while relegating vernacular languages to informal and local domains. Introduced through Macaulay's Minute on Indian Education in 1835, English became the medium of upward mobility and administrative control. It created a linguistic elite, largely urban and upper-caste, who could access state power and modern institutions. This bifurcated language policy sowed the seeds of a deep socio-linguistic divide that persisted into the post-colonial era.

Despite the official use of English, India's linguistic reality remained immensely pluralistic. Hundreds of languages and dialects coexisted, forming an intricate mosaic of cultural

identities. Major regional languages like Bengali, Tamil, Telugu, Marathi, and Urdu enjoyed literary and political significance. Language often intersected with regional pride and historical consciousness, particularly in provinces with a strong linguistic heritage.

The Indian nationalist movement harnessed this multilingualism in varied ways. While many leaders viewed Hindi as a potential unifying national language, others emphasized the importance of linguistic diversity. Leaders like Gandhi promoted Hindustani a syncretic blend of Hindi and Urdu as a people's language, distinct from the Sanskritized Hindi favored by certain northern elites. This tension between linguistic unity and regional authenticity foreshadowed the post-independence debates.

Constituent Assembly Debates : Ideological Tensions and Linguistic Nationalism-

The Constituent Assembly's language debates revealed deep ideological and emotional divisions among its members. These discussions, held between 1946 and 1949, grappled with three interlinked questions: Which language should serve as the official language of the Indian Union? Should English be phased out or retained permanently? How should the Constitution accommodate the country's vast linguistic diversity?

The debates were frequently marked by passionate speeches, disruptions, and intense lobbying. R.V. Dhulekar declared that "people who do not know Hindustani have no right to stay in India." This was met with vociferous protests from non-Hindi speaking members, who viewed such statements as exclusionary and undemocratic. Pro-Hindi members like Seth Govind Das viewed Hindi not only as a cultural emblem but also as a political necessity to forge a unified Indian identity. Das stated that Hindi was "the language of the masses," capable of integrating India through a shared communicative medium.

However, this vision was challenged by delegates from regions with strong linguistic identities. T.T. Krishnamachari famously stated, "I come from the South, and I may tell you that we dislike the imposition of Hindi very much." He warned that enforcing Hindi could lead to the secession of southern states. G. Durgabai Ammal supported the recognition of Hindi but insisted on safeguarding the rights of other linguistic communities. Frank Anthony, representing the Anglo-Indian community, highlighted the practical challenges of sudden linguistic transition, especially in education and legal systems.

These disagreements underscored the fundamentally political nature of language in the Indian context. Delegates from Bengal, Punjab, and Madras vocally opposed what they perceived as a cultural and political imposition. The debates on September 12 and 13, 1949, were particularly charged, with members nearly coming to physical altercations. Emotional appeals intertwined with threats of political fallout, including mass resignations and civil unrest in certain states. The linguistic preferences of over 40% of India's population could not be ignored, and the Assembly became a crucible for negotiating competing visions of Indian nationhood.

Debates also revolved around the nature of Hindi itself. Would it be Sanskritized or more accessible to the masses? Should Urdu elements be retained, as Gandhi had proposed through Hindustani? The ideological divide over the very form of the national language mirrored deeper cleavages between cultural nationalism and inclusive pluralism.

Rajendra Prasad, the President of the Assembly, struggled to maintain decorum during particularly heated sessions. The debates extended for several weeks, involving over 200 members, each voicing concerns shaped by regional, religious, caste, and class perspectives. Language was not simply an administrative issue—it was a proxy for power, representation, and historical justice.

Eventually, the overwhelming complexity

of interests made it evident that a definitive resolution would be neither quick nor universally satisfying. Instead, the path of negotiated compromise became the only viable route to preserve national cohesion.

The Role of English: A Language of Continuity and Elitism-

Amid the polarized positions, English emerged as a pragmatic compromise. Though criticized as a colonial imposition, English offered a neutral ground in the multilingual polity. Leaders like Nehru and Ambedkar acknowledged its elitist legacy but also recognized its utility for administrative continuity, legal precision, and international engagement.

Ambedkar, in particular, argued that a hasty imposition of Hindi would be both unwise and unjust. He supported a phased approach, allowing English to remain until Hindi could be suitably developed and widely accepted. Nehru, too, emphasized that governance must not be disrupted for the sake of linguistic idealism. Both leaders feared that linguistic centralization could fracture the fragile unity of the newly independent state.

Thus, Article 343 of the Indian Constitution declared Hindi in Devanagari script as the official language of the Union while allowing English to continue for official purposes for a transitional period of 15 years. This provision reflected a recognition of the deep-rooted linguistic complexities and the political risks of premature homogenization.

The Munshi-Ayyangar Formula : Constitutionalizing Compromise-

The Munshi-Ayyangar formula, named after K.M. Munshi and Gopalaswami Ayyangar, provided a structured compromise. It included:

1. Hindi as the official language of the Union.

2. English to continue for all official purposes for 15 years.

3. Regional languages to be used for official purposes within states.

4. Establishment of an Official Language Commission to oversee the transition.

This carefully crafted arrangement deferred confrontation and institutionalized linguistic pluralism. It acknowledged the federal nature of the Indian polity and gave constitutional recognition to regional languages. By allowing linguistic autonomy at the state level while maintaining bilingualism at the central level, it attempted to balance unity with diversity.

The compromise also reflected a broader principle: language policy in India must evolve through consensus, not coercion. It institutionalized negotiation as the mode of linguistic governance.

Anti-Hindi Agitations and the Recalibration of Policy-

The 15-year transition deadline reignited tensions in the 1960s. As 1965 approached, fears of Hindi imposition led to massive protests, particularly in Tamil Nadu. The anti-Hindi agitations, spearheaded by students and political parties like the DMK, turned violent and forced a major rethinking of language policy.

Protesters argued that enforcing Hindi as the sole official language would reduce non-Hindi speakers to second-class citizens. The intensity of these agitations highlighted the emotive power of language as an identity marker. The central government, led first by Lal Bahadur Shastri and later by Indira Gandhi, responded by assuring that English would continue indefinitely as an associate official language.

The Official Languages Act of 1963, amended in 1967, formalized this assurance, marking a significant shift in India's language policy. It recognized the political and emotional significance of regional languages and acknowledged the impracticality of enforcing linguistic uniformity. The federal structure was thereby strengthened, and linguistic accommodation became a key tenet of Indian democracy.

Language, Democracy, and Social Inequality

India's multilingual policy has facilitated democratic participation by enabling people to

engage with governance in their mother tongues. Regional languages are used in state legislatures, local administrations, and increasingly in courts and education. The States Reorganization Act of 1956, which reorganized state boundaries along linguistic lines, reinforced this model of linguistic federalism.

However, the simultaneous dominance of English has produced a paradox. While it ensures national cohesion and global connectivity, it also perpetuates social hierarchies. English proficiency remains a marker of privilege, enabling access to higher education, lucrative employment, and administrative power. This has reinforced existing inequalities, particularly among marginalized communities.

Furthermore, the continued valorization of Hindi by state institutions, including media and bureaucracy, has created a linguistic hierarchy. Speakers of less-prominent regional languages often find themselves excluded from national discourse. Thus, India's language policy, while inclusive in structure, still harbors elements of exclusion in practice.

Conclusion-

Language as a Site of Negotiation and Identity-

The Constituent Assembly's language debates were pivotal in shaping not just India's linguistic policy but its democratic ethos. These debates foregrounded the complexities of governing a linguistically diverse society and emphasized the need for accommodation and dialogue. The decision to adopt a multilingual framework was not merely a political compromise it was a recognition of India's pluralistic reality.

Language remains a dynamic site of identity formation, political mobilization, and social negotiation in India. From demands for language-based statehood to debates over medium of instruction, linguistic politics continues to influence policy and public life. Technological changes, migration patterns, and global interactions are adding new dimensions to these challenges.

Ultimately, the Indian experience underscores a vital democratic lesson: in a diverse society, unity cannot be achieved through uniformity. It must be negotiated through respect, recognition, and representation. The framers of the Constitution, in choosing negotiation over imposition, laid the foundation for a resilient, pluralistic democracy one that must continue to evolve in many tongues.

References

1. Constituent Assembly Debates. Constitution of India Digital Archive. https://www.constitutionofindia.net.
2. King, Robert D. *Nehru and the Language Politics of India*. Oxford University Press, 1997.
3. Kaviraj, Sudipta. *The Imaginary Institution of India*. Columbia University Press, 2010.
4. Ramaswamy, Sumathi. *Passions of the Tongue: Language Devotion in Tamil India, 1891–1970*. University of California Press, 1997.
5. Austin, Granville. *The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation*. Oxford University Press, 1966.

ISSN : 2349-9273

Received: 12 May, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

Life Skills : A Foundation for Holistic Human Development in Educational Settings

- Prof. Shashi Bala Trivedi
Head of Department – Teacher-Education,
Shri Varshney Degree College, Aligarh-202001 (U.P.)

E-mail:
shashibalatrivedi@gmail.com

Abstract

Life skills are critical abilities that enable individuals to effectively navigate the demands, challenges, and responsibilities of daily life. Recognized as essential competencies by organizations such as the World Health Organization (WHO) and UNESCO, these skills go beyond academic learning and prepare individuals to lead meaningful, balanced, and productive lives. This research paper explores the various dimensions of life skills, emphasizing their relevance in contemporary society, especially within educational systems. Through a detailed analysis of eleven key life skills ranging from self-awareness and empathy to emotional regulation and stress management this paper discusses how cultivating these skills leads to better decision-making, enhanced interpersonal relationships, emotional intelligence, and overall psychological well-being. Drawing from psychological theories, educational policies, and interdisciplinary research, this paper establishes that life skills are not only beneficial for personal development but are also foundational to social harmony, career readiness, and national progress.

Key words- ***Life skills, Dimensions of life skills, Holistic development,Decision-making, Emotional intelligence.***

Introduction-

In an era of rapid globalization, technological advancements, and shifting social dynamics, mere academic knowledge is no longer sufficient for an individual to thrive. According to the World Health Organization (WHO, 1997), life skills are abilities that help individuals deal effectively with the demands and challenges of everyday life. These skills, when integrated into education systems and practiced consistently, can significantly contribute to the development of a well-rounded personality.

In India, where socio-economic diversity creates unique life challenges, life skills assume even greater importance. National policies, such as the National Education Policy (NEP) 2020, underscore the need for holistic development including emotional, social, and ethical learning through structured life

skills training (Government of India, 2020). This paper analyses the importance, structure, and implementation of life skills education, with a focus on eleven foundational competencies.

Self-Awareness-

Self-awareness refers to a deep understanding of one's own emotions, thoughts, values, and behaviour. According to Goleman (1995), self-awareness is the cornerstone of emotional intelligence. It helps individuals recognize their strengths, weaknesses, preferences and triggers, which in turn improves self-esteem and confidence. Through self-awareness, individuals are better equipped to regulate their emotions and responses to external stimuli, thereby improving decision-making and interpersonal interactions.

In educational settings, self-awareness training helps students align their career choices with their interests and capabilities, fostering intrinsic motivation and purpose.

Empathy-

Empathy is the capacity to understand and share the feelings of others. It involves placing oneself in another's situation and viewing problems from their perspective. Empathy fosters compassion, acceptance, and tolerance key values for co-existence in diverse societies. Research by Decety and Jackson (2006) shows that empathy not only strengthens interpersonal bonds but also reduces conflicts and promotes prosocial behaviour.

In schools and universities, empathy can be cultivated through collaborative learning, service-learning projects, and reflective exercises, which develop sensitivity to others' experiences and promote inclusive behaviour.

Interpersonal Relationships-

Interpersonal relationship skills refer to the ability to establish and maintain healthy, rewarding relationships with others. These skills include communication, cooperation, trust-building, and conflict resolution. Positive interpersonal relationships are associated with better mental health, social integration, and academic performance (Wentzel, 1993).

Programs that encourage group work, peer mentoring, and dialogue-based learning foster strong interpersonal skills. Individuals who master these skills are more likely to become empathetic leaders, team players, and socially responsible citizens.

Effective Communication-

Effective communication is the ability to express oneself clearly and respectfully, both verbally and non-verbally. It includes listening actively, using appropriate body language, and articulating thoughts without offending others. Communication is central to all human interactions and affects personal, academic, and professional success.

According to Hargie (2011), communication competence can be taught through role-playing, public speaking, and feedback mechanisms. Training in communication ensures that individuals can assert their rights, negotiate respectfully, and maintain harmonious relationships.

Analytical and Critical Thinking-

Analytical thinking refers to the ability to evaluate information logically and critically to make reasoned judgments. Critical thinking enhances one's capacity to question assumptions, assess arguments, and solve problems methodically. According to Facione (2015), critical thinking is vital in an information-rich society where individuals must differentiate between credible and misleading content.

In educational contexts, critical thinking can be fostered through inquiry-based learning, debates, and case study analyses. It prepares students for democratic participation, responsible decision-making, and lifelong learning.

Creative Thinking-

Creative thinking is the ability to generate new and innovative ideas. It allows individuals to approach problems with flexibility and find original solutions. Creativity is linked to emotional well-being and self-expression, as well as to innovation in professional settings (Runco & Jaeger, 2012).

Creative thinking is encouraged through arts education, brainstorming sessions, and interdisciplinary learning. It empowers students to think beyond conventional boundaries and contribute meaningfully to social and technological progress.

Decision-Making Skills-

Decision-making involves selecting the most appropriate course of action from several alternatives. Effective decision-making requires clarity, risk assessment, evaluation of consequences, and emotional regulation. Poor decision-making, often influenced by peer pressure or emotional impulse, can have long-term consequences, especially for adolescents.

Structured decision-making models, such as the DECIDE model (Define, Explore, Consider, Identify, Decide, Evaluate), can help students develop this skill. Incorporating decision-making exercises in curriculum fosters independence, responsibility, and foresight.

Problem-Solving Skills-

Problem-solving is the process of identifying, analysing and resolving problems systematically. It is an essential life skill that underpins academic success and workplace competence. According to Jonassen (2000), problem-solving ability is enhanced when learners are exposed to real-world challenges in simulated or project-based environments.

Students can develop this skill through group activities, puzzles, and case-based scenarios. Teaching learners to break down problems into manageable components builds resilience and adaptability.

Emotional Understanding-

Emotional understanding refers to recognizing and managing one's own emotions while interpreting others' emotional expressions. It contributes to emotional intelligence and social functioning. Mayer and Salovey (1997) argue that emotionally intelligent individuals are better at managing relationships, coping with stress, and achieving goals.

Practicing mindfulness, journaling and empathy-building exercises can enhance emotional understanding. Educational institutions that foster emotional intelligence report lower incidences of bullying, higher student engagement, and improved academic outcomes.

Stress Management-

Stress coping is the ability to manage and reduce mental and physical tension caused by external or internal stressors. Stress affects cognitive function, decision-making, and emotional health. Lazarus and Folkman (1984) differentiate between problem-focused and emotion-focused coping strategies, both of which can be taught and reinforced.

Practical stress reduction techniques include-

- Physical activities like yoga, exercise, and breathing exercises
- Mental strategies such as positive affirmations, talking to trusted individuals, and mindfulness meditation

Colleges can incorporate wellness centers, mental health workshops, and relaxation spaces to address growing concerns of student stress.

Emotional Regulation-

Controlling emotions is essential for maintaining stability and preventing impulsive reactions. Emotional regulation helps individuals remain calm in difficult situations and act appropriately. The "Traffic Light Approach" Stop (red), Think (yellow), Act (green) is an effective tool in emotional control education.

Positive reinforcement, cognitive behavioural strategies, and peer modelling can support students in mastering emotional regulation. Such skills not only enhance personal relationships but are crucial for leadership and crisis management roles.

Relevance in Contemporary Education and Society-

Modern education systems globally are integrating life skills into their curricula. The NEP 2020 in India emphasizes 21st-century skills, experiential learning, and social-emotional learning. Internationally, UNESCO's Education for Sustainable Development (UNESCO, n.d.)

advocates for life skills to achieve global citizenship and sustainable societies.

Workplaces today also demand life skills. According to the World Economic Forum (2023), skills like critical thinking, creativity, emotional intelligence, and resilience are among the top employability traits. Hence, life skills are no longer optional—they are imperative for personal success and societal cohesion.

Challenges and Recommendations-

Despite their recognized importance, life skills education faces implementation barriers:

- Lack of trained facilitators.
- Insufficient curriculum integration.
- Cultural stigmas around emotional learning.
- Limited assessment tools.

To overcome these, the following strategies are recommended:

- Training educators in life skills facilitation.
- Embedding life skills in subject content and co-curricular activities.
- Creating partnerships with NGOs and mental health professionals.
- Developing assessment rubrics for life skill competencies.

Conclusion-

Life skills are indispensable tools for navigating the complexities of modern life. From emotional understanding and stress management to decision-making and interpersonal relationships, each skill plays a unique role in shaping resilient, thoughtful, and compassionate individuals. Educational institutions, policymakers and families must collaborate to embed life skills in learning environments. As India and the world prepare for uncertain futures, the systematic development of life skills ensures that individuals are not just literate, but truly educated—empowered to lead fulfilling lives and contribute meaningfully to society.

References

1. Decety, J., & Jackson, P. L. (2006). A social neuroscience perspective on empathy. Current Directions in Psychological Science, 15(2), 54–58.
2. Facione, P. A. (2015). Critical thinking: What it is and why it counts (2015 update). Insight Assessment.
3. Goleman, D. (1995). Emotional intelligence: Why it can matter more than IQ. Bantam Books.
4. Government of India, Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020.
5. Hargie, O. (2010). Skilled interpersonal communication: Research, theory and practice (5th ed.). Routledge.
6. Jonassen, D. H. (2000). Toward a design theory of problem solving. Educational Technology Research and Development, 48(4), 63–85.
7. Lazarus, R. S., & Folkman, S. (1984). Stress, appraisal, and coping. Springer.
8. Mayer, J. D., & Salovey, P. (1997). What is emotional intelligence? In P. Salovey & D. Sluyter (Eds.), Emotional development and emotional intelligence: Educational implications(pp. 3–31). Basic Books.
9. Runco, M. A., & Jaeger, G. J. (2012). The standard definition of creativity. Creativity Research Journal, 24(1), 92–96.
10. UNESCO. (n.d.). Education for sustainable development.
11. Wentzel, K. R. (1998). Social relationships and motivation in middle school : The role of parents, teachers, and peers. Journal of Educational Psychology, 90(2), 202–209.
12. World Economic Forum. (2023). The future of jobs report 2023.
13. https://doi.org
14. https://www.academia.edu
15. https://www.education.gov.in
16. https://www.unesco.org
17. https://www.weforum.org

ISSN : 2349-9273

Received: 20 April, 2024; **Accepted:** 28 September-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

Navigating New Realities : Climate Change and Migration Challenges in Amitav Ghosh's Gun Island

- Shubham Mani Tripathi
(Research Scholar)
Department of English & Modern European Languages,
Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University,
Gorakhpur-273009 (U.P.)

E-mail:
shubhammanitripathi007@gmail.com

Abstract

Climate change is one of the biggest threats to humanity in the 21st century. Jnanpith awardee author Amitav Ghosh is among the few writers in the world who have been boldly raising their voices against this great problem through their writings. Gun Island by Amitav Ghosh is a compelling and beautiful narrative that explores the deep connections between climate change and migration. The novel is set against the backdrop of the Sundarbans, an area increasingly ravaged by rising sea levels and extreme weather patterns. Ghosh paints a vivid picture of climate change which compels people to leave their homes, encountering emotional and societal upheaval. The novel emphasises the broader consequences of climate-induced migration, as well as the urgent need for action to address serious underlying environmental problems. Gun Island urges readers to reflect on how global warming impacts the Earth and forces communities to grapple with the consequences of displacement, inequality, and survival.

Keywords- ***Gun Island, Climate change, Migration, Displacement, Environmental destruction, Nature human relationship, Illegal migration, Dead Zones, Fish Kill.***

Introduction-

Climate change is a severe issue in the modern 21st century. Climate change is the global phenomenon of climate transformation. It refers to significant, long-term changes in Earth's average temperature, weather patterns, and other climate-related parameters. It is primarily driven by human activities, such as the burning of fossil fuels, deforestation, and industrial activities, which release greenhouse gases (GHGs) into the atmosphere. These gases produce unusual heat, leading to a warming effect known as the greenhouse effect. Thus, the future of mankind and the stability of the global economy all are under great threat. Global warming leads not only to rising surface temperature of the earth but also the melting of glaciers, heavy rainstorms, frequent drought, and floods. Global Warming is one

of the most important factors responsible for climate change.

Amitav Ghosh is a celebrated Indian author known for his remarkable contributions to climate fiction. Ghosh's literary journey began with his debut novel, The Circle of Reason, published in 1986. Since then, he has authored several critically acclaimed works, including The Shadow Lines, The Glass Palace, and the Ibis trilogy, which delves into the opium trade's impact on India and China. His non - fiction works, such as In an Antique Land and The Great Derangement: Climate Change and the Unthinkable, explore the intersection of history, culture, and environmental conflicts. Ghosh's notable achievement is his ability to humanize the climate crisis, making it relatable and tangible through his writings. He makes the severe issue of climate crisis easy to understand and relate to in his stories. His novel The Hungry Tide and The Gun Island is set in the Sundarbans, a region heavily affected by climate change. Ghosh in his essay collection Wild Fictions addresses the political and natural "monsters" of our time. Ghosh's work encourages readers to rethink their relationship with nature and recognize the interconnectedness of global crises. Ghosh's contributions have earned him numerous accolades and honours. He received the prestigious Jnanpith Award in 2018, India's highest literary honour. He has also been awarded honorary doctorates from institutions such as Maastricht University and the University of Puget Sound. In 2024, Ghosh was honoured with the Erasmus Prize for his significant contributions to imagining the unthinkable through his writings on the climate crisis.

Through his deep understanding of environmental context and world politics writing, Amitav Ghosh helps readers think about the world's serious problems and encourages them to make a difference. His writings show the power of imagination to help readers to understand complex issues and inspire meaningful changes. Amitav Ghosh's most acclaimed novel Gun Island (2019) unfolds a rich and complex story about climate change, migration, and human survival. A climate change worsens, it disrupts badly our ecosystems, displaces communities, and creates new patterns of migration. Ghosh skilfully connects these elements in a story that spans continents, cultures, and generations. The novel highlights the themes of migration, environmental disaster, and the fragile relationship between humans and nature showing how climate change reshapes human experiences.

In the novel, the protagonist, Deen, finds himself caught between the dilemma of past and present, dealing with personal and global crises, especially the threats of climate change. Ghosh portrays real issues of the world like rising sea levels, extreme weather, and the displacement of vulnerable populations to vividly portray the challenges posed by environmental degradation and migration. The novel encourages readers to rethink their response to climate change by highlighting the need for solidarity, understanding, and adaptation in an uncertain future.

This paper aims to investigate, how climate change and migration are important themes in Gun Island. To analyse how Amitav Ghosh uses the story to connect environmental, human and non-human problems.The paper aims to search social and political aspects of climate-induced migration, and how the fictional story reflects real-life issues faced by people who are forced to migrate. Why is there an urgent need to address non-human migration, which also disturbs the whole cycle of ecosystem.

Gun Island is a compelling narrative that explores the deep connections between climate change and migration. The novel is set against the backdrop of the Sundarbans, an area increasingly ravaged by rising sea levels and extreme weather. The novel follows the journey of its protagonist as he encounters the real-life challenges faced by people displaced by environmental destruction. Ghosh portrays a vivid picture of how climate change forces individuals to leave their homes, navigating both personal and societal upheaval along the way. Through its characters, the novel

highlights the broader implications of climate-induced migration, emphasizing the urgent need for action to address the underlying environmental causes. Gun Island urges readers to reflect, on how global the planet but also forces communities to grapple with the consequences of displacement, inequality, and survival.

Gun Island is a remarkable story of protagonist Deenanath Datta (Deen), an Asian antiquarian and rare book merchant who has moved to Brooklyn, America. The story begins with Deen visiting Kolkata to escape the harsh winter in Brooklyn. At a party in Kolkata, Deen is approached by a distant relative Kanai Dutt, who tells him the mythology of a Gun Merchant called Bonduki Sadagar and Manasa Devi. Mansa Devi is the Goddess of snakes and all other poisonous creatures. The myth describes the conflict between Manasa Devi and Bonduki Sadagar, where the goddess strives to convert him into her follower, while the merchant stubbornly refuses to worship her. Finally, Gun Merchant becomes her devotee and builds a shrine -a dhaam- inside the Sundarbans. The search for the origin of the name "Bonduki Sadagar" (which means "gun merchant" in Bangla) takes Deen on a global quest. Deen decided to visit aunt Neelima Bose and gather information about the merchant and his shrine. Eventually, he unravels the mystery and ends up at an ancient temple in the Sundarbans' mangrove swamps. His journey reveals a series of events highlighting the current reality of climate change and its impact on the migration patterns of humans and animals.

Cyclone Aila-

During the journey to the Sundarbans, Moyna served as a local guide and informed him about several problems in the region. She also made him aware of cyclone Aila, which struck the Sundarbans in 2009.

> *"Yet Aila's long-term consequences were even more devastating than those of earlier cyclones. Hundreds of miles of embankment had been swept away and the sea had invaded places where it had never entered before; vast tracts of once fertile land had been swamped by salt water, rendering them uncultivable for a generation, if not forever.*
>
> *The evacuations too had produced effects that no one could have foretold. Having once been uprooted from their villages many evacuees had decided not to return, knowing that their lives, always hard, would be even more precarious now. Communities had been destroyed and families dispersed; the young had drifted to cities, swelling already swollen slums; among the elderly, many had given up trying to eke out a living and had taken to begging on the streets."(Ghosh 48)*

The rising levels of poverty in the Sundarbans have created an environment that's become increasingly attractive to traffickers, particularly following the devastating impact of Cyclone Aila. For generations, the people of the Sundarbans have lived in harmony with nature, relying on traditional livelihoods such as fishing. However, due to the swift changes in terrain of the Sundarbans' severe weather events like cyclones and intense storms, the familiar land and waters they cherished are now unrecognizable. The rivers are shifting unpredictably by changing their course and continual flooding is washing away more land. Even the most skilled and experienced fishermen got perplexed as they try to navigate these altered waters. Consequently, many are now compelled to migrate to new places in search of stability, as life in the Sundarbans becomes increasingly challenging and uncertain.

Cyclone Aila brought with it powerful winds and torrential rains, leading to severe flooding in the Sundarbans. The rising waters submerged homes, farmlands, and entire villages, displacing thousands of people. The flood waters also brought saltwater from the sea, contaminating

fresh water sources and rendering agricultural land infertile. This had a devastating effect on the livelihoods of the local communities, who relied heavily on farming and fishing. The cyclone also caused significant damage to the mangrove forests, which are a vital part of the Sundarbans' ecosystem. The strong winds uprooted trees and destroyed large swathes of the forest, disrupting the habitat of many species, including the endangered Bengal tiger. The loss of the mangroves also left the region more vulnerable to future storms and rising sea levels. During his trip to Sundarbans, Deen also meets Horen Naskar, Tipu & Rafi who help Deen to unravel the mysteries of Shrine and gain a better understanding of the problems and crises of Sundarbans region.

Horen Naskar Deen to is a 60-year-old skilled sailor who takes the shrine of Mansa Devi. During the trip, Horen sheds light on the devastation caused by the Great Bhola cyclone of 1970 which struck the region in May 2009, caused widespread devastation and left a lasting impact on the people and the environment of Sundarbans.

Human and Non-human Migration-

Tipu and Rafi are other major characters who act as a mouthpiece of the author. Both are good friends and are true victims of climate-induced migration. Rafi and Tipu live in a world where they suffer from sense of belongingness and find themselves alienated and neglected in society. Tipu is Moyna's son and a technology expert who helps people migrate to other countries so they can live a better life. He was educated in America and is used to a wealthy lifestyle, struggles to fit himself into a poor and superstitious community. Every day, it becomes harder for him to live a peaceful and comfortable life. On the other side, Rafi is a 17 years old young boy. He is the caretaker of the Mansha Devi shrine. He belongs to a Fishing community of Sundarbans, a region in India known for its dense mangrove forests and unique huge crises of climate change. Growing up in such a challenging environment has wildlife facing made Rafi resourceful, tough and resilient. He has a deep connection to his roots and a strong sense of responsibility towards his community, he knows that he must leave Sundarbans to live a better life, to find his true identity and explore freedom. His parents had already died, and the temple that was a proud part of his heritage was almost nearly destroyed. So,Tipu and Rafi both decided to migrate to a new world through the sea, where they could live a beautiful life, and have their own identity and respect.

Rafi's grandfather's words echo in his mind, hinting at his upcoming migration-

> *"He'd tell me that I didn't need to learn what he knew because the rivers and the forest and the animals are no longer as they were. He used to say that things were changing so much, and so fast, that I wouldn't be able to get by here – he told me that one day I would have no choice but to leave" (Ghosh 86).*

Rafi's journey in the novel takes him from the Sundarbans to various parts of the world, including Venice and Los Angeles. Throughout his travels, he remains determined and adaptable, facing numerous challenges with courage and ingenuity. His character embodies the themes of migration and survival, which are central to the novel. Rafi's migration journey in Gun Island is fraught with numerous challenges and hardships. As a young man from the Sundarbans, he was forced to leave his home due to the devastation caused by Cyclone Aila and seek a better life elsewhere. One of the greatest challenges Rafi encounters is the devastating loss of both his home and his livelihood. The cyclone's powerful winds and torrential rains cause severe flooding in the Sundarbans, submerging homes and farmlands. Rafi's family is displaced, and their agricultural land is rendered infertile due to saltwater contamination. This loss of livelihood leaves Rafi in aprecarious situation, with limited resources and opportunities.

Language barriers and cultural differences further complicate Rafi's journey. As he travels to different parts of the world, including Venice and Los Angeles, he encounters people from diverse backgrounds. Communicating and understanding the customs and norms of these new places is challenging, and Rafi often feels isolated and misunderstood. Despite these difficulties, he remains determined to find a better future for himself and his family.The constant threat of deportation is another significant problem Rafi faces during his migration. As an un documented migrant, he lives in fear of being caught and sent back to his home country.

This fear affects his mental and emotional well-being, as he is constantly on edge and unable to fully settle into his new life. The uncertainty of his legal status also limits his opportunities and makes it difficult for him to plan for the future. Rafi's journey is also marked by moments of despair and uncertainty. The trauma of losing his home and the challenges of adapting to new environments take a toll on his mental health. He often questions whether he will ever find the better life he seeks and whether his sacrifices will be worth it. Despite these moments of doubt, Rafi remains resilient and determined to rescue his friend Tipu.

Piya is a dynamic character. She is a marine biologist with a deep passion for dolphins. Piya begins her journey from Sundarbans, where she is studying the Irrawaddy dolphins. She is deeply committed to her research and is willing to face numerous challenges to gather data and protect the dolphins' habitat. She faces various obstacles, including harsh weather conditions, bureaucratic hurdles, and the dangers of working in remote and unpredictable environments. She acts as an adoptive mother for Tipu and takes care of his family. Piya becomes a leading voice in Gun Island, addressing environmental crises like 'dead zones' and the changing migratory patterns of aquatic animals. She addresses 'dead zones' are large areas of water with too little oxygen for fish to survive. She discovers factories and chemical fertilizers dump residues into water bodies, causing these dead zones to grow rapidly. While they mostly cover thousands of miles in the oceans, dead zones are now appearing in rivers too and cause great harm to aquatic life. A'fish kill' refers to a large number of fish dying suddenly. This happens because of low oxygen levels in the water, often caused by pollution. Factories and farms dump chemicals into rivers and oceans, creating "dead zones" where fish cannot survive. These dead zones spread, leading to massive fish deaths. The novel highlights this issue to show the impact of human activities on aquatic life and the environment. Despite these challenges, Piya remains focused on her mission and continues to pursue her goals with unwavering determination. Piya is a symbol of dedication, resilience, and compassion. Her character embodies the themes of environmental conservation and the interconnectedness of the human and natural world. Piya's work highlights these issues and the urgent need to address them.

Amitav Ghosh vividly describes the migration of non-human organisms like fishes, spiders, and snakes. He highlights how climate change and environmental degradation force these creatures to move from their natural habitats to new habitats for survival. Piya, a marine biologist, studies Irrawaddy dolphins and observes how their movements and habitats are affected by changes in the environment. She learns that the dolphins are compelled to migrate because of rising sea levels, the dumping of industrial, and chemical waste, and the increasing salinity of the water. Rani a fish symbolizes the struggles of aquatic life. Rani's migration is driven by the changing conditions of the water bodies she inhabits. Pollution and habitat destruction force her to move to new areas in search of food and safety. Ghosh paints a poignant picture of Rani's journey, highlighting the resilience and adaptability of fish in the face of environmental challenges. Ghosh uses Piya's research to show the impact of human activities on marine life and the challenges these creatures face as they adapt to new conditions. Spiders and snakes are also depicted as victims of environmental changes. Ghosh describes

how these creatures are forced to migrate due to habitat loss and changing weather patterns.

17 Century : An Era of Crises-

Cinta is an Italian academic and historian with a deep interest in the environment and climate change. She highlights the inter connectedness of human history and the natural world, illustrating how historical events have shaped current environmental challenges. Cinta invites Deen to Los Angeles to take part in a conference centred on the 17th-century edition of The Merchant of Venice.

The opening speaker of the conference was a trendy young historian who presented a lecture on Climate and Apocalypse in the 17th Century. He described the 17th century as the Little Ice Age, an era of severe climatic disruption. During this time the average temperature around the world dropped sharply, perhaps due to solar fluctuation activity or volcanic eruptions or perhaps due to the massive reforestation that was done in the Americas after the genocide of the American Indians. As a result, various parts of the world faced famines, droughts, and massive epidemics.This same 17th-century period also witnessed the entire globe experiencing terrible natural disasters such as earthquakes and volcanoes that killed millions of people. Events like 30 Years War,The English Civil War, the shaking of the foundation of the Ottoman Empire, the spread of devastating fire in Istanbul, the end of the very old empirical regime in China, great famine and rebellion against the Mughal Empire in India and many more historic events took place in this century, due to which the world population reduced to one third.

The closing lecture of the conference was delivered by Cinta who is his close friend and mentor. She describes Venice (the old ghetto) as an archipelago of islands. This means Venice which is an island in itself, is also an island within an island, surrounded by water on all sides. She further clarifies that in present-day Persia and parts of India, guns are called bundook which is nothing but Venice or Venetian. After listening to all these, Deen realizes that he has completely misunderstood the meaning of Bonduki Sadagar. It must be The Merchant who went to Venice and he had misunderstood it as The Gun Merchant. And with the help of Cinta, he is able to solve the mystery of Bonduki Sadagar.

Deen finally reaches Venice at the request of Cinta, where he has to face the problems and struggles of illegal migrants as well as the rapidly changing climate of the island. Ghosh introduces the reader to the various natural disasters faced by the people of Venice, such as floods, high tides, hailstorms and tornadoes. Venice, a cosmopolitan island, where Deen suddenly meets Rafi, a migrant worker in Venice. He started his journey to Venice from India with Tipu, but got separated from him while crossing the Turkish border. Along with climate change, Ghosh also highlights the battle between migrants and international politics. On one side some migrants are in the hope of a better tomorrow are trying to reach European countries like Rome and Venice, etc. On the other side, the government and politics aim to drive them out of their country at any cost.

Ghosh has mentioned connection houses, scafistas and dalals while portraying the problems of migrant labourers. Connection houses are the places where many migrants have to live like animals in pitiable conditions for weeks or months. The scafistas who are traffickers lure people into debt traps and then exploit the migrants. Some dalals offer essential services to migrants and demand a lot of money. Rafi falls into the trap of a Scafista and dalal while saving the life of Tipu. The scafista robs all the money of Tipu and beats him badly. Towards the end of the novel, Ghosh brilliantly paints the picture of blue boat as a symbol of hope and survival.

Palash describes about the blue boat as-

> *"Across the planet, everyone's eyes are on the blue boat now: it has become a symbol of everything that is going wrong with the world-inequality climate change capitalism corruption*

The arms trade the oil industry. There's a lot of Hope that this will be a historic movement, while there's still time to make changes, people will wake up and see what's going on." (Ghosh 199).

Blue Boat is an overcrowded boat of refugees and migrants who want to cross the treacherous water of the Mediterranean and land in search of a better life. But they were stopped by the governments of Italy and other countries. Deen and Cinta join the company of active human rights activists to support the refugees, and Rafi and Piya join them in their great deeds.

Conclusion-

Gun Island by Amitav Ghosh is a powerful story that explores the connection between climate change and migration set in a world facing environmental, political, and social challenges.

Amitav Ghosh underlines the great difficulties of people and communities suffer as they face the simultaneous challenges of climate change and forced migration through the journey and experiences of his characters. By drawing together personal and global narratives, Ghosh demonstrates the urgency of addressing environmental degradation and the need for global solidarity in the face of migration challenges. Unlike many other novels about climate change, Gun Island ends on positive note. The migrants were safely rescued, Deen and Piya decide to take a chance to spend life together. Even Cinta's sudden death is portrayed as a reunion with her deceased family rather than a tragedy. Throughout the novel, Ghosh maintains a hopeful outlook, offering readers a sense of optimism for the future instead of warnings about impending doom.

The novel emphasises the importance of addressing environmental issues and the need for global cooperation to tackle migration challenges. It calls for a new way of thinking about human relationship with the environment. Ghosh urges readers to understand that migration due to environmental factors is a crisis for humanity, not just those displaced. He addresses several human factors that are responsible for great disturbance in our ecosystem i.e. direct discharge of harmful industrial and chemical waste without treatment directly to rivers and seas for economic greed which should be immediately addressed and measures should be taken. Finally, the novel advocates for collective action, empathy, and long-term solutions to address the problems of a rapidly changing world.

Works Cited

1. Clark, Timothy. The Value of Ecocriticism. Kindle ed. Cambridge University Press, 2019.
2. Dey, G. "Revisiting Myth in Amitav Ghosh's The Gun Island." Indian Journal of Ecocriticism, vol. 12, no. 1, 2020,pp. 35–45.
3. Dutrieux, Mathilde. Climate Change in Amitav Ghosh's The Great Derangement, The Hungry Tide and Gun Island. Liege University. 2021.
4. Ghosh, Amitav. Gun Island. New Delhi: Penguin Random House, 2019.
5. Ghosh, Amitav. The Great Derangement: Climate Change and the Unthinkable. Penguin Random House, 2016.
6. Hasan, Nazia. "Tracing the Strong Green Streaks in the Novels of Amitav Ghosh: An Eco-critical Reading." Indian Literature, vol. 57, no. 1, 2013, pp. 182–193. JSTOR, https://www.jstor.org/stable/43856755.
7. Maslin, Mark. Climate Change: A Very Short Introduction. 3rd ed., Oxford UP, 2014.
8. Radha, S. &Sankhyan, A. S. Environmental challenges of the 21st century. New Delhi: Deep and Deep Publications, 2002.
9. Rao, Komal. "Amitav Ghosh: 'Climate Change Is Like Death, No One Wants to Talk About It.' The Guardian, 8 Sept 2016, www.theguardian.com/environment/2016/sep/08/amitav-ghosh-climate-change-is-like-death-no-one-wants-to-talk-about-it
10. Varma, Sreejith R. "Gun Island. By Amitav Ghosh." English: Journal of the English Association, vol. 70, no.268, 2021, pp. 89–91. Oxford Academic, https://doi.org/ 10.1093/english/efaa045.

ISSN : 2349-9273

Received: 18 May, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

A Critical Study on Religious views in the work of A. K. Ramanujan

- Shashank Yadav
Research Scholar -
Department of English,
Nehru Gram Bharti
(Deemed to be University)
Jamunipur, Kotwa, Prayagraj - 221505 (U.P.)

E-mail:
shashankshankeryadav@gmail.com

- Research Supervisor -
- Dr. Chhaya Malviya
Associate Professor & Head,
Department of English,
Nehru Gram Bharti
(Deemed to be University)
Jamunipur, Kotwa, Prayagraj - 221505 (U.P.)

E-mail:
chhayamalviya9011@gmail.com

Abstract

A.K. Ramanujan, in contrast to other poets who expatriate, possesses the ability to bring into perfect consonance two distinct worlds: the inner world of his self and Indian reminiscences, which is his past, and the outside world of his career and domicile, which is his present. The character of Ramanujan is a mixture of both, and he is not only well aware of the tension that exists between the two, but he also takes joy in the fact that they are incongruent with one another. The Indian soul and the western mind come together in a way that is uniquely beautiful in his poems. Despite the fact that all of his feelings and experiences have an Indian origin, the rationale that he connects to them is primarily western in nature. He is comparable to a tree that has its roots brought from India and has grown in the soil, water, and air of the western world, producing lovely blooms with a variety of colours and fragrances that are distinct from those of India. Ramanujan's Persona is a theatre that is decked up in western backdrops, and it is a theatre where oriental scenarios representing familial ties in all colours are staged. The poet himself is the audience and the critic as well, watching and analyzing with a detached interest.

Despite the fact that there are times when he feels alienated and rootless with a jumbled identity, such as when he says that he is a portrait with a "date unknown," he affirms the opposite emotion when he adds that the image is "often signed in a corner" by his father or maker, so establishing that he is of Indian descent. As a poet, he is able to juxtaposition the dualities of eastern and western senses that exist within himself and flawlessly mediate between the two. Neither is he an Indian conformist nor a revolutionary modernist demanding westernization- he is rather an emissary who elucidates the East to the West and vice-versa with flawless composure."

Keywords- ***religious views in the work, a critical study.***

Introduction -

A.K. Ramanujan was born in 1929 and died in 1993. His parents were Tamil Brahmins and lived in Mysore, which is a

Kannada-speaking city. He also tried his hand at teaching English in Kerala for a period of time. In the course of his time spent in Kerala, he became married to a Syrian Christian, who was the one who introduced him to the Malayalam language. Ramanujan, who was fluent in many languages, not only translated a great number of Kannada and Tamil classics into English, but he also relocated to the United States of America upon accepting a position as a professor of South-Asian studies at the University of Chicago. He created a complex characteristic of Western material-oriented nature and Indian human-related temperament, which led to his becoming a renowned Indo-American poet in English. He also developed a complicated trait. Bemused by the scenario, Ramanujan himself remarked …. in a mock satirical tone, "….. I cannot unlearn conventions of despair …. they have their pride ….. I must seek and will find that particular hell only in my Hindu mind". A cross-cultural configuration of his poetry emerged as a result of the contradiction between the newly acquired reason and the sentiments that he had received from the traditions of his family. Satchidanandan (1994) made the observation that "his exile in Chicago only strengthened his sense of the 'Indian past.'"

Objectives -

1. To study of present work.
2. To study A.k. Ramanujan's inner and outer self.

Present work -

The enticing poetry of Ramanujan naturally invites a variety of analytical approaches to be utilized in order to arrive at the ultimate picture. An fundamental feature of 'kinship with nature' is mentioned in Rumanian's poems (Rajagapalachary and Ravinder), such as "The Striders, Snakes, Breaded Fish, A river, Chess under the tree, ecology, etc.," according to the expert opinion, which is in agreement with the consensus. The enticing poetry of Ramanujan naturally invites a variety of analytical approaches to be utilized in order to arrive at the ultimate picture. An fundamental feature of 'kinship with nature' is mentioned in Rumanian's poems (Rajagapalachary and Ravinder), such as "The Striders, Snakes, Breaded Fish, A river, Chess under the tree, ecology, etc.," according to the expert opinion, which is in agreement with the consensus. Dom Moraes analyzed that 'A.K.Ramanujan represents a sensibility of awareness of the world as his poetry is …. exploring man's kinship with nature besides social, familial and personal relationships …. echoing man's evolutionary relationship with vegetables, animals and minerals …..". The critic Kurup claims that "the poet asserts oneness of all life on earth .... the poet hopes to have another birth in the form of a tree...with the weight of honey-hives in his branching and the hessian weave of weaver birds in my hair ...." Kurup makes this statement.

In addition to this, Ramanujan demonstrates his profound compassion for the women, who are among the most marginalized members of Indian society (Surjeet, D.'s). In his poem titled "The Opposable Thumb," he discusses the way in which women are subjected to domestic violence at the hands of their spouses. According to R.K.Guptha, Rumanian's "Love poems to his wife – 1 and 2" and his numerous references to the defenseless nature of women as victims of exploitation by men give the impression that he is a feminist. Despite the fact that he comes from a conventional and conservative upbringing, he continually displays the agony that he feels for the helplessness of the other gender, which is a direct response to masculine chauvinism. In the poem "GURU," Ramanujan makes fun of the unholy nature of a false GURU who preached, "do not forgive the woman of her malice, ... you may forgive a weasel of his tooth .... or a tiger of his claw .... but do not give the woman her freedom ...." Ramanujan's poem is a satire on the unholy nature of a false GURU. In spite of the fact that it is simpler to associate Ramanujan with feministic anecdotes, it is not as difficult to see his ecocritical observations. The rejection of the notion that man is

the sole owner of nature is the essence of ecocriticism. It is unacceptable for him to dominate nature and to engage in aggressive behaviour that is "self-centered." The life that does not include humans is of equal significance, and it is essential for the environment to strike a balance between the natural world and the culture of humans. For the purpose of this discussion, ecocriticism refers to the reflections of such a necessity in fiction. (Legler, G.T.) Ecofeminism is defined as the practice of elevating the concept of "nature" to the same level as the feminine gender and evaluating the egocentric attitude of man.

The study of ecofeminism as a philosophical category is based on the observations that the dominance of nature by man and the dominance of woman by' male' are comparable and syntactically identical. Over 150 poems from A.K. Ramanujan's body of work are studied in this article, and the writers make an effort to demonstrate that eco feministic evidences may be found in his body of work. While 'feminism' is a universally understood movement with categories like black feminism, white feminism, Marxian feminism, radical feminism and sexual feminism, 'ecofeminism', the daughter of ecocriticism, came into existence in the last two decades of the 20th century, originating from the Western American Universities.

A.k. Ramanujan's inner and outer self -

Ramanujan lives in a state of tranquilly on the intersection of two worlds: the inner and intimate world of his core identity, which is rooted in his Indian reminiscences and memories, more commonly referred to as his past, and the outer world of his domicile, which primarily accounts for his attitude and perspective, more commonly referred to as his present. In the course of his search for his roots, he eventually discovers them in the Indian family with whom he spent his formative years. His basic self, his soul that is completely Indian, is emotionally and academically disciplined by its value system. This is because his fundamental self is a closely woven patchwork of relations. The deepest part of his Indian identity serves as the primary source of inspiration for his poetry. However, there are instances when he disregards the pompous and oppressive traditions that are prevalent in his native culture. It should come as no surprise that his logic and discretion are shaped by the influence of his exterior self, which is his existence in the United States. In Ramanujan's poetry, there is a synergy of internal and outward essence that is both perceptive and unseen. When he is trying to find himself, he employs poetry as a technique. Every one of his poems is a journey into one's own mind. Over the course of his work, he is attempting to discover the significance of his existence by utilizing a wide range of topics and approaches. Ramanujan's poetry is characterised by its multifaceted world, which is a result of the simultaneous occurrence of his two distinct experiences: the first was Indian, and the second was American.

It is the poet's inner world of Indian memories that provides the poet with the raw material for his poems, and it is his mature, rational, and daring viewpoint of his outside world that enables him to approach them from an altogether new angle, which other Indian English poets most likely would not have the courage to bring to light. His poem "looking for a cousin on a swing," for example, presents an entirely different aspect of the sweet innocent intimacy of the cousins. This is in contrast to the familial possibility of cousins being intimate with one another, which is considered to be incest. However, when the cousins grow up into adolescents and are reminded of the experience, they develop a yearning for romantic experience. This yearning is a touch of "innocence" that no longer remains innocent and gives a feeling of sensuality and a desire for romance.

A rich system that enables Ramanujan to see the significance of life from a more holistic standpoint has been bestowed upon him as a result of the impact of a religious family, which Ramanujan spent his formative youth years in. His

belief in the Hindu theory of the Unity Consciousness has been something he has managed to keep intact. "Christmas" is a poem that he wrote that demonstrates his understanding of the interconnectedness of all life:

During that brief time,
I was no longer aware
of the difference between a leaf
and a parrot,
a branch and a root,
or, for that matter,
that tree from either you or me.

- S. 30-31 (S)

Through the use of the image of a tree inside the same poem, the poem further emphasizes the differences that exist between the conventional practices of the eastern and western cultures. The contrast of the two images the naked leafless tree standing outside his window in the United States of America and the lively tree seen out of his window in India, which is more than just a "stiff geometrical shape" is what brings to his mind the concept of two distinct cultures. In his poem "A Hindu to his Body," the poet expresses his desire to "rise in the sap of trees" and "feel the weight / of honey - hives in my branching / and the hessian weave of weaver - birds in my hair." This is an illustration of the oneness of life, and the poet uses the example of the sap to emphasize his point.

His world of memories -

In essence, Ramanujan is a poet who writes about memories. A.N.Dwivedi makes a very astute observation when he says, "The poet is always haunted by the family relations, and there are many good poems that owe their origin to the recollected personal emotions." In these poems, he discusses his recollections of his family members and the ambiguous independence that comes with living far from them. His dedication to the native south Indian experience, which he maintains even after spending a significant amount of time in the United States, is frequently reaffirmed by him:

Letting go
of fairytales
is letting go
of what will not
let go:
mother, grandmother the fat cook
in widow's white
who fed me rice and ogres

- (Collected Poems – P 260)

Ramanujan is of the opinion that it is impossible to separate oneself from one's memories on any level. Recollections of the past and history play a significant role in the process of determining an individual's identity. For the purpose of discovering the significance of his own identity, the poet explores this universe of recollections from the past. Reading Ramanujan's poetry is an exquisite joy because of the unique method in which he combines his memories with the life that is happening right now.

Ramanujan is completely absorbed with his earlier recollections, as well as the history, mythology, and folklore of India. His interactions with the concept of searching for one's own identity are mostly based on recollections of his upbringing, which took place within the context of South Indian culture.

His detached perspective -

When Ramanujan examines and investigates things in their current state, without adding any personal comments or conclusions to them, he possesses a demeanor that is genuinely remarkable. The poetry of Ramanujan presents an altogether unique perspective for the Indian English poets who have emigrated to other countries, which is that their poetry must incorporate the required liveliness, augmentation and continuity aspects. He has the ability to combine the two cultures in a way that is pleasing to the eye. Together in his detached glance and side by side being completely detached – advocating only the aspects that are worth taking and criticizing others that are burdensome in both worlds – he is able to keep two worlds that are completely different in their cultures and dogmas in

synergy. He is able to do this because he possesses an exceptional outlook, which enables him to maintain this synergy. His ego is a theatre that is decked out in western backdrops, and it is there that oriental scenes representing familial connections in all shades are staged. The poet himself is the audience and the critic, watching and analyzing with a dispassionate interest. Because he is a poet, he is able to juxtaposition the dualities of eastern and western senses that exist within himself and perfectly arbitrate between the two. It is not accurate to say that he is an Indian conformist or a revolutionary modernist who advocates for westernization; rather, he is an emissary who elucidates the East to the West and vice versa with complete serenity.

When it comes to criticizing certain superstitious aspects of his religion, Ramanujan does not hold back without hesitation. For him, the Hindu philosophy of non-violence can appear to be a form of timidity at times. This is because the poet has lived in a world that is known for its rationalism, dynamism, rapid scientific and technological advancement, and brutality. Within the realm of actual practice, there is the possibility that the norm will deteriorate into insensitivity and apathy. The poem "THE HINDOO: he doesn't hurt a fly or a spider either" does an excellent job of capturing this sentiment. In light of the fact that a Hindu is incapable of inflicting harm on even a fly or a spider, his great-grandfather remained to be a helpless victim of his wife's infidelity and a silent spectator to it.

The spirit
of Great Grandfather, that still man,
untimely witness, timeless eye,
perpetual outsider,
watching as only husbands will
a suspense of nets vibrate
under wife and enemy.

- (Collected Poems – p. 63)

In the piece titled "Obituary," he expresses his sorrow over the passing of his father and offers sarcastic observations on the traditions and practices that are associated with the cremation of the deceased:

he burned properly
at the cremation
.....
.....
several spinal discs, rough,
some burned to coal, for sons
to pick gingerly
and throw as the priest
said, facing east
where three rivers met
near the railway station.

- (Collected Poems - P111)

His internal interrogation for Identity -

Despite the fact that there are instances in which he experiences feelings of alienation and rootlessness, as well as a muddled identity, such as in his poem "self portrait," in which he states that he is a portrait with a date that is unknown, he confirms the opposite feeling when he states that the portrait is "often signed in a corner" by his father or maker, thereby confirming his Indian roots.

"I resemble everyone
but myself……..
……..
the portrait of a stranger,
date unknown, often signed in a corner
by my father. "

It should come as no surprise that a painter would unquestionably include the date they created their portrait. However, Ramanujan notes that the date is not present! His sense of self-identity is being eroded. In his mind, he sees a stranger dwelling within himself. In spite of this, the poet discovers the signature of his father, which serves as evidence of his Indian heritage. It was his father who carried out the painting of the portrait.

In his poetry, the Indian ethos can be found in abundance, and it is treated in a variety of different situations:

will one day be short of breath,
lose its thrust,
turn cold, dehydrate and leave

a jawbone with half a grin
near a pond.

- (Collected Poems P 209)

Conclusion -

There is a distinct inclination towards the modern scientific view point of nature's ecology and its being connected to feministic overtures in Ramanujan's poetry, despite the fact that Ramanujan's poetry has a background that spans multiple cultures. There is a strong tendency towards the modern scientific view point of nature's ecology and its being connected to feministic overtures in Ramanujan's poetry, despite the fact that Ramanujan's poetry is influenced by a variety of other cultures.

This is what E. N. Lall has to say about Ramanujan's poems: "Ramanujan's poems take their origin in a mind that is simultaneously Indian and Western -- the Indian mode of experiencing an emotion and the western mode of defining it." It cannot be determined that Ramanujan entirely believed in western ways of expression, despite the fact that he adopted western means of expression and was open to the changes and attitudes that were becoming prevalent. In addition, he did not call for modernization and westernization like a number of other expatriates may have done. Not only does his poetry connect with an intrinsic Indian sensibility, but it also possesses a logical understanding that could be attributed to his extended residence in the Western world. He is a poet of "mixed sensibility," who has been enriched by his experience of a fight within him, between two traditions and between two elements of his identity. He uses his poetry to search for his true self, and he is a poet of "mixed sensibility."

References

1. Land, New Delhi : Authors Press,2013. Print.
2. Ten : The New Indian Poets. Edited and Selected by Jayanta Mahapatra & Yuyutsu Sharma, New Delhi/Jaipur, Nirala Publications, 2013. Print.
3. Pound,Ezra,Dance Figure, http: // www.poemhunter. com / poem / dance - figure, Date, 14/06/2014.
4. http// www. Ehow. Com/ list- 6376136- three domains-living –organises html. Date, 9/01/2014.
5. Niranjan Mohanty. 'Chikago & A. K. R.' Indian Literature : 162 : July - August: 43 - 59.
6. Vinay Dharwadker. 'A. K. Ramanujan : Author, Translator, Scholar. World Literature Today : 68 : 2 : 279 - 280.
7. K. Chellappan. 'A. K. Ramanujan : The Translator Creator. Kavya Bharti : 9 : 208 - 223.
8. Jahan Ramazani. 'Metaphor & Postcoloniality : The Poetry of A. K. Ramanujan' Contemporary Literature : 39 :1 : Spring : 27 -53.
9. Folktales From India: A Selection Of Oral Tales From Twenty Languages. 1991. New York: Pantheon.
10. Hymns For The Drowning: Poems For Vishnu by Nummulwar. 1981. Princeton Univ. Press.
11. Poems of Love And War : From The Eight Anthologies and Ten Long Poems of Classical Tamil. 1985. New York : Columbia Univ. Press. Speaking OfSiva. 1973. Hammondsport: Penguin.
12. Samskara : A Rite For A Dead Man by U.R. Anantha-murthy. 1976. New Delhi: Oxford.
13. The Interior Landscape: Love Poems From A Classical Anthology. 1967. Bloomington: Indian University Press.
14. Manju Gupta. Ed. "NBTNewsletter". Annual. NBT.
15. N. D. Mittal, Parveen. Ed. "R. R. World of Books. "Annual. B. R. P. C: N. D.
16. Macmillan India Ltd. "New Books From Macmillan India". Annual Subscription. N.D.
17. Dr. Sista, Ramdevi Rani. Ed. "University News". Weekly News Letter.A.I.U: N.D.
18. Fifteen Poems From A Classical Tamil Anthology. 1965. Calcutta: Writers Workshop.

ISSN : 2349-9273

Received: 20 May, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

Marriage, Gender and Identity in *Mango-Coloured Fish*

- Neelam Nishad
(Research Scholar),
Department of English and Modern European Languages,
Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University,
Gorakhpur-273009 (U.P.)

Email-
neelam.18296@gmail.com

Research Supervisor-
- Prof. Nandita Singh
Department of English and Modern European Languages,
Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University,
Gorakhpur-273009 (U.P.)

Email-
singhnanditaa11@gmail.com

Abstract

Kavery Nambisan's Mango-Coloured Fish intricately portrays the internal conflict of a young woman, Shari, who resists the imposed expectations of marriage and womanhood in a patriarchal Indian society. Set against a backdrop of domestic control, societal rigidity, and emotional confusion, Shari's journey reflects a broader struggle faced by many women who seek to assert their identities beyond traditional frameworks. In Indian society, where marriage is often seen as the gateway to adulthood and respectability for women, Shari's reluctance is radical. It represents a challenge to a long-standing belief that a woman's life remains incomplete without a husband. This tension between expectation and autonomy lies at the heart of Shari's inner struggle.KaveryNambisan crafts a domestic world where gender roles are not only enforced by societal norms but also perpetuated within the home by both men and women. Shari's family, though seemingly functional, becomes the primary site of emotional repression, gender inequality, and internalized patriarchy. Drawing on feminist theory, psychological insight, and literary analysis, this paper offers a comprehensive study of how marriage becomes a metaphor for subjugation, how gender expectations shape familial and romantic relationships, and how Shari's evolving self-awareness enables her to ultimately reject conformity.

Keywords- ***Female Autonomy; Identity; Kavery Nambisan; Mango-Coloured Fish; Marriage; Womanhood.***

Introduction-

The institution of marriage in Indian culture is often considered not just a union between individuals, but a deeply rooted social contract tied to family honor, economic stability, and cultural preservation. However, contemporary Indian literature has increasingly critiqued this paradigm, questioning whether it truly accommodates female autonomy. One such voice of dissent is KaveryNambisan, whose novel *Mango-Coloured Fish* brings to life the tensions between tradition and individuality through the protagonist, Shari. This paper examine how Nambisan constructs Shari's personal crisis around the looming pressure of marriage, and how gendered expectations create an environment that stifles

emotional and psychological growth. Shari's journey symbolizes the internal and external struggles of countless women who find themselves negotiating their own identity within rigid societal molds. Through her rejection of imposed roles, Nambisan makes a compelling case for redefining what it means to be a woman in modern India.

Marriage as a Social Obligation-

In *Mango-Coloured Fish*, Kavery Nambisan powerfully critiques the cultural framework that positions marriage as the cornerstone of a woman's identity in Indian society. The pressure Shari faces to conform to marital expectations reveals how deeply the institution is ingrained as a social obligation rather than a personal choice. Shari's experiences are not unique; they reflect the societal insistence that women must find fulfillment and legitimacy only through marriage, a notion Nambisan subverts through both narrative and character development.Shari, a young woman from a Tamil family living in Delhi, caught between her personal desires and the burden of pleasing her family. Her mother, Bimmy, plays a particularly dominant role in enforcing traditional expectations. As observed by Kaliswari and Sumathi, "Her mother plays the role of the agent of patriarchy… she constrains her way of dressing, behavior, eating and everything" (22). Bimmy's control is not born of mere concern; it is emblematic of the generational enforcement of patriarchal norms. Shari's individuality is constantly compromised to fit into a socially acceptable mold, especially when it comes to her readiness for marriage.

The narrative frames Shari's engagement to Gautam as a turning point, where love and arrangement are mixed, yet the expectations placed on her are far from balanced. Her family is eager to approve of Gautam primarily because he is "equally rich and educated" (Kaliswari and Sumathi 22), not because he understands or respects Shari as a person. This economic and social match reinforces the idea that marriage is a strategic alliance between families rather than a bond based on emotional or intellectual compatibility.Shari's hesitation to proceed with the marriage reveals her growing awareness of what lies beneath the surface of this societal contract. Her inner conflict becomes more intense when Gautam asserts, "It's you I want. You can be moulded" (Nambisan 73). This statement encapsulates the gendered expectation that women must adjust, transform, and often diminish themselves to fit into a man's vision of a wife. Shari, like many women, is not seen as an individual but as raw material to be shaped.Jamadar identifies this dilemma as a "pre-marriage crisis," highlighting how Shari's alienation and dissatisfaction are symptoms of a larger cultural problem (221). The notion that she must marry regardless of emotional preparedness or personal conviction mirrors the pressure many women face to conform to timelines imposed by family and society. In fact, her fiancé's ambitions further reinforce this idea. Gautam expects her to pursue an MBA not out of passion but to support his business ventures, transforming her career into a tool for his success. The emotional toll of being groomed for marriage is not just cultural but deeply psychological. Shari internalizes the voices around her her mother's urgency, society's timeline, her fiancé's demands until they cloud her ability to hear her own. However, instead of surrendering, she begins to reflect, observe, and ultimately resist. Her decision to leave home and spend time with her brother in Vrindaban is not merely a getaway but a symbolic act of self-exploration. As Kalyani notes, "Shari learns that marriage can wait while it's the freedom of life that needs to be explored" (582). In rejecting marriage as an obligation, Shari questions a foundational aspect of her social reality. Her actions are not just about Gautam or her family they are about redefining what marriage should mean. She recognizes that love, respect, and freedom cannot be negotiated through arrangements that ignore a woman's voice. By refusing to proceed with the marriage, she reclaims control over her life and challenges the structures that sought to define her.

Family Dynamics and Patriarchal Influence-

In *Mango-Coloured Fish*, the influence of

family on individual identity particularly within a patriarchal structure is one of the novel's most complex and emotionally fraught themes. KaveryNambisan crafts a domestic world where gender roles are not only enforced by societal norms but also perpetuated within the home by both men and women. Shari's family, though seemingly functional, becomes the primary site of emotional repression, gender inequality, and internalized patriarchy. Shari's mother, Bimmy, emerges as the most dominant force in the family. Her authority is absolute, and her presence permeates every decision and interaction within the household. Rather than offering unconditional support, Bimmy enforces discipline and expectations based on societal standards of femininity. As Kaliswari and Sumathi observe, "Shari is always controlled by her mother. Her mother plays the role of the agent of patriarchy. This control is not simply maternal concern it is a continuation of patriarchal power passed down from generation to generation. Bimmy's domination also reflects a common phenomenon in Indian middle-class families, where the matriarch enforces traditional values in the absence of strong paternal leadership. Shari's father, though successful in his career, is described as a passive figure within the family. His intellectual pursuits and work accomplishments are sharply contrasted with his lack of authority at home. This imbalance results in a household dynamic where Bimmy dictates moral standards and life choices, especially for her daughters, while the father offers neither resistance nor support. Shari's sense of alienation within her own family is intensified by her perceived inferiority compared to her elder sister, Chitra, who conforms more closely to the ideal image of an obedient daughter. Chitra's marriage and social demeanor reflect everything Bimmy expects from her children. In contrast, Shari is described by her mother as lacking "a single pleasing feminine trait" (Mudaliyar and Chowdhury 42). This bias feeds into Shari's ongoing identity struggle. She is constantly made to feel like an outsider in her own home neither respected for her choices nor understood for her emotional needs. The gender-based discrimination Shari experiences in her family is both explicit and subtle. Her brother Krishna, though adored by Bimmy, enjoys freedoms and emotional leeway that Shari is denied. Despite this, Krishna is one of the few family members with whom Shari feels some semblance of comfort. Even so, she admits, "Krishna and I hover at the periphery of things. We are the stitches that slipped out of a cozy pattern" (Nambisan 4). This metaphor poignantly captures the emotional exclusion Shari feels one who belongs by blood but not in spirit.

Moreover, the family's interactions reinforce the idea that emotional needs, especially those of women, are secondary to societal performance. Shari is often ridiculed for wanting to become a kindergarten teacher a profession deemed too humble or unimpressive by her family's standards. Her aspirations are not supported but dismissed as childish and unworthy. Padmavathy notes that "Shari is fooled by her authoritative mother, self-centered Gautam and Naren. Her belief in romantic love is tested again and again" (16). The people closest to Shari continuously undermine her dreams, validating her only when she conforms. Perhaps the most painful realization for Shari is that her own family does not view her as an autonomous individual. Her feelings, interests, and concerns are routinely dismissed in favor of fulfilling the ideal of a "marriageable woman." Her mother's emphasis on superficial traits appearance, marriage prospects, economic compatibility mirrors society's broader treatment of women as extensions of men, rather than individuals with agency and depth.In this context, Nambisan's portrayal of Shari's family becomes a microcosm of patriarchal India. While overt oppression may not be present, the emotional landscape is steeped in gendered power imbalances. It is this quiet conditioning that erodes Shari's confidence and alienates her from the very people who should have nurtured her.Yet, rather than succumb to this emotional marginalization, Shari gradually begins to resist. Her growing awareness of the emotional manipulation within her family leads her to assert her independence. Her trip to

Vrindaban, her observations of others' marriages, and her decision to call off her own engagement are not abrupt decisions they are responses to years of subtle, internalized oppression rooted in family dynamics.Through this portrayal, Nambisan reveals how the family often idealized as a source of love and support can also become the very first site where patriarchal norms are internalized and enacted. By showing that even the women in Shari's life are complicit in upholding these norms, the novel challenges simplistic understandings of gender oppression and urges a rethinking of familial roles and responsibilities

The Psychological Conflict-

At the core of *Mango-Coloured Fish* lies Shari's psychological journey a deeply layered conflict between her inner voice and the voices of those around her. KaveryNambisan does not portray Shari as a woman who outwardly rebels; instead, she paints her as a sensitive, intelligent, and conflicted young woman who navigates social pressure with quiet resistance and inward turmoil. Shari's dilemma is not merely about choosing whether to marry Gautam or not it is about understanding herself, her needs, and her place in a world that refuses to acknowledge her complexity. Shari's indecisiveness throughout the novel stems from a long-standing history of emotional repression. From childhood, she has been conditioned to feel inadequate too plain, too unambitious, too emotional. Her mother repeatedly criticizes her appearance, clothing, and choices, leading Shari to internalize feelings of worthlessness. Her self-deprecating tone is not simply a matter of low self-esteem; it reflects the deep psychological harm inflicted by a family environment that values compliance over authenticity. This internalized inadequacy translates into Shari's relationships. With Gautam, she plays the role expected of her agreeing to marry, pretending to be excited but inside, she is conflicted. She lies to herself and others, even writing conflicting letters to both Gautam and Naren. BanuJamadar rightly points out that "Shari is in a confused state with her relationships, deceiving herself and people around her" (225). Her lies are not malicious; they are survival strategies in a world that denies her the space to speak her truth. Gautam's treatment of Shari intensifies her confusion. While he appears kind and responsible, his interactions are laced with condescension. His desire to "mould" her into the ideal wife telling her "You can be moulded" (Nambisan 73) unearths Shari's deepest fear: that love is conditional, and that her value is contingent upon change. The image she conjures in response "Pulled, pushed, elongated, flattened, hammered, punched, and gouged out" reveals the violence embedded in seemingly affectionate intentions. This metaphor is a visceral expression of psychological entrapment. Her relationship with Naren, the blind teacher she once loved, offers no refuge either. While Naren represents emotional intimacy, Shari cannot fully express herself with him. She tells him she is marrying Gautam even when her heart is uncertain. She later writes, "Sometimes we would think the same thought and it was sipping through one straw" (Nambisan 99), indicating a deep connection, yet she feels incapable of acting on it. As Mudaliyar and Chowdhury explain, "Shari undergoes stages of self-introspection and self-reflection, evolving into a more liberated individual" (41). These reflections, however, are slow and painful, as Shari navigates the fog of her emotional landscape. Shari's psychological struggle is also intensified by the emotional burden of observing others' dysfunctional relationships. Her friend Yash, for example, embodies the disillusionment that comes with marriage. Yash confesses, "I use men. Swallow and spit them out like seeds" (Nambisan 120), reflecting a survival mechanism born of betrayal and disappointment. Yash's cynicism disturbs Shari, forcing her to confront uncomfortable truths about trust, intimacy, and female solidarity. The more she observes, the more confused she becomes about what love really is, and whether marriage is a meaningful goal.

Despite being surrounded by people family, friends, a fiancé, a lover Shari is often alone in her thoughts. This solitude is not physical but

emotional. Her inability to share her fears openly, even with Krishna or Naren, shows the emotional constraints placed on women to perform happiness, even when they are unraveling inside. The psychological conflict arises not from indecisiveness but from the pain of not being allowed to fully feel, express, or choose.As Kalyani observes, "Shari's trans-formation occurs when she begins to recognize that her feelings, her dreams, and her doubts are valid" (582). The process of realization is not dramatic but gradual through dreams, memories, reflections, and solitary moments of awareness. Her psychological healing begins only when she stops trying to fulfill expectations and starts listening to her inner voice.In this light, Nambisan's portrayal of Shari becomes more than a personal story it becomes a psychological case study of a woman struggling to reclaim her self-worth. The novel does not offer easy resolutions. Shari is not a heroine in the traditional sense. She is unsure, fragile, and deeply human. Her psychological conflict is the narrative's emotional engine, showing how silent suffering and internal chaos can lead to profound personal clarity. By depicting Shari's psychological journey with such nuance, Nambisan highlights the emotional cost of gender roles and cultural conformity. The pressure to marry, the need to please, the fear of failurethese are not just societal expectations, but psychic wounds. In overcoming them, even quietly, Shari asserts a powerful act of resistance.

Observing Marriages Around Her-

A critical part of Shari's transformation in *Mango-Coloured Fish* lies in her acute observation of the marriages around her. Rather than experiencing marriage directly, she learns through witnessing the lives of women who are trapped in various forms of unhappy domestic arrangements. These real-life examples act as cautionary tales and shape Shari's perception of what her future could look like if she follows the conventional path. KaveryNambisan does not rely on abstract critiques of patriarchy; instead, she places Shari in close proximity to failed and dysfunctional marriages to let her and the reader grasp the emotional costs involved. Perhaps the most emotionally jarring example is ParuAunty's marriage. Once admired by Shari as a maternal figure, Paru's reality is dark and quietly devastating. She lives with an alcoholic and abusive husband, and despite the violence, she remains in the marriage. Kaliswari and Sumathi describe the scenario with clarity: "He drinks almost every day, and if she is rude to him, he even physically assaults her… Observing Paru Aunty, Shari feels that the struggle against violence is the struggle against the unequal distribution of power both physical and economic between the sexes" (23). For Shari, this example is not merely shocking but illuminating. She begins to understand that marriage, far from being a protective institution, can be a trap where women are expected to endure suffering silently. This observation is deepened during Shari's visit to her brother Krishna and his wife Teji in Vrindaban.

On the surface, their marriage appears balanced both are professionals in the medical field and share household responsibilities. But subtle cracks begin to show. The lack of emotional intimacy, the absence of open communication, and the weight of professional stress all contribute to a marriage that feels more like a partnership of convenience than of love. Shari reflects on this contrast and is disturbed by how even seemingly ideal couples carry hidden tensions. As she wanders through their home, she finds a hand-painted sign that reads, "MARRIAGE IS A MIRAGE" (Nambisan 40). This phrase becomes a symbolic revelation for Shari. It crystallizes her growing skepticism about the sanctity and security promised by marriage.Equally disturbing is the life of Yash, Shari's close friend. Yash embodies the disillusionment of a woman who has tried and failed to find emotional stability through romantic relationships. Her adulterous affairs and emotional detachment are not signs of liberation but of unresolved trauma. When Shari confronts her, Yash unapologetically replies, "I use men. Swallow and spit them out like seeds" (Nambisan 120). This line is as cold as it is honest. Yash's cynicism about love and marriage profoundly unsettles Shari. Rather than finding comfort or wisdom in her friend's

choices, she sees a reflection of the emotional hollowness that such relationships can bring.

These observations act cumulatively. Each failed marriage, each disillusioned woman, serves as a mirror for Shari. As B. Kalyani notes, "Shari learns to transcend her issues by confronting them through the lens of others' experiences. She internalizes their suffering and recognizes the emotional bankruptcy that can come from ignoring one's own needs" (582). Shari's growing understanding is not theoretical it is experiential, deeply felt through the lives of others. The marriage of her parents offers no comfort either. Though not overtly dysfunctional, it is devoid of affection, passion, or mutual respect. Shari remembers her father as a quiet, submissive man who has "sold his soul" to her domineering mother (Nambisan 230). This reflection forces her to reconsider her family dynamics not as neutral or loving, but as emotionally repressive. She sees how gender roles operate even within so-called peaceful homes, and how love is often sacrificed at the altar of duty and tradition. Through these varied relationships, Nambisan subtly introduces the idea that marriage, for many women, is less a partnership and more a performance. The women around Shari either play their parts dutifully, rebel in destructive ways, or collapse under the emotional weight of compromise. There is no ideal to aspire to only examples to question and learn from. Mudaliyar and Chowdhury explain that Nambisan's female characters are often "caught in a net of relationships… partly of their own making and partly made by the precepts of society" (41). Shari's journey is about recognizing these patterns and choosing a different path. Unlike the women around her, Shari refuses to enter into a life where she would be emotionally starved or psychologically compromised. Her decision to cancel her wedding is not just about Gautam's flaws or her own fears it is about the broader understanding she has developed through careful observation. In rejecting marriage, she is rejecting not just a man, but a system that demands female sacrifice in exchange for social legitimacy. In this way, Nambisan gives Shari and the reader an alternate model of learning. It is not through sermons or societal rebellion, but through everyday observation and personal reflection that a woman can awaken to the truth of her condition. And once awakened, she can choose not to follow in the footsteps of those who have suffered before her.

Education, Independence, and Feminist Realization-

In *Mango-Coloured Fish*, education and self-reliance become powerful tools through which Shari redefines her place in the world. Kavery Nambisan uses Shari's educational and career choices not only as narrative devices but as acts of resistance against the gendered expectations imposed upon her. At a time when women are expected to pursue marriage as their primary goal, Shari's aspiration to become a kindergarten teacher and her decision to remain unmarried represent her quiet but resolute feminist awakening. Shari's passion for teaching is dismissed by her family, especially by her mother, who believes that a more "profitable" and socially respected career path, such as an MBA, would increase Shari's eligibility in the marriage market. Her fiancé Gautam echoes this view when he encourages her to pursue business studies not for her own growth, but to assist his future endeavors. His statement, "You could do an MBA... it'll help with my import plans," (Nambisan 72) reduces Shari's aspirations to an extension of his own ambitions. As Kaliswari and Sumathi aptly note, "She is not treated as an equal partner but as someone who should serve and support Gautam's business goals" (24).

In many traditional households, education is supported only insofar as it serves marital or economic goals. Personal growth, intellectual curiosity, and emotional independence are often overlooked or suppressed. Shari's refusal to participate in this framework signifies her rejection of a life defined by others. Importantly, her choice to teach young children reflects a kind of emotional clarity and maturity. While it may seem modest to her ambitious family, it fulfills her deeply felt need for connection, creativity, and freedom. According to Mudaliyar and Chowdhury, "Shari's assertion of

her career choice reflects the evolution of thought within educated Indian women who face the daily dilemma of choosing between traditional role-playing and modern individuality" (40). Teaching, for Shari, becomes not only a profession but a pathway toward self-respect and emotional stability. Her decision also contrasts starkly with the lives of women around her. While Yash, Paru Aunty, and Teji navigate the turbulent waters of emotionally draining relationships, Shari envisions a life defined by purpose rather than performance. Even though she lacks complete clarity at times, what distinguishes her is the courage to act upon her convictions. B. Kalyani observes that "Shari learns to transcend all her issues and establishes her own self devoid of the opinion of others" (582). This act of self-establishment, rooted in education and career choice, marks her departure from traditional feminine roles. The feminist realization that Nambisan portrays through Shari is subtle yet profound. Shari is not a revolutionary figure in the dramatic sense she does not stage public protests or deliver speeches. Instead, she reclaims power in her own way, by rejecting the idea that marriage is the only purpose of her life. In doing so, she reclaims her agency, proving that true empowerment can begin with private, personal choices. Furthermore, Shari's journey is not just about rejecting marriage it is about choosing life on her own terms. Her decision to live in a working women's hostel, support herself through teaching, and find fulfillment in solitude signals a quiet yet powerful act of feminist resistance. This journey towards independence also reshapes Shari's relationship with her own body and self-image. Earlier in the novel, she internalizes her mother's criticisms and feels unattractive, saying, "I am not blessed with a single pleasing feminine trait" (Nambisan 11). But as she embraces her independence, these concerns diminish. She no longer seeks validation through male approval or societal standards of beauty. Instead, she becomes more accepting of herself as she is, without the need for alteration or apology.

In literature, the "new woman" is often defined by her departure from domesticity, her embrace of intellectual life, and her commitment to self-determination. Shari becomes a modern embodiment of this archetype. Her education is not merely academic it is emotional, psychological, and social. Through teaching, living independently, and choosing not to marry, she embodies a new vision of womanhood, one that values agency over approval and substance over superficiality. Nambisan's portrayal of Shari's growth offers readers a blueprint for feminist self-realization in a culturally rooted context. It affirms that education, when paired with emotional insight and personal courage, can empower women to live more authentically. In the end, Shari's identity is no longer tethered to who she might marry or how well she conforms but to the choices she makes, the independence she claims, and the peace she finds within herself.

Final Act of Defiance-

The climax of *Mango-Coloured Fish* lies not in grand confrontation, but in a quiet, deeply personal decision Shari's act of removing her engagement ring. This seemingly simple gesture represents the culmination of her emotional evolution and ideological awakening. For a woman conditioned to seek approval, to comply silently, and to prioritize others' expectations, the decision to say "no" to marriage becomes a powerful act of self-assertion. KaveryNambisan transforms this quiet resistance into a moment of feminist clarity, making Shari's refusal an act of defiance against not just her engagement, but against an entire social structure built on the silencing of women. Throughout the novel, Shari has been portrayed as introspective, hesitant, and deeply uncertain about her emotions. Her hesitation is often misunderstood as passivity, but in truth, it reflects her internal struggle between learned compliance and emerging autonomy. As Nasreen Banu Jamadar observes- "Shari is caught in a web of self-doubt, hesitation, and social obligation. Yet, her decision to walk away from marriage is a form of silent revolution" (225). The symbolic removal of the ring encapsulates this moment of personal rebellion. The final scene where Shari wraps the engagement ring in a handkerchief is written with delicacy and

restraint. “She took off her ring and wrapped it carefully in a piece of cloth,” Nambisan writes, letting the silence speak louder than any declaration (240). There is no confrontation, no theatrical breakdown. Instead, there is clarity, dignity, and resolve. The act is significant because it is done for herself not as a message to Gautam, not to impress her family or friends, but to honor her truth. This act gains greater weight when contrasted with the lives of the other women in the novel who choose to stay in unhappy marriages or who never fully confront their dissatisfaction. Paru Aunty, for instance, remains with an abusive husband, while Yash, jaded by disillusionment, resorts to casual affairs to feel in control. Even Teji, seemingly content, shows signs of fatigue from trying to maintain balance in a relationship that lacks emotional nourishment. Shari learns from them not by imitation but by contrast. As B. Kalyani explains, “She internalizes their suffering and recognizes the emotional bankruptcy that can come from ignoring one's own needs” (582). Shari's decision, however, is not purely reactionary. It emerges after a long process of reflection, learning, and emotional awakening. Her education, her observations, her self-doubt, and her internal questioning all lead her to this point. She has watched women around her sacrifice dreams for domestic roles, silence themselves in the name of family honor, and accept love that is conditional and transactional. In refusing to follow their path, Shari marks a break from the cycle. Importantly, her act of defiance is also an act of creation. By removing the ring, she is not merely rejecting marriage she is making space for a new narrative, one in which she is the author of her own life. As Mudaliyar and Chowdhury emphasize, “Nambisan's heroines succeed in maintaining a complete balance in life by asserting their individualism within the boundaries of social bondages” (41). Shari does not escape her world; she remains within it, but she reclaims her agency. She chooses to live in a working women's hostel, continue teaching, and explore life on her terms. These choices, modest as they may seem, represent a profound ideological shift.

The significance of this act also lies in its emotional integrity. Shari does not reject Gautam in anger or rebellion; she does it out of self-respect. She realizes that Gautam does not see her as an equal. His need to “mould” her, his inability to understand her inner world, and his instrumental view of her ambitions convince her that a life with him would be a life of diminishing selfhood. As Kaliswari and Sumathi note, “She feels that her individuality is lost in the relationship with Gautam… She longs for a relationship based on mutual respect and love” (24). In feminist terms, Shari's decision embodies the essence of autonomy the right to choose, the power to refuse, and the strength to walk away. It is an act that says no to being objectified, to being reshaped, to being silenced. Shari, chooses discomfort over disillusionment, solitude over subjugation, and growth over compliance. This moment of personal clarity is transformative not only for Shari but also for the readers. It invites us to reconsider the cost of silence, the weight of expectations, and the courage it takes to break free. Shari may not have all the answers, but she chooses to start again not as someone else's daughter, fiancée, or potential wife, but as herself. In this final act, Nambisan affirms the quiet but radical strength of women who say “no” not to love, but to compromise without respect. It is a strength rooted in awareness, nurtured through observation, and realized through action. Shari's defiance is not the end of her story it is the beginning of her becoming.

Conclusion-

Kavery Nambisan's *Mango-Coloured Fish* is more than a narrative about a woman unsure of marriage it is a profound examination of the cultural, emotional, and psychological struggles that define the female experience in a patriarchal society. Through the introspective and emotionally honest journey of Shari, Nambisan unveils the layers of conditioning, expectations, and familial obligations that shape and often suffocate women's lives. The novel charts a subtle but powerful arc of resistance, culminating not in rebellion for its own sake, but in the protagonist's quiet reclamation of

selfhood. The novel begins with Shari submerged in a world that has defined her from every angle: her mother critiques her body, questions her ambitions, and controls her decisions; her family compares her unfavorably to her siblings; her fiancé sees her as a future business partner more than an emotional equal. Amid this storm of opinions, Shari learns to listen to herself. Her struggle is emblematic of the modern Indian woman who stands at the crossroads of tradition and change of duty and desire. Marriage, in the text, becomes a central metaphor for the tension between freedom and conformity. Nambisan's critique is not of marriage as an institution alone, but of the cultural narratives that make marriage compulsory and oppressive for women. Shari's final decision to reject her engagement is not a denial of love or companionship it is a refusal to surrender her identity for the comfort of social acceptance. This defiance is her assertion of agency.Significantly, Nambisan's portrayal of feminist realization is refreshingly realistic. Shari is not an idealized rebel; she is uncertain, flawed, and afraid. Yet, it is precisely this realism that makes her transformation so powerful. She observes, reflects, hesitates, and ultimately decides. Her journey mirrors that of many real women who must make difficult choices with no promise of applause or external validation. Through characters like Paru Aunty, Teji, Yash, and even Bimmy, the novel offers a panoramic view of how women's lives are shaped by marriage, love, and societal control. These stories are not detours they are essential to Shari's learning process. Each woman around her reflects a different form of compromise, resilience, or defeat. By observing them, Shari finds the courage to craft her own path. Furthermore, education and economic independence emerge as key tools for self-liberation. Shari's decision to become a kindergarten teacher, despite family scorn, signals her belief in meaningful, value-driven work. She refuses the transactional model of marriage and career that others push upon her. Shari does exactly that grounding her identity in values, not validation. In a society where women are often expected to adapt, Shari chooses to transform. Her refusal to marry Gautam is not a reactionary act, but the culmination of deep emotional and intellectual introspection. It is an affirmation of her right to say no to marriage, to manipulation, and to being 'moulded' into someone else's vision. In choosing to be alone, she is not isolated; she is finally whole. *Mango-Coloured Fish* does not end with victory in the conventional sense. There is no dramatic confrontation, no public applause. What it gives us instead is something more enduring an honest portrayal of a woman reclaiming her voice, making peace with uncertainty, and learning to live with dignity.

References

1. Jamadar, Nasreen Banu. "Pre-Marriage Dilemma as Reflected in KaveryNambisan's*Mango-Coloured Fish*." *Global English-Oriented Research Journal*, vol. 2, no. 1, 2016, pp. 221–228.
2. Kaliswari, R. and K. M. Sumathi."Visualizing Marriage as a Curse in Disguise in KaveryNambisan's*Mango-Coloured Fish*."*Literary Quest*, vol. 1, no. 4, 2014, pp. 21–26.
3. Kalyani, B. "Dynamics of Human Relationships and Identity Issues in *Mango-Coloured Fish* by Kavery Nambisan." *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research*, vol. 8, no. 8, 2021, pp. 580–583.
4. Mudaliyar, Kaveri V. A., and PayelDuttaChowdhury."A Quest for Selfhood – The Dynamics of Gender Identity in the *Mango-Coloured Fish*."*International Conference on Education, Humanities, and Business*, EHBSA-2019.
5. Nambisan, Kavery. *Mango-Coloured Fish*.Penguin Books, 1998.

ISSN : 2349-9273

Received: 04 April, 2024; **Accepted:** 28 May-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

तुलसी का सीता–त्याग सम्बन्धी मौन

– डॉ. मीरा देवी
प्रवक्ता – हिन्दी विभाग,
आर. पी. (पी. जी.) कालेज,
कमालगंज, फर्रुखाबाद–209724
(उत्तर प्रदेश)

ई–मेलः
lalitkushh@gmail.com

प्रस्तावना–

अनुत्तरित रहना उपयुक्त न होगा, इस प्रश्न का कि तुसली ने राम के राज्यकाल में महारानी सीता के, लोकापवाद के कारण त्याग की प्रचलित कथा को, मानस में क्यों नहीं उठाया? मानस के कुछ संस्करण उत्तर काण्ड पर समाप्त हो जाते हैं? उनमें सीता के परित्याग की कहानी नहीं है ? जिन संस्करणों में लव–कुश काण्ड में है कि तुलसी जी ने अपने पूर्ववर्ती कृतियों वाल्मीकि तथा रामदर्शन के कथानक से इस प्रसंग पर क्यों प्रभावित नहीं है? लेकिन रामायण के जिस संस्करण को लेकर चल रही है, उसमें उत्तरकाण्ड है एवं सीता त्याग की कथा भी है। अतः इस संदर्भ में – इस प्रसंग की समीक्षा करना आवश्यक हो जाता है।

श्रीरामचरितमानस–

लव–कुश काण्ड वाली रामायण के संस्करण में इसी शीर्षक के काण्ड के पृष्ठ संख्या 997 पर अंकित चौपाई में राम–सीता से स्नेहपूर्वक अपना प्रण बताते हैं कि वह उनका त्याग करेंगे, वेद और धर्म की मर्यादा के लिए। अत्एव सीता अपनी परछाई अयोध्या में छोड़कर चली जाय। राम के आदेश का पालन करती हुई सीता उनके चरणों को प्रणाम करके आकाश को चली गयीं। चराचर, कोई भी न जान सका। वहीं प्रतिविलम्ब रूप सीता ऋषि स्थल जाने की इच्छा व्यक्त करती हैं। राम अपने हाथों से मुनि स्त्रियों के जैसे वस्त्राभूषणों से माँ का श्रृंगार करते हैं और हँसकर आश्वस्त करते हैं कि अगले दिन उसकी अभिलाषा पूरी होगी।

वाल्मीकी आश्रम में लवकुश जन्म, पालन–पोषण, राजसूय यज्ञ आदि कथा के तारतम्य में अयोध्या की जनसभा में सीता का अपने पतिवृत की परीक्षा रूप में पृथ्वी से शरण माँगना, धरती का फटना और उसमें निकले हुए सुन्दर सिंहासन पर बैठकर पाताल–लोक को चले जाना उल्लिखित है।

''जटिल मणिन सिंहासनसिंह, सादर सीय चढ़ाया।
भयो अलोप पताल महँ,महिला किमि कहि जाय।।
– (गोस्वामी कृत रामायण वै. सं. लवकुश काण्ड,
50वाँ दोहा, पृष्ठ संख्या–1022

श्रीरामचरितमानस के गीता प्रेस गोरखपुर संस्करण के उत्तर काण्ड में लिखते हैं कि सीता –

''राम पदार बिन्द रति करति सुभावहिं खोई।''
(मानस उत्तरकाण्ड 24वाँ दोहा, पृष्ठ संख्या–918)

इस प्रकार राम के समीप सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करती हुई सीता के लव–कुश दो पुत्र (अयोध्या में 1) उत्पन्न हुए, जिनका वेद पुराणों में वर्णन किया है।[1] एक प्रकार से कथा में यहाँ तक पहुँचकर सीता और राम की जीवन घटनाओं का पर्यावसान हो जाता है। इसके बाद तो राम–राज्य और

राम–भक्ति का विस्तार से चित्रण है। सीता के सम्बन्ध में लोकापवाद और उनका परित्याग कर वन भेजने से लेकर पाताल में प्रवेश तक का तुलसी ने उल्लेख नहीं किया है।[2] इस प्रसंग पर तुसली पूर्णतया मौन हैं। टिप्पणी–

''पूत जाये जानकी के मुनि वध उठीं गाइ।''
''मुनिवर करि छठी कीन्हीं बारहें की रीति''
नाम–लवकुश सिय अनुहरित सुन्दर ताई।''
गीतावली उत्तरकाण्ड–पृष्ठ संख्या–426–27

महाकवि वाल्मीकि का अनुसरण करने का प्रलोभन संवरण नहीं कर सकने के कारण गीता वहीं में आश्रम में लवकुश का जन्म चित्रिण हुआ है। टिप्पणी–

''तीय सिरोमणि सीय तजी,
जेहिं पावक की कुतुशाई दहीं है।''
–कवितावली : उत्तरकाण्ड सवैया संख्या–6,
पृष्ठ संख्या–199

कवितावली में एक पंक्ति में सीता त्याग का प्रसंग का वर्णन तुलसीदास जी ने किया है। वस्तुतः यह पूर्ववर्ती कथा प्रसंगों के प्रति उनका लगाव है। मानस में, वह इस प्रसंग को छोड़ते हैं, हमारे शोध का विषय मानस का कथानक है। अतः उस दृष्टि से ही देखा गया है।

देखना यह है कि तुलसीदास जी के मौन का क्या कारण है? पूर्ववर्ती कथा से सहमति न होना ईश्वरावतारी राम के कार्य–कलाप पर प्रश्न चिन्ह लगाने का भय, सीता के चरित्र को लक्ष्य बनाकर घटनाक्रम को संघर्षात्मक मोड़ देना अथवा पूर्व नियोजित इच्छा के साथ अति मानवीय लीला को दुहराना आदि से असहमति है।

तुलसी के राम मर्यादा पुरुषोत्तम तथा ईश्वरावतार हैं। एक ओर जहाँ अपने चरित्र और कार्य–कलापों से वेद और लोक की मर्यादा को प्रतिष्ठित करते हैं, वहीं अवतारी रूप में जो कोई भी उनके मार्ग में आता है– शुभ या अशुभ इच्छा लेकर, उस पर कृपा करते हैं। उसके ''पाप समूह'' का नाश करके उसे शोक रहित बनाकर अपने लोक में बसा देते हैं। अयोध्या में रहने वाले, सीता के निन्दक और उसके समर्थक नर–नारी के साथ भी उनका वही व्यवहार होता है।'

''सिय निन्दक अघ ओघ नसाए।
लोक विशोक बनाइ बसाए।।''
(श्रीरामचरितमानस– 3–15/2, पृष्ठ संख्या–22)

इस पंक्ति से हमें यह संकेत मिलता है कि सीता के सम्बन्ध में अयोध्या के कुछ लोगों के द्वारा अपवाद फैलाने का प्रयास किया गया है। महारानी सीता रावण के प्रमोद वन में निरुद्ध रहीं, पर पुरुष की उन पर कुदृष्टि थी तथा उसने अपहरण के समय उनका स्पर्श भी किया था।

ये बातें धर्म मर्यादा के विपरीत बताकर सीता के चरित्र पर उँगली उठाने का कुत्सित कार्य जो लोग कर रहे थे, उनका राजा राम द्वारा परिमार्जन किया गया। इतना तो उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है।

महाकवि तुलसीदास जी जानते हैं कि लोक में कुछ ऐसी पापपूर्ण मनोवृत्ति के लोग सदैव रहते हैं जो उत्तम चरित्र पर भी आक्षेप कर सकते हैं। श्री राम जैसा समर्थ शासक उस प्रकार के साधारण अपवाद से विचलित नहीं हो सकता है। वह इस प्रकार के लोगों को उचित रूप से समाधान कर सकते हैं। ''सीय निन्दक'' का उल्लेख करने से पूर्व तुलसी इस पंक्ति में कहते हैं–

''प्रनवउँ पुरनर नाहिर बहोर।''
''ममता जिन्ह पर प्रमुहिन थोपी।''

डॉ. विद्या निवास मिश्र जी वाल्मीकि रामायण एवं श्रीरामचरितमानस के तुलनात्मक अध्ययन में लिखते हैं– ''तुलसीदास जी ने अवधपुरवासियों का चित्रण एक राम के भक्त रूप में किया है। अतः वे अपनी माता जानकी के चरित्र का छिन्द्रान्वेषण क्यों कर सकते थे।'' (पृष्ठ संख्या– 406)

तुलसीदास जी ने लवकुश के जन्म से पूर्व राम की सहधर्मिणी सीता के चरित्र और व्यवहार का जिन शब्दों में वर्णन करते हैं, उसे देखना चाहिए–

''पति अनुकूल .....सुभावहि खोइ।।''

उपर्युक्त आचरण वाली पत्नी के चरित्र पर श्रीराम जैसा व्यक्ति सन्देह करे अथवा लोकापवाद के कारण उसका परित्याग कर दे, यह हमारे मर्यादावादी भक्त कविवर तुलसीदास जी को सहन नहीं हो सकता था। क्या मर्यादावादी राम गुण–दोष की परीक्षा किये बिना, केवल लोक निन्दा के भय से सीताजी को वनवास दे देते, जब कि वह लंका से लौटने पर उनकी अग्नि परीक्षा ले चुके थे। डॉ. विद्या निवास मिश्र जी लिखते हैं– ''तदनन्तर रामायण में सबसे प्रमुख घटना जनश्रुति की प्रेरणा से सीता बनवास है? जिनका मानस में किंचित मात्र उल्लेख करना मर्यादावादी एवं भक्त तुलसीदास जी ने उचित न समझा उन्होंने राम के चरित्र में समाज की आदर्शभूत आवश्यकताओं का समावेश किया है। जिस प्रसंग को उन्होंने अनुपयुक्त समझा, उनका अनुल्लेख किया और जिसे आवश्यक एवं उपयुक्त माना

उस पर विशेष ध्यान देकर विस्तृत वर्णन किया। यहीं ''निगमागमसम्मत'' मानस की मौलिकता ही उसकी विशिष्टता है।''

''रामायण'' तथा ''अध्यात्म–रामायण में सीता वनवास के कारण को जिस प्रकार बुना गया है। वह कई प्रश्नों को जन्म देता है। पहला सवाल यह है कि सीता बनवास की घटना से पूर्व राम दस वर्ष राज्य कर चुके थे। इतनी लम्बी अवधि तक शासक के परिवारी जनों, विशेषतः सम्राज्ञी के चरित्र आचरण के संदर्भ में कोई विवादास्पद प्रश्न क्यों नहीं उठा? लोकानुरंजन के नाम पर दूत के माध्यम से समाचार पाते ही सीता परित्याग कर निर्णय लेने के पीछे ऐसी कोई विवशता कवि ने नहीं दर्शायी है। जो सारे कथा–प्रवाह को उलट–पुलट दे। तुलसी राम राज्य में अनीति को कैसे चित्रित कर सकते थे? तुलसी ने लव–कुश का जन्म अयोध्या में कराकर, सीता के त्याग, वाल्मीकि के आश्रम में लव–कुश के पालन पोषण,शिक्षा–दीक्षा आदि के प्रसंग को समाप्त ही कर दिया–

''अह निसि विधिहि मानावत रहहीं।
श्री रघुवीर चरन रति चहहीं।।
छह सुत सुन्दर सीता जाए।
लव–कुश वेद पुरानन्ह गााए।।''

तुलसी प्रबन्ध –

हम काव्य के जिस रस पूर्ण प्रवाह को अक्षुण्ण रख रहे हैं, वहाँ अध्यात्म–रामायाणकार से प्रेरणा लेना किसी विशेष मन्तव्य को ही पूरा नहीं करता। वस्तु योजना और रस योजना दोनों ही दृष्टि से ऐसा प्रसंग मानसिक कसरत से कुछ अधिक नहीं होता।

तुलसीदास जी जब सीता वनवास का उल्लेख नहीं कर रहे हैं, तब वाल्मीकि के आश्रम में लव–कुश के जन्म, राम के दरबार में रामायण का गायन, सीता माँ का पृथ्वी में प्रवेश आदि घटनाओं के चित्रण का कोई अर्थ नहीं था, अतएव तुलसीदास जी सबको छोड़ते चले गये हैं।

डॉ. विद्या निवास मिश्रा जी लिखिते है– ''सीता वनवास के प्रसंग का अभाव होने के कारण तत्सम्बन्धित अन्य प्रसंगों, यज्ञशाला में लव–कुषादि सहित वाल्मीकि का आगमन तथा सीता का पाताल प्रवेश आदि का भी श्रीरामचरितमानस में उल्लेख नहीं है।''

प्रसंगवश डॉ. विद्या निवास मिश्र जी का तर्क भी देखना उपयुक्त होगा– ''तुलसी विषिष्ट द्वैतवादी थे। वे अपने आराध्य एवं आराध्या, ब्रह्म एवं शक्ति को विलग कैसे दिखा सकते थे ?'

उपसंहार–

उपसंहार में नायक एवं नायिका दोनों के द्वारा फल प्राप्ति अपेक्षाकृत अधक वांछनीय थी। इसके अतिरिक्त रामायण में पूर्व कथा वस्तु में माया सीता का प्रसंग नहीं है, जब कि श्रीरामचरितमानस में है। अग्नि द्वारा वास्तविक सीता को प्राप्त करने के पश्चात् जनश्रुति का राम पर प्रभाव दिखाना तुलसी के लिए अनर्गल था। वस्तु–योजना में अव्यवस्था हो जाती है, यदि वास्तविक सीता में सन्देह दर्शाया जाता है–

''अवधपुरी वासिन्ह कर सुख सम्पदा समाजा ।
सहस शेष नहिं कहि सकहिं जहै नृप राम विराजा।''
(श्रीरामचरिमानस उत्तर काण्ड, 26वाँ दोहा, पृ. सं.–919)

राम अवधपुरी में ऐसा रामराज्य स्थापित कर चुके हैं, जिनमें प्रजा अत्यन्त सुखी है। उस सुख का 'हजारों शेष' भी वर्णन भी नहीं कर सकते। नारद सनाकादि मुनीश्वर प्रतिदिन श्रीराम के दर्शन के लिए आते हैं।

इसके बाद कवि अयोध्यापुरी के सौन्दर्य का विस्तार से वर्णन करता है और परामर्श देता है कि ''जनक सुता समेत रघुवीर को भजो।'', ''जनक सुता समेत रघुवीर'' ही कहने का अर्थ ही है अध्योध्या के राज सिंहासन पर दोनों की एक साथ उपस्थिति। अपने लेख के लिए मैंने उत्तरकाण्ड तक समाप्त होने वाले श्रीरामचरितमानस को चुना। अतः तुलसीदास जी के नाम से प्रसारित दूसरी रामायणों में लव–कुश काण्ड के अन्तर्गत सीता वनवास आदि घटनाओं को छोड़ देना लेख्किा के लिए भी श्रेयस्कर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वाल्मीकि रामायण। – महर्षि वाल्मीक ।
2. अध्यात्म रामायण – रामशर्मन ।
3. रामचरित मानस – तुलसीदास ।
4. श्रीरामाचरित मानस संस्करण–112ए संवत् 2052, टीकाकार – हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रेस , गोरखपुर ।
5. रामायण टीकाकार – स्वर्गीय पं. ज्वाला प्रसाद पाराशर , बैंकटेश्वर प्रेस बम्बई ।
6. गीतावली – उत्तरकाण्ड, पृष्ठ संख्या– 426–27।
7. कवितावली : उत्तरकाण्ड, सवैया संख्या– 6, पृष्ठ संख्या–199।
8. डॉ0 रामप्रकाश अग्रवाल : वाल्मीकि और तुलसी : साहित्यिक मूल्यांकन।
9. अमृतलाल नागर : मानस का हंस।
10. तुलसी रसायन : डॉ. भागीरथ मिश्र।

ISSN : 2349-9273

Received: 06 April, 2024; **Accepted:** 09 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

आगरा जनपद में जल उपलब्धता का भौगोलिक विश्लेषण

– डॉ. राखी
एसोसिएट प्रोफेसर–भूगोल विभाग , आर. बी. एस. कालेज, आगरा – 282002 (उत्तर प्रदेश)
सम्बद्ध – बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा–282004 (उत्तर प्रदेश)

ई–मेलः
kulshrestharakhi75@gmail.com

सारांश

पानी सदैव से ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण संसाधन रहा है। अब तो यह दुर्लभ व दुष्प्राप्य संसाधन होता रहा है। जल उपलब्धता की निरंतरता को बनाये रखने के लिये जल संसाधनां के इष्टतम उपयोग के उपाया करने को त्वरित और संपोषणीय आवश्यकता है। जल का कोई विकल्प नहीं है इसकी प्रत्येक बूँद अमृत तुल्य है। परन्तु अध्ययन क्षेत्र आगरा जनपद ही नहीं अपितु देश के संदर्भ में भी शोचनीय है कि पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु का सबसे बड़ा कारण 'जलजनित रोग' ही है। स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराके 90 प्रतिशत बीमारियों को कम किया जा सकता है।

प्रस्तावना –

हमारे देश में एक तिहाई (33 प्रतिशत) पानी टॉयलेट की सफाई जैसे कामों मैं व्यर्थ चला जाता है। भूजल के अनियंत्रित दोहन और वर्षा की कमी से भारत में पानी का संकट दिनोंदिन गहराता जा रहा है। भारत के संदर्भ में नासा (NASA) की रिपोर्ट बताती है कि पश्चिमी उप्र के जनपदों (विशेष रूप से आगरा) में प्रति वर्ष भूजल का स्तर औसतन 12 इन्च (32 सेमी.) की दर से घटता जा रहा ह। विगत 5 वर्षों में 109 क्यूबिक किलोमीटर भूमिगत जल कम हुआ है। केन्द्रीय भूमिगत जल बोर्ड (CGWB) द्वारा भूमिगत जल के उपयोग के संदर्भ में कहा गया है कि वर्षा से लगभग 343 घन किलोमीटर भूमिगत जल रिचार्ज होता है जो कि सम्पूर्ण वार्षिक वर्षा का 8.56 प्रतिशत है। इसका 15 प्रतिशत पेयजल के रूप में तथा शेष 85 प्रतिशत सिंचाई व औद्योगिक गतिविधियों में प्रयुक्त होता है।

भूतल का पानी जो प्रदूषित व गंदा होता है भूमि के अन्दर नीचे भूगर्भ के जल को भी प्रदूषित कर देता है। गंदे नालों का डिस्चार्ज नापने के लिए 'वी–नोज टैपिंग' की जानी चाहिए। सीवर व कल–कारखानों के घातक रसायनों ने यमुना नदी के आगरा परिक्षेत्र में घुलनशील ऑक्सीजन (BOD) की मात्रा 7 मिलीग्राम प्रतिलीटर ही रह गई है जो कि 217 मिलीग्राम प्रति लीटर होना आवश्यक है। जल संरक्षण आज की आवश्यकता भी है और कर्तव्य भी। हमारी उदासीनता व लापरवाही के कारण पेयजल की उपलब्धता, दिनानुदिन न्यून होती जा रही है। वर्षा जल का संचयन न होकर व्यर्थ बहकर नदियों व नालों में चला जाता है। वर्षा के जल को संचित करके सिंचाई के लिए उपयोग में लाया जा सकता है तथा साथ ही वैज्ञानिक विधि से संग्रहण होने से भूगर्भ भी भरता रहेगा। वर्तमान संदर्भ में जल संरक्षण जीवन संरक्षण है।

आगरा जनपद की 94.38 प्रतिशत जनसंख्या आज भी सुरक्षित व स्वच्छ पेयजल की सुविधा से वंचित है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि आगरा महानगर की जनसंख्या की वृद्धि इसी गति से होती रही तो वह दिन दूर नहीं जब आगरा नगर पेयजल के लिए तरसने लगेगा। प्रदूषित व जलविहीन होती जा रही यमुना नदी इस तथ्य की पुष्टि करती दिखती है। यमुना नदी का वर्तमान स्वरूप भयावह भविष्य का संकेत देता प्रतीत होता है। पेयजल की समस्या अपने विकराल स्वरूप को बढ़ाती जा रही है।

आगरा जनपद का भौगोलिक परिचय –

वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर जनपद 11वें स्थान पर है। आगरा जनपद की जनसंख्या 4380793 व्यक्ति मालदीव राष्ट्र के लगभग बराबर और संयुक्त राज्य अमेरिका के केंटुकी राज्य के बराबर है। उ0प्र0 में इलाहाबाद जनपद के पश्चात् द्वितीय स्थान पर है। आगरा जनपद का मुख्यालय आगरा नगर यमुना नदी के दहिने तट पर बसा हुआ नगर है। महाभारत में अग्रवन नाम से इसका उल्लेख मिलता है। आर्यग्रह नाम से भी आर्य साहित्य में वर्णन है। टालमी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इसे आगरा नाम से अभिहित किया था। आगरा की पहचान एवं विकास मुगल साम्राज्य से जुड़ी हुई है। आधुनिक आगरा की नींव सिकन्दर लोधी ने 16वीं शताब्दी में रखी। उसने अपने सैनिकों के निवास हेतु इस स्थान को सैन्य मुख्यालय बनाया था। इस प्रकार सन् 1505 ई. में आगरा शहर की नींव रखी गयी थी और इसे राजधानी बनाया गया था। बाबर यहाँ कुछ दिन रुका था और परसियन वास्तु पर आधारित भवन व बगीचे स्थापित किये थे। नगर को उत्कर्ष अकबर व शाहजहाँ जैसे राजाओं के कार्यकाल में मिला। सन् 1803 में अंग्रेजों ने इस पर अपना अधिपत्य स्थापित किया और 1834 में इसे राजस्व जनपद घोषित किया गया था।

आगरा जनपद का कुल क्षेत्रफल 4041 वर्ग किलोमीटर है। जिसमें 3793.04 वर्ग किलोमीटर ग्रामीण क्षेत्रफल (कुल क्षेत्रफल का 93.87 प्रतिशत) तथा 247.96 वर्ग किलोमीटर नगरीय क्षेत्रफल जो कुल का 6.14 प्रतिशत है। सम्पूर्ण जनपद को 6 तहसीलों क्रमशः एत्मादपुर, आगरा–सदर, किरावली, खेरागढ़, फतेहाबाद व वाह तहसीलों में विभक्त किया गया है। पुनः उक्त 6 तहसीलों को 15 विकासखण्डों में विभाजित करके विकास प्रक्रिया को गति प्रदान की गयी है। एत्मादपुर तहसील के अन्तर्गत दो विकासखण्ड एत्मादपुर व खण्डौली है। आगरा–सदर तहसील में बरौली–अहीर विकासखण्ड व अकोला विकासखण्ड समाहित हैं।

आगरा जनपद उत्तर प्रदेश राज्य के धुर दक्षिणी–पश्चिमी कोने पर स्थित है। इसका अक्षॉशीय विस्तार 260 4′ उत्तरी अक्षांश से 270 25′ उत्तरी अक्षांश तक तथा 770 26′ पूर्वी देशान्तर से 780 32′ पूर्वी देशान्तरों के मध्य विस्तृत है। पश्चिम दिशा में इसकी सीमा का निर्धारण राजस्थान राज्य से और दक्षिण दिशा में मध्य प्रदेश राज्य का विस्तार है। इसकी अधिकांश सीमा का निर्धारण फिरोजाबाद और हाथरस जनपदों से एवं छोटी सीमा का निर्धारण मथुरा जनपद से होता है। एटा एवं इटावा जनपद इसकी पूर्वी सीमा को निर्धारित करते हैं। अध्ययन क्षेत्र आगरा जनपद का क्षेत्रफलीय विस्तार 4041 वर्ग किलोमीटर है जो उत्तर प्रदेश राज्य के अन्य जनपदों की तुलना में क्षेत्रफल के आधार पर 25वां स्थान एवं जनसंख्या 2011 की जनगणना के आधार पर 11वें स्थान पर है।

1. अतिदोहित विकासखण्ड (Over Exploited Block)-

जनपद आगरा के 8 विकासखण्ड अत्यधिक भूजल दोहन के कारण अतिदोहित श्रेणी में आ गए हैं। आगरा जनपद का मुख्यालय आगरा नगर संकटमय श्रेणी (ब्तपजपबंस ब्ंजमहवतल) के अंतर्गत रखा गया है। अतिदोहित (Over Exploited) श्रेणी के अन्तर्गत आने वाले विकासखण्ड जनपद आगरा के उत्तरी–पूर्वी दिशा में 7 विकासखण्ड श्रृंखलाबद्ध तरीके से स्थित हैं, जब कि एक विकासखण्ड फतेहपुर सीकरी उक्त श्रृंखला से अलग जनपद के पश्चिमी भाग में राजस्थान राज्य की सीमा पर एकाकी स्थित है। जनपद आगरा के अतिदोहित विकास सम्पूर्ण जनपद के सभी 15 विकास खण्डों की संख्या के आधार पर 53.33 प्रतिशत हैं।[1]

अतिदोहित विकासखण्डों के अन्तर्गत आगरा जनपद का 1926.19 वर्ग किमी. क्षेत्रफल समाहित है जो जनपदीय क्षेत्रफल का 47.67 प्रतिशत है। कहा जा सकता है कि आगरा जनपद का लगभग 48 प्रतिशत भूभाग अतिदोहित भूमिगत जल वाला क्षेत्र है। इस समस्या से प्रभावित जनसंख्या 1415507 व्यक्ति है जो सम्पूर्ण जनसंख्या के 32.03 प्रतिशत हैं। प्रभावित ग्रामों की संख्या

511 है जो सम्पूर्ण ग्रामों का 55 प्रतिशत हैं, अर्थात जनपद आगरा के आधे से अधिक गांव भूमिगत जल के अतिदोहन से उत्पन्न समस्याओं से ग्रसित हैं। अतिदोहन से जनपद के 19 नगर बुरी तरह से संकटमय में स्थिति में जीवनयापन कर रहे हैं । इसी भूभाग में आगरा नगर भी पेयजल समस्या से पीड़ित है।[2] आगरा जनपद में विकासखण्ड का वार्षिक भूजल रिचार्ज 84758.50 हेक्टेयर मीटर है। जनपद में सर्वाधिक भूमिगत जल रिचार्ज 7027.07 हेक्टेयर मीटर फतेहपुर सीकरी विकासखण्ड में तथा न्यूनतम रिचार्ज बिचपुरी विकासखंड में 3053.01 हेक्टेयर मीटर वार्षिक है। भूमिगत जल का सर्वाधिक दोहन फतेहपुर सीकरी में 11433.72 हेक्टेयर मीटर वार्षिक है। जब कि न्यूनतम वार्षिक दोहन जगनेर विकासखण्ड में 2903.93 हेक्टेयर मीटर है। वार्षिक दोहन का प्रतिशत में आकलन किया जाए तो सबसे अधिक वार्षिक दोहन 162.71 प्रतिशत फतेहपुर सीकरी विकासखण्ड में तथा न्यूनतम प्रतिशतीय दोहन पिनहट विकासखण्ड में 50. 19 प्रतिशत है।

भूमिगत जल की उपलब्धता का विश्लेषण किया जाए तो जनपद आगरा के 8 विकासखण्ड क्रमशः एत्मादपुर,

सारणी क्रमांक –1

आगरा जनपद : भूमिगत जल संकटग्रस्त विकासखण्ड (2023–24)

क्रम संख्या	विकासखण्ड का नाम	क्षेत्रफल (वर्ग किमी. में)	प्रभावित जनसंख्या	प्रभावित ग्राम	प्रभावित नगर
1.	फतेहपुर सीकरी	305.48	163448	79	1
2.	बिचपुरी	99.99	107843	33	10
3.	बरौली अहीर	233.14	239659	69	4
4.	शमशाबाद	260.08	239659	70	1
5.	खंदौली	211.26	176019	48	1
6.	एत्मादपुर	221.74	160900	62	1
7	फतेहाबाद	355.92	200049	96	1
8.	सैंया	238.58	163468	54	0
	योग अतिदोहित	**1926.19**	**1415507**	**511**	**19**
9.	अछनेरा	259.80	179687	64	3
10.	अकोला	163.76	133509	40	1
	क्रिटिकल	**423.56**	**313196**	**104**	**4**
11.	बाह	285.74	147452	82	1
12.	जगनेर	314.19	112360	52	1
13.	खैरागढ़	244.58	157936	48	1
	सेमी क्रिटिकल	**844.51**	**417748**	**182**	**3**
14.	जैतपुर कलां	306.92	121983	79	0
15.	पिनहट	339.20	126168	53	1
	सुरक्षित	**646.12**	**248151**	**132**	**1**
	ग्रामीण	3793.04	2394602	929	–
	नगरीय	247.96	2024195	–	27
	जनपद	4041.00	44188797	929	27

स्रोतः जनपद जनगणना हैंण्ड बुक सीरीज – 10, 2011

नोट : कुल जनपदीय क्षेत्रफल व विकासखण्डों के योग में अन्तर रहता है। 6

सारणी क्रमांक–2

आगरा जनपद : भूमिगत जल संकट प्रभाव (2023–24)

वर्गीकरण	प्रभावित क्षेत्रफल (वर्ग किमी. में)	प्रभावित जनसंख्या	प्रभावित ग्राम
अतिदोहित	1926.19	1415507	511
प्रतिशत में	47.67	32.03	55.00
क्रिटिकल	423.56	313196	104
प्रतिशत में	10.48	7.09	11.19
सेमी क्रिटिकल	844.51	417748	182
प्रतिशत में	20.90	9.46	19.59
सुरक्षित	646.12	248151	132
प्रतिशत में	15.99	5.61	14.21
अतिरोहित नगरीय	247.96	2024195	27
प्रतिशत में	6.14	45.81	100.00
जनपद	404100	4418797	–

स्रोत : भूगर्भिय जल सर्वेक्षण तथा गणना पर आधारित, लखनऊ, उ.प्र.

चंदौली, बिचपुरी, बरौली अहीर, फतेहपुर– सीकरी, सैंया, शमशाबाद तथा फतेहाबाद में उपलब्धता शून्य हो गई है। जनपद में अधिकतम भूजल की उपलब्धता पिनहट विकासखण्ड में 3000.12 हेक्टेयर मीटर वार्षिक है जब कि न्यूनतम भूजल उपलब्धता अकोला विकास खण्ड में 139. 08 हेक्टेयर मीटर वार्षिक ही है। जनपद के सभी 27 नगरों में उपलब्धता शून्य स्तर पर पहुँच गई है। नगरीय क्षेत्रों में जितना वार्षिक भूमिगत जल रिचार्ज (1401.95 हेक्टेयर मीटर) और वार्षिक दोहन (1308.95 वार्षिक) है जो कुल रिचार्ज का 92.37 प्रतिशत है।3 विस्तृत विवरण हेतु सारणी क्रमांक 1 दृष्टव्य है। **(सारणी–1 पिछले पृष्ठ पर देखिये)**

2. संकटमय विकासखण्ड (Critical Development Blocks)-

इस कोटि के अन्तर्गत उन विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है, जिनका वार्षिक दोहन 96 से लेकर 100 प्रतिशत के मध्य है, इसके अंतर्गत दो विकासखण्ड अछनेरा व अकोला हैं। इस कोटि में 423.56 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल (सम्पूर्ण का 10.48%), 313196 व्यक्ति (अर्थात 7.09 प्रतिशत जनसंख्या) तथा 104 गाँव संकटमय स्थिति में हैं, जो कि सम्पूर्ण के 11.19 प्रतिशत हैं कहा जा सकता है कि उक्त दोनों विकासखण्डों की भूगर्भिक जल की स्थिति अत्यन्त ही चिंतनीय है।[4]

3. अर्द्ध–संकटमय विकासखण्ड (Semi & Critical Development Blocks) -

इस कोटि के अधीन विकासखण्डों का वार्षिक भूजल विदोहन 77 से 96 प्रतिशत के मध्य पाया गया है। आगरा जनपद के तीन विकासखण्ड क्रमशः बाह, जगनेर तथा खैरागढ़ इसमें सम्मिलित हैं। सम्पूर्ण जनपद आगरा का 20.90 प्रतिशत (844.51 वर्ग किलोमीटर) क्षेत्रफल, 9.46 प्रतिशत जनसंख्या (417748 व्यक्ति), तथा 19.59 प्रतिशत ग्राम (182 गॉव) भूजल की अर्द्ध– संकटमय स्थिति में है। यदि भूजल की स्थिति को सुधारने के लिए यथाशीघ्र उपाय न किए गये तो भूगर्भिक जल की स्थिति भयावह हो सकती है।[5] विकासखण्डवार विस्तृत विवरण हेतु सारणी क्रमांक 1 व 2 को देखा जा सकता है।

4. सुरक्षित विकासखण्ड (Safe Development Blocks)-

अध्ययन क्षेत्र आगरा जनपद के दो विकासखण्ड जैतपुर कलां तथा पिनहट भूजल की उपलब्धता 2180.43 तथा 3000.12 के साथ सुरक्षित व सुखद स्थिति में हैं।6 इन विकासखण्डों में वार्षिक रिचार्ज 6000 हेक्टेयर मीटर वार्षिक से अधिक तथा वार्षिक दोहन 50 से 65 प्रतिशत के मध्य है, जो आदर्श स्थिति का सूचक है। जनपद आगरा के 132 गाँव

तथा एक नगर पिनहट सुरक्षित कोटि में हैं। यह की 646. 12 वर्ग किमी. क्षेत्रफल एवं 248151 व्यक्ति (5.61%) सुरक्षित भूगर्भ जल उपलब्धता वाले क्षेत्र में निवास करते हैं।[7] विस्तृत विवरण हेतु सारणी क्रमांक – 2 दृष्टव्य है।**(सारणी–2 पिछले पृष्ठ पर देखिये)**

निष्कर्ष–

जिनके पास संसाधन है वे अवैज्ञानिक एवं अंधाधुंध जल दोहन में संलग्न हैं। जलवायु परिवत्रन, हिमालय में घटते हिमनद तथा मानसून प्रणाली में हो रहे उतार–चढ़ाव क कारण जनसमस्या और भी विकट होती जा रही है। पानी की माँग और उपलब्धता में दिनानुदिन अन्तर बढ़ता जा रहा है। यही स्थिति बनी रही तो वर्ष 2030 तक मॉग–आपूर्ति अनुपात बढ़कर 100:50 हो जायेगा। इस स्थिति को देखते हुए कहा जा सकता है कि हमारी जल प्रबन्धन प्रणाली संपोषणीय नहीं है। पानी सदैव से ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण संसाधन रहा है। अब तो यह दुर्लभ व दुष्प्राप्य संसाधन होता रहा है। जल उपलब्धता की निरंतरता को बनाये रखने के लिये जल संसाधनां के इष्टतम उपयोग के उपाया करने को त्वरित और संपोषणीय आवश्यकता है। जल का कोई विकल्प नहीं है इसकी प्रत्येक बूँद अमृत तुल्य हैं।

परन्तु अध्ययन क्षेत्र आगरा जनपद ही नहीं अपितु देश के संदर्भ में भी शोचनीय है कि पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु का सबसे बड़ा कारण 'जलजनित रोग' ही है। स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराके 90 प्रतिशत बीमारियों को कम किया जा सकता है।

References

1. Kakade, B. K. (2006) Integrated Watershad Development Programme : Yamuna Ravine Area Project Report, page - 103.
2. Baghel G. S. & Kamal Singh Gautam (2011) A Geographical Study of River : The Unique Gift of Nature, National Seminar in Deptt. of Geography, B.H.U. Varanasi, page - 192 .
3. Singh, A. N. (2002) Application of remote sensing data for forestory survey and mapping IIRS (NNRS) Tech Report.
4. Pani, P. & Mohapatra S. N. (2001) Delineation and monitoring of gullied and ravinous lands in a part of lower Chambal valley, India, using Remote Sensing and GIS - A research paper published in the Proc. ACRS, 22nd Asian Conference on Remote Sensing, 5-9 November 2001, Singapore. Vol. 1, page - 671- 675.
5. Mehrotra, C. L & Gangwar, B. R., (2010) Soils of Agra District and their Management, Uttar Pradesh soil survey organization, Deartment of Agriculture, Soil Bulletin, No. 4 .
6. Bali, Y. P. (2007) Reclamability classification of Ravines for Agriculture, Soil Conservation Digest Part-5, page - 69-72 .
7. Ray, K. V. (1995) Erosino of River Banks, Its Caused ad Prevention, Geog, Review of India, Part-4, page - 54-58 .

ISSN : 2349-9273

Received: 10 April, 2024; **Accepted:** 09 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

कानपुर शहर के यू.पी. बोर्ड उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के आत्मबोध का तुलनात्मक अध्ययन

– डॉ. सीमा मिश्रा
असि. प्रोफेसर–बी.एड. विभाग,
डॉ. वी. एस. आई. पी. एस.
किदवई नगर, कानपुर–208011
(उत्तर प्रदेश)

ई–मेलः
seemaawasthi4@gmail.com

सारांश

आत्मबोध अधिगमकर्ताओं की शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा व समग्र विकास को एक निश्चित दिशा प्रदान करता है। साथ ही व्यक्ति के समक्ष कल्याण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य कानपुर शहर के उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के आत्मबोध का अन्वेषण करना था जिसमें लिंग व अकादमिक धारा के आधार पर अन्तर देखा गया। 400 विद्यार्थियों (200 बालक एवं 200 बालिकाओं) का सैम्पल विभिन्न अकादमिक वर्गों (विज्ञान व कला) से लिया गया।

आत्मबोध का आकलन करने के लिए प्रशासित किया गया। प्राप्त परिणामों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि आत्मबोध स्तर में लिंग के आधार पर महत्वपूर्ण अन्तर विद्यमान है, जिसमें लड़के व लड़कियों की तुलना में आत्मबोध के अकादमिक व शारीरिक आयाम में उच्च स्कोर प्राप्त किये। विज्ञान वर्ग के बालक एवं बालिकाओं ने कला वर्ग के बालक एवं बालिकाओं की तुलना में उच्च आत्मबोध स्कोर प्रदर्शित किया। सहसम्बन्ध विश्लेषण के आधार पर ज्ञात हुआ कि आत्मबोध व शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक सहसम्बन्ध मौजूद है। प्राप्त परिणामों के आधार पर ज्ञात होता है कि शिक्षकों व नीति–निर्माताओं को लिंग व विषय वर्ग के आधार पर प्राप्त अन्तरों को सहबोधिक करने की आवश्यकता है, जिससे कि बालक–बालिकाओं के सम्पूर्ण विकास को बढ़ावा देने हेतु आवश्यक व समावेशी शिक्षण वातावरण की उपलब्धता को सुनिश्चित किया जा सके।

की–वर्ड – आत्मबोध, उच्च–माध्यमिक स्तर, लिंग अन्तर, विषय वर्ग अन्तर, शैक्षिक उपलब्धि ।

प्रस्तावना –

आत्मबोध, जिसे आत्म–संवेदनशीलता के नाम से भी जाना जाता है, व्यक्ति की स्वयं की क्षमताओं व सीमाओं के सम्बन्ध में जागरुकता है, यह अधिगमकर्ताओं के शैक्षणिक प्रदर्शन व मनोवैज्ञानिक सम्भावनाओं को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

आत्मबोध व्यकित के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका रखने वाला मनोवैज्ञानिक पक्ष का एक प्रमुख पहलू है। जैसा कि मैसलो के अनुसार– ''आत्मबोध, मनोवैज्ञानिक विकास तथा परिपक्वता का परिणाम होता है जो सहनशीलता तथा आत्मतत्व को जगाने का कार्य करता है।'' आत्मबोध को सामान्य रूप से परिभाषित करते हुये कहा जा सकता है कि आत्मबोध वह

सम्प्रत्यय है जिसमें व्यक्ति स्वयं के बारे में धारणा बनाता है तथा अपनी क्षमताओं व सीमाओं का मूल्यांकन भी करता है। आत्मबोध स्तर को कई कारक जैसे पारिवारिक वातावरण, सामाजिक परिस्थितियाँ, व्यक्तिगत अनुभव आदि प्रभावित करते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में कानपुर शहर के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मबोध स्तर का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन लिंग व अकादमिक वर्ग के आधार पर निर्गत आत्मबोध भिन्नताओं की जाँच भी करता है।

अध्ययन के उद्देश्य–

☛ आत्मबोध में लिंग आधारित अन्तर का विश्लेषण करना।

☛ आत्मबोध में अकादमिक वर्ग आधारित अन्तर का विश्लेषण करना।

☛ आत्मबोध व अकादमिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध का आंकलन करना।

परिकल्पना–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मबोध में लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मबोध में अकादमिक वर्ग के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मबोध में अकादमिक उपलब्धि के आधार पर सह–सम्बन्ध नहीं होगा।

प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

प्रतिदर्श–

प्रस्तुत अध्ययन में कानपुर शहर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 400 बालक–बालिकाओं (200 लड़के एवं 200 लड़कियों) को लिया गया। विद्यार्थियों का चयन तीन अकादमिक वर्गों (विज्ञान व कला) में किया गया।

शोध उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में आत्मबोध प्रश्नावली (एस.सी. क्यू.) प्रयुक्त की गई। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का आंकलन पूर्व अकादमिक वर्ष के परिणामों के आधार पर किया गया।

प्रयुक्त साँख्यिकी की तकनीक–

इस अध्ययन में आँकड़ों के आंकिक विश्लेषण के लिए मध्यमान, टी–टेस्ट व सहसम्बन्ध सांख्यकीय तकनीकियों का उपयोग किया गया।

आँकड़ों का विष्लेशण तथा व्याख्या–

परिकल्पना – 01–

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आत्मबोध में लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।'' **(तलिका – 01 देखिये)**

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र तथा छात्राओं के आत्मबोध स्तर के सम्बन्ध में आकलित t प्राप्त का मान 3.86, सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक प्राप्त हुआ है। अतः शून्य परिकल्पना कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र तथा छात्राओं

तलिका – 01–

क्रमांक	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान मानक त्रुटि	स्वतंत्रांश	टी मान	सार्थकता स्तर
1	विज्ञान वर्ग	200	118.49	33.51	2.12	498	4.75	0.01
2	कला वर्क	200	102.58	40.91	2.59			

तलिका – 02–

क्रमांक	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	मध्यमान मानक त्रुटि	स्वतंत्रांश	टी मान	सार्थकता स्तर
1	छात्र	200	135.50	22.69	1.43	498	3.52	0.01
2	छात्रायें	200	126.70	32.45	2.05			

के आत्मबोध में लिंग आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकार की जाती है तथा शोध परिकल्पना कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र तथा छात्राओं के आत्मबोध में लिंग आधार पर सार्थक अन्तर है, स्वीकार की जाती है।

परिकल्पना – 02

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आत्मबोध में अकादमिक वर्ग के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।''

(तलिका – 02 पिछले पृष्ठ पर देखिये)

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विज्ञान तथा कला वर्ग के विद्यार्थियों के आत्मबोध स्तर के सम्बन्ध में आकलित t प्राप्त का मान 4.75, सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक प्राप्त हुआ है। अतः शून्य परिकल्पना कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र तथा छात्राओं के आत्मबोध में अकादमिक वर्ग के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकार की जाती है तथा शोध परिकल्पना कि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र तथा छात्राओं के आत्मबोध में अकादमिक वर्ग के आधार पर सार्थक अन्तर है, स्वीकार की जाती है।

परिकल्पना – 03

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आत्मबोध व अकादमिक उपलब्धि के बीच सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।'' **(तलिका – 03 देखिये)**

उच्चतर माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि व आत्मबोध स्तर के सम्बन्ध में आंकलित सह सम्बन्ध गुणांक का मान 0.73 ज्ञात हुआ जो कि उच्च धनात्मक सह सम्बन्ध का होता है। अतः शून्य परिकल्पना की उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मबोध व अकादमिक उपलब्धि के बीच सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है, अस्वीकार की जाती है तथा शोध परिकल्पना कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मबोध व अकादमिक उपलब्धि के बीच सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है, अस्वीकार की जाती है तथा शोध परिकल्पना कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मबोध व अकादमिक उपलब्धि के बीच सार्थक सह–सम्बन्ध है स्वीकार की जाती है।

परिणाम एवं चर्चा

लिंग आधारित अन्तर–

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिंग आधारित विश्लेषण से निष्कर्ष के रूप में प्राप्त हुए कि विद्यार्थियों के आत्मबोध स्तर से लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर व्याप्त है। बालक ने बालिकाओं के सापेक्ष आत्मबोध के सम्बन्ध में उच्च स्कोर प्राप्त किया।

बालक एवं बालिकाओं के आत्मबोध स्तर में निर्गत भिन्नता का सम्भावित कारण लिंग आधारित भूमिकाओं व अपेक्षाओं में अर्न्तनिहित भिन्नतः को माना जा सकता है। प्रायः बालक बालिकाओं के सापेक्ष अधिक आत्मविश्वास व प्रतिस्पर्धात्मकता स्वरूप व्यवहार करते दिखाई देते हैं जो उनके उच्च आत्मबोध स्तर का कारण भी हो सकते हैं।

अकादमिक वर्ग आधारित अन्तर–

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अकादमिक वर्ग आधारित विश्लेषण से निष्कर्ष स्वरूप ज्ञात हुआ कि अकादमिक वर्ग के आधार पर विद्यार्थियों के आत्मबोध स्तर में सार्थक अन्तर मौजूद है। विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों ने कला वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च आत्मबोध स्वरूप प्रदर्शन किया। विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के उच्च आत्मबोध स्तर का सम्भावित कारण विज्ञान विषय की विश्लेषणात्मक व चुनौतीपूर्ण प्रकृति हो सकती है। जिसमें विज्ञान विषय के अधिगमकर्ताओं में आत्मप्रेरणा व आत्म–संवेदनशीलता आदि घटक विकसित होते हैं जो उच्च आत्मबोध स्तर के कारक हो सकते हैं।

आत्मबोध व अकादमिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध–

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मबोध

परिकल्पना – 03

स्मूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान		सहसम्बन्ध गुणांक	सह सम्बन्ध का प्रकार
		अकादमिक उपलब्धि	आत्मबोध		
उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी	400	128.27	131.10	0.73	उच्च धनात्मक सह सम्बन्ध

स्तर व अकादमिक उपलब्धि के सह सम्बन्ध आधारित विश्लेषण से परिणामस्वरूप प्राप्त हुआ कि विद्यार्थियों के आत्मबोध व अकादमिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक सह सम्बन्ध मौजूद है। उच्च आत्मबोध स्तर वाले विद्यार्थियों का अकादमिक उपलब्धि स्तर भी उच्च प्राप्त हुआ। इस प्रकार आत्मबोध का अकादमिक उपलब्धि के साथ प्राप्त सकारात्मक सह सम्बन्ध से यह प्रदर्शित करता है कि विद्यार्थियों के आत्मबोध स्तर में संवर्द्धन कर अकादमिक उपलब्धि में सुधार किया जा सकता है।

निष्कर्ष–

☛ उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मबोध स्तर में लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ।

☛ उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मबोध स्तर में अकादमिक वर्ग के आधार पर सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ।

☛ उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मबोध व अकादमिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक सह सम्बन्ध पाया गया।

सिफारिशें –

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर निर्गत सिफारिशें निम्न हैं–

☛ शिक्षकों तथा नीति निर्माताओं को आत्मबोध को प्रोत्साहन सम्बन्धी कार्यक्रमों को व गतिविधियों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है जिससे विद्यार्थियों के समग्र विकास को सुदृढ किया जा सके।

☛ शिक्षकों तथा नीति निर्माताओं को आत्मबोध के सम्बन्ध में अकादमिक वर्ग आधारित भिन्नता को समझने व सम्बोधित करने की आवश्यकता है।

☛ शिक्षकों तथा नीति निर्माताओं को आत्मबोध के सम्बन्ध में लिंग आधारित भिन्नताओं को समझने व सम्बोधित करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. पटेल, वी एवं जोशी, पी. (2021) अकेडमिक सेल्फ कान्सेप्ट एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन अकेडमिक परफार्मेन्स : अ स्टडी उमंग हाईस्कूल स्टूडेन्टस, इण्डियन जनरल ऑफ साइकोलाजी, 14 (2), 112–123।
2. कान्सेप्ट एण्ड अकेडमिक अचीवमेन्ट उमंग में ..... स्कूल स्टूडेन्टस (डाक्टोरज डिजर्टेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ केल्ही), प्रोसपेक्टस डिजर्टेशन एण्ड थीसिस।
3. शर्मा, आर. के. (2020), अण्डरस्टैंडिंग सेल्फ कान्सेप्ट : अ साइकोलाजिकल पर्सपेक्टिव, अकेडमिक प्रेस।
4. कुमार, आर. (एडि.) (2018) पर्सपेक्टिव ऑन एजूकेशन साइकोलाजी (पी. पी. 25–40), सतलेज ।
5. सिंह, एम. (2022), जेन्डर डिफरेन्सेस अकेडमिक सेल्स कान्सेप्ट उमंग हाईस्कूल स्टूडेन्टस, जनरल आफ एजूकेशनल रिसर्च एण्ड प्रैक्टिस, 12(3) / 45–56।
6. शर्मा, एन. (2022) सेल्फ कान्सेप्ट एण्ड अकेडमिक परफार्मेन्स : अ स्टडी ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्टस इन उत्तर प्रदेश, इन्स्टीट्यूट ऑफ एजूकेशनल रिसर्च।
7. वर्मा एस. पी. एवं सिंह, के. (2013) एजूकेशनल साइकोलाजी : कान्सेप्ट एण्ड एप्लिकेशन्स , सेज पब्लिकेशन्स ।

◈◈

ISSN : 2349-9273

Received: 12 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

ग्रामीण शिक्षा में नवाचार और कानपुर जिले में ग्रामीण शिक्षकों की भूमिका

– नेहा गुप्ता
यू. जी. सी. नेट

ई–मेलः
nehaguptajhinjhak@gmail.com

सारांश

कानपुर जिले में ग्रामीण शिक्षा में नवाचार और शिक्षकों की भूमिका ने शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डिजिटल शिक्षा, सामुदायिक भागीदारी, और व्यावसायिक पाठ्यक्रम जैसे नवाचारों ने ग्रामीण छात्रों के लिए नई संभावनाएं खोली हैं। वहीं, शिक्षक सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक, नवाचारों के कार्यान्वयनकर्ता, और`जनकमदजे' उमदजवते के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। हालांकि, बुनियादी ढाँचे की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों की अनुपस्थिति और डिजिटल डिवाइड जैसी चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। इन चुनौतियों को दूर करने के लिए सरकार, गैर–सरकारी संगठनों, और समुदाय को मिलकर काम करना होगा।

परिचय–

भारत एक ग्रामीण–प्रधान देश है जहाँ 65 प्रतिशत से अधिक आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीण शिक्षा देश के सामाजिक–आर्थिक विकास की आधारशिला है, क्योंकि यह ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाती है और उन्हें मुख्यधारा के विकास से जोड़ती है। हालांकि, ग्रामीण शिक्षा कई चुनौतियों जैसे बुनियादी ढांचे की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों की अनुपस्थिति, और आधुनिक तकनीकों तक सीमित पहुँच से जूझ रही है। इन चुनौतियों के बावजूद, ग्रामीण शिक्षा में नवाचार और शिक्षकों की भूमिका ने सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

यह शोध पत्र कानपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों और ग्रामीण शिक्षकों की भूमिका का विश्लेषण करता है। कानपुर, उत्तर प्रदेश का एक महत्वपूर्ण जिला है, जो शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों का मिश्रण है। इस पत्र का उद्देश्य ग्रामीण शिक्षा में नवाचारों की स्थिति, शिक्षकों की चुनौतियां, और उनके योगदान को समझना है। यह शोध पत्र पूरी तरह से मूल है और किसी भी प्रकार की कॉपीराइट सामग्री से मुक्त है।

ग्रामीण शिक्षा में नवाचार–

1. डिजिटल शिक्षा और ई–लर्निंग – ग्रामीण शिक्षा में डिजिटल तकनीकों का उपयोग एक क्रांतिकारी कदम है। कानपुर जिले के कुछ स्कूलों में स्मार्ट क्लासरूम और ई–लर्निंग मॉड्यूल लागू किए गए हैं। उदाहरण के लिए, सर्व शिक्षा अभियान और डिजिटल इण्डिया पहल के तहत कई ग्रामीण स्कूलों में प्रोजेक्टर और टैबलेट प्रदान किए गए हैं। यह नवाचार छात्रों को

इंटरैक्टिव और दृश्य–आधारित शिक्षा प्रदान करता है, जिससे उनकी रुचि और समझ बढ़ती है।

हालांकि, स्मार्टफोन और इंटरनेट की पहुँच अभी भी सीमित है। 2023 की एक रिपोर्ट के अनुसार– केवल 58 प्रतिशत उच्च कक्षा के छात्रों के पास स्मार्टफोन तक पहुँच है, जब कि प्राथमिक स्तर पर यह आँकड़ा 42 प्रतिशत है। इस चुनौती को दूर करने के लिए, कानपुर के कुछ गैर–सरकारी संगठनों ने सौर ऊर्जा से संचालित डिजिटल लर्निंग सेंटर स्थापित किए हैं, जो बिजली की कमी वाले क्षेत्रों में प्रभावी हैं।

2. सामुदायिक भागीदारी – कानपुर जिले में सामुदायिक भागीदारी ने ग्रामीण शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्थानीय पंचायतों और माता–पिता–शिक्षक संगठनों ने स्कूलों में नियमित उपस्थिति और ड्रॉपआउट दर को कम करने के लिए प्रयास किए हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार– 84 प्रतिशत अभिभावक नियमित रूप से माता–पिता–शिक्षक बैठकों में भाग लेते हैं, जिससे बच्चों की शिक्षा में उनकी रुचि बढ़ी है।

3. शिक्षक प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम सुधार– ग्रामीण शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नवाचार देखा गया है। कानपुर जिले में जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (DIET) ने शिक्षकों के लिए डिजिटल शिक्षण तकनीकों और बाल–केन्द्रित शिक्षण पद्धतियों पर कार्यशालाएं आयोजित की हैं। इसके अलावा, पाठ्यक्रम में स्थानीय संस्कृति और पर्यावरण से सम्बन्धित विषयों को शामिल किया गया है, जिससे छात्रों की शिक्षा अधिक प्रासंगिक और आकर्षक बनती है।

4. व्यावसायिक शिक्षा – ग्रामीण छात्रों को रोजगार–उन्मुख शिक्षा प्रदान करने के लिए, कानपुर जिले में कुछ स्कूलों ने व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू किए हैं। ये पाठ्यक्रम कृषि, हस्तशिल्प, और बुनियादी कम्प्यूटर कौशल जैसे क्षेत्रों पर केन्द्रित हैं। यह नवाचार ग्रामीण युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने और शहरी पलायन को कम करने में सहायक हैं।

कानपुर जिले में ग्रामीण शिक्षकों की भूमिका–

1. सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक – कानपुर जिले के ग्रामीण शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं हैं। वे सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं। वे बाल विवाह, लैंगिक असमानता, और अंधविश्वास जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जागरुकता फैलाते हैं। उदाहरण के लिए, कई शिक्षकों ने लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए अभियान चलाए हैं, जिसके परिणामस्वरूप 11–14 आयु वर्ग की स्कूल न जाने वाली लड़कियों का प्रतिशत केवल 4.1 प्रतिशत रह गया है।

2. नवाचारों का कार्यान्वयन – शिक्षक ग्रामीण शिक्षा में नवाचारों को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कानपुर के ग्रामीण स्कूलों में शिक्षकों ने डिजिटल उपकरणों का उपयोग शुरू किया है, जैसे कि मोबाइल ऐप्स और ऑनलाइन ट्यूटोरियल। हालांकि, इंटरनेट कनेक्टिविटी और प्रशिक्षण की कमी के कारण यह कार्य चुनौतीपूर्ण है। फिर भी, शिक्षकों ने स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके रचनात्मक शिक्षण विधियाँ विकसित की हैं, जैसे मिट्टी और लकड़ी से शिक्षण सामग्री बनाना।

3. छात्रों के साथ व्यक्तिगत जुड़ाव – कानपुर जिले के ग्रामीण शिक्षक छात्रों के साथ व्यक्तिगत स्तर पर जुड़ते हैं, जो उनकी शैक्षिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है। एक अध्ययन के अनुसार– केवल 40 प्रतिशत माता–पिता अपने बच्चों के साथ दैनिक आधार पर उनकी शिक्षा के बारे में बात करते हैं। इस स्थिति में, शिक्षक माता–पिता की भूमिका निभाते हैं और छात्रों को प्रेरित करते हैं। वे नियमित रूप से घरेलू दौरे करते हैं और अभिभावकों को शिक्षा के महत्व के बारे में जागरुक करते हैं।

4. चुनौतियों का सामना – ग्रामीण शिक्षकों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे अपर्याप्त वेतन, बुनियादी ढाँचे की कमी, और प्रशासनिक बोझ। कानपुर जिले में कई स्कूलों में एक शिक्षक को कई कक्षाओं को पढ़ाने की जिम्मेदारी दी जाती है, जिससे उनकी कार्यक्षमता प्रभावित होती है। इसके अलावा, शिक्षक भर्ती घोटाले जैसे मुद्दों ने शिक्षकों के मनोबल को प्रभावित किया है। फिर भी, शिक्षक धैर्य और समर्पण के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं।

चुनौतियाँ और समाधान

चुनौतियाँ –

1. बुनियादी ढाँचे की कमी – कानपुर जिले के कई ग्रामीण स्कूलों में बिजली, शौचालय, और पीने के पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है।

2. प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी– अनुभवी और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी ग्रामीण शिक्षा की गुणवत्ता को

प्रभावित करती है।

3. डिजिटल डिवाइड – ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और स्मार्ट उपकरणों की सीमित उपलब्धता डिजिटल शिक्षा को बाधित करती है।

4. सामाजिक–आर्थिक बाधाएं – गरीबी और घरेलू जिम्मेदारियों के कारण कई बच्चे स्कूल छोड़ देते हैं।

समाधान–

1. बुनियादी ढाँचे का विकास – सरकार को ग्रामीण स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं के लिए निवेश बढ़ाना चाहिए।

2. शिक्षक प्रशिक्षण – नियमित और प्रासंगिक प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों की क्षमता को बढ़ा सकते हैं।

3. डिजिटल पहुँच – सौर ऊर्जा और ऑफलाइन डिजिटल सामग्री के उपयोग से डिजिटल डिवाइड को कम किया जा सकता है।

4. सामुदायिक जागरुकता – शिक्षा के महत्व पर जागरुकता अभियान स्कूल ड्रॉपआउट दर को कम कर सकते हैं।

निष्कर्ष –

कानपुर जिले में ग्रामीण शिक्षा में नवाचार और शिक्षकों की भूमिका ने शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डिजिटल शिक्षा, सामुदायिक भागीदारी, और व्यावसायिक पाठ्यक्रम जैसे नवाचारों ने ग्रामीण छात्रों के लिए नई संभावनाएं खोली हैं। वहीं, शिक्षक सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक, नवाचारों के कार्यान्वयनकर्ता, और Students Mentors के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। हालांकि, बुनियादी ढाँचे की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों की अनुपस्थिति और डिजिटल डिवाइड जैसी चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। इन चुनौतियों को दूर करने के लिए सरकार, गैर–सरकारी संगठनों, और समुदाय को मिलकर काम करना होगा।

कानपुर जिले के ग्रामीण शिक्षक न केवल शिक्षा प्रदान करते हैं, बल्कि सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जागरुकता फैलाने और छात्रों को प्रेरित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी मेहनत और समर्पण ग्रामीण शिक्षा की रीढ़ है। भविष्य में, नीतिगत सुधारों और संसाधनों के उचित आवंटन के साथ, कानपुर जिले में ग्रामीण शिक्षा नई ऊँचाइयों को छू सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Drishti IAS - (2023), ग्रामीण भारत में प्रारम्भिक शिक्षा की स्थिति 2023।
2. Drishti IAS - (2019), ग्रामीण भारत में स्कूली शिक्षा की दशा और दिशा।
3. Leverage Edu - (2023), ग्रामीण समाज में शिक्षा का महत्व।
4. Navbharat Live - (2025), शिक्षक भर्ती और शालार्थ आईडी घोटाला।

The Gunjan

Multi Displinary Quarterly International Refreed/Peer Reviewed Research Journal

ISSN : 2349-9273

`The Gunjan'

(in Multi Language : Hindi + English + Sanskrit)

Multi Displinary Quareterly International Refreed/Peer Reviewed Research Journal

Sector-K-444, `Shiv Ram Kripa' World Bank Barra-Kanpur-208027

Contact- 08896244776

E-mail: mohittrip@gmail.com

Visit us: www:thegunjan.com, abhinavgaveshna.com

ISSN : 2349-9273

Received: 18 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

प्रौद्योगिकी और शिक्षा : डिजिटल शिक्षा का उभरता स्वरूप

– डॉ. गोपाल कृष्ण भारद्वाज
(प्राचार्य)
एक्मे इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट
एण्ड टेक्नालॉजी, सिकन्दरा, आगरा
– 282007 (उत्तर प्रदेश)

ई–मेलः
gkbharadwaj72@gmail.com

सारांश

प्रौद्योगिकी और शिक्षा का संगम एक क्रांतिकारी परिवर्तन का संकेतक है, जिसने पारम्परिक शिक्षा प्रणाली को नए आयाम प्रदान किए हैं। डिजिटल शिक्षा ने न केवल शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अधिक सुलभ, लचीला और आकर्षक बनाया है, बल्कि इसमें समावेशिता और व्यक्तिगत अनुकूलन की संभावनाएँ भी उत्पन्न की हैं। हालांकि, इसके समक्ष डिजिटल असमानता, तकनीकी अक्षमता, और सामाजिक–सांस्कृतिक दूरी जैसी चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए केवल तकनीकी समाधान पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि समग्र और मानव–केन्द्रित दृष्टिकोण की आवश्यकता है। भविष्य में हाइब्रिड शिक्षण मॉडल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, और स्थानीय भाषा में डिजिटल कंटेन्ट के विकास से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि शिक्षा सभी तक समान रूप से पहुँचे। इस दिशा में सरकार, शिक्षकों, तकनीकी विशेषज्ञों और समाज के संयुक्त प्रयासों से ही एक समावेशी, गुणवत्तापूर्ण और सतत डिजिटल शिक्षा प्रणाली की स्थापना संभव है. जो भारत को ज्ञान आधारित समाज की ओर अग्रसर कर सकेगी।

21वीं सदी में प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है और शिक्षा इससे अछूती नहीं रही। शिक्षा प्रणाली, जो कभी पारम्परिक कक्षाओं, पाठ्यपुस्तकों और सीमित संसाधनों पर आधारित थी, आज डिजिटल उपकरणों, इंटरनेट, ऑनलाइन मंचों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग से समृद्ध हो चुकी है। डिजिटल शिक्षा का तात्पर्य उस शिक्षण प्रणाली से है, जिसमें कंप्यूटर, स्मार्टफोन, इंटरनेट, डिजिटल सामग्री और विभिन्न शैक्षिक प्लेटफॉर्म्स का उपयोग करके शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया को संचालित किया जाता है। यह शिक्षा न केवल स्थान और समय की सीमाओं को समाप्त करती है, बल्कि इसे अधिक सुलभ, लचीला और व्यक्तिगत भी बनाती है। भारत में डिजिटल शिक्षा का विस्तार पिछले एक दशक में धीरे–धीरे हो रहा था, लेकिन कोविड–19 महामारी ने इसे तीव्र गति प्रदान की।

स्कूलों और विश्वविद्यालयों के बन्द होने के कारण शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन शिक्षण ही एकमात्र विकल्प बन गया। इस परिस्थिति में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक डिजिटल प्लेटफॉर्म्स जैसे Zoom, Google Meet, Microsoft Teams, और विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में DIKSHA, SWAYAM, e-Pathshala और PM e-VIDYA जैसे सरकारी प्रयासों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही, निजी क्षेत्रों में BYJU'S] Vedantu] Unacademy जैसे मंचों ने भी शिक्षा को डिजिटल माध्यम से सहज और आकर्षक बनाने में योगदान दिया। डिजिटल शिक्षा के माध्यम से

छात्रों को न केवल विषयवस्तु की पहुँच मिली, बल्कि इंटरएक्टिव वीडियो, एनिमेशन, वर्चुअल प्रयोगशालाएँ और ऑनलाइन क्विज जैसे आधुनिक शैक्षिक साधनों ने उनकी सीखने की रुचि को भी बढ़ाया। तकनीकी सशक्तिकरण के कारण अब विद्यार्थी अपने समय और सुविधा के अनुसार अध्ययन कर सकते हैं, जिससे शिक्षा अधिक लचीली और अनुकूल हो गई है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल शिक्षा ने शिक्षक–छात्र संबंधों को भी नए ढंग से परिभाषित किया है। अब शिक्षकों को केवल विषय विशेषज्ञ नहीं बल्कि तकनीकी दक्ष भी होना आवश्यक हो गया है।

इसके चलते शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता बढ़ी है ताकि वे नवीन तकनीकों का समुचित उपयोग कर सकें। डिजिटल शिक्षा के अनेक लाभ हैं। यह भौगोलिक सीमाओं को तोड़कर किसी भी क्षेत्र के विद्यार्थी को गुणवत्ता युक्त शिक्षा तक पहुँच प्रदान करती है। इसके अलावा, यह शिक्षण को अधिक दृश्यात्मक, संवादात्मक और आत्मनिर्भर बनाती है। छात्र अपने अनुसार गति से विषयवस्तु को समझ सकते हैं और पुनः देख सकते हैं, जिससे अधिगम में गहराई आती है। वहीं, शैक्षिक संसाधनों की विविधता और व्यापकता भी डिजिटल शिक्षा की विशेषता है। परन्तु इसके समानान्तर कई चुनौतियाँ भी हैं। भारत जैसे देश में जहाँ अब भी ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की सुलभता, बिजली की उपलब्धता और तकनीकी उपकरणों का अभाव है, वहाँ डिजिटल शिक्षा एक सीमित वर्ग तक ही सीमित रह जाती है। इस प्रकार, डिजिटल डिवाइड एक गंभीर समस्या के रूप में उभरती है जो शहरी और ग्रामीण, समृद्ध और वंचित वर्ग के बीच शैक्षिक असमानता को और गहरा कर सकती है। साथ ही, लम्बे समय तक स्क्रीन पर पढ़ाई करने से विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, जैसे आँखों की थकान, मानसिक तनाव और सामाजिक अलगाव की स्थिति। इसके अलावा, ऑनलाइन शिक्षा में छात्रों का ध्यान भटकने की संभावना अधिक होती है और आत्म अनुशासन की आवश्यकता भी अधिक होती है। बहुत से मामलों में यह देखा गया है कि छात्रों की सहभागिता सीमित हो जाती है और वास्तविक संवाद एवं सामाजिक कौशल का विकास बाधित होता है। शिक्षकों के लिए भी तकनीकी शिक्षा एक नई चुनौती के रूप में आई है, विशेषकर उन शिक्षकों के लिए जो पारम्परिक शिक्षण पद्धतियों में अधिक सहज हैं। इस परिवर्तन के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है। सरकार द्वारा चलाए जा रहे प्रयास जैसे National Digital Education Architecture (NDEAR) और भारत नेट जैसी योजनाएँ डिजिटल बुनियादी ढाँचा मजबूत करने की दिशा में सकारात्मक पहल हैं, किन्तु इनकी सफलता इसके प्रभावी और समावेशी क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। शिक्षा को डिजिटल रूप में सभी तक पहुँचाने के लिए आवश्यक है कि हम क्षेत्रीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण डिजिटल कंटेंट विकसित करें ताकि भाषा की दीवार डिजिटल शिक्षा में बाधा न बने। साथ ही. शिक्षा केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं बल्कि सोच, मूल्य और सामाजिक अनुभव का भी विकास है, जिसे केवल डिजिटल माध्यम से पूर्ण रूप से पाना कठिन है। इसलिए भविष्य में हाइब्रिड शिक्षा मॉडल–जिसमें ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यम सम्मिलित हों को अपनाना अत्यंत आवश्यक हो जाएगा। हाइब्रिड मॉडल विद्यार्थियों को तकनीकी सुविधा के साथ–साथ सामाजिक और भावनात्मक विकास के अवसर भी प्रदान करता है।

आने वाले समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मशीन लर्निंग, और वर्चुअल रियलिटी (VR) जैसी तकनीकों का उपयोग शिक्षा में व्यापक रूप से किया जाएगा, जिससे शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावशाली और आकर्षक बनाया जा सकेगा। उदाहरण के लिए, एक छात्र विज्ञान के किसी प्रयोग को केवल पढ़ने के बजाय VR के माध्यम से प्रयोगशाला में जाकर उसे महसूस कर सकता है। इसी प्रकार, AI आधारित प्लेटफॉर्म छात्रों की सीखने की गति और शैली को समझकर उन्हें व्यक्तिगत पाठ्यक्रम प्रदान कर सकते हैं। इस प्रकार, डिजिटल शिक्षा का भविष्य अत्यन्त संभावनाशील है, बशर्ते इसे समानता, समावेशिता और सतत विकास के सिद्धांतों के साथ लागू किया जाए। डिजिटल शिक्षा केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं, बल्कि यह एक सामाजिक–सांस्कृतिक बदलाव भी है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि यह परिवर्तन समाज के हर वर्ग तक पहुँचे और कोई भी छात्र तकनीकी या आर्थिक कारणों से शिक्षा से वंचित न रहे। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि सोचने की क्षमता, सामाजिक मूल्य और जीवन कौशल विकसित करना भी है। इसलिए डिजिटल शिक्षा को इस व्यापक उद्देश्य के साथ जोड़कर ही हम एक सशक्त और समावेशी ज्ञान समाज की स्थापना कर

सकते हैं। अन्ततः कहा जा सकता है कि प्रौद्योगिकी और शिक्षा का यह संगम 21वीं सदी के भारत को एक नई दिशा देने में सक्षम है, परन्तु इसके लिए निरन्तर प्रयास, नीतिगत संकल्प और सामाजिक सहभागिता की आवश्यकता है।

प्रौद्योगिकी और शिक्षा का संगम एक क्रांतिकारी परिवर्तन का संकेतक है, जिसने पारम्परिक शिक्षा प्रणाली को नए आयाम प्रदान किए हैं। डिजिटल शिक्षा ने न केवल शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अधिक सुलभ, लचीला और आकर्षक बनाया है, बल्कि इसमें समावेशिता और व्यक्तिगत अनुकूलन की संभावनाएँ भी उत्पन्न की हैं। हालांकि, इसके समक्ष डिजिटल असमानता, तकनीकी अक्षमता, और सामाजिक–सांस्कृतिक दूरी जैसी चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए केवल तकनीकी समाधान पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि समग्र और मानव–केन्द्रित दृष्टिकोण की आवश्यकता है। भविष्य में हाइब्रिड शिक्षण मॉडल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, और स्थानीय भाषा में डिजिटल कंटेन्ट के विकास से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि शिक्षा सभी तक समान रूप से पहुँचे। इस दिशा में सरकार, शिक्षकों, तकनीकी विशेषज्ञों और समाज के संयुक्त प्रयासों से ही एक समावेशी, गुणवत्तापूर्ण और सतत डिजिटल शिक्षा प्रणाली की स्थापना संभव है. जो भारत को ज्ञान आधारित समाज की ओर अग्रसर कर सकेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली : भारत सरकार प्रकाशन।
2. UNESCO - (2021) - Digital Learning and Education in the Time of COVID-19, Paris : United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization,
3. Ministry of Education, Government of India- (2021) - PM EVIDYA Programme Overview, Retrieved from https://www-education-gov-in.
4. KPMG & Google India - (2017) - Online Education in India : 2021- Mumbai : KPMG India.
5. Mishra, L., Gupta, T., & Shree, A - (2020) - Online teaching & learning in higher education during lockdown period of COVID-19, pandemic- International Journal of Educational Research Open, 1, 100012.
6. भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (TRAI). (2023), भारत में इन्टरनेट उपभोक्ताओं की रिपोर्ट. नई दिल्ली।

शोध-पत्र लेखकों को विशेष निर्देश

'दि गुंजन' और **'अभिनव गवेषणा'** मल्टी डिसिप्लिनरी क्वार्टरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड/पियर रिव्यूड रिसर्च जर्नल में पेपर प्रकाशित कराने के लिए पाँच प्रमुख बातों का होना बहुत ही आवश्यक है–

(1) रिसर्च जर्नल पत्रिका के क्रमानुसार चार पेज से कम नहीं होना चाहिए।
(2) रिसर्च जर्नल में कम से कम आठ सन्दर्भ ग्रन्थ सूची **(References)** का होना आवश्यक है।
(3) रिसर्च जर्नल में लेखक का नाम, पद, कालेज का पता, ऊपर अंकित होना चाहिए।
(4) नवीनतम एक पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ एवं ई-मेल एड्रेस।
(5) रिसर्च जर्नल में प्रमाण-पत्र हेतु आपके निवास का पता अंकित होना जरूरी है।

यह आप सभी के स्नेह का ही परिणाम है कि आपके प्रबुद्ध विचारों को **'दि गुंजन' और 'अभिनव गवेषणा' मल्टी डिसिप्लिनरी क्वार्टरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड/पियर रिव्यूड रिसर्च जर्नल** के माध्यम से अपने पाठकों तक पहुँचाने का सुअवसर मिल रहा है। विस्तृत जानकारी हेतु कार्यालय अथवा मोबाइल पर सम्पर्क करें।

- प्रबन्ध सम्पादक

सम्पर्क- 8896244776

ISSN : 2349-9273

Received: 26 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

स्वराज्य पार्टी में पंडित गोविन्द वल्लभ पंत जी का योगदान

– राकेश कुमार वर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर–
इतिहास विभाग,
महराजा मूलसिंह डिग्री कालेज,
लखौरी, बूँदी– (राजस्थान)

ई–मेलः
rkvermakarwar@gmail.com

भरतीय इतिहास के धरातल का अवलोकन करने से यह विदित हाता है कि इसे द्विविध राज सत्ताओं की परतन्त्रता में भारतीय जनमानस को जीवन निर्वाह करना पड़ा है। उन वैदेशिक सत्ताओं में प्रथम तथा मुस्लिम साम्राज्यवादी और द्वितीय आंगल शासकों का नाम अन्तर्भावित होता है। सामान्यतः, किसी राष्ट्र की राजनीति, अर्थनीति आदि का वहाँ के सामाजिक जीवन पर सम्यक प्रभाव परिलक्षित होता है।

परिणामस्वरूप अपने प्रतिकूल वातावरण व व्यवस्था के प्रति देश के तत्कालीन विचारकों में तीन प्रकार के दृष्टिकोण पल्लवित हाते हैं प्रथम उदारवादी द्वितीय उग्रवादी तृतीय क्रान्तिकारी। प्रथम व उदारवादी दृष्टिकोण परिवर्तनशील समाज में सम्पूर्ण सफलता का द्योतक नही माना जा सकता। अस्तु ''शठे शाठयम् समाचरेत'' अर्थात दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करना चाहिये। कथानुसार तत्कालीन भारत में क्रान्तिकारी राष्ट्रीय विचारधारा को प्रबल समर्थन प्रचार–प्रसार हुआ जिसमें सिद्धान्त व व्यवहार दोनों ही दृष्टियों से तत्कालीन महापुरुषों ने तन–मन–धन से राष्ट्र के प्रति अपने आपको समर्पित किया।

सी. आर. दास और पंडित मोतीलाल नेहरू के नेतृत्व में स्वराज्य पार्टी की स्थापना हुई स्वराज्य पार्टी भारत के लिये औपनिवेशिक स्वतन्त्रता चाहती थी परिषद को माध्यम बनाकर शासन का उपयोग करते हुये, अन्दर से स्वराज की लड़ाई लड़ी जाय वे देश में कृषकों, मजदूरों तथा शोषित वर्गों में स्वराज के प्रति जागृत उत्पन्न करना चाहते थे।

सन् 1920 के निर्वाचन के पश्चात प्रथम प्रान्तीय व्यवस्थापिका परिषद का गठन हुआ। स्वराज पार्टी के इलाहाबाद अधिवेशन में पंत जी उपस्थित थे, पं. मोतीलाल नेहरू का भाषण शान्तिपूर्वक सुन रहे थे। अन्त में पंत जी ने भाषण देना प्रारम्भ किया, उनका भाषण इतना गम्भीर एवं तथ्य पूर्ण था कि पं. मोतीलाल नेहरू उनका भाषण सुनकर प्रसन्न हो गये और अपनी बगल में बैठे साथी से मुँह फेर कर बोले कि पंत जी ने एक अभूतपूर्व प्रतिभा कायम है।

''पंथ जी से मुझे ऐसी ही आशा थी''[1]

अपने सभी प्रौढ़ साथियों, सहयागियों की बैठक में

मोतीलाल जी ने घोषित कर दिया कि ''सदन में स्वराज्य पाटी के नेता के लिए हमें जिस व्यक्ति की तालश थी वह मिल गया वह यह विशेष भूमिका निभा सकता है और प्रत्येक चुनौती का सामना सफलतापूर्वक कर सकता है।[2]

1923 ई. में प्रान्तीय परिषद का चुनाव होना था, पंडित मोतीलाल नेहरू चयन के लिये नैनीताल गये। 20 जुलाई को अपने पार्टी कार्यकर्ताओं के सम्मेलन इण्डियन क्लब के तत्वाधान में नैनीताल से पंडित गोविन्द वल्लभ पंत, अल्मोड़ा से पंडित हर गोविन्द पंत और गढ़वाल से बाबू मुकुन्दी लाल को पार्टी का उम्मीदवार घोषित किया, सभी उम्मीदवार भारी बहुमत से चुनाव में विजयी हुये।

8 जनवरी, 1924 का वह ऐतिहासिक दिन था, कौंसिल का प्रथम अधिवेशन जिस दिन पं. गोविन्द वल्लभ पंत ने विधान परिषद में प्रवेश किया। 8 जनवरी, 1924 को ही परिषद का पहला अधिवेशन लखनऊ में प्रारम्भ हुआ आपको अपनी योग्यता दिखाने का अवसर मिला, जिससे पंडित मोतीलाल नेहरू बहुत अधिक प्रभावित हुये, आपने इस दायित्व का निर्वाह 6 वर्षों तक किया। प्रान्तीय व्यवस्थापिका परिशद में आपने वेश्यावृत्ति की समस्या, सड़क एवं वन समस्या (बागेश्वर काण्ड), मजदूरों की समस्या, भारतीयों की उपेक्षा, प्राथमिक एवं व्यवसायिक शिक्षा, सफाई, कृषि एवं कुटीर उद्योग धन्धों आदि समस्याओं में प्रश्न पूँछ कर सरकार का ध्यान देश तथा कुमायूँ की समस्याओं की ओर आकृष्ट किया।[3]

30 जनवरी, 1924 ई. को परिषद में बोलते हुये पत जी ने कहा– ''कुमायूँवासियों की कातर स्थिति जागृत हो उठी जो लम्बे समय से कठोर वन वीथियों से उत्पीड़ित क्षेत्र में एक कारुणिक जीवन की व्यथा का सामना कर रहे थे। वन–वीथियें के मारक प्रभाव से आहत होने के अलावा उन्हें ''कुली उतार प्रथा'' का अपमान भी उस समय सहना पड़ रहा था। परिषद के माध्यम से वन वीथियों की कठोरता और कुली उतार व्यवस्थाओं की श्रृंखलाओं को चकनाचूर कर दिया, द्वैध शासन की समाप्ति सकारात्मक शासन की स्थापना जमींदारों द्वारा परिषद में अतिरिक्त प्रतिनिधित्व की माँग, विभागीय समितियों की संख्या में वृद्धि, स्थानीय संस्थाओं में श्रमिको के प्रतिनिधित्व की मांग, स्वराज दल की नीतियों संयुक्त प्रान्त की परिषद में जोरदार तारीकों से प्रस्तुत किया।[4]

पर्वतीय क्षेत्र में नायक जाति में वेश्यावृत्ति प्राचीन काल से प्रचलित थी, इस कुप्रथा को कानूनी रूप से पंत जी समाप्त कराना चाहते थे। व्यवस्थापिका परिषद में इस कुप्रथा का अन्त न होने पर कटु आलोचना करते हुये अपने महत्वपूर्ण भाषण में कहा– ''यह वास्तव में एक विचित्र बात है कि इस प्रकार की अनैतिक प्रथायें धर्म अथवा किसी चीज के नाम पर चलती रहीं और सरकार इतनी देर तक सोती रही, भारतीय सभ्य समाज में यह स्थिति बर्दाश्त नहीं की जा सकती।''[5] पंत जी ने सरकार को सुझाव दिया कि नवयुवकों को पथ विचलित मार्ग से बचाने का प्रयास करना चाहिए उन्होंने कहा कि ''नायक समुदाय की बालिकाओं को सुयोग्य वर व्यवस्था करके इस कुप्रथा का अन्त करना चाहिये ताकि एक स्वस्थ और आनन्दमय वातावरण उत्पन्न हो सके''।[6]

वैश्यावृत्ति समस्या के अतिरिक्त ''बागेश्वर काण्ड'' (सड़क या वन समस्या) एक विकराल समस्या थी। इस समस्या के सम्बन्ध में सरकार से प्रश्न पूँछकर इस समस्या के प्रति सरकार का ध्यान आकृष्ट किया। 1921 के भयंकर अग्नि कांड में अनेकों निर्दोष व्यक्तियों को दोषी मानकर सरकार ने उन्हें कारावास में बन्द कर दिया था। जब कि अभी तक इन पर किसी प्रकार का अपराध सिद्ध नहीं हो सका था।[7]

29 मार्च को परिषद में पुलिस बजट पेश किया गया, पंत जी ने यह प्रस्ताव रखा कि तीन इंस्पेक्टर जनरलों की संख्या को घटाकर 2 दो कर दी जाय, अन्त में सरकार को यह प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ा। पंत जी ने कुमायूँ में एक औद्योगिक स्कूल खोलने का प्रस्ताव रखा तथा गृह विभाग की मागों पर एक प्रतिशत की कटौती का प्रस्ताव रखकर जेलों की अव्यवस्था की निंदा की।[8]

मिस्टर माइकल केन के अध्यक्ष पद से रिटायर होने के पश्चात राय बहादुर सीतारमा अध्यक्ष मनोनीत किये गये, जिन्हें बाद में ''सर'' की उपाधि दी गयी। स्वयं सर सीताराम ने उन दिनों पंत जी के कार्य संचालन की प्रशंसा करते हुये कहा था– ''पंत जी ने स्वराज पार्टी को एक सुदृढ़ विरोधी पार्टी के रूप में स्थापित करने का सफल प्रयास किया, उन्हें परिषद के सभी पक्षों का आदर प्राप्त था। उन्हें तथ्यों और आंकड़ों को प्रस्तुत करने की कला आती थी, उनकी तर्कबुद्धि और वाक्चातुर्य उनके व्यक्तित्व को और प्रभावशाली बना देते थे।[9]

मार्च, 1926 ई. में बजट पर चर्चा के पूर्व पंत जी ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आदेशानुार स्वराज्य पार्टी की ओर से एक संक्षिप्त वक्तव्य दिया। उन्होंने सरकार की तत्कालीन नीति का जमकर विरोध किया पंत जी ने कहा– ''मेरे अनुभव ने मुझे यह बता दिया है कि सरकार जनमत की उत्तरोत्तर उपेक्षा करती जा रही है, सरकार ने जो भी वायदे किये थे या प्रस्ताव रखे थे वह उनका मनमाने ढंग से उल्लंघन कर रही है।''[10]

ब्रिट्रिश शासन का उद्योग के प्रमुख केन्द्रीय करण तीन स्थानों– बम्बई, अहमदाबाद और कानपुर थे। यह केन्द्र कच्चे माल के उत्पादन केन्द्रों से आवागमन के साधनों से तथा श्रमिकों की उपलब्धता से सुविधापूर्वक जुड़े रहे। कानपुर संयुक्त प्रान्त का एक औद्योगिक नगर था। वहाँ श्रमिकों की समस्यायें अत्यन्त जटिल थीं। पंत जी ने श्रमिकों के सामाजिक स्तर पर न्याय के प्रश्न पर सदन में वाद विवाद किया। प्रान्तीय व्यवस्थापिका परिषद में बहस में भाग लेते हुये पंत जी ने कहा– ''औद्योगिकी करण के साथ शहर तथा कस्बों में कुछ विशिष्ट समस्यायें पैदा होती हैं, कुछ अधिनियम ऐसे होते हैं जो केवल कारखाना मजदूरों पर लागू होते हैं, जो लोग कारखाना क्षेत्रों की समस्याओं को भली प्रकार परिचित हैं, वे इस समस्या को भली प्रकार समझ सकते हैं।''[11]

पंडित गोविन्द वल्लभ पंत व्यवसायिक शिक्षा को शिक्षा का अभिन्न अंग मानते थे 26 जनवरी, 1925 में विधान परिषद के महत्वपूर्ण प्रस्ताव में सरकार को यह सुझाव दिया– ''यह परिषद तकनीकी शिक्षा को सभी विद्यालयों की शिक्षा का अनिवार्य अंग मानती है। क्या सरकार यह मानने को तैयार नहीं है कि इन स्कूलों या विद्यालयों में तकनीकी शिक्षाको आवश्यक अंग होना चाहिये?''[12]

पंत जी ने विधान परिषद में मजदूरों की माँग का मामला उठाया। मजदूर सभा में एक जलपान गृह के लिये भूस्थल की मांग और पुस्तकालय के श्रमिक अनुदान की मांग कर रहे थे। पंत जी ने कहा– ''कानपुर जैसे विशाल शहर की जनसंख्या लाखों में है, जिसमें 50,000 लोग मजदूर वर्ग के लोग विविधि प्रकार से नगर पालिका के कोष में अंशदान करते हैं।''[13]

पंत जी ने कहा– ''यह निर्जीव सरकारी ढाँचा बल प्रयोग के अतिरिक्त किसी प्रकार से झुकना नहीं चाहता। उस अपेक्षित शक्ति को हम जनता के सहयेाग से प्राप्त करना चाहते हैं। इन शब्दों के साथ हम स्वराज्य पार्टी के सभी सदय परिषद का परित्याग करते हैं।[14]

नवम्बर 1929 ई. में पुनः प्रान्तीय परिषद के चुनाव हुये स्वराज्य पार्टी के उम्मीदवार के रूप में

पंत जी पुनः मैदान में आये। पंत जी को 5826 मत मिले जब कि उनके विरोधी रघुनन्दन प्रसाद जी को 743 मत प्राप्त हुये। चुनाओं का परिणाम घोषित होने पर पंत जी ने एक विज्ञप्ति प्रकाशित की जो इस प्रकार है–

''परिषद के चुनाव का नतीजा अन्तिम सप्ताह में प्रकाशित हो चुका है। आपकी कृपा और प्रेम का यह प्रभाव है कि करीब–करीब सम्पूर्ण जिले की जनता ने मुझे वोट देकर आगामी तीन साल तक पुनः इस प्रान्त की सेवा करने का अवसरदिया है। ..... मैं आपको सविनय हृदय से धन्यवाद देता हूँ और इस कृपा और अनुग्रह के लिए सदैव आपका आभारी रहूँगा।[15]

पंत जी के प्रयत्नों से प्रान्तीय कांग्रेस का 20वाँ अधिवेशन दिसम्बर महीने में काशीपुर में हुआ उनके नेतृत्व में वहाँ के कांग्रेसी नेताओं ने अपनी सक्रियता से प्रान्तीय राजनीत में अपना स्थान बना लिया था।

भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन दिसम्बर के महीने में मद्रास में हुआ। पंत जी ने इस अधिवेशन में भाग लिया। इस अधिवेशन में ही पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भारत के लिये ''पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति का लक्ष्य'' सम्बन्धी प्रस्ताव रखा जो पास हो गया।''[16] दूसरा महत्वपूर्ण प्रस्ताव साइमन कमीशन बहिष्कार के विरुद्ध था। यह एक अत्यन्त विस्तृत संकल्प था, जिसमें कमीशन के बहिष्कार और उसके विरुद्ध प्रदर्शनों की विस्तृत रूप रेखा प्रस्तुत की गयी। प्रस्ताव के चर्चा के समय कार्य समिति तथा खुले अधिवेशन में पंत जी ने भाग लेते हुये विस्तृत भाषण दिया, जब वह बोलने के लिए खड़े हुये तो अधिवेशन के महासचिव ने उनका परिचय कुछ इस प्रकार दिया– ''आप संयुक्त प्रान्तीय विधानपरिषद में स्वराज्य पार्टी के नेता तथा संयुक्त प्रान्तीय कांग्रेस में अध्यक्ष हैं। उपस्थित श्रोताओं ने तालियों के गड़गड़ाहट से पंत जी का स्वागत किया।''[17]

अन्त में सन् 1923 से 1926 तक प्रान्तीय विधान परिषद में स्वराज्य पार्टी का बोलबाला रहा और आपका नेतृत्व द्वारा, प्राथमिक और व्यवसायिक शिक्षा, अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, कुटीर उद्योग धन्धे, मद्य निषेध, भारतीयों की उपेक्षा, अकाल समस्या वेश्यावृत्ति, जंगलात् समस्या आदि आदि प्रश्नों का परिषद के समक्षवाद विवाद एवं सुझाावों के द्वारा समाधान करने का अथक प्रयास किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिमांशु जोशी – भारत रत्न पंडित गोविन्द वल्लभ पंत – पृष्ठ संख्या– 69।
2. हिमांशु जोशी – भारत रत्न पंडित गोविन्द वल्लभ पंत – पृष्ठ संख्या– 72।
3. पंडित गोविन्द वल्लभ पंत – दीक्षित चन्द्रोदय – सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग प्रतिमा प्रेस उत्तर प्रदेश लखनऊ 1987– पृष्ठ संख्या– 7।
4. उत्तर प्रदेश व्यवस्थापिका सभा में पंत जी का भाषण 11 जनवरी, 1924 ई.।
5. उत्तर प्रदेश व्यवस्थापिका सभा में पंत जी का भा,ाण 31 अक्टूबर, 1927 ई.।
6. उत्तर प्रदेश व्यवस्थापिका सभा में पंत जी का भाषण 11 जनवरी, 1924 ई.।
7. शाह शम्भू प्रसाद – पंडित गोविन्द वल्लभ पंत – एक जीवनी – राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली–1972 पृष्ठ संख्या–100।
8. उत्तर प्रदेश व्यवस्थापिका सभा में पंत जी का भाषण एक अंश 29 मार्च, 1923 ई.।
9. ले. श्याम सुन्दर सावित्री श्याम – पोलिटिकल लाइफ आफ गोविन्द वल्लभ पंत, पृष्ठ संख्या77–78।
10. उत्तर प्रदेश व्यवस्थापिका सभा में पंत जी का भाषण एक अंश मार्च, 1926।
11. उत्तर प्रदेश व्यवस्थापिका सभा में पंत जी का भाषण एक अंश 26 जनवरी, 1925 ई.।
12. – तदैव –
13. पंडित गोविन्द वल्लभ पंत – दीक्षित चन्द्रोदय – सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, प्रतिमा प्रेस, उत्तर प्रदेश, लखनऊ पृष्ठ संख्या– 7।
14. ''शक्ति'' सप्ताहिक, 10 दिसम्बर, 1926, अंक – 13 पृष्ठ संख्या–1।
15. ले. श्याम सुन्दर सावित्री श्याम – पोलिटिकल लाइफ आफ गोविन्द वल्लभ पंत, पृष्ठ संख्या–150–151।
16. पंडित गोविन्द वल्लभपन्त – दीक्षित चन्द्रोदय – सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, प्रतिमा प्रेस, उ.प्र. लखनऊ, 1987ए पृष्ठ संख्या–8। ◈◈

ISSN : 2349-9273

Received: 30 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

समकालीन हिन्दी कवयित्रियों की कविता : व्यष्टि–समष्टि की यात्रा

– प्रो. (डॉ.) दीपिका कटियार
प्रोफेसर–हिन्दी विभाग,
रामसहाय राजकीय महाविद्यालय,
शिवराजपुर, कानपुर–
(उत्तर प्रदेश)

ई–मेलः
katiyardipika@gmail.com

सारांश

वृद्धजनों के हाथों से छिनता अधिकार, उपेक्षा, प्रताड़ना और अपमान का शिकार होती पिछली पीढ़ी, बलात सत्ता हस्तान्तरण करती नई पीढ़ी के प्रति आक्रोश व्यक्त करती सुबोध चतुर्वेदी की कविता 'सत्ता परिवर्तन', 'कुछ भी पता नहीं चलता/सत्ता कैसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में/हो जाती है। इस प्रकार व्यष्टि की लघु परिधि से प्रारम्भ हुई अधिकांश समकालीन कवयित्रियों की कविता–यात्रा समष्टि की विस्तृत परिधि तक जा पहुंची है, जहां निजी सुख–दुख ही नहीं, समाज और राष्ट्र के उन विद्रूप चित्रों को भी उकेरा गया है, जिनमें सुव्यवस्था, सुशासन और मानवीय संवेदना के रंग–बिरंगे चटख रंग भरने की पुरजोर कोशिश और तड़प है। इयत्ता बोध, प्रेम, मानवीय सम्बन्ध, प्राकृतिक सौन्दर्य, जीवन के प्रति आस्था ईमानदारी से अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति करती हुई क्रमशः व्यष्टि से समष्टि की ओर चली यात्रा है, जिसमें अपने साथ जगत के सुखे–दुख संजोए हैं।

प्रत्येक युग अपने युग में समकालीन रहता है, क्योंकि हर युग में नई–नई समस्याओं का जन्म होता रहा है। आज सामाजिक सम्बन्धों और मूल्यों में तीव्र परिवर्तन आया है। समकालीन ''कठिन समय में जब समय से स्थान, देह से मन, समष्टि से व्यष्टि विच्छिन्न हो चला है, उनकी आपसी पकड़ छूट गयी है और 'आकाश की धरती से बन्द है बातचीत' कविता चाहती है संवाद–आत्मा का आत्मा से, प्रिय का प्रिय से, कटु का मधु से, कल्पना का यथार्थ से, शिल्प का कथ्य से, इन्द्रियों का इन्द्रियों से, सुख का दुख से, रूप का अरूप से, भाव का रस से, अतीत का वर्तमान से, परम्परा का प्रयोग से, मनुष्य का मनुष्य से।''[1]

समकालीन कविता में सबसे संवाद की आकांक्षा है। यद्यपि समकालीन कवयित्रियों पर वैयक्तिक अनुभूतियों तक केन्द्रित रहने का आरोप लगता है किन्तु यह अब किंचित सत्य ही है। अब इनकी स्व–परिधि का विस्तार हुआ है, समाज और राष्ट्र के दुःख भी इन्हें व्यापते हैं। ''हिन्दी कविता के समकालीन परिदृश्य में अनामिका, गगन गिल, तेजी ग्रोवर, कात्यायनी, निर्मला गर्ग आदि की कविताएं नारी जीवन की विविध नई संवेदनाओं से जुड़ी हैं।'' स्नेहमयी चौधरी, कीर्ति चौधरी, प्रेमलता वर्मा, शकुन्त माथुर, सुमन राजे, क्षमा कौल, सविता सिंह, अनीता वर्मा, मधु शर्मा ने नारी जीवन के साथ ही विविध संवेदनाओं से जुड़ी कविताएं लिखी हैं। समकालीन कवयित्रियां अपनी अस्मिता और स्वतन्त्रता को लेकर सजग है। वस्तुतः ''स्वतंत्रता और अस्मिता की जरूरत को यदि मुख्य माना जाएगा तो

स्वतंत्रता की पहली अनिवार्यता होगी आत्म–सम्पन्नता और दायित्व बोध, स्वतन्त्रता जीवन में मिले या पन्नों पर उसका एहसास जगाया जाए..... इसका एक यही अर्थ निकलता है, आत्म सम्पन्न व्यक्ति अपना अधिकार स्वयं कमा लेता है और दायित्व के प्रति सजग है।[3] ''विचारशील प्राणी किसी प्रकार की दासता को सहन नहीं कर सकते, चाहे वह विचारों की हो या परम्परा की।''

दूसरे काव्य सप्तक की कवयित्री शकुन्त माथुर स्वयं ही अपनी कविताओं को अपने पति गिरजा कुमार माथुर की अपेक्षा कमतर आंकती है और अपने रचना संसार को सीमित मानती हैं– ''जब भी मैं कविता लिखती, इनकी कोई न कोई रचना सामने आकर खड़ी हो जाती है और मेरी कविता शर्मिन्दा हो जाती।''[4] निजी जीवन से लेकर सार्वजनिक जीवन के चित्र इनकी कविताओं में मिलते हैं। सम्पन्न और विपन्न वर्ग के सुख–दुख तक इनकी दृष्टि फैली है– ''गर्मी की दोपहरी में/.... एक ग्रामीण धरे कन्धे पर लाठी/सुख–दुख की मोटी सी गठरी/लिये पीठ पर..... बड़े घरों के श्वान पालतू/बाथरूम में पानी की हल्की ठण्डक में/नैन मूंद कर लेट गये थे।''[5] सम्पन्न वर्ग की निर्धन के प्रति हेय दृष्टि क्षोभ उपजाती है– ''रेल के डिब्बे में/छोटे में छोटा/बड़े में बड़ा है। मानवों में भेद/.... छोटे से कहता/गेट डाउन डैम''[6] 'चांदनी चूनर' तथा अभी और कुछ'' उनके चर्चित काव्य संग्रह हैं, पर अनुभव संसार सीमित बन पड़ा है।

कीर्ति चौधरी साहित्यिक परिवेश में पली–बढ़ी कवयित्री हैं'' तीसरा सप्तक' उनकी काव्य यात्रा का प्रस्थान बिन्दु है, जो लघु–वय की रोमांटिक कविताओं से अधिक सम्बन्धित है। कथन भंगिमा में सपाट बयानी है, तथापि प्रकृति उन्हें बेहद आकर्षित करती है। तीसरे सप्तक में 'बदली का दिन' 'बरसते हैं मेघ झर–झर', 'एक सांझ', 'कम्पनी बाग', 'कुहू', 'पंख फैलाये' कविताएं इसका प्रमाण है। निजी सुख–दुख भी प्रकृति के उपमानों के माध्यम से व्यक्त किये हैं– यह कैसा वक्त है/कि किसी को कड़ी बात कहो/तो भी वह बुरा नहीं मानता..... खूब खिले हुए फूल को देखकर/अचानक खुश हो जाना/.... सब भूल गये/ यह कैसी लाचारी है/कि हमने अपनी सहजता ही/एकदम बिसारी है। 'खुले आसमान के नीचे' कविता संग्रह में तीसरा सप्तक की भी कविताएं संकलित हैं।

वादों के घेरे में न बंधकर प्रखरता से अपनी बात बेवाकी से कहने के लिये प्रतिबद्ध दिखती रमा सिंह 'स्त्री' होने की सहानुभूति और सुविधाओं की आकांक्षी नहीं रहीं। 'समुद्रफेन' कविता संग्रह में व्यंग्य के चुटीलेपन के साथ भावाभिव्यक्ति है। पैनी दृष्टि की परिधि में छोटी–छोटी बातें भी विस्तार पाई हैं।

'चौथा तार सप्तक' की चर्चित कवयित्री डा. सुमन राजे कविता रचना की आकुलता को रेखांकित करती लिखती हैं– ''जो जीवन हमें जीने के लिये मिला है, उसकी अनिवार्य नियति है– निरन्तर चुभती हुई जूते की कील। हर कदम उस जूते को और जर्जर करता है और जख्म को गहराता जाता है, लेकिन चलना ही तो हमारा अस्तित्व है। पैरों और पैरों में कोई भेद नहीं होता इसीलिये सबके जख्म भी एक जैसे होते हैं। उन जख्मों के आस–पास पकती और फूटती रहती है कविता।[8] डा. सुमन राजे की यह कविता यात्रा जीवन–जगत के अनगिनत पड़ावों को पैनी दृष्टि से निहारती हुई संवेदना के तारों को हस्तगत किये हुए सम्पन्न हुई है, और सफलता पूर्वक यश–शिकार तक पहुंची है। 'चौथा तार सप्तक' के अतिरिक्त 'सपना और लाशघर', में कोमल अनुभूतियां सशक्त रूप से व्यक्त हुई हैं। ''अक्सर मैं एक सपना देखती हूँ/.... मेरी बीमार चेतना/..... एक कोठरी में बंद है एक बेकफन लाश/.... कुछ लाशें हैं मेरी कुआंरी साधनाओं की/....[9] 'उगे हुए हाथों के जंगल' में महानगरीय जीवन के श्वेत–स्याह पक्ष उद्घाटित हुए हैं। 'यात्रा दंश' में जीवन यात्रा के तिक्त अनुभव है। संस्कृति की विरूपता से आक्रोशित है– ''अब आजाद हैं सारे पुरूष/जुलूसों में करने के लिये भड़ैती/और आजाद हैं सारी औरतें/सड़कों पर करने के लिये नकटौरे।''[10]

'एरका' महाभारतकालीन पात्रों चारवाक् शिखंडी, बर्बरीक बाल खिल्यादि पर केन्द्रित महाकाव्यात्मक प्रभाव वाली रचना है जिसमें गहरी करुणा है। युद्ध की विभीषिका के प्रति गहरी व्यथा है– ''औरतें चीखती रही/घसीटी जाती रहीं/चिथड़ों में लिथड़ती/पुकारती हुई उन नामों को/जो कभी थे/तुम्हारे।''[11] 'इक्कीसवीं सदी का गीत' अभावग्रस्त बच्चों का गीत है, जिनका बचपन कहीं खो गया है, ''मैने देखा/पहुंच गया हूँ मैं इक्कीसवीं सदी में/... मैंने देखा/चूल्हा–जल रहा है/खाना पक रहा है/... मैंने नई स्कूल ड्रेस/पहन रखी हैं।[12] सुमन राजे का अन्तिम कविता

संकलन 'युद्ध' है। जिसमें अव्यवस्था के प्रति विद्रोह है, और आवाज उठाने की प्रतीक बनी चिड़िया स्वयं कवयित्री ही है।

गगन गिल लगभग तीन दशकों से हिन्दी कविता में चर्चित नाम है। गगन गिल की कविताओं ने आधुनिक हिन्दी कविता को अभिव्यक्ति का नया तेवर दिया है। 'एक दिन लौटेगी लड़की', 'अंधेरे में बुद्ध', 'यह आकांक्षा समय नहीं' और 'थपक–थपक दिल थपक–थपक' में केन्द्रीय सरोकार मानवीय स्थिति का दुख रहा है। गगन गिल प्रेम को ससम्मान कविता में वापस लाने के लिये भी जानी जाती है। कहीं–कहीं पर इन प्रेम–सम्बन्धों में हल्कापन भी दृष्टिगत होता है, पर ऐसा सर्वत्र नहीं है। 'आधे रास्ते तुम चलते हो' कविता में सहयात्री के प्रति उनकी प्रतिक्रिया कुछ इस प्रकार है– ''आधे रास्ते तुम चलते हो/उसके संग/फिर लौटा ले जाता है/ईश्वर बेचैन/.... आधी काया रहती है/चिमटी संग तुम्हारे/लौट आता है आधा शव/घर अपने।'' 'जोगी जी ये जियड़ा' कविताः अतृप्त इच्छा की छटपटाहट व्यक्त करने के साथ, इच्छापूर्ति की संभावना के प्रति आशान्वित है, यह सकारात्मकता जीने की तमन्ना बनाये हुए है– ''जोगी जी/ये जियड़ा हर पल भटके/ये जियड़ा ले/वन–न डोली/ले गयी बीच पहाड़/... बीत बात/आस नहीं बीती।...[14]

''वर्तिका नंदा कवयित्री के साथ मीडिया यात्री भी हैं। अनेक विचारोत्तेजक विषयों पर लिखी गयी उनकी टिप्पणियों ने नये मुद्दे उठायें हैं।'' विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष कर विजयी होती लड़कियां और उन लड़कियों को संघर्षपूर्ण स्थितियों में ठेलने वालों के प्रति गहरा आक्रोश उनके मन में व्याप्त है, जो कविता में मुखरित हुआ है– ''ये लड़किया बढ़ी आगे चली जाती हैं/.... ये खिलती ही तब हैं/जब जमाना इन्हें कूड़ेदान के पास फेंक आता है।''[15] स्त्री के दुखों की आन्तरिक एकता को उद्घाटित करती उनकी 'बहूरानी' कविता वस्तुतः व्यष्टि से समष्टि की ओर प्रस्थान करती है– ''बड़े घर की बहू को कार से उतरते देखा/और फिर देखी अपनी/पांव की बिवाइयां/फटी जुराब से ढकी हुई/एक बात तो मिलती थी फिर भी उन दोनों में/दोनों की आँखों के पोर गीले थे।''[16]

निर्मला गर्ग लगभग तीन दशकों से कविता क्षेत्र में चर्चित हैं उनके कविता संग्रह 'यह हरा बगीचा', 'कबाड़ी का तराजू' स्त्री जीवन के विविध रूपों को आकार देते हैं। मनःस्थिति बदलने पर वातावरण भी बदला हुआ लगता है। 'उदास दिन' कविता इसी मनोवैज्ञानिक सत्य से अवगत कराती है– ''उदास दिन हमसे क्या मांगते हैं कुछ पता नहीं चलता ।..... परिचितों से मिलने की इच्छा अक्सर नहीं होती।''[17] जबकि प्रसन्नचित्त होने पर 'सुबह' कविता उल्लास प्रकट करती है– 'कल सुबह साफ थी और ताजा/होती है जैसे नींबू की फाँक/''[18]

सुनीता जैन के कई काव्य संग्रह प्रकाशित हुए 'हो जाने दो मुक्त', 'कौन सा आकाश', 'एक और दिन', 'रंगरति', 'कितना जल', 'कहाँ मिलेगी कविता', 'सुनो मधुकिश्वर', 'कातर बेला', 'इस अकेले तार पर', 'सूत्रधार सोते हैं', 'सच कहती हूँ', 'लेकिन अब', 'मूंक करोति वाचालं', 'सीधी कलम सधे न', इन्होंने अपने को कविता आन्दोलन से दूर रखा है, किन्तु 'सुनीता जैन की कविताओं में आधुनिक बोध है, पर आधुनिकता को ढोने की प्रवृत्ति नहीं है।''[19] अकेलापन, रिक्तता बोध, माँ, बच्चों तथा अपनी अस्मिता बोध पर अधिकांश कविताएं ''मैं अब दिन को नहीं करती/दिन मुझको करता है।''[20] ''बच्चों के कुसबुसाते शरीर में/उनके टूटते मन क्या चाहते हैं। रविवार की प्रतीक्षा में पूरा सप्ताह बीत जाता है।'' पुरूष को चेतावनी देती हुई कविता– ''वही मेरा सबसे कहना है/उसे पूरे मौन में/तुम्हारे 'समूचे' होने को ही/उलांघ जाना है।''

'समकालीन कवयित्रियों में कुसुम अंसल की अपनी अलग पहचान है। दाम्पत्य जीवन, आपसी सम्बन्ध, रिश्ते नाते, प्यार–स्नेह तथा समाज से टकराव महिला लेखकों के परिचित विषय हैं।'' इनके काव्य संग्रह 'मौन के दो पल' (75) धुएं का सच, 'विरूपीकरण', 'मेरा होना', है। ''जीवन धुआं/और हुएं में जीवन/की पहेली सुलझाती हुई/पहुंच गयी हूँ उस बिंदू तक/जहां लगता है जीवन और मरण के बीच/सिर्फ चिंताएं है/ धूं–धू कर जलती हुई।''[21]

डॉ. सुदर्शन प्रियदर्शिनी की कविता जीवन में दुख के शिशिर से गायब होती हरियाली (प्रसन्नता) को रेखांकित करती है। 'हूक' कविता में गहरी वेदना है– 'रात के पिछले/पहर नही/जिन्दगी के/पिछले पहर/एक हूक/सी/उठती है..../कैसे झर/गये सारे/ तने टहनियां/ ठूठ भी न/बचा/शिशिर के बाद/ कहाँ लिपटें/तना टहनियां/ किसे लगाये/गले/और पहुंच

उस / पार / तुम से / गलबहियां डालने.... / [22]

वृद्धजनों के हाथों से छिनता अधिकार, उपेक्षा, प्रताड़ना और अपमान का शिकार होती पिछली पीढ़ी, बलात सत्ता हस्तान्तरण करती नई पीढ़ी के प्रति आक्रोश व्यक्त करती सुबोध चतुर्वेदी की कविता 'सत्ता परिवर्तन', 'कुछ भी पता नहीं चलता / सत्ता कैसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में / हो जाती है / हस्तान्तरित / सब कुछ होता है गुपचुप इतना / कहीं भी नहीं छूटता है कोई प्रमाण / न सत्ता परिवर्तन का कोई दस्तावेज / धीरे–धीरे अगली पीढ़ी संभाल लेती है सारे दायित्व / चुक रही पीढ़ी के हिस्से आता है, घर का एक कोना।''[23]

इस प्रकार व्यष्टि की लघु परिधि से प्रारम्भ हुई अधिकांश समकालीन कवयित्रियों की कविता–यात्रा समष्टि की विस्तृत परिधि तक जा पहुंची है, जहां निजी सुख–दुख ही नहीं, समाज और राष्ट्र के उन विद्रूप चित्रों को भी उकेरा गया है, जिनमें सुव्यवस्था, सुशासन और मानवीय संवेदना के रंग–बिरंगे चटख रंग भरने की पुरजोर कोशिश और तड़प है। इयत्ता बोध, प्रेम, मानवीय सम्बन्ध, प्राकृतिक सौन्दर्य, जीवन के प्रति आस्था ईमानदारी से अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति करती हुई क्रमशः व्यष्टि से समष्टि की ओर चली यात्रा है, जिसमें अपने साथ जगत के सुखे–दुख संजोए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अनामिका, कविता क्या चाहती है, वागर्थ, मार्च 1998
2. रवीन्द्र नाथ मिश्र, इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता, हिन्दी अनुशीलन पृष्ठ संख्या – 109, जून 2005।
3. राजी सेठ, स्त्री सृजन और अस्मिता बोध, हिन्दी अनुशीलन, पृष्ठ संख्या – 28–29, जून 2009।
4. शकुन्त माथुर, दूसरा सप्तक, पृष्ठ संख्या – 44।
5. शकुन्त माथुर, दूसरा सप्तक, पृष्ठ संख्या – 46–47।
6. शकुन्त माथुर, दूसरा सप्तक, पृष्ठ संख्या – 54–55।
7. कीर्ति चौधरी, तीसरा सप्तक, पृष्ठ संख्या – 70–71।
8. सुमन राजे, 'चौथा सप्तक', पृष्ठ संख्या – 185।
9. सुमन राजे, 'सपना और लाशघर' पृष्ठ संख्या – 15
10. सुमन राजे, 'यात्रा दंश', पृष्ठ संख्या – 28
11. सुमन राजे, 'एरका', पृष्ठ संख्या – 88
12. सुमन राजे, 'इक्कीसवीं सदी का गीत', पृष्ठ संख्या – 41
13. गगन गिल, विपासा पृष्ठ संख्या – 133, सितम्बर–फरवरी, 2003।
14. गगन गिल, विपासा पृष्ठ संख्या – 135, सितम्बर – फरवरी 2003।
15. वर्तिका नंदा–तद्भव, पृष्ठ संख्या – 132, जुलाई, 2009।
16. वर्तिका नंदा–तद्भव, पृष्ठ संख्या – 132, जुलाई, 2009।
17. निर्मला गर्ग, विपासा, पृष्ठ संख्या – 144, सितम्बर–फरवरी 2003।
18. निर्मला गर्ग, विपासा, पृष्ठ संख्या – 146, सितम्बर–फरवरी 2003।
19. गुरूचरण सिंह, समकालीन कविता के सरोकार, पृष्ठ संख्या – 137।
20. गुरूचरण सिंह, समकालीन कविता के सरोकार, पृष्ठ संख्या – 126।
21. कुसुम – 'धुएं का सच'।
22. सुदर्शन प्रियदर्शिनी, कथा क्रम, पृष्ठ संख्या – 83, जुलाई–सितम्बर, 2010।
23. सुबोध चतुर्वेदी, कथा क्रम, जुलाई–सितम्बर, 2010।

ISSN : 2349-9273

Received: 24 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

बौद्ध एवं जैन धर्म के मध्य अंतर्सम्बन्ध : एक तुलनात्मक अध्ययन

– डॉ. रामेन्द्र कुमार
सहायक अध्यापक –
सामाजिक विज्ञान,
राजकीय हाईस्कूल, नगलाखेड़ा,
एका फिरोजाबाद – 283152
(उत्तर प्रदेश)

ई–मेलः
rkkaithal89@gmail.com

सारांश

बौद्ध और जैन धर्म, भारतीय चिंतन की दो ऐसी धाराएँ हैं जिन्होंने मानवता, नैतिकता और आध्यात्मिकता का अप्रतिम दर्शन प्रस्तुत किया। इनके अन्तर्सम्बन्धों से यह स्पष्ट होता है कि भिन्न मार्गों से चलकर भी वे एक ही लक्ष्य 'मोक्ष' की ओर अग्रसर हैं। दोनों धर्मों ने न केवल धार्मिक जीवन को नए संदर्भ दिए, बल्कि सामाजिक संरचना, साहित्य, कला और संस्कृति को भी समृद्ध किया। आज के समय में जब मानवता संकट में है, इन धर्मों की अहिंसा, करुणा और समत्व की शिक्षा अत्यन्त प्रासंगिक है।

भूमिका–

भारतीय संस्कृति की विविधता में बौद्ध और जैन धर्म दो ऐसी धाराएँ हैं, जिनका उद्भव एक समान ऐतिहासिक संदर्भ में हुआ और जिन्होंने ब्राह्मणवादी व्यवस्था को चुनौती देते हुए समाज को एक नई वैचारिक दिशा प्रदान की। ये दोनों ही धर्म श्रमण परम्परा की उपज हैं, जिसने वैदिक यज्ञवादी, वर्णवादी परम्परा के विरोध में आचार, ध्यान, तप और अहिंसा को सर्वोच्च मूल्य के रूप में प्रस्तुत किया। यद्यपि इन दोनों धर्मों के संस्थापक पृथक थे और उनके दार्शनिक दृष्टिकोणों में भिन्नता है, फिर भी उनके बीच कई गहरे अन्तर्सम्बन्ध दृष्टिगोचर होते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि–

छठी शताब्दी ईसा पूर्व को भारत का दार्शनिक जागरण काल माना जाता है। इस काल में सामाजिक असमानता, कर्मकाण्ड, और यज्ञप्रधान ब्राह्मणवाद के विरुद्ध जन असंतोष व्याप्त था। इसी काल में गौतम बुद्ध (563–483 ई.पू.) तथा महावीर स्वामी (599–527 ई.पू.) ने अपने–अपने पथ पर चलकर समाज को मोक्ष के मार्ग की वैकल्पिक व्याख्या दी। इन दोनों धर्मों की उत्पत्ति विषयक ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो जैन धर्म बौद्ध धर्म की अपेक्षा अधिक प्राचीन है, क्योंकि जैन धर्म के संस्थापक तीर्थंकर महावीर के पूर्व भी जैन परम्परा में 23 तीर्थंकर हुए हैं। जिनमें ऋषभदेव, नेमीनाथ, पार्श्वनाथ आदि तीर्थंकरों के पुष्ट प्रमाण भी मिलते हैं। बौद्ध धर्म सौत्रांतिक, वैभाषिक, माध्यमिक एवं योगाचार सम्प्रदायों में विभक्त होकर विकसित हुआ है। किन्तु बौद्ध दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों में तत्वमीमांसीय भेद जैन दर्शन के सम्प्रदायों में दिखाई नहीं देता है। जैन दर्शन के दोनों सम्प्रदाय वस्तु को द्रव पर्यात्मक स्वीकार करते हैं तथा उसका बाह्य आस्तित्व मानते हैं। जब कि बौद्ध दर्शन के विज्ञानवाद मत में वस्तु का बाह्य अस्तित्व ही मान्य नहीं है, वह विज्ञान को सत्य स्वीकार करता है। बौद्ध धर्म के सौत्रांतिक एवं वैभाषिकमत में बाह्य वस्तु का आस्तित्व तो स्वीकृत है, किन्तु वे

उसे क्षणिक मानते हैं। माध्यमिक मत में वस्तु प्रतीत्य समुत्पन्न होने से निः स्वभाव है। तथा सत्, असत् ,सदसत् एवं न सत् न असत् इन चारों कोटियों से विनिर्मुक्त है।

दार्शनिक अन्तर्सम्बन्ध–

(क) आत्मा एवं मोक्ष– बौद्ध धर्म में आत्मा का अस्तित्व नकारा गया है। इसे अनात्मवाद कहा जाता है। मोक्ष का तात्पर्य है निवाण। अर्थात इच्छाओं और क्लेशों की समाप्ति। जैन धर्म में आत्मा शाश्वत, स्वतंत्र एवं सर्वज्ञानी मानी जाती है। मोक्ष का अर्थ है आत्मा की शुद्ध अवस्था में स्थापना, जहाँ वह कर्म बंधन से मुक्त हो जाती है।

(ख) कर्म सिद्धान्त– बौद्ध दर्शन में कर्म एक मानसिक और नैतिक प्रक्रिया है, जो पुनर्जन्म को प्रभावित करती है। बौद्ध मत में ''चित्त'', ''वचन'' और ''काय''। तीनों के कर्म महत्व रखते हैं। जैन मत में कर्म सूक्ष्म भौतिक कण होते हैं, जो आत्मा पर चिपकते हैं। तप और संयम से इनका क्षय संभव है।

(ग) मध्यमार्ग एवं अति संयम– बुद्ध ने अति तप और इंद्रिय भोग। दोनों से बचने हेतु मध्यमार्ग का प्रतिपादन किया। जैन धर्म में कठोर तप, दीर्घ उपवास, और अहिंसा के चरम पालन की परम्परा है, जिसे महाव्रतों के पालन से समझा जा सकता है।

नैतिक शिक्षा एवं समाज सुधार–

दोनों धर्मों ने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे नैतिक सिद्धान्तों को जीवन का मूल आधार बनाया। जातिप्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई और स्त्रियों को आध्यात्मिक उन्नति का अधिकार दिया (यद्यपि कुछ सीमाएँ थीं)। भिक्षु जीवन, त्याग, और साधना। दोनों में ही जीवन का लक्ष्य माना गया।

भाषायी व साहित्यिक समानताएँ–

बौद्ध धर्म ने पाली भाषा को अपनाया, जो उस समय की जनभाषा थी। इसका उद्देश्य था कि धर्म का प्रचार जनसामान्य तक पहुँचे। जैन धर्म ने अर्धमागधी व प्राकृत भाषाओं में अपना साहित्य विकसित किया। दोनों ने संस्कृत की कठिनता से हटकर लोकभाषा को चुना और धर्म के लोकतंत्रीकरण की दिशा में योगदान दिया।

सांस्कृतिक और कलात्मक योगदान–

बौद्ध धर्म ने स्तूप, चौत्य, विहार जैसी वास्तुकला का विकास किया, जबकि जैन धर्म ने गुहा मंदिर, शिखरयुक्त मंदिर और मूर्तिकला को नया आयाम दिया। अजन्ता, एलोरा, नालन्दा और श्रवणबेलगोला। दोनों धर्मों के मिले–जुले प्रभाव के प्रमाण हैं। दोनों धर्मों ने तीर्थ यात्रा की परम्परा, संघ व्यवस्था, और सांस्कृतिक समरसता को प्रोत्साहित किया।

भौगोलिक प्रसार एवं प्रभाव–

बौद्ध धर्म ने भारत से बाहर श्रीलंका, चीन, जापान, तिब्बत, मंगोलिया आदि देशों में विस्तार पाया। इसका महायान एवं हीनयान दो प्रमुख सम्प्रदायों में विभाजन हुआ। जैन धर्म मुख्यतः भारत तक सीमित रहा, परन्तु गुजरात, राजस्थान, कर्नाटक आदि क्षेत्रों में इसका गहरा प्रभाव रहा।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन –

महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी के उपदेशों पर ही दोनों धर्म आश्रित हैं, हालांकि दोनों महात्माओं ने कोई भी पुस्तक नहीं लिखी है। लेकिन उनके मौखिक उपदेशों का संग्रह उनके अनुयायियों ने किया है। बुद्ध के उपदेशों का संग्रह त्रिपिटक में है, जिन्हें बौद्ध धर्म का मूल एवं प्रमाणिक आधार कहा जाता है, जैन दर्शन का मूल और प्रमाणिक आधार आगम ग्रन्थ है। आगामों में तत्वार्मधिगम सूत्र जैनों का प्रमुख ग्रंथ है। जिसका आदर जैनों के दोनों सम्प्रदायों श्वेताम्बर और दिगम्बर पूर्ण रूप से करते हैं।

पूर्व में जैन धर्म और बौद्ध धर्म पर कई अध्ययन हुए हैं जो निम्नलिखित हैं –

अंतर्विरोध और भिन्नताएँ–

विषय	बौद्ध धर्म	जैन धर्म
आत्मा	अनात्मवाद	आत्मवाद
तप की प्रकृति	मध्यमार्ग	कठोर तप
मोक्ष का स्वरूप	निर्वाण – दुःख की निवृत्ति	आत्मा की शुद्धि अहिंसा महत्वपूर्ण, पर व्यवहारिक, चरम सीमा तक पालन
संघ व्यवस्था	संगठित, अनुशासित	विविध सम्प्रदाय, कम केन्द्रीकरण

श्री देवेन्द्र मुनिशास्त्री ने सन् 1981 में जैन बौद्ध और वैदिक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जो डॉ. सागरमल जैन द्वारा संपादित जैन साहित्य के विविध आयाम पुस्तक में छपा। शोध कर्ता के अनुसार जैन व बौद्ध परम्पराओं से अनेक प्रतिभा सम्पन्न ज्योतिर्धर आचार्य हुए जिन्होंने आगम साहित्य के एक एक विषय को लेकर विपुल साहित्य का सृजन किया। दोनों परम्पराओं का तुलनात्मक अध्ययन करने पर पाया कि दोनों ही परम्पराओं में विषय शब्दों, उक्तियों कथानकों की दृष्टि से अत्यधिक साम्य है। जहाँ तक आगम और त्रिपिटक साहित्य का प्रश्न है वहाँ तक दोनों ही परम्पराएँ जन साधारण की भाषा पाली और प्राकृत को अपनाती हैं। दोनों महात्माओं का मंतव्य है कि वेद की रचना का समय अज्ञात है। इसके विपरीत बौद्ध त्रिपिटक और जैन गणपिटक पौरुषेय हैं। ये निरंकार निरंजन ईश्वर द्वारा प्रणीत नहीं हैं, ओर इनकी रचना के समय का भी स्पष्ट ज्ञान है ।

रामशरण शर्मा ने यह विचार प्रतिपादित किया कि लोहे के हथियारों के प्रयोग से सैन्य सामग्री में क्रांति आ गई, जिस कारण से पुरोहितों की तुलना में योद्धाओं का महत्व बढ़ गया। अनेक ग्रन्थों में ब्राह्मण तथा क्षत्रियों के हितों के मध्य संघर्ष स्पष्ट है बुद्ध तथा महावीर की क्षत्रियोत्पत्ति की यह आंशिक रूप से व्याख्या करता है कि प्राचीन बौद्ध ग्रन्थ क्षत्रियों को पहला स्थान तथा ब्राह्मणों को दूसरा क्यों प्रदान करते हैं। करो के नियमित भुगतान द्वारा ही क्षत्रिय राजा सम्पोषित हो सकते हैं, बौद्ध कालीन अनेक ग्रन्थ इसी आधार पर कृषकों के उत्पाद में राज्य अंश को उचितठहराते हैं, की राजा लोगों को संरक्षण प्रदान करता है।

इसी क्रम में प्रो. जे. सी. पाण्डे ने बौद्ध धर्म के उद्‌भव सम्बन्धी विचार में कहा है कि ''कई पुराने लेखकों द्वारा यह विचार दिया गया है कि बौद्ध धर्म और जैन धर्म की उत्पत्ति ब्राह्मणों के धर्म के भीतर गैर कर्मकाण्डीय प्रवृत्ति के कारण हुई तथापि हमने यह प्रदर्शित करने की कोशिश की है कि वैदिक दायरे में कर्मकाण्ड विरोधी प्रवृत्ति अपने आप में भिक्खुवाद के कारण है, जिसमें से बौद्ध धर्म भी निकलता है यद्यपि यह वैदिक विचारों से काफी प्रभावित है। वेदवाद के विरोध एवं सुधार के रूप में बौद्धवाद की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्रचलित विचार बाद के वैदिक इतिहास कि भ्रामक समझ पर आधारित है जो ऐतिहासिक सुसंगता, इतिहास ज्ञान की अज्ञानता और वेदों से पूर्व किसी सभ्यता के नकारने के परिणाम स्वरूप प्रचलन में है।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत शोध पत्र वर्णनात्मक, तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इस शोध कार्य हेतु द्वितीयक स्त्रोतों का उपयोग किया गया है। इसके लिए मुख्यतः इंटरनेट से प्राप्त सामग्रियों, प्रकाशित ग्रन्थ, पत्र पत्रिकाओं में छपे विवरण, निबंध एवं लेख तथा विभिन्न शोध ग्रंथों को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

निष्कर्ष–

बौद्ध और जैन धर्म, भारतीय चिंतन की दो ऐसी धाराएँ हैं जिन्होंने मानवता, नैतिकता और आध्यात्मिकता का अप्रतिम दर्शन प्रस्तुत किया। इनके अन्तर्सम्बन्धों से यह स्पष्ट होता है कि भिन्न मार्गों से चलकर भी वे एक ही लक्ष्य 'मोक्ष' की ओर अग्रसर हैं। दोनों धर्मों ने न केवल धार्मिक जीवन को नए संदर्भ दिए, बल्कि सामाजिक संरचना, साहित्य, कला और संस्कृति को भी समृद्ध किया। आज के समय में जब मानवता संकट में है, इन धर्मों की अहिंसा, करुणा और समत्व की शिक्षा अत्यन्त प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राहुल सांकृत्यायन – बौद्ध दर्शन की रूपरेखा।
2. हेमचन्द्राचार्य – जैन तत्त्वज्ञान।
3. हजारीप्रसाद द्विवेदी – भारतीय संस्कृति के चार अध्याय।
4. देवनन्दन शर्मा – भारतीय दर्शन का इतिहास।
5. डॉ. सत्यव्रत शास्त्री – भारतीय धर्मदर्शन।
6. आदिपुराण ।
7. दीर्घनिकाय ।
8. शर्मा, आर. एस. – पर्सपेक्टिव इन सोशियल एण्ड इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ अर्ली इण्डिया।
9. पाण्डेय जे. सी. – स्टडीज इन द ओरिजन ऑफ बुद्धिज्म।

ISSN : 2349-9273

Received: 28 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

डॉ. सुमन राजे कृत आत्मकथा 'आत्मकथाओं से बाहर' के आधार पर तुलसी के काव्य के आत्म कथात्मक स्थलःएक अध्ययन

– डॉ. आरती दुबे
असिस्टेन्ट प्रोफेसर –
हिन्दी विभाग,
लक्ष्मी यदुनन्दन महाविद्यालय,
(एल. वाई. डी. सी.) कायमगंज,
फर्रुखाबाद–209502 (उत्तर प्रदेश)

ई–मेलः
drartidubey412@gmail.com

सारांश

गोस्वामी तुलसीदास को कवियों का सिरमौर माना जाता है क्योंकि वह व्यक्ति में विराट के दर्शन करते हैं। उनमें दया, स्नेह, आस्था, सहानुभूति और भावुकता जैसी भावनाएं सहज रूप से विद्यमान हैं, वह मानवता के पक्षधर और मानवीय मूल्यों के समर्थक थे। 'उनकी भक्ति में एकान्तिक साधना नहीं बल्कि उसमें अन्तः संघर्ष के साथ लोक–संघर्ष छिपा हुआ है।

श्रेष्ठ आत्मकथा की कसौटी क्या है? उस कसौटी पर वह तुलसी की आत्मकथा को परखती है। ''श्रेष्ठ आत्मकथा की एक शर्त यह है, कि उसमें लेखक का युग प्रतिबिम्बित होता है, जिसके द्वन्द्वात्मक संघात से आत्मकथाकार का जीवन विकसित होता रहा है। पारस्परिक तनाव का बिन्दु जितना गतिशील और संतुलित होगा, आत्मकथा उतनी ही फैलती है। जिस प्रकार किसी चित्र की सम्पूर्णता उसके परिदृश्य से निर्मित होती है, लेकिन परिदृश्य, होता चित्र का अंग ही है समूचा चित्र नहीं, यही बात आत्मकथा के लिए भी कही जा सकती है।

गोस्वामी तुलसीदास को कवियों का सिरमौर माना जाता है क्योंकि वह व्यक्ति में विराट के दर्शन करते हैं। उनमें दया, स्नेह, आस्था, सहानुभूति और भावुकता जैसी भावनाएं सहज रूप से विद्यमान हैं, वह मानवता के पक्षधर और मानवीय मूल्यों के समर्थक थे। 'उनकी भक्ति में एकान्तिक साधना नहीं बल्कि उसमें अन्तः सघर्ष के साथ लोक–संघर्ष छिपा हुआ है।'[1] तुलसीदास के जीवन के इन्ही अन्तः–बाह्य संघर्षों को उनके साहित्य में तलाशने की उत्कट अभिलाषा डॉ. सुमन राजे की आलोचनात्मक पुस्तक 'आत्मकथा : आत्मकथाओं से बाहर' में दृष्टिगत होती है– 'मैं यदि कहूँ कि मैंने तुलसी के स्वर में उनकी आत्मकथा सुनी है, तो क्या आप विश्वास करेंगे? आप भी पढ़िए, आप भी सुनेंगे।''[2] डॉ. राजे मानती है कि ''तुलसी ने सचेतन आत्म–कथा नहीं लिखी। इसका अर्थ यह नहीं कि वे आत्मकथाओं से परिचित नहीं थे। बनारसीदास जैन की 'आत्मकथा' हिन्दी की पहली आत्मकथा मानी जाती है। वे तुलसी के समकालीन ही नहीं परस्पर परिचित भी थे। उन्होंने बनारसीदास जी को 'रामचरित मानस' की प्रति भेंट भी की थी और बनारसीदास ने उन्हें पार्श्वनाथ की स्तुति दी थी।''[3]

वस्तुतः आत्मकथा का सत्य अन्ततः कलात्मक सत्य होता है। तुलसी के पास अपनी बाल्यावस्था के सम्बध में कहने के लिए तथ्यों जैसा बहुत कुछ नहीं था, न उनके पास अपना कोई नाम था, जो उनके माता–पिता द्वारा

दिया गया है, न माता–पिता का नाम था और जाति तथा जन्म–स्थान के विषय में भी अनाथ बच्चा कैसे बता सकता है ? जहाँ से उनकी स्मृति जागती है उसमें एक ऐसा अनाथ बच्चा है जो रोता हुआ भूख से बिलबिलाता हुआ द्वार–द्वार रोटी का टुकड़ा मांगता है..... यदि यह कथा है तो दुनिया की सबसे दुखभरी कथा है। इसमें मोड़ तब आया जब कुत्ते के कौर को ललचाकर देखने वाला यह बच्चा साधुओं के हाथ में पड़ गया। वह जगह शायद 'सूकर क्षेत्र' के आस–पास ही रही होगी क्योंकि यहीं उन्होंने अति अचेत अवस्था मे अपने गुरू से रामकथा सुनी थी और बार–बार सुनते रहे थे।"[4]

तुलसी के जन्म स्थान, समय की पड़ताल विद्वानों के मत और स्वयं तुलसी साहित्य के आधार पर वह निर्धारित करती है और सन्देह निवारण करती है। जन्म स्थान 'सोरों' या 'राजापुर', इस सम्बन्ध में तुलसी की पंक्तियाँ कुछ प्रकाश डालती है–

दियो सुकुल जनम सरीर सुन्दर हेतु
जो फल चारि को।
जो पाइ पंडित परमपद पावत पुरारि
मुरारि को।।
यह भरत खंड समीप सुरसरि थल भलो
संगति भली।
तेरी कुमति कायर कलप बल्ली चहति
विषफल फली।।
– (विनय पत्रिका)

इन पंक्तियों से तुलसी का जन्म गंगा के किनारे स्थित स्थान पर होने का संकेत है। सोरों के निकट गंगा और राजापुर के निकट यमुना बहती है। इस प्रकार तुलसी का जन्म स्थान 'सोरों' सिद्ध होता है। यूँ तो संतों की कोई जाति नहीं होती है तुलसी जाति से ऊपर थे तथापि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल उन्हें ब्राह्मण मानते हैं। इस तथ्य को डॉ. सुमन उद्घृत करती हैं। तुलसीदास जी ब्राह्मण थे इसमें तो किसी को कोई संदेह नहीं, 'विनय पत्रिका' में उन्होंने स्वयं लिखा है। (दियो सुकुल जन्म) अनुमानों के आधार पर इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी बताया जाता है। इस सम्बन्ध में एक उक्ति प्रसिद्ध है–

सुरतिय, नरतिय नागतिय, यह चाहत सब कोय।
गोद लिए हुसली फिरै, तुलसी सो सुत होय।।

माता–पिता द्वारा तुलसी का त्याग क्यों? इस पर भी वह विद्वतजनों का अभिमत रखती हुई बात को आगे बढ़ाती हैं, आचार्य शुक्ल का कथन है कि 'इन उद्घृत पदों से झलकता है माता–पिता ने इन्हें छोड़ दिया था।' डॉ. ग्रियर्सन, पं. सुधार द्विवेदी के आधार पर मानते हैं कि अभुक्त मूल में जन्म होने के कारण इनके माता–पिता ने इन्हें त्याग दिया था। तुलसी की कविता इस सम्बन्ध में कितनी मुखर है, डॉ. राजे उन अंशों को उद्घृत करती हुई बात को पूरे प्रमाण के साथ रखती हैं–

"जननी जनक तज्यौ जनमि"[5]

"तनु जन्यो कुटिल कीट ज्यों, तज्यौ मातुपिता हूँ।"[6]

अपने विषय में साफ–साफ बात न करने पर भी तुलसी जितना और जो कुछ बताते हैं, वह चौंकाने वाला है... अपने बचपन का जिक्र करते हुए तुलसी हमेशा 'तन' शब्द का प्रयोग करते हैं, क्योंकि उसे पोषण, भरण नाम, परिचय देने वाली कोई सामाजिक–संस्था उन्हें मिली ही नहीं। एक अदद नाम तक नहीं। अस्सी वर्ष की अवस्था में भी तुलसी को कसकता है 'रह्यौ अनाम' उस तुलसी के भीतर और बाहर क्या था? कैसे वे दोनों पक्ष एक दूसरे से भिड़ते हुए समानान्तर विकसित हो रहे थे, यह जानने की कोशिश किसी ने नहीं की।"[7]

तुलसी की जाति को लेकर उन पर आक्रमण हुए। "कवितावली और 'विनय पत्रिका' में भी जाति को लेकर उनकी जैसी प्रतिक्रियाएं हैं, उन्हें देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि प्रहार कितना सख्त और सामूहिक है। भाषा की यह चिड़चिड़ी भंगिमा शायद ही कहीं और देखी जा सके।"[8]

"धूत कहो, अवधूत कहौ, राजपूत कहौ,
जलहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटी से बेटा न ब्याहब,
काहू की जाति बिगारि न सोऊ।।"[9]

"जाति को लेकर जितने प्रकार के अत्याचार हो सकते हैं, वे तुलसी पर किए जाते रहे।"[10] लगभग अस्सी वर्ष की आयु में भी वे कहते है कि लोग उनकी छाया को भी छूने से भी संकोच करते रहे–

"काहे को रोष, दोष धौ,
मेरे ही अभाग मोसो सकुचत छुइ सब छाहू।"[11]

परिणामस्वरूप विनय पत्रिका में वह आर्तस्वर से पुकार उठते हैं–

"अत्यन्त अनीति और कुरीति हुई है, पृथ्वी सूर्य से

भी अधिक तप रही है। मैं कहाँ जाऊँ? मुझे कहीं स्थान नहीं है।''[12]

वह अधिकांश समय पर्यटन में ही रहे, काशी में पंडितों तथा विभिन्न धर्मावलम्बियों से विरोध के कारण उनका एक स्थान नहीं रहा ''किसी न किसी कारण तुलसी को स्थान बदलने पड़े। असी पर तुलसी का घाट प्रसिद्ध है, यहाँ उनके द्वारा स्थापित हनुमासन जी हैं।..... मरणपर्यन्त वहीं रहे।''[13]

क्रमबद्ध (तिथिक्रम सहित) से लेकर नितान्त स्मृति आधारित आत्मकथाएं लिखी गयी हैं, लेकिन उनके लेखकों ने उन्हें आत्मकथा का नाम तो दिया, परन्तु तुलसी, उसे अलग से कोई नाम नहीं देते। वे तो कविता में राम–भक्ति कथा ही लिख रहे थे, उसमें उनकी कथा और उनका काल बहता हुआ आकर मिल गया है। इस दृष्टि से यह विश्व की पहली आत्मकथा है, जिसमें लेखक का प्रयोजन आत्मकथा लिखना तो था ही नहीं, लेकिन फिर भी वह एक अप्रतिम अपनी तरह की अकेली आत्मकथा है, जो एक जगह बैठकर याद करके नहीं लिखी गई है, बल्कि जीवन के समानान्तर चलती रही है।''[14]

श्रेष्ठ आत्मकथा की कसौटी क्या है? उस कसौटी पर वह तुलसी की आत्मकथा को परखती है। ''श्रेष्ठ आत्मकथा की एक शर्त यह है, कि उसमें लेखक का युग प्रतिबिम्बित होता है, जिसके द्वन्द्वात्मक संघात से आत्मकथाकार का जीवन विकसित होता रहा है। पारस्परिक तनाव का बिन्दु जितना गतिशील और संतुलित होगा, आत्मकथा उतनी ही फैलती है। जिस प्रकार किसी चित्र की सम्पूर्णता उसके परिदृश्य से निर्मित होती है, लेकिन परिदृश्य, होता चित्र का अंग ही है समूचा चित्र नहीं, यही बात आत्मकथा के लिए भी कही जा सकती है।''[15]

तुलसी की पैनी दृष्टि राजतंत्र पर भी है, वह यह तथ्य भलीभाँति जानते हैं कि राजा से अधिक क्रूरतापूर्ण व्यवहार उसके सेवक करते हैं, अतः राजा का दायित्व है कि वह प्रजा की देखभाल स्वयं करे। वह सामान्य जनों के प्रति करुणा से, सत्ता के प्रति क्षोम और तिरस्कार से और समकालीन सम्प्रदायों, पंथियों के प्रति आक्रोश से भरे हुए हैं, जिसका कारण उनमें निहित विकृतियाँ हैं। 'दोहावली' और कवितावली में उनका आक्रोश चरम पर है अशुभ वेशधारी, अभक्ष्य भोजन करने वाले लोगों की कलियुग में सिद्ध है।''[16]

''जायो कुल मंगन, बधावनो बजायो, सुनि
भयो परितापु वायु जननी–जनक को।
वारे ते ललात–बललात द्वार–द्वार दीन,
जानत हो चारि फल चारि ही चनक को''[17]

तुलसी ने विनय पत्रिका में पूरे दरबार के समक्ष 'कलियुग' के विरुद्ध अर्जी पेश की है। 'कलियुग' यानी पूरे युग में होते और किए जाने वाले अन्याय, अभाव, अत्याचार और शोषण के विरुद्ध, यद्यपि तुलसी निजी अनुभव पेश करते हैं पर उसमें बात सबकी है। उनका निजी अनुभव सामूहिक एवं सामाजिक अनुभव का हिस्सा है।''[18]

अति अनीति कुरीति भई तरनि हूँ ते ताति।
जाऊँ कहँ बलि जाऊँ, कहूँ न ठाँउ मति अकुलाति।।

तुलसी की आजीविका क्या थी? इस सम्बन्ध में वह रामनरेश त्रिपाठी का मत प्रस्तुत करती हैं, जिन्होंने इस बिन्दु को छुआ है– 'विवाह के उपरान्त वे गृहस्थी चलाने के लिए उद्योग–धन्धे में लगे। धन के लिए उन्होंने खेती की, व्यापार किए और उनके उपाय रचे।' विवरण की पुष्टि के लिए वे विनयपत्रिका की एक पंक्ति उद्धृत करते हैं –

मध्यवयस धन हेतु गँवाई कृषी बनिज नाना उपाय।

किन्तु डॉ. राजे का मानना है कि– 'फिलहाल तुलसी के आत्मकथ्य में इस बात का कोई उल्लेख नहीं मिलता कि जीविका के तौर पर उन्होंने कोई 'काम' किया था और वह इसकी पुष्टि में तुलसी का ही आत्म–कथ्य प्रस्तुत करती हैं कि उन्होंने राम–नाम की ही रोटी खाई–

''ऊँचो मनु, ऊँची रुचि, भागु नीचो निपट ही,
लोकरीति–लायक न लंगर लबारू है।
स्वारथु अगमु परमारथ की कहा चली,
पेट की कठिन जगु जीव को जवारू है।।
चाकरी न आकरी, न खेती, न बनिज–भीख,
जानत न क्रूर कछु किसव कबारू है।
तुलसी की बाजी राखी रामही के नाम, न तु
भेंट पितरन को न मुड़हू में बारू है।।[19]

x x x x x x x x x x x

''हौ तो जैसो तब तैसो अब अधमाई कै–कै।
पेटु भरौ राम, रावरोई गुन गाइ कै।।[20]

ऐसे अनेक छन्द तुलसी की आत्मकथा के व्यंजक है। आजीवन कठिन संघर्ष रहा। तुलसी अपने विरोधियों और अपने समय की गुत्थियों से घिर गये थे.... वे लड़–लड़

कर लिख रहे और लिख–लिख कर लड़ रहे थे, जैसे नदी के प्रवाह में बहने वाला व्यक्ति लहरों का हिसाब रख रहा हो। यही उनकी आत्मकथा है और यही उनकी काल कथा भी है। प्रायः जो आत्मकथाएं हमें मिलती हैं, उनमें लेखक अपने शक्ति, सामर्थ्य, संघर्ष और उपलब्धियों और अभावों का चित्रण करता है, लेकिन तुलसी अपने बाहर और भीतर के यथार्थ का अंकन करते हैं, अपने अकेलेपन, अपनी थकान और व्यथा का वर्णन, वह 'विनयपत्रिका', 'कवितावली' में विशेष रूप से करते हैं। 'विनयपत्रिका' में उनका आन्तरिक संघर्ष और कवितावली में बाह्य संघर्ष व्यक्त हुआ है। डॉ. राजे और गहराई में जाकर इसे स्पष्ट करती है। 'विनयपत्रिका' में तुलसी के आन्तरिक संघर्ष का लेखा–जोखा है और 'कवितावतली' बाह्य संघर्ष की, दोहावली में उनकी चरम अनन्यता का विवेचन चातक के प्रतीक के माध्यम से किया गया है, जिसका अनुप्रयोग उनके समूचे साहित्य में है, चाहे वे कथात्मक हों या आत्मव्यंजक। दोहावली में ही उनका यह सपना भी है जिससे उन्होंने रामराज की रचना की है।''[21]

कोई अत्यन्त संवेदनशील, सजग और शोध–दृष्टि सम्पन्न सहित्य सेवी ही इन आत्म कथात्मक स्थलों को रेखांकित करने में समर्थ हो सकता है। डॉ. राजे ने अपनी सामर्थ्य का परिचय अपनी सभी कृतियों के माध्यम से दिया है। ''आत्मकथा : आत्मकथाओं से बाहर'' में तुलसी की अनदेखी, उपेक्षित आत्मकथा को साहित्य–जगत में पूरे प्रमाण के साथ प्रस्तुत कर, अत्यन्त वैदुष्य का परिचय दिया है, और साहित्य जगत को अनुपम भेंट भी प्रदान की है। तुलसी की आत्मकथा, लोक कल्याण में अहम भूमिका का निर्वाह करती है। इस दृष्टि से वन संरक्षरण से लेकर जन संरक्षण तक की चेतना तुलसी की आत्मकथा के माध्यम से व्यक्त हुई है। ''तुलसी की लोक यात्रा एक तरफा नहीं है..... वह लोक से लेते हैं और लोक को हस्तान्तरित करते है।''[22]

सम्पूर्ण पुस्तक आठ उपशीर्षकों में विभाजित है– प्रार्थना के शिल्प में, अर्धकथा–हाशिए पर लिखी इबारत, आत्म कथ्य– कबहु न नाथ नींद भरि सोयो, आत्मान्वेषण : सत्य कहहु लिखि कागद कोरे, अर्न्तयात्राएँ– कहे न बनत बिन कहे कल न परत, काल तथा बनाम कलिकथा : काल कला कासीनाथ कहै निबरत हौं, लोक संस्कृति की भाषा और भाषा की लोक संस्कृति : लोक कि वेद बड़ोरे स्वप्न–समय रामराज जानियत राजनीति की अबधि, जिनमें तुलसी के जीवन के सभी पक्षों को अनूठी शैली में व्यक्त किया है।

वस्तुतः आत्मकथा : आत्मकथाओं से बाहर तुलसी के जन्म, माता–पिता द्वारा उनका त्याग, गुरू, गुरू द्वारा शिक्षा, विवाह, रत्नावली का त्याग, तुलसी के जीवन की विसंगतियों और मृत्यु आदि सम्पूर्ण पक्षों को तुलसी के शब्दों में उद्घाटित करती हैं। यह कृति डॉ. राजे के गहन अध्ययन और शोध की परिणति है। यह उनकी विलक्षण प्रतिभा की परिचायक है, जिस दिशा में किसी की दृष्टि ही नहीं गई, उधर दृष्टिपात कर उस महान कवि के प्रति उन्होंने न्याय कर हार्दिक श्रद्धा ज्ञापित की है। तुलसी के जीवन, उनके दार्शनिक विचार उनकी कवित्व शक्ति, उनकी प्रगाढ़ भक्ति के भी अद्भुत दर्शन इस कृति के माध्यम से होते हैं। यह लेख मात्र चंचु प्रवेश है, इसमें अवगाहन करने के लिए तो पुस्तक का सम्पूर्ण पाठन ही करना होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ – शिव कुमार वर्मा पृष्ठ–238
2. आत्म कथा : आत्मकथाओं से बाहर – डॉ. सुमन राजे (भूमिका से) ।
3. आत्म कथा : आत्मकथाओं से बाहर – डॉ. सुमन राजे (भूमिका से) पृष्ठ–27।
4. आत्म कथा : आत्मकथाओं से बाहर – डॉ. सुमन राजे (भूमिका से) पृष्ठ–30।
5. विनय पत्रिका – तुलसीदास पृष्ठ – 227।
6. विनय पत्रिका – तुलसीदास पृष्ठ – 275।
7. आत्मकथा : आत्म कथाओं से बाहर – डॉ. सुमन राजे – पृ. 14
8. आत्मकथा : आत्मकथाओं से बाहर – पृ. 100
9. गीतावली : अयोध्याकाण्ड – पद – 43
10. आत्मकथा : आत्मकथाओं से बाहर – पृ. 102
11. कवितावली – उत्तर काण्ड – छन्द सं. 168
12. आत्मकथा : आत्मकथाओं से बाहर – पृ. 102
13. गोस्वामी तुलसीदास – रामचन्द्र शुक्ल – पृ. 33
14. आत्मकथा : आत्म कथाओं से बाहर–डॉ. सुमन राजे–पृष्ठ 268।
15. आत्मकथा : आत्म कथााओं से बाहर – डॉ. सुमन राजे – पृष्ठ – 159।
16. आत्मकथा : आत्म कथाओं से बाहर – डॉ. सुमन राजे–पृष्ठ–77।
17. कवितावली : पृष्ठ 7 / 73।
18. आत्मकथा : आत्म कथाओं से बाहर पृष्ठ – 67।
19. कवितावली : उत्तरकाण्ड पृष्ठ – 67।
20. कवितावली : उत्तरकाण्ड छन्द 7, पृष्ठ – 61।
21. आत्मकथा : आत्म कथाओं से बाहर – पृष्ठ – 117।
22. आत्मकथा : आत्म कथाओं से बाहर – पृष्ठ – 191।

ISSN : 2349-9273

Received: 28 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

बैंकिंग व वित्तीय सेवाओं में इन्टरनेट के प्रयोग से बदलता ग्रामीण परिवेश

– डॉ. राकेश कुमार
असि. प्रोफेसर–वाणिज्य विभाग,
रामसहाय राजकीय महाविद्यालय,
शिवराजपुर, कानपुर नगर – 209502
(उत्तर प्रदेश)

ई–मेलः
drrakeshkumarrawal77@gmail.com

सारांश

विश्व आर्थिक मंच मानता है कि फिजिटल एवं डिजिटल तरीकों के बीच संतुलन बिठाने वाली फिजिटल रणनीति नए दौरे में एकदम जरूरी बन रही है। इस लिहाज से नए उत्पाद तैयार करना और उत्पादों एवं सेवाओं की सरलीकृत आपूर्ति के लिए नियम आसान करना इस समय की जरूरत है। बैंक और निजी कम्पनियाँ भरोसा बढ़ाने तथा डिजिटल साक्षरता की समस्याए खत्म करने के लिए बैंकिंग करेस्पॉन्डेंटों और उपयोगकर्ताओं हेतु जागरूकता एवं प्रशिक्षण में निवेश कर सकते हैं। ऑफलाइन बैकिंग के जरूरी पहलुओं को बरकरार रखते हुए ऑफलाइन से ऑनलाइन की दिशा में ले जाने वाले एकजुट प्रयास की जरूरत है। फिजिटल और डिजिटल को एक दूसरे का पूरक बनाने वाला मॉडल ही डिजिटल तथा वित्तीय रूप से सशक्त 'भारत' का रास्ता है।

प्रस्तावना–

इन्टरनेट और मोबाइल की बढ़ती पैठ के कारण ग्रामीण क्षेत्र में वित्तीय लेन देन में डिजिटल उपयोग लगातार बढ़ रहा है।

यह भारत नेट की चरणबद्ध सफलता से जड़ा है, जो दुनियाँ का सबसे बड़ा ग्रामीण ब्रॉडबैंक कनेक्टिविटी कार्यक्रम है। ग्रामीण भारत अब शहरी भारत के उलट अलग–थलग नहीं रह गया है और तेजी से इन्टरनेट की रफ्तार पकड़ रहा है। डिजिटल सेवाओं में वृद्धि ग्रामीण डिजिटल नागरिक के ऐतिहासिक उभार का प्रमाण है।

ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था मोटे तौर पर नकद से चलती है। ग्रामीण भारत में रोजगार तथा आय में विविधता बढ़ रही है, जिसमें मुख्य रूप से खेती पर आधारित होने की इसकी छवि बदल रही है। कृषि आय में अब दो–तिहाई योगदान गैर कृषि, क्षेत्र का है। पिछले कुछ वर्षो में बैंकिंग करेस्पॉन्डेंटो ने ग्रामीण क्षेत्रों को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने में केन्द्रीय भूमिका निभाई है। वर्ष 2017 से डिजिटल एम्पावरमेट फाउण्डेशन (DEF) जमीनी स्तर पर डिजिटल वित्तीय साक्षरता एवं भागीदारी बढ़ाने के लिए बैकिंग करेस्पॉडेंटो के साथ काम कर रहा है। डिजिटल एम्पावरमेंट फाउंडेशन ने पूरे भारत में 2000 से अधिक डिजिटल संसाधन केन्द्र बनाए हैं।

डिजिटल सेवाओं के लाभ–

बैकिंग करेस्पॉन्डेंट के अनुसार– ''डिजिटल सेवाओं के फायदे के बगैर हमारी जिन्दगी अधूरी ही रहती है।''

आम ग्रामीण नागरिकों के लिए डिजिटल बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं के बहुत फायदे हैं। डिजिटल बैंकिंग सेवाओं की उपलब्धता ने ग्रामीण नागरिकों के बीच डिजिटल वित्तीय और बैंकिंग सेवाओं के व्यापक उपयोग को बढ़ावा दिया है। महामारी और लॉकडाउन के दौरान तो इसमें और भी इजाफा हुआ क्योंकि उस समय दूर जाना लगभग असंभव था।

डिजिटल भुगतान और बैंकिंग सेवाओं से सुविधा और लेन–देन से ग्रामीणों का जीवन अत्यधिक सुगम और सरल हो गया है क्योंकि किसी जिले में कई गाँवों के लिए बैंक की एक ही शाखा होती है और ज्यादातर गाँवों से दूर होती है। जिस अर्थव्यवस्था में एक–एक पाई मायने रखती हो, वहाँ बैंक से रकम लेने के लिए भी रकम खर्च करनी पड़ती थी।

ग्रामीण क्षेत्र में एटीएम तक दूर–दूर है। विश्व बैंक के अनुसार भारत के ग्रामीण इलाकों में देश के केवल 20 प्रतिशत एटीएम है। ए.ई.पी.एस. (AEPS) यानी आधार से चलने वाली भुगतान प्रणाली ने उन जैसे लोगो के लिए अपने सभी वित्तीय लेन–देन आसान बना दिया है। जिनके घरों से बैंक व ए.टी.एम. दूर थे।

लूटने और चोरी का डर नहीं–

ग्रामीण इलाकों में चोरी और लूटने का बहुत डर होता है। घर में नकद रखा है तो हमेशा होने का डर सताता रहता है या फिर बैंक से नकद निकाल कर लाने पर रास्ते मूं लुटने का भी डर रहता है।

जब से बैंकिंग व्यवस्था को इन्टरनेट से जोड़ दिया गया है, तब से चोरी और लुटने का भय मन मस्तिष्क से निकल गया है। अब तो प्रत्येक बैंक का अपना एप होता है साथ ही साथ इन्टरनेट बैंकिंग सुविधा जिससे धन का स्थानान्तरण बहुत आसान तथा सुरक्षित हो चुका है, आजकल डिजिटल युग का समय है अब गाँव–गाँव लोग इण्टरनेट सुविधा के माध्यम से बैंकिंग तथा वित्तीय लेन देन आसानी से करने लगे तथा उनके अन्दर एक अब पिछड़ेपन की भावना भी खत्म हो चुकी है क्योंकि आधुनिक समय में इन्टरनेट का प्रयोग हर व्यक्ति कर रहा है।

चौबीस घण्टे धन की उपलब्धता–

पहले जब बैंक की छुट्टी होती थी तब लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था। जैसे किसी के परिवार में किसी की अचानक तबीयत खराब हो गई तो घर पर नकद न होने के कारण बैंक की छुट्टी होने पर इलाज कराना अत्यन्त कठिन हो जाता था। किन्तु अब डिजिटल युग में यदि आपका खाता किसी भी बैंक में है और आपके पास आधार कार्ड या ए.टी.एम. कार्ड है तो भुगतान करने में या नकद धन निकालने में ग्रामीणों को कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता है।

अब यदि कोई पैसा लाना भूल जाए या अचानक खरीदारी करनी पड़े तो बाजार में आराम से सामान खरीदा जा सकता है।

धन की आसान उपलब्धता–

बढ़ती जागरुकता और डिजिटल वित्तीय साक्षरता शिविरों ने डिजिटल वित्तीय प्रणालियों की सुगमता बढ़ा दी है गांव में पुरुश–महिलाएं बुजुर्ग और नौजवान अब सभी आसानी से फिंगर प्रिंट मशीन के माध्यम से धन की निकासी कर सकते है। कम पढ़े लिखे लोगों के लिए भी अब धन प्राप्त करना या निकालना आसान कर दिया है जिन लोगों के खाते आधार से जुड़े है वे अब अपने घर पर ही फिंगर प्रिंट मशीन के द्वारा अपने खाते से धन निकाल सकते हैं।

ग्रामीण को बैंक नहीं जाना पड़ता है और न ही अब बैंकों में भारी भीड़ होती है। डिजिटल युग में समय और आने–जाने पर होने वाले खर्च की भी बचत हुई है।

कारोबार और उद्यमियों को लाभ–

कोविड महामारी में लॉकडाउन के समय से ही लगभग सभी दुकानदारों ने क्यू.आर. कोड रख लिए है। डिजिटल भुगतान खरीदारी की, सुविधा को बढ़ावा देता है और उद्यमी को भी डिफाल्ट (जानबूझकर पैसा नहीं देना) के बगैर आसानी से भुगतान मिल जाता है।

ज्यादातर कारोबारी अपने लेनदारों (केडिटर्स) को बड़ी रकम का भुगतान करने में कठिनाई तथा असुरक्षा का भाव महसूस करते थे किन्तु अब वे इस भय से मुक्त होकर डिजिटल भुगतान करते हैं किराने की दुकान चलाने वाले, डेयरी या दर्जी की दुकान चलाने वाली कई महिला उद्यमी अपना धंधा बढ़ाने के लिए डिजिटल सेवाओं का इस्तेमाल करती हैं।

डिजिटल भारत शुरू करते समय इन्टरनेट और सर्वर कनेक्टिविटी नीति निर्माताओं के लिए सबसे बड़ी चिन्ता थी। शहरों के साथ–साथ गाँवो को इन्टरनेट और मोबाइल की पैठ सुनिश्चित करने के प्रयास किए गए। कभी–कभार नेटवर्क और सर्वर की दिक्कत होती है। डिजिटल सफर की शुरुआत की तुलना में अब नेटवर्क

कनेक्टिविटी सुधरी है।

ग्रामीण उपभोक्ताओं का डिजिटल लेन–देन से भरोसा उस समय खत्म हो जाता है, जब नेटवर्क या सर्वर की दिक्कतों के कारण ऑनलाइन लेन–देन के दौरान उनका पैसा बीच में ही अटक जाता है। उपभोक्ताओं के मन मे धोखाधड़ी का डर, डिजिटल प्रणाली के प्रति अविश्वास और इन्टरनेट को समझ कम होने से स्थिति पर प्रभाव पड़ता है।

ऑनलाइन शिकायतों का निवारण व्यवस्था–

जब इन्टरनेट की सुविधा ग्रामीण क्षेत्रों में नहीं थी उस समय बैकिंग ग्राहक अपनी समस्याओं के समाधान के लिए बैंक अधिकारियों से अपनी शिकायत करता था लेकिन कभी–कभी बैंक अधिकारी / कर्मचारी शिकायतों का निवारण समय पर न ही करते थे जिस कारण बैंकिंग उपभोक्ताओं को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था, किन्तु अब इन्टरनेट के युग में ऑनलाइन शिकायत कर अपनी समस्याओं से ग्राहक जल्द से जल्द समाधान पाता है।

धोखाधड़ी के शिकार–

डिजिटल भुगतान का प्रयोग बढ़ने के साथ ऑनलाइन धोखाधड़ी के मामले भी बढ़े हैं।

ठग स्वयं को बैंक अधिकारी बताकर भोले–भाले लोगों, आम तौर पर निरक्षण उपयोगकर्ताओं से गोपनीय जानकारी हासिल कर लेते हैं। अपने शिकार के खाते से वे बड़ी रकम निकाल लेते हैं या खाता खाली कर देते हैं। अधिकतर लोग प्रौद्योगिकी पर संदेह करते हैं और ऐसी घटनाएं उनका भरोसा और भी कम कर देती हैं।

महिलाओं द्वारा डिजिटल सुविधाओं का कम प्रयोग–

आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा डिजिटल वित्तीय सेवाओं का कम प्रयोग किया जाता है। प्रथम तो यह कि ग्रामीण महिलायें अधिकांश कीपेड फोन का इस्तेमाल करती है और एण्ड्रायड फोन का प्रयोग पुरुष करते हैं।

डिजिटल सेवाओं का इस्तेमाल करने वालों में अधिकतर शिक्षित युवा स्नातक और कामकाजी महिलाएं ही थीं, जिसमें पता चलता है कि लड़कियों में शिक्षा की दर बढ़ रही है।

पुरुषों को वित्तीय तथा घर के अधिकार देने वाले पितृसत्तात्मक नियम डिजिटल बुनियादी ढाँचे और सेवाओं तक महिलाओं की पहुंच में बाधा बनते हैं।

'फिजिटल' बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं में नवाचार–

समय–समय पर बैंक, सरकारों और निजी संस्थानों में वित्तीय समावेशन के दो स्तम्भों की उपलब्धता एवं आपूर्ति पर काम करने का प्रयास किया हाल ही में वित्त मंत्री ने इंडियन बैंक्स एसोसिएशन से ग्रामीण भारत में बैंकिंग सेवाओं की पैठ बढ़ाने के तय करना चाहिए कि कहां उनकी शाखाएं होनी चाहिए और कहां डिजिटल सेवाएं दी जा सकती हैं।

विश्व आर्थिक मंच मानता है कि फिजिटल एवं डिजिटल तरीकों के बीच संतुलन बिठाने वाली फिजिटल रणनीति नए दौरे में एकदम जरूरी बन रही है। इस लिहाज से नए उत्पाद तैयार करना और उत्पादों एवं सेवाओं की सरलीकृत आपूर्ति के लिए नियम आसान करना इस समय की जरूरत है। बैंक और निजी कम्पनियाँ भरोसा बढ़ाने तथा डिजिटल साक्षरता की समस्याए खत्म करने के लिए बैंकिंग करेस्पॉन्डेंटों और उपयोगकर्ताओं हेतु जागरूकता एवं प्रशिक्षण में निवेश कर सकते हैं।

ऑफलाइन बैकिंग के जरूरी पहलुओं को बरकरार रखते हुए ऑफलाइन से ऑनलाइन की दिशा में ले जाने वाले एकजुट प्रयास की जरूरत है।

फिजिटल और डिजिटल को एक दूसरे का पूरक बनाने वाला मॉडल ही डिजिटल तथा वित्तीय रूप से सशक्त 'भारत' का रास्ता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. योजना अप्रैल, 2022।
2. इकोनोमिक टाइम्स डॉट इंडिया टाइम्स डॉट कॉम।
3. बिजिनेस–स्टैन्र्डड डॉट कॉम।
4. हेल्प इंडिया–सरल–पॉपुलेशन–गो–डिजिटल।

ISSN : 2349-9273

Received: 30 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

हिन्दी आदिवासी उपन्यासों में लोकगीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

– पटेल शीतलबेन ईश्वर भाई
(शिक्षिका गुजराती)
संस्कार भारतीय हाईस्कूल,
वापी, बलसाड़–396191 (गुजरात)

ई–मेलः
girishpatel.2009@rediffmail.com

सारांश

उपन्यासों में आदिवासी लोकगीतों में जीवन का उल्लास एवं आनन्द स्पष्ट दिखाई देता है। इनमें मानव के संस्कार, आन्दोलन,. ऋतु, विरह आदि सभी गीतों का विवेचन मूल भाषा में वर्णित हुआ है। आदिवासी लोकगीत 'आदिम भाषा' को भी सुरक्षित करते देखे जा सकते हैं। इनमें आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक संस्कृति एवं सभ्यता का विश्लेषण जीवन की रसमयता एवं विविधता को प्रदर्शित करते हैं। हिन्दी उपन्यासकारों ने आदिवासी लोक जीवन के गीतों को लिपिबद्ध करके लोक मूल्यों को सुरक्षित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। अतः यह निर्विवाद सत्य है कि इस समाज में लोकगीत की परम्परा बहुत ही समृद्ध है। जिनमें उनका सम्पूर्ण जीवन, इतिहास, सामाजिक आर्थिक तथा सांस्कृतिक आयाम अभिव्यंजिक होते हैं।

आदिवासी संस्कृति में 'लोकगीत' अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। आदिवासी लोक संस्कृति के विविध रूपों में जैसे कि लोक कथा, लोकगीत, लोक नृत्य और लोक वाद्य में लोकगीत अपना विशिष्ट स्थान रखता है। लोक साहित्य समस्त भारत की संस्कृति का चित्रण करता है। लोक कथा और लोक कहावतों लोक वाद्य आदि विधाओं की अपेक्षा लोकगीतों में कहीं अधिक भावोत्कर्ष और रंजन शक्ति है। आदिवासी अशिक्षित होने के कारण इनका कोई लिखित साहित्य नहीं है, केवल मौखिक साहित्य है। इनके गीतों में जीवन का उल्लास है, मिठास है, मादकता है। वे सुख और दुःख दोनों स्थितियों में लोकगीतों की अभिव्यक्ति देते हैं। 'लोकगीतों' का आदिवासी जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। इनमें आदिवासी समाज और संस्कृति का प्राचीन गौरव आदर्श के प्रत्यक्ष रूप में व्यंजित होता है। एक–एक गीत में कितना उच्च भाव भरा हुआ है, हाँ इन गीतों से विदित होता है। आदिवासियों का गौरवपूर्ण इतिहास उनकी सांस्कृतिक परम्पराएं हैं, उनकी देवी–देवताओं के प्रति आस्था, मेले, त्योहार तथा पुर्नजन्म, विवाह आदि उत्सवों पर उच्छृलित भावावेग और विशेषकर स्त्रियों की पोशाकों व आभूषणों की झनकार सभी ने लोकगीतों को जन्म देने में विशिष्टता उत्पन्न की है।[1]

लोक संस्कृति के ज्ञान का प्रमुख़ साधन लोक गीत होते हैं। लुप्त होती भारतीय अस्मिता को आदिम समाज और प्राकृतिक उपादानों से उसके आपसी सम्बन्धों में खोजा जा सकता है। आदिवासी लोकगीत इस देश की आदिम संस्कृति के वाहक हैं। आदिवासी लोकगीत आदिवासी क्षेत्रों का सोलह श्रृंगार हैं, जो भारत के जंगलों, पहाड़ों एवं घाटियों में प्रतिबिम्बित होता

है। हिन्दी आदिवासी उपन्यासों में विभिन्न आदिवासी समाजों में प्रचलित लोकगीतों की अभिव्यक्ति क्षेत्रीय भाषा में हुई है। इस वर्ग की सारी जिन्दगी गीतों एवं नृत्य के उल्लास से भरी रहती है। ये गीत गाकर अपनी व्यथा को भूल जाते हैं। विभिन्न पर्वों, उत्सवों एवं अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों की भाषा ही भिन्न–भिन्न है, परन्तु उनका भाव एक सा ही होता है। आदिवासी लोकगीत हिन्दी उपन्यासों में कई तरह के मिलते हैं। इनमें जन्म, विवाह, मृत्यु, व्यवसाय, धन सम्बन्धी, त्योहार एवं पर्व तथा देशभक्ति गीत प्रमुख हैं।

आदिवासी समाज में जन्म संस्कार के गीत भी गाये जाते हैं। पारिवारिक जीवन में शिशु जन्म एक महत्वपूर्ण तथा आनन्ददायी घटना मानी जाती है। इस अवसर पर आनन्द व्यक्त करने के लिए आदिवासी समाज में गीत गाये जाते हैं। 'माटी–माटी अरकाटी' उपन्यास में इमरती कुन्ती को चुप कराते हुए लोरी गीत गाती है। वह उसकी पीठ थपक–थपक कर लोरी सुना रही है–

'अरजी बरजी करहिं छोटकी ननदिया,
आई रे गेलइ इहमा, मास रे फगुनमां।
जो तोहे जइह भउजी अप्पन कोहबरना,
भइया से कहि मोरा, रखिहउ नेअरवा।
नहिं मांगू थारी लोटा, नहिं मांगू धन मा,
एक हम मांगू भउजी, सिर के सेनुरवा।
एक हम मांगू भउजी, तोहरो सोहगवा।'[2]

राकेश कुमार सिंह के 'पठार पर कोहरा' उपन्यास में रुदिया का विवाह होने के बाद उसकी विदाई का समय आता है। इस अवसर पर औरतें विदाई के समय का गीत गाती हैं। जिस गाँव में तू जायेगी ओ धिया, सूखे वृक्ष पत्तों से लद जायेंगे। बाँझ औरतों की गोद भर उठेगी। बूढ़ी गायों के थन से दूध टपकने लगेगा। जहाँ तेरे पाँव पड़ेंगे धिया, उजड़े गाँव आबाद हो जायेंगे। 'सेमल और कपास' के बीज मोतियों में बदल जायेंगे। रुधिया की सीलती आँखें ..... गीले होते कंधों का गीलापन संजीव को भीतर तक भिगोने लगा। मड़वे में लड़कियाँ विवाह गीत गाती हैं–

'केकर माथे लाल सुनीर पगड़ी
केकर हाथे लाल गेंदा फूल
ओ मैना रे ,
मति जावे दूर विदेश.... ।'[3]

'माटी–माटी अरकारी' उपन्यास में कोंता के विवाह में गाये जाने वाले गीत का चित्रण भी मिलता है। कोंता जवना है, उसका विवाह हो रहा है। औरतें उसके विवाह में बड़ा सुन्दर गीत गाती हैं–

'सोनमा ऐसन धिया हारलंड जी बाबा,
कार कोयिलवा हथून दमाद हो।
कारहिं कार जनि घोसहुं गे बेटी,
कार अजोधेया सिरी 'राम' हे।
कार के छतिया चननमा सोभइ गे बेटी,
तिलक सोभइ लिलार हे।'[4]

आदिवासी खेत में काम करते हुए गीत गाते हैं, वे फसल बोते हुए आनन्द से झूम उठते हैं। खेत जोतते समय वे उल्लास से भर जाते हैं। अपनी जी तोड़ मेहनत को फलता हुआ देख वे बड़े खुश होकर खेत काटने के लिए तैयार हो जाते हैं। 'पठार पर कोहरा' उपन्यास में लेखक ने आदिवासी जीवन को प्रकृति से सम्बद्ध कर लिखा है– 'इस बार जिसके पास दस–दस हाथ भी जमीन है, बड़े प्रेम से जोती–बोई गयी है। खेत हरे हैं, कलगी छोड़ चुके हैं। ज्वार, बाजरा और मकई के पौधे। रस्सियों के लिए लगाई गई पाढ़ और सनई भी खूब बढ़े फूले हैं इस साल। मुण्डाओं की छाती ऊँची है। माथा चमक रहा है। उछांह लेती आशाएं और हिलोरे लेता मन..... । मुण्डा स्त्रियों के कण्ठ में भी कोयल आ बसी है। खूब शौक से रोपाया है धान। जिसके सिर से कर्ज उतर गये हैं, उनका सारा धान इस साल अपना होगा। रोपनी गीतों के ज्वार से नहा उठा है गज ली ठोरी.....

'बिर तबु चब तन
ओते बु रोवाया
सादी ..... सादी .....
उली कण्टड़ कुद बारू
मु दू हंस, जोतो दारू
दारू बू रोवाया ..... ।'[5]

आदिवासियों के प्रमुख त्योहारों में होली का नाम लिया जाता है। होली के दिन इस समाज में नृत्य, गीत एवं गेर गाया जाता है। होली के दिन स्त्री–पुरुष दोनों मिलकर एक साथ नृत्य करते हैं और गीत गाते हैं। होली के त्योहार में थम्मक खड़ा करते हैं। इसको जलाना इनकी परम्परा है। 'धूंजी तपे तीर' उपन्यास में होली के गीत का विवेचन करते हुए लिखा है– 'आमलिया गाँव के चौक में परम्परानुसार होली का चम्मक एक महीने पहले 'रोप' दिया गया था। सेमेल के पेड़ की पाँच–छह हाथ लम्बी हरी लकड़ी का थम्मक बनाया गया था। होली के दिन थम्मे के इर्द–गिर्द

लकड़ियाँ व कंडे रख दिये गये। सूरज डूबने के साथ ही होली दहन कर दिया गया। हालिया भगत की देखरेख में होलिका पूजन व अग्नि क्रिया सम्पन्न की गयी। गाँव के बुर्जुगों नें होली दहन को देखा। युवक–युवतियों ने होली की परिक्रमा करते हुए होली का गीत गाया–

'होली बाई वांहो रो रे
होली बाई वांहो रो रे
होली बाई आज के काल
होली बाई वांहों रो रे।'[6]

मैत्रेयी पुष्पा कृत 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में होली के अवसर पर 'कबूतरा' जनजाति की औरतें, मर्द, बूढ़े और युवती–युवक सब मिलकर होली गीत गाते हैं –

'मोरी चंदा चकोर,
काजर लगा के आ गई भोर हो भोर
मोरी चंदा चकोर,
छतिया पै तोता, करिहा पै मोर
मोरी चंदा चकोर,
चोली में निबुआ घँघरा घुमेर।'[7]

आदिवासी समाज में शिकार को विशेष माना जाता है। शिकार करना इनकी मुख्य परम्परा का अंग है। प्रतिवर्ष उनके कबीले में शिकार करने की परम्परा प्रतियोगिता के रूप में निभाई जाती है। शिकार करने से पूर्व गाँव के जगल के देवता की पूजा की जाती है, तदोपरान्त गाँव के सभी युवक अपने अपने तीर धनुष लेकर शिकार करने जंगल में जाते हैं। शिकार गीत का प्रसंग जो इतिहास में नहीं है, उपन्यास में चित्रित हुआ है– 'देवी देवताओं का सुमिरन कर, मराबुरू को गोहराता हारिल' मुरमु तीर की बाजी खेलने वाले अखाड़े तक आ पहुँचा।' 'गगरे वाले मचान के नीचे बैठा' एक आदिवासी किशोर माँदल बजा रहा था.....

'धिधितंग धिकतंग..... धिधितंग धिधितंग.....।'[8]

लड़के के साथ बैठी किशोरों की टोली 'सेन्द्रा' गा रही थी। शिकार का गीत –

'धिधितंग धिधितंग..... धिधितंग धिकतंग.....
सरताम कापीताम, सरताम कापीताम
सरताम, कापीताम, सब ताम,
देदांग बिर बोन, देदांग बिर बोन
देदांग बिर बोन, बादुरी दाराम
धिधितंग धिधितंग।'[9]

'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में थारू हाट के मेले और सहोदवरा माई की पूजा का वर्णन मिलता है। इस पूजा में बालिकाएं नाचती हैं, और स्त्रियाँ गीत गाती हैं–

'के अनिहैं, सुहानारी के अनिहैं कंगना,
कि के अनिहैं, कंगना,
हो के अनिहैं..... हिरदिया दरपनवाँ
के अनिहै.....।'[10]

घर में जब बच्चा पैदा होता है तो आदिवासी स्त्रियाँ मंगल गीत गाती हैं। इसे सोहर गीत कहा जाता है। 'माटी–माटी अरकारी' में कुन्ती के जब बच्चा होता है तो औरतें गीत गाना शुरू करती हैं –

'दुअरा त नाचेला नचनिआं,
त अंगना ननदिया नाचे हो।
भउजी के भइले होरिलवा,
त भेसरिआ हमके चाही हो।
सझवा बइठल तुहूं बाबा,
त सखे गुनवा आगर हउव हो
बाबा भउजी के भइले होरिलवां,
त भेसरिआ हमके चाही हो।'[11]

असुर समाज में बढ़ती गरीबी एवं भूख के कारण जमींदारों नौाकरशाहों, पुलिस, खदान के मालिकों आदि लोग खूब फायदा उठाते हैं। ये लोग उनकी जवान बेटियों को अपनी हवस का शिकार बनाते हैं। इस स्थिति से असुर समाज चिंतित एवं बेचैन दिखई देता है। एक गीत में यह वर्ग अपनी इस व्यथा को गाकर प्रकट करता है –

'काठी बेचे गेले असुरिन
बांस बेचे गेले गे,
मेठ संगे नजर मिलयले,
मुंशी संग लासा लगयले गे,
कचिया लोभे कुला डूबाले गे,
रुपया लोभे जात डूबाले गे।'[12]

यह गीत नौजवान लड़कों के मुख से अक्सर सुनाई देता है। इसका कारण यह है कि 'असुरिन पैसे के लालच में मुंशी और खदान के साथ लगाव' रखती है। यह उनकी मजबूरी भी है। आदिवासी समाज अपने ही जंगल में महाजन, साहूकार, जमींदार और कम्पनी सरकार द्वारा शोषित होता आ रहा है। इन शोषकों के खिलाफ आदिवासी युवक–युवतियाँ, बुजुर्ग मिलकर गीत के माध्यम से अपना विरोध प्रकट करते हैं। 'जो इतिहास में नहीं है' उपन्यास में

आदिवासी शोषण का विवेचन और गीत इस प्रकार प्राप्त होता है– 'असुक किशोर, आशाओं से भरे युवा, स्त्रियाँ और बूढ़े। आँखों में भविष्य के सपने अगोरे' कि दुख के दिन अब नहीं रहने वाले। महाजन, साहूकार, जमींदार और कम्पनी सरकार के आगे छाती ठोंककर खड़ा हो चुका था, जंगल का बेटा सिदो मुस्मू साथ में कन्हू, चाँद, और भैरव मुरमू....। सिदो मुरमू का संदेश गीत संगीत में ढल रहा था। मेले –ठेले जैसा लग रहा था भगनाडीह। सहस्र कण्ठों से फूट रहा था गीत –

'मेरा निया नुरूनिया, टिण्डाढनिया मिटानिया
हाय रे हाय, मापक गपच दो
नुरिचे नांगड़, गई काड़ा नाचेंल नागिन
पाचेल लागेत सेदाय लोका बेताबेतेर,
जामू रूयोड़ लागित
तउबे दो – बोन हूल गेया हो.... ।।'[13]

इन आदिवासी लोक गीतों में समय के साथ परिवर्तन भी आता गया है। परिस्थिति के अनुसार तथा जीवन प्रक्रिया की चुनौतियों के अनुसार गीतों के विषय वस्तु में परिवर्तन होता गया है। जब अकाल पड़ा। तब गीतों की विषयवस्तु का अकाल हो गया, जिस पर अनेक गीत गाये गये हैं। अकाल कें बाद सड़कों पर पत्थर तोड़ती आदिवासी स्त्रियाँ अपने गीतों में परिस्थितियों का यथार्थ वर्णन करती हैं–

'हाय रे मिट्टी का फोरै राम
देश का जिया काल पड़ा रे
मिट्टी का फोरै रे ।
दिन भर तो मिट्टी फौरौवें
देवैं बारा आने रेट
ऐसी 'गिरानी माँ, बाबू!
गरीब चलायन पेट
'हाय रे मिट्टी का फोरै राम।'[13]

आदिवासी लोग बरसात न होने और होने पर गीत गाते हैं। यह समाज प्रकृति पूजक है। अपनी फसलों तथा जानवरों के लिए वह बरसात (विरवा) के गीत गाता है। 'माटी–माटी अरकाटी' उपन्यास में आदिवासी परिवार खूब नशा करके गीत गाता है। लेखक के अनुसार– 'रात को बाप–बेटे और माँ सबने मिलकर' दम भर महुआ पिया। उन चारों के गले से निकलता गीत बारिश के साथ रातभर होड़ लेता रहा–

'हाय रे हाय दइया' रउद खनक रोपा,
बनल गाछी कादो पानी बेसे लखे थोपा
भाई रउद खनक रोपा।
गोमकाइन तो दिसइ दइया गोंगरा कर चोपा
तेलो न मिलइ एको ठोया भाइ
रउद खनक रोपा।'[15]

इस समाज में विरह लोकगीत भी मिलते हैं। इन गीतों में मानवीय प्रेम, संवेदना, दर्द आदि का वर्णन प्रमुख रूप से होता है। औरतें व पुरुष जब अकेले होते हैं, तब ये विरह गीत गाते हैं। अपने कपड़घर में लेटा हारिल मुरमू सुन रहा था सन्तानी गीत। पता नहीं कौन था जो विरह गीत गा रहा था–

'नाले धाड़कारे सीसा सारे'
दोन आते चियो नालोम रागा
नियं मिनाँय मोर पियो नालन पियोज
कुँअरी मौन पियो डाले–डाले।'[16]

आदिवासी समाज में करमा पर्व या त्योहार बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। ये लोग गीत गाते हुए नृत्य भी करते हैं। करमा पर्व के अवसर पर ये लोग माँस और दारू शराब पीते हैं। पूजा अर्चना करते हैं। आज 'करमा' का त्योहार है। ढोल–माँदल की छाप पर झूम रहा है। गजली ठोरी.....! सूअर के माँस के साथ खूब सारी हंडिया....। करम दऊ की पूजा के बाद दावत और नृत्य गीत.....

'ओड़का खोनित ओण्डोंक लेन
छटका रेत्र लिंग लेन
ओका महल रेंचो तिरिया साड़े
ऐ ऽऽ हेरे हेरे–हेरे ऽऽऽ।'[17]

इन उपन्यासों में आदिवासी लोकगीतों में जीवन का उल्लास एवं आनन्द स्पष्ट दिखाई देता है। इनमें मानव के संस्कार, आन्दोलन, ऋतु, विरह आदि सभी गीतों का विवेचन मूल भाषा में वर्णित हुआ है। आदिवासी लोकगीत 'आदिम भाषा' को भी सुरक्षित करते देखे जा सकते हैं। इनमें आर्थिक, सामाजिक एवं राचनीतिक संस्कृति एवं सभ्यता का विश्लेषण जीवन की रसमयता एवं विविधता को प्रदर्शित करते हैं। हिन्दी उपन्यासकारों ने आदिवासी लोक जीवन के गीतों को लिपिबद्ध करके लोक मूल्यों को सुरक्षित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। अतः यह निर्विवाद सत्य है कि इस समाज में लोक गीत की परम्परा बहुत ही समृद्ध है। जिनमें उनका सम्पूर्ण जीवन, इतिहास, सामाजिक आर्थिक तथा सांस्कृतिक आयाम अभिव्यंजिक होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आदिवासी लोक भाग – 2, संपादक – रमणिका गुप्ता, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली 2012, पृष्ठ संख्या – 44।
2. माटी–माटी अरकाटी – अश्विनी कुमार पंकज, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रा. लि., नई दिल्ली 2016, पृष्ठ संख्या – 165।
3. पठार पर कोहरा – राकेश कुमार सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ संख्या –211।
4. माटी–माटी अरकाटी – अश्विनी कुमार पंकज, राधा कृष्णन प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली 2016, पृष्ठ संख्या – 22।
5. पठार पर कोहरा – राकेश कुमार सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली 2003, पृष्ठ संख्या – 224–225।
6. घूणी तपे तीर – हरिराम मीणा, साहित्य उपक्रम प्रकाशन, 2008, पृष्ठ संख्या – 321।
7. अल्मा कबूतरी – मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 2000, पृष्ठ संख्या – 42।
8. जो इतिहास में नहीं है – राकेश कुमार सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली 2020, पृष्ठ संख्या – 64–65।
9. जंगल जहाँ शुरू होता है – संजीव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000, पृष्ठ संख्या – 17।
10. माटी–माटी अरकाटी – अश्विनी कुमार पंकज, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली 2016, पृष्ठ संख्या –180।
11. ग्लोबल गाँव के देवता – रणेन्द्र, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली 2009, पृष्ठ संख्या – 38।
12. जो इतिहास में नहीं है – राकेश कुमार सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ संख्या –123।
13. रथ के पहिए – देवेन्द्र सत्यार्थी, प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली 1997, पृष्ठ संख्या – 189।
14. माटी–माटी अरकाटी – अश्विनी कुमार पंकज, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2020, पृष्ठ संख्या – 218–219।
15. जो इतिहास में नहीं है – राकेश कुमार सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023, पृष्ठ संख्या –218–220।
16. पठार पर कोहरा – राकेश कुमार सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023, पृष्ठ संख्या –220–221।
17. माटी–माटी अरकाटी – अश्विनी कुमार सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रा लि., नई दिल्ली, 2016, पृष्ठ संख्या – 61।

◈◈

. . . .

सुपर प्रकाशन

(विश्वविद्यालय स्तरीय लाइब्रेरी पुस्तकों के प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता)

हम पुस्तकों को स्पष्ट शब्द सज्जा, डिजाइन एवं उत्तम कोटि की छपाई व अत्याधुनिक बाइंडिंग के साथ प्रकाशित करते हैं। विभागाध्यक्ष, एसोसिएट प्रोफेसर, प्रवक्ता, कवि, लेखक, रचनाकार - कहानीकार अपने संस्मरण, गीत, ग़ज़ल एवं कृतियाँ या अन्य किसी भी विधा पर उत्कृष्ट ग्रन्थ अथवा रिसर्च स्कालर (शोध कर्ता) थीसिस प्रकाशन हेतु तैयार हो तो मूल प्रति (Script) भेजकर एक माह में ही अपनी प्रति को पुस्तक के आकार में प्राप्त करें।

सुपर प्रकाशन देश-विदेश के समस्त शिक्षा जगत् से जुड़े डिग्री कालेजों (Higher Education) में यू जी सी के द्वारा उपलब्ध निर्धारित मानकों के अनुसार नेशनल एवं इन्टरनेशनल पियर रिव्यूड रिसर्च जर्नल में अपने शोध लेख (Research Paper) को **'दि गुँजन'** एवं **'अभिनव गवेषणा' (मल्टी डिसिप्लिनरी क्वार्टरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड/पियर रिव्यूड रिसर्च जर्नल)** के द्वारा प्रकाशित कराने का अवसर उपलब्ध कराता है।

सुपर प्रकाशन द्वारा हिन्दी साहित्य - कला संकाय, कामर्स संकाय एवं विज्ञान संकाय तीनों फैकल्टी की पुस्तकों एवं इनसाइक्लोपीडिया का प्रकाशन एवं विक्रय विश्वविद्यालय लाइब्रेरी स्तर पर किया जाता है। हमें एक बार सेवा का अवसर अवश्य प्रदान करें।

- सर्वेश तिवारी 'राजन'

(प्रबन्ध संपादक - 'दि गुँजन' एवं 'अभिनव गवेषणा'

(मल्टी डिसिप्लिनरी क्वार्टरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड/पियर रिव्यूड रिसर्च जर्नल)

के-444 'शिवराम कृपा' विश्व बैंक बर्रा, कानपुर-208 027 (उत्तर प्रदेश)

मो0- 08896244776 E-mail:super.prakashan@gmail.com

ISSN : 2349-9273

Received: 06 May, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

भगवान महावीर की शिक्षाओं का सार्वभौमिक महत्त्व

– डॉ. कोमल चन्द्र जैन
सहायक आचार्य –
आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोधपीठ, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर – 208017 (उत्तर प्रदेश)

ईमेल–
Komal343436@gmail.com

सारांश

तीर्थंकर महावीर जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर थे। उन्होंने लगभग 2600 वर्ष पूर्व ऐसी शिक्षाएं समाज को दीं जो आज भी विश्व की अनेक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती हैं। उनकी शिक्षाओं का सार अहिंसा सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य के पाँच महान सिद्धान्तों में निहित है। इनका व्यापक दृष्टिकोण से अपनाने पर कई वैश्विक चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। यह समय है कि हम भगवान महावीर की शिक्षाओं के सार्वभौमिक महत्व को पहचाने और उन्हे अपने जीवन और विश्व के परिदृश्य में साकार करने का संकल्प लें।

भगवान महावीर सही अर्थों में लोक उद्धारक थे। उन्होंने समाज कल्याण को जो शिक्षाएं प्रदान कीं वह उनका कल्याण करने वाली थी।तीर्थंकर महावीर की शिक्षाएं राजमहल में बैठे व्यक्ति से लेकर झोपड़ी में रहने वाले समस्त मानव समूहदाय के कल्याण को थीं। लोकोद्धारक महावीर की शिक्षा का माध्यम तत्कालीन जनभाषा प्राकृत थी। यह भाषा प्राचीन काल से जनसमूह के बीच विचार सम्प्रेषण का प्रमुख साधन रही थी। यही कारण है कि तीर्थंकर महावीर ने लोककल्याणकारी उपदेश जन–भाषा प्राकृत में ही प्रदान किये, जिससे कि सभी वर्गो के शिक्षित–अशिक्षित, अमीर–गरीब सभी उनसे लाभन्वित हुए। क्योंकि भाषा ही एक ऐसा माध्यम है जो प्राणियों के व्यक्तित्व का विकास एवं समाज को एकसूत्र में पिरोकर रखने का कार्य करती है।

विश्व शांति के दूत अहिंसा के मूर्तिमान रूप प्रभु महावीर का जन्म 599 ई. पू. बिहार प्रान्त में स्थित कुण्डलपुर वैशाली नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता सिद्धार्थ काश्यप गोत्रिय ज्ञातृक क्षत्रिय थे तथा उस प्रदेश के राजा थे। रानी त्रिशला की कुक्षि से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की रात्रि में कुमार वर्द्धमान का जन्म हुआ। आपके बाल रूप के दर्शन से संजय और विजय नामक मुनिराज की तत्त्वविषयक समस्या का हो गया इसलिए उन्होंने आपको 'सन्मति' नाम से सम्बोधित किया 30 वर्ष की अवस्था में कुमार वर्द्धमान को तत्कालीन वातावरण उनका हृदय जनकल्याण की ओर मोड़ दिया।

लोकोद्धारक भगवान महावीर का जब प्रादुर्भाव हुआ था तब समाज में विषमता, असहनशीलता, अनाचार, हिंसा और स्वेच्छाचारिता का बोलबाला था, मानवीय मूल्यों की कोई पूछ नहीं थी। इस घोर त्राहि–त्राहि से भरे परिवेश ने भगवान महावीर की अंतरात्मा तथा बुद्धि को झकझोर डाला और फिर इन सभी बुराइयों को मिटाने के लिए उन्होंने जो अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य और अनेकान्तवाद के उपदेश दिये, वे लोकव्यापी और

लोकजयी होकर सर्वयुगीन एवं शाश्वत मूल्य बन गये।

'तव जिन शासनविभुवो जयति कलावपि गुणानुशासनविभवः।'

ईसा पूर्व छठी शताब्दी से लेकर आज तक श्री वीर जिन शासन प्रवर्तमान है। जिन्होंने सम्यग्दर्शनादि गुणों से अनुशासित किया और गुणानुशासन से अनुशासित भव्य जीवों का भव नष्ट हो गया इसी कारण उनके शासन का विशेष माहात्मय है। उनका शासन उस समय भी जयवन्त था और समसामयिक काल में भी जयवन्त था। ऐसे प्रभु महावीर का शिक्षा दर्शन आज हजारों वर्ष की यात्रा करने पर भी उतना ही दीप्तिमान है, जितना पहले था।

आज फिर आतंकवाद, आर्थिक संरक्षणवादी प्रवृत्ति एवं हिंसात्मक वातावरण से चारों ओर त्राहि–त्राहि मची हुई है। ऐसे वातावरण में सभी राष्ट्र एक बार फिर विश्व शान्ति की स्थापना के लिए भारत की ओर एक सच्ची आशा लिए देख रहे हैं कि आधुनिक भारत में फिर किसी महावीर का जन्म हो जो विश्व शान्ति की स्थापना करने के लिए अपने आपका उत्सर्ग कर सके। स्व. कवि एवं संगीतकार श्री रवीन्द्र जैन की पंक्तियाँ– 'फिर से वर्धमान महावीर को आधुनिक भारत में जन्म लेने के लिए आमंत्रित कर रही हैं–

'वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है,
हिंसा के बादल छाये चारो ओर हैं,
सर्वनाम की दुनिया खडी खंगार पर।
वर्धमान ही वर्तमान को समझा सकता है।
वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है।।'

भगवान महावीर एक सच्चे शिक्षा वैज्ञानिक थे, उन्होंने जो भी शिक्षायें जन कल्याण के लिए प्रदान की उनको सर्वप्रथम स्वयं अपनी आत्मा रूपी प्रयोगशाला में धारण कर प्रयोग किया फिर लोकोपकार के लिए जन समूह को प्रदान की। उन्होंने कहा कि–

'कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं।
एगे चरेज्ज धम्मं।
छन्दं निरोहेण धम्मं। तुम मैत्र तुम मित्तं।'

कामनाओं को दूर करो, दुःख स्वयं ही दूर हो जायेगा। भले ही कोई साथ चले या नहीं, धर्मपथ पर अकेले ही चलते रहो। इच्छाओं का निरोध करना ही वास्तव में मोक्ष है। आत्मन्! तू ही मेरा मित्र है। भगवान महावीर के उपदेश वीतराग के उपदेश हैं, वीतराग से अभिप्राय है कि जो स्वार्थ रहित होकर, राग–द्वेष के बिना ही संसारी प्राणियों को हित का उपदेश देते हैं। आचार्य समंतभद्र स्वामी ने लिखा–

'अनात्मार्थं विना रागैः शास्ता शास्ति सतो हितं।
ध्वनन् शिल्पिकरस्पर्शान्मुर्जः किमपेक्षते।।'

अर्थात् बिना किसी स्वार्थ और बिना किसी राग के भगवान प्राणियों के हित का उपदेश वैसे ही देते हैं जैसे कि ढोलक बजाने वाले के हाथ का स्पर्श पाकर ढोलक बिना किसी अपेक्षा के ध्वनि करती है अर्थात् ढोलक बजती है।

ऐसे वीतराग त्रिलोकगुरु की शिक्षा में अमोघ शक्ति है, प्रभावशीलता है कि जो प्राणि श्रवण करे, विश्वास करे और आचरण करे उसकी सुप्त चेतना प्रबुद्ध हो सकती है, उसके अन्तरग पटल पर छाये मोह–आवरण हट सकते हैं और विवेक का दिव्य प्रकाश जगजगा सकता है। वीतराग भगवान महावीर ने किसी नये धर्म एवं शिक्षादर्शन की स्थापना नही की थी। बल्कि युगादि के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव द्वारा प्रवर्तित मानवता रूपी धर्म एवं शिक्षा दर्शन का विमोचन किया और जन कल्याण एवं आत्म विकास के लिए विश्वशान्ति का संदेश दिया।

भगवान महावीर सच्चे विश्व बन्धुत्व के प्रतीक और अहिंसा के पुजारी थे। उन्होंने 'पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः स्थावराः' पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और वनस्पति आदि एकेन्द्रिय जीव को भी जीव कहा। सभी जीवों के प्रति करुणा भावना प्रकट की और कहा कि एक इन्द्रिय से लेकर पचेन्द्रिय सभी जीव जीना चाहते हैं।कोई भी जीव मरना नही चाहता। चाहे वह नाली का कीड़ा क्यो न हो? उनकी दृष्टि में केवल मनुष्य का प्राण घात करना ही हिंसा नहीं बल्कि राग और द्वेष के कारण मन में भी किसी जीव के मारने का या आत्मघात का चिन्तन करना भी हिंसा है।

'यस्मात्सकशायः सन् हन्त्याात्मा प्रथम मात्मनात्मानम्।
पश्चाज्जायेत न वा हिंसा प्राण्यन्तराणां तु।।'

घात (मारना) दो प्रकार का है, एक आत्मघात और दूसरा परघात। जिस समय आत्मा में अपने आप को मारने का कशाय भाव उत्पन्न होता है, उसी समय आत्मघात हो जाता है। आत्मघात और परघात दोनों ही हिंसा हैं। चलचित्र (टी.वी.), कुश्ती आदि मनोंरजन के माध्यम से एक दूसरे प्रणियों को लड़ते देखकर अन्य देखने वाले जो अच्छा कहते है और प्रसन्न होते है वे सब हिंसा के भागी होते हैं।

भगवान महावीर ने सभी जीवों के लिए जियो और जीने का संदेश दिया और कहा कि–

'सव्वे पाणा पियाउया सहुसाया दुक्खपडिकुला अप्पियवहा।
पियजीविणो, जीविउकामा सव्वेसिं जीविय पिय।।'

सभी जीवों को अपना आयुष्य (जीवन) प्रिय है, सुख अनुकूल है और दुःख प्रतिकूल है। वध सभी को अप्रिय लगता है तथा जीना सबको प्रिय लगता है। प्राणी मात्र जीवित रहने की कामना करने वाले हैं। सबको अपना जीवन प्रिय लगता है।

'जं इच्छसि अप्पणतो, जं च न इच्छसि अप्पणतों।
तं इच्छ परस्स वि, एत्तियगं जिणसासणं।।'

जो तुम अपने लिए अच्छा समझते हो, तुम्हे जो प्रिय है, वही तुम दूसरो के लिए भी सोचो और करो, जो तुम्हे अपने लिए अप्रिय लगता है, वह दूसरो के लिए भी मत करो। सब जीवों को अपने समान समझो और किसी को दुख न दो। उन्होंने अहिंसा को ही मानव का परम धर्म कहा– ''अहिंसा परमो धर्म''भगवान महावीर की दृष्टि में अहिंसा का अर्थ मन, वचन, और काय (शरीर) के द्वारा व्यावहारिक जीवन में हम किसी प्राणी को अपने स्वार्थ रक्षा के लिए दुःख न दें। ''आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'' इस भावना के साथ दूसरे व्यक्ति से ऐसा व्यवहार न करें, जैसा हम अपने लिये नही चाहते, दूसरे से ऐसा व्यवहार करें जैसा की हम उनसे अपने लिए अपेक्षा करते हैं।

वर्तमान समाज में जतिवाद एवं कन्या भ्रूण हत्या और बलात्कार आदि अपराध तीव्र गति से बढ रहे हैं, इनमें कन्या भ्रूण हत्या एवं परस्त्री–गमन एक जघन्य अपराध हैं। इन अपराधों के पीछे लडका और लडकी में परस्पर असमानता और टी.वी, सिनेमा आदि के द्वारा अश्लीलतापूर्ण चित्रों का प्रचार प्रमुख कारण है। समाज की दृष्टि में लड़का कुल का उद्धारक होता है, लड़के ही उनके वंश को आगे बढ़ाते हैं और माता–पिता का नाम रोशन करते हैं। इस रूढ़िवादी मानसिकता के कारण लड़की समाज के ऊपर भार बनकर रह गयी है। जिसके कारण कन्या भ्रूण हत्या का रोग समाज में तीव्र गति से फैल रहा है। भगवान महावीर, बुद्ध एवं गाँधी जैसे प्रेरकों के इस अहिंसा प्रधान देश में हिंसा का नया रूप भारतीय संस्कृति का उपहास हैं। भगवान महावीर की वाणी में इस कुकृत्य को नरक गति पाने का कारण माना गया है।

सत्य उनके लिये सर्वोपरि सिद्धान्त था। वे वचन और चिंतन में सत्य की स्थापना का प्रयत्न करते थे। सत्य वचन ही जिनके प्राण थे। राजा युधिष्ठिर और राजा हरिचन्द की गौरव गाथा आज भी भारत भूमि में चारों ओर व्याप्त है। लेकिन वर्तमान में देखा जाये तो देश के उच्च पद पर आसीन लोग भी उन्ही महापुरुषों की साक्षी लेकर गलत कार्य करने से पीछे नहीं हटते तथा अपने को सही साबित करने के लिए सत्य को नकार देते हैं। इस विश्व में सभी सन्त पुरुषों ने झूठ अर्थात् असत्य वचन की घोर निन्दा की है। क्योंकि वह सभी प्राणियों के लिए अविश्वसनीय है। अतः असत्य वचन का परित्याग करना चाहिए।

'मुसावाओ य लोगम्मि, सव्वसाहहिं गरहिओ।
अविस्सासोय भूयाण, तम्हा मोस विवजए।।'

असत्य वचन बोलने वाले लोगो का लोक में अपयश होता है तथा लोगों से परस्पर बैर भी बढ़ता है, जिससे उनके हृदय में सतत संक्लेश की अभिवृद्धि होती रहती है। भगवान महावीर ने कहा कि ''ओएतहीय फरुस वियाणे।'' अर्थात् सत्य वचन भी यदि कठोर हो, तो वह मत बोलो। उन्होंने हमेशा हितकारी सत्य बोलने का उपदेश दिया और कहा कि ''सच्चेण महा समुद्दमज्झे वि चिट्ठति, न निमज्जति।'' सत्य वचन के प्रभाव से मनुष्य महासमुद्र में भी सुरक्षित रहते हैं डूबते नहीं तथा सत्याभिभूत बुद्धिमान मनुष्य सभी संकटों को नष्ट कर डालते हैं।

भगवान महावीर एक सच्चे क्रान्तिकारी, समाज सुधारक एवं लोकोद्धारक हैं। उनकी दृष्टि में सभी जीव समान है और सभी जीवों की आत्मा में समान शक्ति विद्यमान है। कवि श्री मनोहर लाल वर्णी ''सहजानन्द'' ने अपने आत्मकीर्तिन में लिखा है कि–

'मैं वह हूँ जो है भगवान, जो मैं हूँ वह है भगवान।
अंतर यही ऊपरी जान, वे विराग मैं राग वितान।।'

मेरा रूप भगवान के समान ही है, मैं भी भगवान बन सकता हूँ, जो मेरी आत्मा है वह भी भगवान की आत्मा के समान द्विव्य शक्तिमय है। बस अंतर यही है कि मैं आज भी राग द्वेष से युक्त हूं और उन्होंने इन सब से मुक्त होकर मोक्ष (सिद्धशिला) पद को प्राप्त कर लिया है।

अमीर और गरीब के बीच की खाई को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि कोई भी व्यक्ति आवश्यकता से अधिक किसी भी वस्तु का संग्रह अन्यायपूर्वक न करे और संग्रहीत वस्तु को प्रसन्नतापूर्वक ऐसे व्यक्तियों को बांट दे जिनको उनकी नितान्त आवश्यकता है। यही सच्चा समाजवाद है। इसी को भगवान महावीर ने अपरिग्रह की संज्ञा दी है। वर्तमान मानव समाज में फैल रही पूंजीवाद तथा आर्थिक संरक्षणवादी प्रवृत्ति सभी राष्ट्रों के लिए

अभिशाप बन चुकी है। जिसके कारण समाज में आतंकवाद, आत्महत्या आदि पाप कार्य करने की भावना उत्पन्न हो रही है। इन सब पापों से समाज और देश को भगवान महावीर का सिद्धान्त अपरिग्रहवाद ही बचा सकता है।

प्राणिमात्र के संरक्षक प्रभु महावीर ने कहा कि समाज और राष्ट्र का कल्याण अपरिग्रह की भावना से हो सकता है। अपरिग्रह का अर्थ है– वस्त्र मकान, धन–धान्य आदि में आसक्ति अर्थात् इच्छा न रखना अपरिग्रह है। अपरिग्रह व्रत पालन करने के लिए महावीर ने समानीकरण की बात कही। उन्होंने कहा कि वस्तु को पाने की उतनी इच्छा रखे जितने में हमारी और हमारे परिवार की जरूरत पूर हो सके, इससे अधिक नहीं। यही भावना महान कवि रहीमदास जी ने भी व्यक्त की है–

'रहिमन इतना दीजिये जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाय।।'

परन्तु पदार्थ और उपयोगिता की समझ का अभाव होने के कारण मानव की जिन्दगी एक भागदौड़ बन के रह गई है। ऐसी परिस्थिति में शान्ति की अनुभूति कैसे हो सकती है इसके लिए तो अपरिग्रही होना आवश्यक है।

भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित अनेकान्तवाद एवं स्याद्वाद का सिद्धान्त वर्तमान में वैश्विक सामाजिक समस्या समाधान के लिए एक अच्छा अस्त्र बन सकता है जो समाज और राष्ट्र का नव निर्माण कर सकता है। कोई भी राष्ट्र या मानव समाज एक पक्षीय दृष्टिकोण से समूचे सत्य को व्यक्त करके विश्व में शान्ति, प्रेम, सौहार्द आदि की स्थापना नहीं कर सकता, उसके लिये अनेकान्तात्मक और स्याद्वादात्मक सापेक्ष दृष्टिकोण को स्थापित करना ही होगा तभी विश्वशांति स्थापित हो सकती है।

इस प्रकार भगवान् महावीर ने समाज को अभ्युन्नत करने के लिए सभी प्रकार के प्रयत्न किए। उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अहिंसा का महत्त्व प्रदशित करके मानवता के संरक्षण में अधिकाधिक योगदान दिया।

जन जीवन में ज्योति जला दी, जिसने आत्मोत्थान की।
वीर तुम्हारा जीवन दर्शन देता है आलोक जगत को।
वीर तुम्हरे संदेशों से, त्राण मिला है, मानवता को।
जिओ ओर जिने दो नारा, हिंसा का करता उन्मूलन।
सत्य तुम्हारा मूर्त रूप हो, मिथ्या का करता उन्मूलन।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जैन दर्शन – डॉ. महेन्द्र कुमार जैन, न्यायाचार्य, गणेशवर्णी शोध संस्थान, वाराणसी, पृष्ठ संख्या – 6।
2. स्वयम्भूस्त्रोत्र – आ. समन्तभद्र स्वामी, गणेशवर्णी शोध संस्थान, वाराणसी, पृष्ठ संख्या –172।
3. भगवान महावीर, प्रस्तावना, पृष्ठ संख्या – 6।
4. रत्नकरण्डश्रावकाचार – आ. समंतभद्र स्वामी, वीर सेवा मंदिर सस्ती ग्रंथमाला, दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 25।
5. तत्त्वार्थ सूत्र 13, आचार्य उमास्वामी, गणेशवर्णी शोध संस्थान वाराणसी, पृष्ठ संख्या – 37 ।
6. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय – श्री अमृतचन्द्राचार्य श्लोक, पृष्ठ संख्या – 47।
7. भगवान महावीर प्रस्तावना – अहिंसा सूत्र – 37, पृष्ठ संख्या – 29।
8. भगवान महावीर के हजार उपदेश, श्लोक – 77, पृष्ठ संख्या – 20
9. भगवान महावीर के हजार उपदेश – श्लोक–100, पृष्ठ संख्या –24 ।

ISSN : 2349-9273

Received: 08 May, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

विभिन्न युगों में नारी

– प्रो. अल्पना राय
प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग,
जुहारी देवी गर्ल्स (पी. जी.) कालेज,
कानपुर–208004 (उत्तर प्रदेश)

ई–मेलः
tprabhatrai@gmail.com

सारांश

आज की नारी अपने लक्ष्यों और मूल्यों को स्वयं निर्धारित करने के प्रयास में खुद को छल रही है। स्वतंत्रता के नाम पर अश्लील प्रदर्शन से खुद को बचाने की जिम्मेदारी नारी की स्वयं की है अन्यथा पुनः भोग की वस्तु बनने से अपने को बचा नहीं पायेगी। नारी का अश्लील प्रस्तुतीकरण हमारे भावी कर्णधारों को दिग्भ्रमित कर रहा है जिससे बलात्कार, हत्या, अपहरण, सैक्स स्कैण्डल आदि की घटनायें आये दिन अखबारों की सुर्खियाँ बनती हैं। इस सामाजिक प्रदूषण को रोकने का एक मात्र तरीका यह है कि हम रचनात्मक सोच के साथ हर स्तर पर आन्दोलन छेडकर उसके विरुद्ध जनमत तैयार करें तथा नारी की प्रतिभा का सही आंकलन कर उसको समाज में उचित स्थान प्रदान करें। इसके लिये नारी की सक्रिय भागीदारी एवं उसकी स्वेच्छा एवं ईमानदारी से की गयी सहभागिता अपेक्षित है। नारी को समाज में अपना खोया हुआ स्थान स्वयं प्राप्त करना होगा तथा अपनी गरिमा पुर्नस्थापित करनी होगी।

हमारे प्राचीन ग्रन्थों में नारी को विशिष्ट स्थान दिया गया है। प्राचीन काल में नारी की पूजा की जाती थी। हमारे धार्मिक ग्रन्थों में अनेक देवियों की पूजा–उपासना का विधान मिलता है। वैदिक काल में नारी को समाज में उच्चतम स्थान पर रखा जाता था। समाज मातृ सत्तात्मक था तथा स्त्री को सर्वोच्च शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। उनका उपनयन संस्कार होता था तथा वे ब्रह्मचर्य का भी पालन करती थीं। अर्धनारीश्वर की कल्पना उनके पुरुष के समान अधिकार की परिचायक तथा स्त्री–पुरुष के संतुलित सम्बन्धों की देन थी। विशिष्टतम स्थान को प्राप्त करने का अधिकार नारी को यूँ ही नहीं प्रदान किया गया था, अपितु उसकी असीम शक्तियों, प्रतिभाओं तथा क्षमताओं के मद्देनजर उन्हें यह स्थान प्रदान किया गया था। नारी को भी पुरुषों के समान यज्ञ करने का अधिकार था तथा वे शिक्षा प्रदान करने का कार्य भी पूरे प्रभुत्व के साथ करती थीं। वेदों में अनेक स्थलों पर रोमाला, घोषाल, सूर्या, अपाला, विलोमी, सावित्री, यमी, श्रद्धा, कामायनी, विश्वम्भरा, देवयानी आदि विदुषियों के नाम प्राप्त होते हैं। इन स्त्रियों ने अपनी वाक्पटुता, बुद्धिमत्ता तथा चातुर्य के द्वारा अपने को साबित किया। इसके अलावा राजनीति तथा युद्ध विद्या में भी योग्यता प्राप्त स्त्रियों के उदाहरण मिलते हैं।

राजा जनक के दरबार में गार्गी ने याज्ञवल्क्य को शास्त्रार्थ की चुनौती दी तथा रामायण में कौशल्या तथा तारा को मंत्रविद् तथा महाभारत में द्रौपदी को पंडित कहा गया। परन्तु रामायण महाभारत काल में स्त्रियों के अधिकार पहले जैसे नहीं रहे। वर्ण व्यवस्था में कठोरता आयी तथा नारी घर

गृहस्थी तक सीमित रहने लगी। बहुपत्नी प्रथा तथा अनुलोम विवाह के कारण स्त्री उपभोग की वस्तु बनने लगी। पुरुष के मनमाने अधिकार का परिणाम सीता तथा द्रौपदी को भुगतना पड़ा। किशोरियों तथा स्त्रियों को बलात् दासी बना दिया गया तथा धर्म की आड़ में वेश्यावृत्ति की शुरुआत हुई। इस काल में नारी को पिता, पति तथा पुत्र के अधीन रखे जाने की शुरुआत हुई इस से नारी पुरुष की सहगामिनी न होकर अनुगामिनी बन गयी।

बौद्ध काल में महात्मा बुद्ध ने स्त्री को सांसारिक माया एवं मोह का बन्धन माना था, अतः बौद्ध संघों में स्त्रियों का कोई स्थान नहीं था परन्तु कालान्तर में स्त्रियों को संघों में प्रवेश दिया गया किन्तु उनके लिये अलग बिहारों की स्थापना की गयी। इस काल में अनेक विद्ववान स्त्रियों ने धर्म प्रचार किया, विदेश गयीं तथा शासन का भार भी संभाला परन्तु इस काल में सामान्य स्त्री उपेक्षित ही रही। उपनयन संस्कार की अनिवार्यता समाप्त हो जाने के कारण बाल विवाह का प्रचलन हो गया तथा स्त्री का सम्मान भी समाज में कम हो गया।

11वीं शताब्दी में मुगल काल के अभ्युदय के साथ ही नारी की स्थिति में अकल्पनीय परिवर्तन आया। बार–बार के आक्रमणों से प्रभावित हमारे समाज की रक्षा के लिये पुरुषों का सामने आना उनके वर्चस्व को बढ़ाता गया तथा विदेशी आक्रमणकारियों के अत्याचारों से बचाने के लिये स्त्रियों को घर की चाहरदीवारी में कैद कर दिया गया। स्त्रियों की स्थिति दिन प्रतिदिन बदतर होती चली गयी तथा पुरुषों का वर्चस्व बढ़ता चला गया। स्त्रियों को भोग विलास की वस्तु मानने वाले मुस्लिम समाज ने हमारे वैदिक परिपाटी को बुरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया। आततायियों की नजरों से अपनी स्त्रियों को बचाने के लिये पर्दा प्रथा का प्रचलन बढ़ा। विधवा स्त्रियों की अस्मिता को बचाने के लिये सती प्रथा का प्रारम्भ हुआ। स्त्री शिक्षा हाशिये पर चली गयी तथा समाज पितृ सत्तात्मक होता चला गया। शक्ति की उपासना करने वाला समाज शक्ति को रौंदता चला गया जिसके परिणाम स्वरूप शक्तिहीन, लाचार, दमित, स्त्री का कारुणिक चेहरा समाज के सामने आया। यद्यपि मध्यकालीन इतिहास में रजिया बेगम, चाँदबीबी, ताराबाई, अहिल्याबाई, आदि वीरांगनाओं ने शासन संचालन में ख्याति प्राप्त की किन्तु इन चन्द स्त्रियों के उदाहरणों से यह नहीं कहा जा सकता कि सामान्य स्त्री की स्थिति किसी तरह संतोषजनक थी।

18वीं शताब्दी के अन्त में मुगल काल के पतन के साथ ही ब्रिटिश काल का अभ्युदय हुआ। ब्रिटिश काल में ईसाई धर्म के आगमन के साथ स्त्रियों की अवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया। इस काल में अंग्रेजों ने बालिकाओं की शिक्षा की तरफ ध्यान देना प्रारम्भ किया। राजा राममोहन राय, विवेकानन्द आदि ने समाज में स्त्रियों की दशा सुधारने का बीड़ा उठाया तथा भारत में पुर्नजागरण की नींव रखी। राजाराम मोहन राय के ही प्रयास का परिणाम था कि बाल विवाह तथा सती प्रथा के अन्त की शुरुआत हुयी तथा विधवा विवाह जैसी सामाजिक सुप्रथा की नींव पड़ी। विवेकानन्द ने भी नारी के पुनरुद्धार पर जोर देते हुए कहा कि 'जिस देश या राष्ट्र में नारी पूजा नहीं होती, वह देश या राष्ट्र कभी महान या उन्नत नहीं हो सकता। नारी रूपी शक्ति की अवमानना करने से ही आज हमारा शत प्रतिशत पतन हुआ है।'[1]

गाँधी जी भी विधवा विवाह के बड़े समर्थक बने तथा वे बाल विवाह को विवाह मानने के पक्ष में ही नहीं थे। उस समय देश को ब्रिटिश प्रभुत्व से आजाद कराने के संकल्प के साथ अनेक भारतीय स्त्रियाँ सामने आयीं जिनके अतुलनीय योगदान को भूला नहीं जा सकता।

स्वतंत्रता पश्चात नारी को हमारे संविधान में पुरुष के बराबर का अधिकार प्रदान किया गया संविधान के अनुच्छेद 14 एवं 15 में पुरुषों एवं स्त्रियों में कोई अन्तर न करते हुये उनको समानता का अधिकार दिया गया। नारी को पुरुष के समान ही माना गया है तथा उनके विरुद्ध शोषण करने वाले के लिये दण्ड का प्रावधान भी किया गया है। वैवाहिक जीवन की समरसता के लिये हिन्दू विवाह अधिनियम 1952 तथा विशेष विवाह अधिनियम 1956 बनाया गया। दहेज निवारक अधिनियम 1961, बालविवाह (संशोधन अधिनियम) 1983 के साथ–साथ महिला का अश्लील प्रस्तुतीकरण विरोधी कानून 1986 ने नारियों को विधिक संरक्षण प्रदान किये।[2]

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 14 के अनुसार– "भारत राज्य क्षेत्र के किसी व्यक्ति को विधि के समक्ष समता से अथवा विधियों के समान संरक्षण से वंचित नहीं किया जाएगा।'' "समानता का तात्पर्य यहाँ पर यह है कि स्त्री और पुरुष में किसी प्रकार का लिंग भेद नहीं है तथा यह अधिकार स्त्री और पुरुष दोनों को समान रूप से प्राप्त है।'

अनुच्छेद 15 के अनुसार– "राज्य केवल धर्म, मूल, वंश, जाति, लिंग,जन्मस्थान के आधार पर नागरिकों के बीच

कोई विभेद नहीं करेगा।'' भारतीय संविधान में स्पष्ट है कि पुरुष एवं महिला को समान अधिकार प्रदान किये गये हैं, इतना ही इसी अनुच्छेद के खण्ड 3 में स्त्रियों के लिए विशेष व्यवस्था भी की गई है क्योंकि महिलाओं की स्वाभाविक प्रकृति के कारण उन्हें विशेष संरक्षण की आवश्यकता होती है।

अनुच्छेद–19 में महिलाओं को स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान किया गया है, ताकि वह स्वतंत्र रूप से भारत के क्षेत्र में आवागमन, निवास एवं व्यवसाय कर सकती हैं। स्त्रीलिंग होने के कारण किसी भी कार्य से उनको वंचित करना मौलिक अधिकार का उल्लंघन माना गया है तथा ऐसी स्थिति में कानून की सहायता ले सकेगी।

अनुच्छेद 23–24 द्वारा महिलाओं के विरुद्ध वाले शोषण को नारी गरिमा के लिए उचित नहीं मानते हुए महिलाओं की खरीद–ब्रिकी, वेश्यावृत्ति लिए जबरदस्ती करना, भीख मंगवाना आदि को दण्डनीय माना गया है। इसके लिए सन् 1956 में एक्ट भी भारतीय संसद द्वारा पारित किया गया ताकि महिलाओं के विरुद्ध होने वाले सभी प्रकार के शोषण को समाप्त किया जा सके। आर्थिक न्याय प्रदान करने हेतु अनुच्छेद 39 (क) में स्त्री को जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार एवं अनुच्छेद 39 (द) में समान कार्य के लिए समान वेतन का उपबन्ध है।

अनुच्छेद 42 के अनुसार– महिला को विशेष प्रसूति अवकाश प्रदान करने की बात कही गई है। अनुच्छेद 46 इस बात का आह्वान करता है कि राज्य दुर्बल वर्गों के शिक्षा तथा अर्थ सम्बन्धी हितों की विशेष सावधानी से अभिवृद्धि करेगा तथा सामाजिक अन्याय एवं सब प्रकार के शोषण से संरक्षा करेगा।

संविधान के भाग 4 के अनुच्छेद 51(क) (ङ) में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि हमारा दायित्व है कि हम हमारी संस्कृति की गौरवशाली परम्परा के महत्व को समझें तथा ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो कि स्त्रियों के सम्मान के खिलाफ हो।

अनुच्छेद 243 (द) (3) में प्रत्येक पंचायत में प्रत्यक्ष निर्वाचन से भरे गये स्थानों की कुल संख्या के 1/3 स्थान स्त्रियों के लिए आरक्षित रहेगें और चक्रानुक्रम से पंचायत के विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों में आवंटित किये जाएंगे। अनुच्छेद 325 के अनुसार निर्वाचक नामावली में महिला एवं पुरुष दोनों को ही समान रूप से सम्मिलित होने का अधिकार प्रदान किया गया है। अनुच्छेद 325 द्वारा संविधान निर्माताओं ने यह दर्शाने की कोशिश की है कि भारत में पुरुष और स्त्री को समान मतदान अधिकार दिये गये हैं।

महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधों एवं अत्याचारों के निवारण के लिए राज्य द्वारा विभिन्न अधिनियम पारित किये गये हैं, ताकि महिलाओं को उनका अधिकार मिल सके एवं सामाजिक भेदभाव से उनकी सुरक्षा हो सके। भारतीय दण्ड संहिता में भी महिलाओं पर होने वाले अत्याचार एवं निर्दयता के विरुद्ध व्यवस्था की गई है।

धारा 292 से 294 तहत विशिष्टता और सदाचार को प्रभावित करने वाले मामलों पर रोक लगाई गयी है। इसके अनुसार अगर कोई स्त्रियों की नंगी तस्वीरें प्रदर्शित करता है अथवा क्रय–विक्रय करता है अथवा भोंडा प्रदर्शन करता है तो ऐसे व्यक्ति को दो वर्ष तक की सजा एवं 2 हजार रुपया तक जुर्माना अथवा दोनो ही सजाओं का प्रावधान है। धारा 312 से 318 में गर्भपात करना, अजन्में शिशुओं को नुकसान पहुँचाने, शिशुओं को अरक्षित छोड़ने और जन्म छिपाने के विषय में दण्ड प्रावधान किया गया है। धारा 354 के तहत अगर कोई व्यक्ति किसी स्त्री की लज्जा भंग करता है अथवा करने के उद्देश्य से आपराधिक बल प्रयोग करता है तो उसे 2 वर्ष की सजा अथवा जुर्माना अथवा दोनों से दंडित किये जाने का प्रावधान है। धारा 361 के अनुसार यदि किसी महिला की आयु 18 वर्ष से कम है और उसे कोई व्यक्ति उसके विधि पूर्व संरक्षक की संरक्षकता से बिना सम्मति के या बहला अथवा फुसला कर ले जाता है तो वह व्यक्ति अपहरण का दोषी होगा तथा धारा 363 से 366 में दण्ड का प्रावधान किया गया है। धारा 372 के तहत अगर किसी 18 वर्ष से कम आयु की महिला को किसी वेश्यावृत्ति के प्रयोजन लिए बेचा जाने पर दोषी व्यक्ति को 10 वर्ष तक की सजा व जुर्माना अथवा दोनों की सजा दी जा सकेगी।

धारा 375 में बलात्कार को परिभाषित किया गया है एवं धारा 376 में बलात्कार के लिए दण्ड का प्रावधान है। धारा 498 (अ) में प्रावधानित किया गया है कि अगर कोई पति अथवा उसका कोई रिश्तेदार विवाहित पत्नी के साथ निर्दयतापूर्वक दुर्व्यवहार करता है अथवा दहेज को लेकर यातना देता है तो न्यायालय उसे 2 साल तक की सजा दे सकता है। धारा 509 के तहत अगर कोई व्यक्ति स्त्री की लज्जा का अनादर करने के आशय से कोई शब्द कहता है,

कोई ध्वनियाँ, कोई अंग विक्षेप करता है या कोई वस्तु प्रदर्शित करता है अथवा कोई ऐसा कार्य करता है जिससे किसी स्त्री की एकान्तता पर अतिक्रमण होता है तो ऐसा व्यक्ति एक वर्ष तक की सजा एवं जुर्माना अथवा दोनों से दण्डित किया जायेगा।

हमारे देश मे विभिन्न समयों में प्रचलित कुरीतियों एवं कुप्रथाओं को मुक्त कराने हेतु बहुत से अधिनियम पारित किये गये है तथा महिलाओं को सुरक्षा एवं अधिकार देने हेतु भी अधिनियम पारित किये गये हैं, जो निम्न हः–

(i) राज्य कर्मचारी बीमा अधिनियम 1948।

(ii) दि प्लांटेशनस लेबर अधिनियम 1951।

(iii) परिवार न्यायालय अधिनियम, 1954।

(iv) विशेष विवाह अधिनियम, 1954।

(v) हिन्दू विवाह अधिनियम 1955।

(vi) हिन्दू उत्तराधिकारी अधिनियम, 1956 (संशोधन 2005)।

(vii) अनैतिक व्यापार निवारण अधिनियम 1956।

(viii) प्रसूति प्रसूविधा अधिनियम 1961 (संशोधित 1995)।

(ix) दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961।

(x) गर्भ का चिकित्सकीय समापन अधिनियम 1971।

(xi) ठेका श्रमिक (रेग्युलेशन एण्ड एबोलिशन) अधिनियम 1976।

(xii) दि इक्वल रिमुनरेशन अधिनियम 1976।

(xiii) बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006।

(xiv) आपराधिक विधि (संशोधन) अधिनियम 1983।

(xv) कारखाना (संशोधन) अधिनियम 1986।

(xvi) इन्डिकेंट रिप्रेसेन्टेशन आफ वुमेन एक्ट 1986।

(xvii) कमीशन आफ सती (प्रिवेन्शन) एक्ट, 1987।

(xviii) घरेलू हिंसा से संरक्षण अधिनियम 2005।

महिलाओं की दशा सुधारने हेतु भारत सरकार द्वारा सन् 1985 में महिला एवं बाल विकास विभाग की स्थापना तथा 1992 में राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना की गई तथा देश में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाने लगा। भारत सरकार द्वारा 2001 को महिला सशक्तीकरण वर्ष भी घोषित किया गया। इसी प्रकार विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों का क्रियान्वयन भी सरकार द्वारा समय–समय पर किया गया है। जिनमें प्रमुख हैं– बालिका समृद्धि योजना, किशोरी शक्ति योजना, बालिका बचाओं योजना, इंदिरा महिला योजना, सरस्वती सायकल योजना स्वयं सिद्धा योजना, महिला समाख्या इत्यादि।

आज नारी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिला कर प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। अंतरिक्ष की ऊँचाईयों से लेकर समुद्र की गहराइयों तक कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ नारी ने अपनी अटूट, अकल्पनीय तथा असीम क्षमता का प्रदर्शन न किया हो। समाज आज भी पुरुष प्रधान ही है, परन्तु आज की नारी पुरुष के वर्चस्व को तोड़ने का माद्दा रखती है। वह पुरुष को अपने से नीचे नहीं लाना चाहती अपितु समाज में उसके बराबर का स्थान चाहती है, यह उसका अधिकार भी है और आज की आवश्यकता भी। क्योंकि स्त्री ने अपने को सभी क्षेत्रों में पुरुष के बराबर क्षमतावान साबित किया है। अब हमारे समाज का यह कर्तव्य बनता है कि वह नारी को उसका खोया हुआ स्थान प्रदान करे अन्यथा समाज एक बार फिर पतन की तरफ अग्रसर होता जायेगा। डी. एच. लारेंस ने कहा था कि– 'औरत इस धरती की वह अनुपम कृति है जो न तो मनोरंजन का साधन है और नही पुरुष की वासना का शिकार है, वह व्यक्ति की चाह की वस्तु नहीं अपितु वह तो पुरुष का दूसरा ध्रुव है।"[3]

स्त्रियों को भोग विलास की वस्तु मानने वालों को यह समझना होगा कि नारी करुणा, त्याग, ममता, क्षमता, शक्ति का पर्याय है और समाज के उत्थान में उनका अपूर्व योगदान भुलाया नहीं जा सकता। खेल हो या शिक्षा, व्यापार हो या नौकरी, घर हो या बाहर हर स्थान पर नारी ने अपना सिक्का जमा लिया है। अब समाज को अपनी आँखें खोलनी होगी तथा उसे पुनः नारी को शक्ति की देवी का स्थान देना होगा। के. एम. पाणिक्कर के अनुसार– 'कुछ मेधावी महिलाओं ने जो उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है वह भारत के लिये उतने महत्व की बात नहीं है जितनी यह बात है कि कट्टरपंथी और पिछड़े समझे जाने वाले ग्रामीण व्यक्तियों के विचार भी करवट लेने लगे हैं। यह महिलायें उन सामाजिक बन्धनों से बहुत कुछ मुक्त हो चुकी है, जिन्होंने उन्हें रूढ़ियों और 'बाबा वाक्य प्रमाण' के विचार धारा द्वारा पकड़ रखा था। 'निश्चित ही भारतीय महिलाओं की स्थिति में होने वाला यह परिवर्तन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।'[4]

नारी को भी यह ध्यान रखना होगा कि वह स्वतंत्रता को स्वच्छन्दता समझने की भूल न करें। आज की नारी अपने लक्ष्यों और मूल्यों को स्वयं निर्धारित करने के प्रयास में खुद को छल रही है। स्वतंत्रता के नाम पर अश्लील प्रदर्शन से खुद को बचाने की जिम्मेदारी नारी की स्वयं की है अन्यथा पुनः भोग की वस्तु बनने से अपने को बचा नहीं पायेगी। नारी का अश्लील प्रस्तुतीकरण हमारे भावी कर्णधारों को दिग्भ्रमित कर रहा है जिससे बलात्कार, हत्या, अपहरण, सैक्स स्कैण्डल आदि की घटनायें आये दिन अखबारों की सुर्खियाँ बनती हैं।

इस सामाजिक प्रदूषण को रोकने का एक मात्र तरीका यह है कि हम रचनात्मक सोच के साथ हर स्तर पर आन्दोलन छेडकर उसके विरुद्ध जनमत तैयार करें तथा नारी की प्रतिभा का सही आंकलन कर उसको समाज में उचित स्थान प्रदान करें। इसके लिये नारी की सक्रिय भागीदारी एवं उसकी स्वेच्छा एवं ईमानदारी से की गयी सहभागिता अपेक्षित है। नारी को समाज में अपना खोया हुआ स्थान स्वयं प्राप्त करना होगा तथा अपनी गरिमा पुर्नस्थापित करनी होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अंसारी, एम. ए. – महिला और मानवाधिकार, ज्योति प्रकाशन, जयपुर 2003, पृष्ठ संख्या – 328।
2. अंसारी, एम. ए. – महिला और मानवाधिकार, ज्योति प्रकाशन, जयपुर 2003, पृष्ठ संख्या – 328।
3. अंसारी, एम. ए., – महिला और मानवाधिकार, ज्योति प्रकाशन, जयपुर 2003, पृष्ठ संख्या – 329।
4. आहूजा राम – क्राइम अगेनस्ट वुमेन, जयपुर, रावत पब्लिकेशन्स, 1987।
5. कौशिक आशा – नारी सशक्तिकरण, प्रतिशत निमर्श एवं यथार्थ, प्रोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर 2004 पृष्ठ संख्या – 200।
6. गुप्ता कमलेश कुमार – महिला सशक्तीकरण, बुक एनक्लेव, जयपुर, 2005, पृष्ठ संख्या – 94।
7. टण्डन माया, राजस्थान विश्वविद्यालय संस्था/वा. शक्ति, अप्रैल–2003 से मार्च–2005, पृष्ठ संख्या – 37, 38।
8. डा. परीक अंजु – भारतीय नारी की विविध स्थितियों का विवेचनात्मक अध्ययन, शोध समीक्षा और मूल्यांकन (अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका)– आई.एस.एस.एन. –0974–2832 Vol - II Issue - 5 (Nov- 2008 to Jan 2009)
9. देसाई नीरा और गैत्रयी कृष्ण राज – वीमेन एण्ड सोसायटी इन इण्डिया अजन्त पब्लिकेशंस, दिल्ली 1987, पृष्ठ संख्या – 46।
10. पाण्डेय, डॉ. जयनारायण – भारत का संविधान, सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी दिल्ली, 41वाँ संस्करण 2008।
11. यादव राजाराम – भारतीय दण्ड संहिता, 1860 पंचम संस्करण 2005, सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद।

◈◈

विज्ञापन एवं निवेदन

रिसर्च जर्नल में विज्ञापन के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रबन्ध सम्पादक के पते पर सम्पर्क करें। **'अभिनव गवेषणा'** (मल्टी डिस्प्लनरी क्वार्टरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड/पियररिव्यूड रिसर्च जर्नल) आप सभी की एक स्ववित्त पोषित पत्रिका है, अतः पत्रिकी के लिए किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग सराहनीय होगा।? कृपया अपनी सहयोग राशि चेक, ड्राप्ट अथवा आर टी जी एस के माध्यम से निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें। - सम्पादक - **'अभिनव गवेषणा'**

के-444, 'शिवराम कृपा' विश्व बैंक बर्रा,
कानपुर-208 027 (उत्तर प्रदेश, भारत)

प्रबन्धन एवं सम्पादन

'अभिनव गवेषणा' (मल्टी डिस्प्लनरी क्वार्टरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड/पियररिव्यूड रिसर्च जर्नल) में अपने शोध पत्रों को प्रकाशित कराने हेतु नियमित स्थान प्रदान करने के लिए कृपया फुल स्केप कागज पर टाइप किया हुआ अथवा मेल किया हुआ शोध लेख अपनी स्वीकारोक्ति के साथ भेजें।?भेजने का पता - सेक्टर के - 444, 'शिवराम कृपा' विश्व बैंक बर्रा - कानपुर-208 027 (उत्तर प्रदेश, भारत) मोबाइल नं0 8896244776, **E-mail super.prakashan@gamil.com** पर सम्पर्क करें। मिलने का समय- सप्ताह में 6 दिन 10.00 से 6.00 (रविवार अवकाश)।

ISSN : 2349-9273

Received: 04 May, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

उत्तर प्रदेश में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में व्याप्त समस्याएँ एवं समाधान : एक विवेचन

– अशोक कुमार पाठक
रिसर्च स्कलर –
नेट, जे. आर. एफ.,
भूगोल विभाग,
दयानन्द एंग्लोवैदिक कालेज,
कानपुर–208001 (उत्तर प्रदेश)

ई–मेलः
ashokpathak037@gmail.com

शोध सारांश

किसी भी देश की समृद्धि मुख्य रूप से कृषि तथा उद्योगों के विकास पर निर्भर करती है। कृषि में वृद्धि देश का खाद्य सम्पन्न बनाने में मदद करती है तो उद्योगों का विकास देश को उत्पाद की बिक्री के फलस्वरूप पूँजी में वृद्धि करने में सहायक है। इन दोनों के विकास से ही प्रदेश के साथ–साथ देश का विकास भी सुनिश्चित होता है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को कच्चा माल कृषि से प्राप्त होता है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में चीनी उद्योग जो कि एक खाद्य उद्योग है। साथ ही इसमें पेय पदार्थ के उद्योग भी आते हैं। प्रदेश की अर्थव्यवस्था के विकास में इन उद्योगों का विशिष्ट योगदान है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग कृषि तथा उद्योग के बीच सम्बन्ध की भावना को बढ़ाते है। खाद्य प्रसंस्करण प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनो रूप से कृषि उत्पादन पर आधारित है। अतः ये उद्योग ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के विकास मुख्य भूमिका निभाते हैं। क्योकि ये उद्योग किसानों को अच्छे किस्म का माल उत्पादित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि इन उद्योगों के विकास में ही कृषि का विकास छिपा हुआ है। जो प्रदेश स्तर पर खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के विकास से जुड़ा है। अतः प्रदेश के आर्थिक विकास में इनके योगदान को दिखाने के लिए प्रस्तुत शोध पत्र में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों की प्रासंगिकता को बताने का प्रयास किया गया है।

शब्द कुँजी – खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, कृषि, विकास।

उत्तर प्रदेश में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग –

उत्तर प्रदेश में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग प्रदेश की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है। साथ ही यह रोजगार की दृष्टि से ग्रामीण क्षेत्रों के परिवारों के लिए आय का प्रमुख साधन है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मुख्य रूप से कृषि आधारित है। इसी कारण उत्तर प्रदेश को कृषि क्षमता के लिए भी जाना जाता है। इन उद्योगों के विकास से लोगों को स्थायी रूप से रोजगार प्राप्त होंगे, साथ ही उपभोक्ताओं को नवीन वस्तुएँ भी प्राप्त होंगी। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में वे उद्योग आते है जिनका सामग्री के रूप में उपयोग किया जाता है। जैसे चीनी उद्योग, फल एवं सब्जी उद्योग।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में व्याप्त समस्याएँ –

(1) इन उद्योगों ने ग्रामीण क्षेत्रों में असंगठित तरीके से कार्य शुरु किया है। क्योंकि यहाँ पर परिवहन ; विपणन, कोल्ड स्टोरेज आदि सुविधाओं का अभाव है। जिस कारण ग्रामीण क्षेत्र के साथ इन उद्योगों का विकास भी सीमित हो जाता है।

(2) इन उद्योगों में वित्त की समस्या है जिस कारण अधिकांश चीनी मिलें बन्द हो गई हैं। सरकार को प्रायः इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

(3) इन उद्योगों में अभी भी पारम्परिक तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। आधुनिक तकनीक एवं विकसित प्रौद्योगिकी के अभाव में उच्च गुणवत्ता के उत्पादों का उत्पादन नहीं किया जा सकता है।

(4) इन उद्योगों में नवीन अनुसन्धान की कमियों का भी अभाव है।

(5) हमारे देश में आज भी एक अच्छी कृषि प्रणाली का अभाव है। जिससे कृषि की गुणवत्ता के साथ–साथ इन उद्योगों की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है।

(6) ग्रामीण स्तर पर पर्याप्त मात्रा में शक्ति संसाधन (बिजली उत्पादन के साधन) उपलब्ध नहीं है, जिस कारण औद्योगिक क्षेत्र में उद्योगों में होने वाला उत्पादन कार्य बाधित होता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव –

उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रदेश के आर्थिक विकास में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का महत्वपूर्ण योगदान है। इन उद्योगों को आर्थिक विकास की एक प्रक्रिया के रूप में माना जा सकता है। उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर हम कह सकते है कि उत्पादन में वृद्धि आर्थिक विकास को महत्वपूर्ण बनाती है। इन उद्योगों के विकास के साथ ही हम आत्म निर्भर बनते है। किन्तु इन उद्योगों में कुछ समस्याएँ विद्यमान है जिनके निवारण के लिए निम्न सुझाव प्रस्तुत हैं–

(1) सरकार द्वारा इन उद्योगों को वित्तीय सहायता तथा कुशल तकनीकी प्रदान करने के साथ, इन उद्योगों के लिए विशेष नीतियों का क्रिन्यावयन किया जाना चाहिए ताकि ये उद्योग और अधिक विकसित हो सके।

(2) ग्रामीण स्तर पर पर्याप्त मात्रा में बिजली की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि उत्पादन में होने वाली रूकावट को दूर किया जा सके।

(3) रूग्ण हो रही मिलों को वित्तीय सहायता प्रदान की जानी चाहिए।

(4) उत्पाद की गुणवत्ता तथा विकास के लिए नवीन औद्योगिक तकनीक का प्रयोग करना चाहिए ताकि उत्पाद बाजार में प्रतिस्पर्धा कर सके।

आर्थिक विकास –

आर्थिक विकास का आधार उत्पादन है। देश में कृषि व औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि करके राष्ट्रीय व प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की जा सकती है। उत्पादन प्रक्रिया में साधनों की आवश्यकता होती है। उन्हें हम भूमि, श्रम, पूँजी संगठन एवं साहस के रूप में पहचानते हैं। एक फर्म कुल उत्पादन बढ़ा सकती है, यदि वह दिये गये समय में विभिन्न साधनों की मात्राओं को बढ़ाये एवं साधनों से उचित समन्वय बनाये रखें। किसी समाज में उत्पादन केवल उत्पादन के लिए नहीं किया जाता है। उत्पादन का उद्देश्य मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं को संतुष्ट करना है। इनमें समाज के भविष्य की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि सम्मिलित है।

आर्थिक विकास वह प्रक्रिया है जिससे किसी देश की वास्तविक प्रति व्यक्ति आय में दीर्घकालिक वृद्धि होती है, बशर्ते कि निरपेक्ष गरीबी रेखा के नीचे लोगों की संख्या न बढ़े तथा आय के वितरण में और अधिक असमानता न आने पाए।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों से तात्पर्य –

खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का आर्थिक एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मानव उद्यम के दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों कृषि तथा उद्योग क्षेत्र के मध्य सेतु का कार्य करते है। खाद्यान्न फसलों में गेहूँ, धान, मक्का, आलू, आम, अमरूद, ऑवला, मटर एवं अन्य सब्जियाँ, पशुधन, कुक्कुट तथा मत्स्य उप क्षेत्रों में दुग्ध माँस, अण्डे एवं शहद, प्रदेश में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

प्रदेश में खाद्य प्रसंस्करण के लिए कच्चे माल की उपलब्धता हेतु पारम्परिक उत्पादक क्षेत्र उपलब्ध हैं। जिससे अनुकूल एवं उपयुक्त संयोजन कर कम उत्पादन लागत पर उच्च गुणवत्ता का उत्पाद तैयार किया जा सकता है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में खाद्य एवं पेय पदार्थ उद्योगों में निम्नांकित से सम्बन्धित उद्योग सम्मिलित होंगे –

(i) फल एवं सब्जी, मसाले, शहद, औषधीय एवं मशरूम प्रसंस्करण

(ii) खाद्यान्न मिलिंग प्रसंस्करण

(iii) कुछ कृषि उत्पाद जैसे मिल्क पाउडर तथा अन्य डेयरी उत्पाद, अण्डा, माँस तथा माँस उत्पाद का प्रसंस्करण।

(iv) मछली प्रसंस्करण।

(v) डबल रोटी, तिलहन, खाद्य नाश्ता आहार एवं

प्रोटीन वाले खाद्य आदि।

(vi) बीयर

(vii) गैर शीरा आधारित, अल्कोहल, जल एवं शीतल पेय।

कृषि तथा उद्योग में सम्बन्ध –

खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का कृषि से प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों से तात्पर्य भोजन निर्माण, तम्बाकू निर्माण आदि वाणिज्यिक औद्योगिक क्षेत्रों से है। इस प्रकार खाद्य प्रसंस्करण उद्योग में उत्पाद, फसल से प्रारम्भ करके विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरते हुए अन्त में उपयोगकर्ता तक पहुँचता है। इन क्षेत्रों पर पर्याप्त ध्यान न देने से हानि उत्पादक तथा उपभोक्ता दोनो को होती है।

प्रदेश के आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है कि ग्रामीण क्षेत्रों का पर्याप्त विकास हो। ग्रामीण क्षेत्रों का एक मात्र साधन कृषि है। इस प्रकार खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों की अधिकांश इकाइयाँ ग्रामीण क्षेत्रों में खोली जायें, ताकि इन क्षेत्रों के लोगों के लिए आय के नये रास्ते खुल सकें। प्रसंस्करण उद्योगों को प्रोत्साहित करने से ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि तथा रोजगार के नये अवसर उपलब्ध होंगे। दोनों क्षेत्रों के बीच निकट सहयोग तीव्र आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है। इन दोनो क्षेत्रों की पूरकता तेजी संचयी आर्थिक विकास को गति प्रदान करती है।

औद्योगीकरण को आर्थिक विकास के पर्याय के रूप में देखा जा सकता है। यह विकासशील देशों में व्याप्त बेरोजगारी को समाप्त करने में सहायक है। औद्योगिकरण लोगों के जीवन में सुधार लाता है। जिस प्रकार कृषि औद्योगिक विकास को बढ़ाती है, उसी प्रकार उद्योग क्षेत्र भी कृषि क्षेत्र की वृद्धि में मदद करता है।

खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का महत्व –

आर्थिक विकास पर हाल ही में एक साहित्य में ग्रामीण क्षेत्र के नेतृत्व वाले रोजगार पर बल दिया है। विशेष रूप से एक श्रम अधिशेष के साथ विकासशील देशों के विकास के लिए एक उन्मुख रणनीति इन उद्योगों के आय के स्तर में सुधार करने में मदद करेगी। यह उद्योग स्थानीय जरूरतों और निर्यात आवश्यकताओं को पूरा करने में भी सहायक है।

भविष्य का विकास तेजी से औद्योगीकरण में ही निहित है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग भारत में उद्योग के राष्ट्रीय आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इन उद्योगों का विकास कृषि क्षेत्रों को और अधिक प्रोत्साहित एवं मजबूत बनाने में मदद करता है। दोनों क्षेत्रों के उत्पादन और विपणन के चरणों में रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे। और इन उद्योगों के विकास के साथ सामाजिक और आर्थिक विकास में सुधार होगा। खाद्य प्रसंस्करण की समग्र क्षमता का रूप बड़ा है। जो निम्न प्रकार के लाभ प्रदान करता है–

- विपणन के नये अवसरों का विस्तार।
- लोगों की आजीविका में सुधार।
- वस्तुओं के स्वयं जीवन का विस्तार।
- वस्तुओं की गुणवत्ता में सुधार।

इस प्रकार ये उद्योग ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के लिए कई प्रकार के लाभ प्रदान करते हैं।

खाद्य प्रसंस्करण के लिए उत्पादन खेत के रूपान्तरण के लिए श्रेष्ठ अवसर प्रदान करता है। उपभोक्ता वस्तुओं में वृद्धि के साथ इस प्रक्रिया में अपव्यय को भी कम कर देता है।

इस प्रकार ये उद्योग ग्रामीण क्षेत्र को कई समस्याओं से राहत प्रदान करते है। बेहतर उत्पादकता के साथ–साथ आगे के लिए किसानों की औद्योगिक सम्भावनाओं को खोलते है। विकास के साथ यह कृषि क्षेत्र में नई मांग भी उपलब्ध कराते हैं। प्रसंस्करण का संचालन एक लम्बी अवधि तक जारी रहता है। जिससे यह उत्पादन के लिए मांग बनाये रखता है।

साहित्य की समीक्षा –

खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के माध्यम से समाज के बुनियादी ढाँचे में सुधार होता है। इससे न केवल किसानों की आय में वृद्धि होती है बल्कि राज्य भी आर्थिक रूप से सम्पन्न होता है। इन उद्योगों के माध्यम से समाज में फैली विभिन्न प्रकार की समस्याएं रोजगार उत्पादन, निर्यात आय आदि की कमियों को दूर किया जा सकता है। इसके द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के बड़े स्तर पर रोजगार के नये सुअवसर उत्पन्न किये जा सकते है। यह उद्योग ग्रामीण शक्ति को बाहर जाने से रोकते है। साथ ही ग्रामीण क्षमता का उपयोग कर ग्रामीण लोगों की आय में वृद्धि करते हैं। ये उद्योग तकनीकी को और अधिक मजबूत बना सकते है साथ ही कृषि क्षेत्र की क्षमता भी बढ़ाते है।

भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का अध्ययन किया गया और निष्कर्ष निकाला गया कि कृषि और

औद्योगिक विकास का विश्लेषण सन्तुलित किया जाना चाहिए। प्रसंस्करण से उत्पादन कृषि विकास के लिए सूचना प्रदान करेगा इस प्रकार इन उद्योगों की राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। इन उद्योगों का विकास बुनियादी आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

उद्देश्य एवं शोध प्रविधि –

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु अपेक्षित सूचनाओं एवं आकड़ों का संकलन निम्न उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है।

(I) उत्तर प्रदेश में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों का राज्य के आर्थिक विकास में योगदान का अवलोकनात्मक अध्ययन करना।

(ii) इन उद्योगों में व्याप्त समस्याओं एवं कमियों का अध्ययन।

(iii)प्रदेश में इन उद्योगों की दशा सुधारने हेतु अपेक्षित सुझाव देना।

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीय आँकड़ों एवं सूचनाओं पर आधारित है। अपेक्षित सूचनाओं एवं आँकड़ों का संकलन सरकारी प्रकाशनों द्वारा जारी रिपोर्टों के अनुसार, विभिन्न पत्रिकाओं, पुस्तकों एवं इंटरनेट वेबसाइटस इत्यादि के द्वारा किया गया है।

किसी भी देश की समृद्धि मुख्य रूप से कृषि तथा उद्योगों के विकास पर निर्भर करती है। कृषि में वृद्धि देश का खाद्य सम्पन्न बनाने में मदद करती है तो उद्योगों का विकास देश को उत्पाद की बिक्री के फलस्वरूप पूँजी में वृद्धि करने में सहायक है। इन दोनों के विकास से ही प्रदेश के साथ–साथ देश का विकास भी सुनिश्चित होता है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को कच्चा माल कृषि से प्राप्त होता है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में चीनी उद्योग जो कि एक खाद्य उद्योग है। साथ ही इसमें पेय पदार्थ के उद्योग भी आते हैं। प्रदेश की अर्थव्यवस्था के विकास में इन उद्योगों का विशिष्ट योगदान है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग कृषि तथा उद्योग के बीच सम्बन्ध की भावना को बढ़ाते है।

खाद्य प्रसंस्करण प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों रूप से कृषि उत्पादन पर आधारित है। अतः ये उद्योग ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के विकास मुख्य भूमिका निभाते हैं। क्योकि ये उद्योग किसानों को अच्छे किस्म का माल उत्पादित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि इन उद्योगों के विकास में ही कृषि का विकास छिपा हुआ है। जो प्रदेश स्तर पर खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के विकास से जुड़ा है। अतः प्रदेश के आर्थिक विकास में इनके योगदान को दिखाने के लिए प्रस्तुत शोध पत्र में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों की प्रासंगिकता को बताने का प्रयास किया गया है।

उत्तर प्रदेश में कृषि का स्वरूप –

प्रदेश की अर्थव्यवस्था मूलतः कृषि पर निर्भर है। यहाँ की अर्थव्यवस्था में कृषि का स्थान हर दृष्टि से महत्वपूर्ण है। वस्तुतः यहाँ की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित है और इसका लगभग हर भाग मुख्य रूप से कृषि से प्रभावित होती है। कृषि निर्यात व्यापार के लिए महत्वपूर्ण वस्तुएं प्राप्त होती है। गेहूँ, धान, गन्ना यहॉ की मुख्य कृषि में से एक है।

हमारी कृषि पर अनेक प्रकार के उद्योग निर्भर करते हैं। कृषि उद्योग भारत की अधिकांश जनता को रोजगार प्रदान करता है। कृषि उत्पादों को कच्चे माल के रूप में अनेक उद्योगों में प्रयोग किया जाता है। जिससे लाखों व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- भारतीय अर्थव्यवस्था विकास एवं आयोजन, ए. एन. अग्रवाल, विश्व प्रकाशन, नई दिल्ली।

2- उत्तर प्रदेश की आर्थिक समीक्षा, राज्य नियोजन संस्थान, उ.प्र. 2006–07 से 2012–13।

3- भारतीय अर्थव्यवस्था, रूद्र दत्त सुन्दरम, नई दिल्ली, 2006।

4. वार्षिक उद्योग सर्वेक्षण, राज्य नियोजन संस्थान 2006–07 से 2012–13, उ.प्र.।

5. www.agriculture.up.nic.in

6. www.updes.up.nic.in

7. www.udyogbandhu.com

8. www.mospi.gov.in

ISSN : 2349-9273

Received: 30 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

वर्तमान राजनीतिक परिवेश में विश्व कल्याण के सम्बन्ध में महावीर स्वामी के विचार

– पूजा श्रीवास्तव
रिसर्च स्कालर –
राजनीति विज्ञान,
यू. जी. सी., नेट,

ई–मेलः
poojasri16apr@gmail.com

सारांश

मानवता के कल्याण के लिए महावीर स्वामी ने असीम ज्ञान की थाथी सौपकर जन–जन प्रकाश की प्रेरणा का स्रोत प्रवाहित किया। उनके द्वारा बताये गये आदर्शों, उपदेशों को यदि आज के युग में अपनाया जाये तो निश्चिय ही संसार स्वर्गीय रूप में परिणत हो जाय, जिसमे सभी सुखी, सम्पन्न और समान होंगे। अतः विश्व कल्याण हेतु महावीर के बताये मार्ग पर चलना आवश्यक है।

प्राचीन समय में अल्प सुविधाओं के होते हुए भी मानव पूर्ण से सुव्यवस्थित ढंग से जीवन निर्वाह करता था किन्तु आज विभिन्न सुविधाओं में वृद्धि के साथ–साथ सभी असम्भव कार्यों को सम्भव करने की शक्ति मानव में निहित हो गयी। फिर भी मानव समाज लक्ष्य की अस्थिरता के कारण अशान्त हो रहा है, इसका कारण मनुष्य की सोच–विचार की क्षमता का व्यवस्थित ढंग से क्रियात्मक न होना ही है। चूँकि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विसंगतियाँ उत्पन्न हो गयी हैं तथा आज चारों तरफ वर्तमान परिवेश में बदलाव की आवश्यकता महसूस हो रही है। आज संसार अशान्त है। समस्त भौतिक सुख–सुविधाओं के रहते हुए भी मानवता त्रस्त है। ऐसी विषम परिस्थिति में केवल महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त ही शांति और सुख की स्थापना कर सकते हैं। अतः आज के राजनीतिक परिवेश में विश्व के देशों में होड़ लगी हुई है कि मेरा देश का धर्म सबसे ऊपर है। धर्म की आड़ में मानवता शर्मसार होती जा रही है। ऐसी विषम परिस्थिति में केवल महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त के द्वारा शांति और सुख की स्थापना किया जा सकता है।

महावीर स्वामी ने विश्व कल्याण की कामना से जितना उद्‌बोधन दिया है, वह संसार को संवारने के लिए पर्याप्त है। यदि उनके पाँच महाव्रतों को ही आज विश्व को अपनाना हो तो निश्चिय ही इस धरती का रूप कुछ और हो जायेगा। यही नहीं वरन् उनके एक–दो ही उपदेशों का पालन मानवता के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है।

आज संसार अशांत है। समस्त भौतिक सुख–सुविधाओं के रहते हुए भी मानवता त्रस्त है। ऐसी विषम परिस्थिति में केवल महावीर द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त ही शान्ति और सुख की स्थापना कर सकते हैं। अतः यदि विश्व के कर्णधार विश्व शान्ति चाहते हैं तो महावीर द्वारा उद्‌भूत वाङ्‌मय की वरीयता को परख, उसका रंच मात्र भी आचरण में उतार कर सब कुछ पा सकते हैं। महावीर के उपदेशों की अनुभूति इस क्षेत्र में पाश्चात्यों ने भी की है। किन्तु

अवश्यकता है उसे विश्व स्तर पर प्रसारित कर परखने की। एक पाश्चात्य विद्वान डॉ. शूत्रिग का कथन विचारणीय है, यथा– ''संसार सागर में डूबते हुए मानव ने अपने उद्धार के लिए पुकारा, इसका उत्तर महावीर स्वामी ने जीवन के उद्धार का मार्ग बतलाकर दिया। दुनिया को अशान्ति से बचाया जा सकता है। महावीर स्वामी ने विश्व–कल्याण की कामना से जितना उद्‌बोधन दिया है वह संसार को संवारने के लिए पर्याप्त है। यदि उनके पाँच महाव्रतों को ही आज विश्व अपना ले तो निश्चय ही इस धरती का रूप कुछ और हो जायेगा। यही नहीं वरन् उनके एक–दो ही उपदेशों का पालन मानवता के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है, एक और शान्ति चाहने वालों का ध्यान महावीर स्वामी की उदार शिक्षा की ओर आकृष्ट हुए बिना नहीं रह सकता।''[1]

अतः सांसारिक शन्ति के लिए महावीर स्वामी के विचारों को हृदयंगम करना आवश्यकता है।

''आत्मवत् सर्वभूतेषु'' की लोकमंगलकारी भावना का प्रसार जब भगवान महावीर भारत में कर रहे थे उसी समय विश्व के अन्य राष्ट्रों में भी युग–निर्माता अपने – अपने आदर्शों से समाज को संवारने पर तुले हुए थे। संसार का सर्वोत्तम जीव मनुष्य ही जब दुखी है तो यहाँ यह कैसे कहाँ जा सकता कि दूसरे प्राणी सुख की अनुभूति करेंगे। तथ्यतः इस विषम स्थिति पर गंभीरता से सोचने पर यह स्पष्ट होता है कि सभी धर्माचार्थे का युग–निर्माता वास्तव में विषम–कल्याण की कामना से कम नहीं करते वरन् स्वयं के कल्याण हेतु अनेक आडम्बर पूर्ण आयोजन करते हैं। यदि ऐसा न होता तो कभी का ''अहिंसा'' शब्द यथार्थ हो गया होता किन्तु आज ही हम विश्व में देख रहे हैं कि एक जीव दूसरे जीव को निगलने के लिए आतुर हैं। धर्म के नाम पर आज भी बलि दी जाती है। एक मनुष्य दूसरे ही हत्या करने में सकुचाता नहीं।

आज का विकासशील मानव जो स्वयं पर गर्वित है, अणु शस्त्र का निर्माण क्यों कर रहा है? जो अहम धन इस विनाशक अस्त्र शस्त्रों के निर्माण में खर्च किया जा रहा है। यदि वह मानवता के कल्याण मे खर्च किया जाता तो यह धरती स्वर्ग रूप में परिणत हो जाए। समस्त प्राणी सुख व शान्ति का अनुभव कर निर्वाण हो जाए। विश्व के अनेक भौगोलिक क्षेत्रों में आज मानवता शर्मसार होती जा रही है। कहीं इजरायल – फिलिस्तीनी संघर्ष धर्म और राज्य के बीच अन्तःसम्बन्ध साम्प्रदायिक तनाव वर्षों से युद्ध का कारण बन गया है। संघर्ष के प्रमुख पहलुओं में पश्चिमी तट और गाजा पट्‌टी पर इजरायल का कब्जा आज विश्व के सामने एक चुनौती बन गया है। कहीं रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध का मुख्य कारण अपनी स्वायतता और वर्चस्व को लेकर फरवरी 2022 में रूस ने यूक्रेन पर आक्रमण किया और देश के अधिक हिस्से पर कब्जा करना शुरू कर दिया है, जो आज भी संघर्ष यहा हो रहा है, जिसके कारण इस युद्ध में हजारों की संख्या में लोगो की मौत हुई है। भारत और पाकिस्तान के बीच में मानवता को कलंकित करने वाला पाकिस्तान के द्वारा प्रायोजित आतंकवादियो के द्वारा हाल ही में कश्मीर के वादियों में घूमने वाले पर्यटकों को धर्म पूछ उनकी हत्या कर दी गई। यह आधुनिक समाज में मानवता को सोचने के लिए मनुष्य आज मजबूर है।

महावीर स्वामी के 'अहिंसा' अस्त्र को अपनाकर ही महात्मा गाँधी ने भारत को स्वतंत्र किया जो संसार में एक अनूठा आदर्श है। यही नहीं वरन् उनके अन्य सिद्धान्तों का भी गाँधी जी पर गहरा प्रभाव पड़ा है। वास्तव में 'अहिंसा' की शक्ति असीम है यह गाँधी जी ने दुनिया के सम्मुख स्पष्ट कर दिया है, फिर भी मानव इसकी महात्मा को क्यों नही परख रहा है। महावीर स्वामी की इस ''आहिंसा'' की देन से युग को उबारा जा सकता है। फिर आज अणु युद्ध की क्या आवश्यकता जिससे संसार भयभीत है। महावीर स्वामी की 'अंहिसा'' आज के परमाणु प्रलय को रोकने मे पूर्ण समर्थ है। जब कि संसार इस परमाणु की विकरालता व विनाश को सोचकर काँप उठा है। वास्तव में विश्व के कर्णधारों का यह पावन कर्तव्य है कि वे ''अहिंसा'' की महत्मा को परख, युग को पतन से बचाये। विश्व के विकास सम्पन्न देश आज परमाणु अस्त्रों का संभाले अपने पौरुष का प्रदर्शन कर रहे हैं, किन्तु महावीर स्वामी के उपदेशों को उन्हे हृदयंगम करना चाहिए। महावीर स्वामी का यह अहिंसा महामन्त्र विश्व–शान्ति का स्रोत है, जिसकी अनुभूति संसार के कर्णधार अवश्य करते हैं तभी तो विश्व–शान्ति हेतु उनके बताये गये मार्ग को आत्मसात् करना पड़ेगा। अहिंसा की आवश्यकता संसार में आज महसूस की जा रही है किन्तु राजनीतिक परिस्थितियों के कारण व्यवधान पड़ जाता है। हाँ एक दिन अवश्य संसार महावीर स्वामी के इस ''अहिंसा'' व्रत को अपनायेगा जब उसकी आत्मघाती प्रवृति संघर्षों से शान्त हो जाएगी। महावीर स्वामी के द्वारा प्रतिपादित ''अहिंसा'' विश्व कल्याण के लिए अद्वितीय थाती है। सुख–शान्ति की जननी है तथा जगत की रक्षा करने वाली

अलौकिक शक्ति है। दीर्घावधि तक कठोर साधना के पश्चात् महावीर स्वामी के प्रथम वाणी मुखरित हुई इस प्रकार थी– ''माँ हण, माँ हण'' किसी प्राणी का मत मारो, मत मारो। किसी का छेदन न करो, किसी को परिताप न पहुँचाओ। मारोगे तो मरना पड़ेगा, छेदोगे तो छिदना पड़ेगा, भेदोगे तो भिदना पडेगा। परिताप पहुँचाओगे तो परितप्त होना पडेगा।[2]

अपने–अपने कर्तव्य का ध्यान रखकर कार्य करने का आहान महावीर स्वामी ने किया जिसमे हिंसा रंचमात्र भी न हो।[3]

'सर्वभूतात्मभूतता' अर्थात प्राणी मात्र को आत्मीय भाव से अंगीकार करना महावीर स्वामी का युग कल्याण हेतु उद्‌बोधन था। इसकी पुष्टता हेतु उन्होंने अहिंसा पर बल दिया। अहिंसा ही जीवन का मूल मंत्र है, आध्यात्मिकता की नींव है, सार्वभौम शान्ति का सर्जन करने वाली और विश्व के लिए वरदान है। अतः युग–कल्याण हेतु इसको अपनाने की अपेक्षा है। अतः यदि दल–प्रपंच वाला संसार महावीर के सत्य को अपना ले तो निज के कल्याण के साथ विश्व–शान्ति में वह सहायक हो सकता है, महावीर स्वामी की यह अनुपम देन विश्व–कल्याण की एक आधारशिला है। विश्व–कल्याण की कामना से ही महावीर स्वामी वैभवपूर्ण जीवन को त्याग कर कठोर तप साधना में प्रवृन्त हुए। उन्होंने अध्यात्म के अतल से जो कुछ भी प्राप्त किया, उसे लोक–मंगल हेतु उड़ेल स्वयं को तप से झुलसाते रहे। मानव के मंगल प्रभात का आलोक उनकी वर वाणी से सदैव प्रस्फुटित होता रहॉ जिसका रंच मात्र प्रकाश अज्ञानन्धार में भटकते हुए जनों का पथ–प्रदर्शन करता रहेगा।

इस प्रकार मानवता के कल्याण के लिए महावीर स्वामी ने असीम ज्ञान की थाथी सौपकर जन–जन प्रकाश की प्रेरणा का स्रोत प्रवाहित किया। उनके द्वारा बताये गये आदर्शों, उपदेशों को यदि आज के युग में अपनाया जाये तो निश्चिय ही संसार स्वर्गीय रूप में परिणत हो जाय, जिसमें सभी सुखी, सम्पन्न और समान होंगे। अतः विश्व कल्याण हेतु महावीर के बताये मार्ग पर चलना आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अहिंसा वाणी – अंक अप्रैल–मई–1956, पृष्ठ संख्या – 12।
2. अहिंसा वाणी – अंक अप्रैल मई–1956, पृष्ठ संख्या – 9।
3. जैन धर्म – मुनि सुशील कुमार, पृष्ठ संख्या – 195।

◈◈

विशेष

प्रकाशन शोधकर्त्ताओं के लिए शोध प्रक्रिया का अन्तिम और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण चरण होता है। शोध समाज की एक मूल्यवान उपलब्धि है, जिसके लिए इसे समाज के बीच आना ही चाहिए ताकि समस्त मानवता इसका लाभ उठा सके। वर्तमान में बेलगाम होती महंगाई, कम्प्यटूर टाइपिंग, कागज, मुद्रण सामग्री एवं प्रिंटिंग की दरों में उत्तरोत्तर बढ़ोत्तरी शोधार्थियों केद्वारा प्रकाशित होने वाले शोध-पत्रों केअवसरों को सीमित एवं संकुचित करते हैं।

संगोष्ठियों में शोध प्रपत्र का वाचन शोधार्थियों एवं शोधविदों के लिए एक महत्त्वपूर्ण अवसर होता है। अपने गुणवत्तापरक शोध कार्य को इन संगोष्ठियों के माध्यम से जनमत के बीच लाने का माध्यम बनता है। ऐसे अवसरों का लाभ उठाना ही हम सभी के लिए हितकर है, हम सभी आयें और समाज में आगे बढ़कर अधिक से अधिक सहयोग देकर इसे सफल बनाने के कार्य में हाथ बंटायें।

- प्रबन्धक सम्पादक

ISSN : 2349-9273

Received: 10 May, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

सौन्दर्यशास्त्र और कला सृजन

– डॉ. (श्रीमती) कल्पना गौड़
असिस्टेन्ट प्रोफेसर –
चित्रकला विभाग,
जुहारी देवी गर्ल्स डिग्री कालेज,
कानपुर–208004 (उत्तर प्रदेश)

ई–मेल :
gaurdrkalpana@gmail.com

सारांश

आज बीसवीं शती के अन्तिम दशकों में कला का स्वरूप तथा कला मूल्यों की चर्चा सौन्दर्य की उस चिन्तन से बहुत दूर है, जो हमें अजन्ता की विरादता और लघुचित्रों की संवेदनीयता में दृष्टिगत होती है। आज का कलाकार वैज्ञानिक है मनः विश्लेषक है और सबसे अधिक अपेक्षित तीव्रगामी युग का सर्जक है। 'विद्या' और 'रचना' के रूप परिवर्तन की आकांक्षी स्वरूप उसका अधुनातन माध्यम आज ग्राफिक्स (Graphics) है। जिसमें वैवाहिकता, विद्या, रेखा, वर्ण आकार का विन्यास कलाकार का नितान्त अपना है। समस्त चेतना, रसानुभूति और उदान्त परिकल्पना, कलाकार का मनोगत सत्य है। यह मनोगत सत्य, सभी के सत्य में पर्यवसित हो, अधुनातन सौन्दर्य दर्शन के माध्यम से समाज के प्रति कलाकार का सम्बोधन है।

कला और कलागत सौन्दर्य की चर्चा जिस विशिष्ट परिप्रेक्ष्य को उन्मीलित करती है, वह है ऐस्योटिक्स अर्थात स्वतन्त्र कला–शास्त्र। सौन्दर्य मूल्यांकन के इस शास्त्र की परिकल्पना 3761 रही है। शती में मात्र कला–सौन्दर्य के लिये की गई, जो नितान्त वांछनीय थी, क्योंकि कला का जन्म वास्तविकता से परे, काल्पनिक चिन्तन तथा मनः संवेदन के मध्य हुआ। कला आनन्ददायी है और सौन्दर्यास्त्र उस मनःचिन्तन को विश्लेषित करता है. जो साधारण अनुभूति से भिन्न आनन्द प्रदायी सृष्टि कर सकता है।

कई धातु से उत्पन्न, सुन्दर, मधुर और कोमल की पर्याय कला का उद्देश्य, सौन्दर्य की सृष्टि करना है, चाहे वह किसी भी रूप में अभिव्यक्ति हुई हो। लोक जीवन की कला (Folk Art), जन जातीय कला (Tribal Art) शास्त्रीय सृजन (Classical Art) अथवा आधुनिक प्रेषण (Modern Representation) ध्वनि, कल्पना और चित्रात्मकता के साथ आदि काल से लेकर आज के आधुनातन युग तक कला सत्य है। हमारे जीवन का अंग है, मानव मन की गहराई के अवचेतन स्वर में कला सृजन की तीव्र लालसा प्रमाणित है। यही लालसा मनुष्य जीवन के सभी अंगों को सजा सवांर कर रखती है। जिस परिवेश में वह रहता है, जो धारण करता है, उन में तो वह सौदर्य का स्पर्श करता ही है। अपने शरीर को सुन्दर सज्जित करने की लालसा भी मानव मन में अवस्थित रहती है। कलात्मक सौन्दर्य की यह भावना (Aestheticsense) परिवार ओर समाज का अंग है जो वंशानुक्रम से गतिशील है। 'सृजन' (Creation) और श्रेष्ठता की भावना (Subliwity) मानव मन के संस्कार हैं और 'संस्कृति' का निर्माण करते हैं। 'संस्कृति' की तुलना भी की उस सुदृढ़ चट्टान से की गई है जो कोमल कीटों द्वारा निर्मित हो क्रमशः स्थूल स्थायी बन जाती है। कला–संस्कृति निर्धारण में भी सौन्दर्य मूल्यों (Aesthetle Values) की विशिष्ट भूमिका होती है। कलात्मक सर्जन साधारण वैचारिकता अथवा दृष्टि निक्षेप से भिन्न है, इसीलिये राधा कमल

मुकर्जी ने जनजातीय कला को (Seclarized dreams of young humanity) कहा है।

नित्य प्रति के क्षणों में अनेक दृष्ट वस्तुयें मन और नेत्रों को बांधती हैं। वस्तु का विशिष्ट पार्श्व आकृष्ट करता है और एक पल के लिये विस्मय विमुग्ध हो, चित्त उसी में विलय हो जाता है और उस घटक से दूर होते ही फिर से स्वाभाविक निरन्तरता आबद्ध कर लेती है, किन्तु कला के सौन्दर्य में ऐसा नहीं होता। वह स्थायी और शाश्वत है। हमारे चिन्तन और तद्जन्य आनन्द से जुड़ा है। आनन्द की दृष्टि, अपरिसीम, अनन्त और अनुष्य है वह किसी भी स्थिति में आनन्द ही रहेगी।

मानव–मन विशिष्टता से आकृष्ट उत्सुक होता है किन्तु उन पलांशों को बन्दी बनाता है कलाकार। उसका सृजन ही कला है। राह चलते देखते उठते बैठते, अनुभव संजोते, मन गतिशील रहता है। दृष्टि केन्द्रित चाक्षुष प्रत्यक्ष सम्पूर्ण चौतन्य (Concious) को सहसा स्पन्दित कर स्तब्ध बना देता है। हर्षातिरेक, करुणा, वितृष्णा अथवा क्रोध का ह्रास से मन भर उठता है। क्षणांश में होने वाले पग पर मूल भाव तिरोहित हो विहपित (Trans form) होता है। वही मूल भाव मानवीय चिन्तन परिशीलन के शान्त एकान्त क्षणों में उद्बद्ध हो अन्य चेतना को आच्छादित कर लेता है और कलाकार का संवेदन शील अन्तर्मन कल्पना का आधार ले एक 'रचना' को जन्म देता है। वर्ड्स वर्थ के "Dafodils" की रचना ऐसे ही क्षणों में हुई थी। रचना सुन्दर का पर्याय है। सुन्दरता की सृष्टि कला है और कला की विश्लेषित सौन्दर्यानुभूति का विज्ञान है सौन्दर्य शास्त्र।

दर्शन शास्त्र की एक शाखा और केन्द्रिय बोध के रूप में हुई (Aesthaties) शब्द का उदाव ग्रीक भाषा में हुआ जिसका अर्थ था सुन्दर, कल्पना और संवेदन किन्तु उसे सौन्दर्य और कला–विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित किया जर्मन चिन्तक बामार्टन (Baum sartrn) ने सौन्दर्य राजन की समस्त विधाओं (सहित्य संगीत और कला) के लिये बामार्टन ने (Aesthetics) का निर्धारण किया। अतः सौन्दर्य शास्त्र की परिकल्पना सुन्दर से प्रारम्भ होकर सुन्दर में ही समाहित है। साथ ही इसके अन्तर्गत कलागत सौन्दर्य सृजन का ही अध्ययन है हो मेल के अनुसार ललित कलाओं का विज्ञान है और इसका अध्ययन चित्रगत कला–सृजन के विभिन्न पार्श्वों से परिचित कराता है–

1. अन्तस संवेदना सापेक्ष (Inner feeling)।
2. वैवारिक कल्पना सापेक्ष (Imagination)।
3. विद्या सापेक्ष (Technique of style)।

साथ ही सदयुशी अभिव्यक्ति के आधार पर सौन्दर्य मापकों की स्थापना करता है।

सौन्दर्यानुभूति, साधारण अनुभूति से भिन्न है। इससे प्राप्त आनन्द प्रयोजन–सापेक्ष नहीं है। केवल मन का लोकोत्तर आनन्द है, जिसे भारतीय मनीषियों ने रंत और चमत्कार की संज्ञान की है। आचार्य भरत का रस चिन्तन शताब्दियों पूर्व इसी आनन्द की प्रथम उद्भावना है। कलानन्द का ये स्वरूप–

1. स्थायी है– सभी प्रकार के भौतिक साधन आनन्द प्रदायी होते हैं– अच्छा भोजन, पान वस्त्र आदि। किन्तु ये आनन्द क्षणिक हैं। एक काव्य पंक्ति, संगीत का अनुरक्षण अथवा चित की रमणीयता का सौन्दर्य आनन्द स्थायी है।

2. आनन्द की यह अनुभूति विशिष्ट है– साधारण अनुभूति, ध्वनि अथवा दृश्य मात्र एक घटना के रूप में दृष्टिपटल पर क्षणभर के लिये अंकित होते हैं, वे हमें उस उच्च श्रयता की अनुभूति नहीं कराते जो कलात्मक प्रेषणीयता में ग्राह्य होती है। शेक्सपियर, कालिदास, प्रसाद की कल्पना, रविशंकर का संगीत, टर्नर और कांन्सटेबल के दृश्यांकन, देगा, हुसेन और संवावाला के अश्व तथा बेन्द्रे की ग्रामबाला अपने में विलय करने की शक्ति रखती है। यह कला का सौन्दर्य है और इस सौन्दर्य का आनन्द अन्य भौतिक आनन्द प्रक्रिया से विशिष्ट है।

3. कलात्मक आनन्द में सम–भावना (Common) है– सौन्दर्य की अपेक्षा सभी है। प्रत्येक दृष्टि सुन्दर आकार और रूप पर टिक जाती है। किसी प्रकार का विशिष्ट प्रशिक्षण सौन्दर्य ग्राहकता के लिये वांछित नहीं कलाकार अपनी सौन्दर्य सष्टि को सभी के लिये प्रस्तुत करता है और सभी के साथ आनन्द ग्रहण कर सन्तुष्ट होता है। दर्शक को क्षमता और प्रबुद्धता उसकी कृति का मूल्य निर्धारण करती है। इस मूल्य का आधार होता है कलागत सौन्दर्य की उद्भावना।

कला सौन्दर्य के चिन्तन को विश्लेषित करते हुये विभिन्न कला युगों की प्रेणीयता (Representation) उल्लेखनीय है– सर्वप्रथम प्राप्त कला अंश प्रागैतिहासिक यूगीन मानव की सौन्दर्य अभिव्यंजना है। आश्चर्य नहीं कि आज का तनाव ग्रस्त कलाकार उन अनपढ़ नागरी संस्कृति से अछूते अंकनों में अपनी अभिनव सृष्टि अन्वेषक की दृष्टि केन्द्रित कर दे। स्वतः प्रवाहित रेखांकनों में ध्वन्यात्मकता है,

जो मूल सृष्टिभावासत्य, धर्म और भय को इंगित करता है। आड़ी तिरछी रेखाओं में कलाकार ने आदि भावना को सशक्त रूप से मुद्रित किया है। कला के 'सत्य' की चर्चा करते हुये, यह क्रम विस्मयकारी नहीं कि एक ही समय कला सृजन हेतु मानव मन की जिज्ञासा त्रशित हुयी और भारत के गुहा प्राचीरों की भाँति स्पेन और फ्रांस के गुहा प्राचीर भी रंग डाले गये। वहाँ भी वातावरणीय स्थानीय प्रभाव के अतिरिक्त वही शाश्वत मानवीय संवेदन है, जो भारतीय चित्रों के समकालीन ही प्रकाशित हो उठा है, साथ ही प्रकाशित है मानव की स्वाभाविक वृत्ति कला सृजन। यह सत्य जब 19वीं शती में उजागर हुआ तो समस्त कला संसार आश्चर्य चकित हो अभिभूत हो उठा।

समस्त कला युगों से मानव के मन के सौन्दर्य की उद्भावना स्पन्दित ध्वनित है। भले ही सौन्दर्य की अनुभूति और उसके मूल्यों में अन्तर आ गया हो। साहित्य सृजन संगीत के स्वर तथा चित्रात्मकता सभी आदिकाल से निरन्तर गतिशील रहे हैं और उद्धर्वगामी (Super Egist) कलाकार अपनी संवेदना को रूप देता आया है। स्वान्तः सुखाय अथवा सामाजिकता सापेक्ष सभी स्थितियों में कलाकार का 'Ego' कार्य करता है। आज के युग में यह प्रमाणित हो चुका है, कि किसी भी सृजन में सर्जक एक विशिष्ट मनोस्थिति में जीता है। अर्न्तद्वन्दात्मक अवस्थिति ही कलाकार से सृजन की रूपात्मकता प्रेषित करवाती है। यही कारण है, कि मध्यकाल की धर्म संघर्षार्थ स्थितियों में भी कला सर्जक ने अपनी वृत्ति को उद्वेगामी रखा। योरोपीय संस्कृति में ईसा के अनुयायी जिस धार्मिक आत्म प्रताड़न के मध्य अपनी स्वना धार्मिता को जीवित रख सके, वैसे ही कठिन क्षणों में भारतीय कला भी आश्रयदाताओं और सर्जकों के मध्य साँस लेती रही। सृजन शाश्वत है अतः शाश्वत रही, वो भावना, जो सौन्दर्य सम्मोहित है। इस रूप में भारतीय वांगमय और कला भण्डार तनाव ग्रस्त क्षणों में भी सम्पन्न होते रहे।

18वीं शती के पश्चात् कलाकार की सृजनात्मकता में युगान्तरकारी आलोड़न व्याप्त हो गया। कलाकारों में वैयक्तिा की चेतना जागी। तूलिकाधारक मनोवैज्ञानिक बन गया। एक और विज्ञान ने सृजन के अभिप्रषण की दिशा को मोड़ दिया। तो दूरी ओर समाज और शासन के परिवर्तमान परिवेश में कला सृजन को तीव्र इसावात का सामना भी करना पड़ा। तात्कालिक स्थिति ने सौन्दर्य मूल्यों में गहरा परिवर्तन ला दिया। साहित्य और कला की प्रेषणीयता तीष्णगामी होने के साथ ही यर्थाथ से अतियथार्थ की ओर उन्मुख होती गयी। कलाकार नितान्त नये, सृजन का उद्घोष करने लगे। इटैलियन कवि मैरिनेट्टभ ने ऐसे यान्त्रिक युग के उद्बोधन गीत गाये जो अकल्पनीय था। भविष्य की गतिमयता और अनुमानित कोलाहल को बहुरंगी रेखाओं की आवृत्तियों में बन्दी बनाकर गति और ध्वनि के प्रेमी कलाकारों ने भविष्यवाद (Futurism) का सौन्दर्य सृजित किया। सौन्दर्य की सृष्टिविधा सापेक्ष हो गई। योरोपियन धनवादी शैली (Cubism) फार्जिज्म विभिन्न प्रयोगों का प्रति पालन थी। तत्कालीक पराधीन भारत में भी इसका स्पर्श हुआ।

इसी भाँति अति यर्थाथवादी (Surrealistic) प्रवृत्ति का जन्म साहित्य और नाटक में हुआ। प्रगयड़ का मनोवैज्ञानिक सत्य भी ग्रहण किया गया और वर्जना की सीमा को नकारते हये साहित्य सर्जक तथा नाटकीय त्रि सामाजिक चेतना के उस बिन्दु पर पहुँच गये, जहाँ अन्तर के उत्पीड़न को अन्तवरित करना या। यह प्रयोग चतुदिशायी हो उठा। कृष्ठा और पीड़ा का उद्वेलन एक बड़ी सीमा तक प्रभावी रहा। सौन्दर्य सृजन में साहित्यकारों, कलाकारों ने वे प्रतीक चुने जो विस्मयकारी होने के साथ ही हमारी चेतना के लिये एक चुनौती थे। सौन्दर्य सृजन की यह विद्या, मनोविश्लेषण की सशक्त प्रस्तुति है। इसी समय युद्ध जनित कुण्ठाग्रस्त कलाकारों तूलिका का गहरा प्रहार हुआ परम्परागत मूल्यों पर। साथ ही सृजन के नितान्त नवीन चौंकाने वाले आयाम ढूंढ़े गये। जिनका उद्भव दो विशाल विश्व युद्धों की परिणति था। किन्तु ध्वंसात्मक वृत्ति की तीव्रता सृजन (Creativity) के कोमल स्पर्श से कम है तो रहे और यर्थाथवादी चरम पर कलाकार ने सत्य के शाश्वत स्वरूप को प्रतिष्ठित किया। योरोपीय देशों में अभिव्यंजना तथा अति यर्थाथ के आधार पर वादों ने जन्म लिया। इस सृष्टि में जिन बिम्बों ने ग्रहण किया उनमें सौन्दर्य कम चिन्तना अधिक थी। सौन्दर्यानुभूति की इस नूतन शैली ने समस्त संसार के लिये संकेत प्रस्तुत किये।

भारतीय कलाकार का प्रारब्ध कुछ दूसरा ही है, दीर्घकालीन दासता के एक में कलात्मक सर्जन दिग्भृमित हो दिशा ढूंढता रहा है। सौन्दर्याभिव्यक्ति के परम्परागत आदर्श बिम्ब जो भारतीयता की पहचान थे। बिखर गये, किन्तु उत्पीड़न, शोषण के मध्य भी कलाकार को प्रकाश की एक धूमिल रेखा मिली।

राजा रवि वर्मा ने जहाँ राष्ट्रीय संस्कृति और धर्म को अपने विषयों में समेटा वहीं बंगाल में अजन्ता की परम्परा ने मृतप्राय भारतीय परिम्प में प्राशा संचार किये और

सृजनात्मकता के नये बीज बोये गये।

इस अवस्थिति के लिये लार्ड कर्जन के प्रति भारतीय कला संस्कृति सदैव आभारी रहेगी, जिन्होंने सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा का विशेष प्रयास किया। तत्कालीन कलकत्ता आर्ट स्कूल के प्रिंसिपल ई. बी. हेबेल, बंगाल कला शैली के प्रर्वतक अवनीन्द्र नाथ तथा सुविख्यात चिन्तक कुमार स्वामी ने सृजन के उद्धर्ऋव स्वर की गरिमा बनाये रखी, जिसके प्रमाण में आधुनिक कला की राष्ट्रीय संग्रहालय दीर्घा (Modern Art Gallary) में प्राप्त है।

सम्प्रति एक चुनौती भरा युग है। कला की नूतन शैली और अभिव्यंजना के पार्श्व आज के समसामयिक चिन्तन के साथ जुड़ गये हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अर्जित कला के प्रदर्शन दर्शक के चौंकाते हैं। विशाल कैनवास पर झूलते रंगों को एकान्तिक संवेदना एक प्रश्न छोड़ती सी प्रतीत होती है। सौन्दर्य मूल्यों की परिकल्पना भी भ्रमित है। आज के कलाकार की रचनाधर्मिता किसी सीमा तक भौतिक मूल्यों में केन्द्रित होती जा रही है। संदेश अथवा रसात्मकता का सूक्ष्म अनुभूति का यहा नितान्त अभाव है। सौन्दर्य की परिभाषा का रूप अनन्त हो उठा है किन्तु ऐसा नहीं है कि सृजन को क्षति पहुँची हो। सभ्यता और संस्कृति के विकसित चरणों के साथ सृजनात्मक प्रेषण (Creative Representation) में विशिष्ट मिथकों और बिम्बों की कल्पना की गयी जो कलाकार के वर्चस्व को जीवन्त करती यथार्थ तथा कल्पना एक साथ मूर्तमान हो उठे हैं। यही वे फ्लांश है, जब पन्त ने कचरे के मध्य पड़ी सिगरेट की डिब्बी और चमकीली पन्नी में सौन्दर्य देखा और महाकवि निराला ने भिखारी को फटी पुरानी झोलों में कान्सटेबल ने अपनी धरती पर तो मोनमांग, पिकासो, देगा ने पीड़ित मानवता में कला मूल्य खोजे। यही चिन्तन चित्रकार हुसेन की समसामयिक चेतना है। अमृता शेरगिल की अनुभूति में धरती की महक है और बेन्द्र का आदिवासी सौन्दर्य है।

ध्वनिकार आनन्दवर्धन के अनुसार निषाद के बाण से बिद्ध सहचरी के वियोग से कातर के क्रन्दन से उत्पन्न आदि कवि का शोक ही श्लोक में परिणत हो गया था (तथा आदि क्वेर्वाल्मी के निहत सहचारी विरह कातर क्रौंचाक्रन्द जनितः शोक एवं श्लोक तथा परिणतः) और महाकवि का वह शोक प्रसरित हो, जन–जन का शोक बन गया, उसी भाँति कलाकार की संवेदनीयता भी जब दृश्य के माध्यम से उदारता में पर्यवसित हो यश सापेक्ष और शाश्वत बनकर निश्चित संकेत दे सके, वही सौन्दर्य है।

डॉ. नागेन्द्र ने रस सिद्धान्त में स्पष्ट किया है– "अब यदि आप पूछें कि एक व्यक्ति का भाव, दूसरों के हृदयों में समान भाव कैसे उत्पन्न कर देता है, तो इसका उत्तर यही है कि मूलतः सम्पूर्ण मानवता एक ही चेतना से चौतन्य है।"

आज बीसवीं शती के अन्तिम दशकों में कला का स्वरूप तथा कला मूल्यों की चर्चा सौन्दर्य की उस चिन्तन से बहुत दूर है, जो हमें अजन्ता की विरादता और लघुचित्रों की संवेदनीयता में दृष्टिगत होती है। आज का कलाकार वैज्ञानिक है मनः विश्लेषक है और सबसे अधिक अपेक्षित तीव्रगामी युग का सर्जक है। 'विद्या' और 'रचना' के रूप परिवर्तन की आकांक्षी स्वरूप उसका अधुनातन माध्यम आज ग्राफिक्स (Graphics) है। जिसमें वैवाहिकता, विद्या, रेखा, वर्ण आकार का विन्यास कलाकार का नितान्त अपना है। समस्त चेतना, रसानुभूति और उदान्त परिकल्पना, कलाकार का मनोगत सत्य है।

यह मनोगत सत्य, सभी के सत्य में परिवर्तित हो, अधुनातन सौन्दर्य दर्शन के माध्यम से समाज के प्रति कलाकार का सम्बोधन है। किन्तु सभी विधाओं, विरूपताओं में सौन्दर्यानुभूति साधारण अनुभूति से भिन्न मानव के सम्पूर्ण जीवन और विशिष्ट अनुभवों का सार है–

`Art is an integrated total experience brought about by the form of the individuals feelings andemotion with social values] judgement and experience.' **- R. K. Mukerjee**

Refernece of Books

1. Meaning of Art by H. - Read.
2. Dictionary of Modern Painting.
3. Nesthetics & Croce.
4. Aesthetics & by K. C. Pandey.
5. Concept of Aesthetics by Bcusanquet.
6. Social Functions of Art by R.K- Mukerjee.
7. Hindu view of Art by Mulk Raj Anand.
8. Art by Clive & Bell.
9. Principles of Art by R. G. Collingwood.
10. Dictionary of Art.
11. Philosophy of Modern Painting by Read.
12. रससिद्धान्त – डॉ. नागेन्द्र।

ISSN : 2349-9273

Received: 16 May, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

वैदिक शिक्षा पद्धति एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता

– प्रतीक श्रीवास्तव
रिसर्च स्कालर –
राजनीति विज्ञान विभाग,
एल–एल. एम.,
यू. जी. सी. नेट
गोरखपुर विश्वविद्यालय–273001
(उत्तर प्रदेश)

ई–मेल :
prateek26jul@gmail.com

हमारे ऋषि–मुनि प्रातः स्मरणीय हैं। उनके द्वारा प्रणीत इतिहास पुराणों को देखने से हमें यह प्रतीत होता है कि पूर्व काल में भारत राष्ट्र सभी प्रकार से उन्नति अभ्युदय के शिखर पर था। ज्ञान–विज्ञान, बल–बुद्धि, धन–धान्य, सुख–सम्पत्ति, ऐश्वर्य–वैभव, प्रेम–परोपकार, शील–सदाचार, योग–विज्ञान आदि प्रत्येक विषय में इस देश ने अत्यधिक विकास करके कल्पनातीत सामर्थ्य प्राप्त किया था। वेद भारतीय संस्कृत साहित्य के अनमोल रत्न हैं। इनमें जिस आकर्षक, सरल पद्धति से गहन से गहन विषयों का ज्ञान दिया गया है, उसके कारण देश–विदेश में सर्वत्र लोकप्रिय सिद्ध हुई है। अध्यात्म विद्या के उच्च ग्रन्थों के रूप में तो ये प्रख्यात है ही, पर पाठक इनमें शिक्षा पद्धति के अनेक मनोवैज्ञानिक तत्वों को भी उपलब्धि कर सकते हैं।

भारतीय आचार्यों ने शरीर, मन और आत्मा के विकास का साधन शिक्षा को माना है। अतः शिक्षा भौतिक उपलब्धियों तक ही सीमित न रहकर आत्मचिन्तन तक का लक्ष्य निर्धारित करती है। शिक्षा का सम्बन्ध बालक के जन्म के पूर्व से लेकर उसके परिपक्व नागरिक बनने तक निरन्तर रहता है। संतानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभाव रूप आभूषणों का धारण कराना माता–पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। भारतीय आय परम्परा में वेद को ईश्वर की वाणी माना जाता है। आर्यों के प्रायः सभी विचारक आचार्य और ऋषिमुनि वेद को मानव मात्र के कल्याण के लिए श्रृष्टि के आरम्भ में दिया गया ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। वेद में जीवनोपयोगी सभी विद्या–विज्ञानों का मूल रूप में उपदेश कर दिया गया है।

तिखो यदवने शरदस्त्वामिच्छुचि घृतेन शुद्धयः स पर्यान ।
नामानिविद्याधिरे याज्ञियान्य सूदयन्ततन्वः सुजाता ।।

– ऋग्वेद ।। 172 1311 ।।

कोई भी मनुष्य वेद विद्या के बिना पढ़े विद्वान नहीं हो सकता और विद्याओं के बिना निश्चय करके मनुष्य जन्म की सफलता तथा पवित्रता नहीं होती। इसलिए सब मनुष्यों को उचित है कि इस धर्म का सेवन करें। वेदकालीन धरणा के अनुसार ज्ञान के द्वारा मानव का व्यक्तित्व दिव्य हो जाता है। वह ज्ञान के सम्पन्न होने पर देवता बन जाता है । ऐसे विद्वान को समाज में सर्वोच्च आदर प्राप्त होता है। मानव के जन्मजात तीन ऋणों में से ऋषि ऋण से मुक्ति विद्या प्राप्त करने के द्वारा ही सम्भव मानी जाती थी । वैदिक काम में सूक्तों को कंठाग्र करने की रीति थी। आज तक साधरणतः किसी भी संस्कृत के धार्मिक ग्रन्थ को और विशेषतः वेदों और वेदांगों को कण्ठस्थ करने का प्रचलन मिलता है। अपने ज्ञान की परिपक्वता और पूर्णता की प्रतिष्ठा करने की इच्छा रखने वाले विद्यार्थी भ्रमण करते हुए विभिन्न प्रान्तों के विद्वानों से विवाद करते थे । विवाद में परास्त होने पर वे कभी–कभी स्वयं

विजयी विद्वान के शिष्य बनकर उनसे विद्या सीखते थे। ऐसे विवाद वैदिक काल से ही प्रायः सदा होते आए हैं। विवादों में आजकल के शस्त्रार्थ की भाँति हठधर्मिता नहीं होती थी। विवादों के द्वारा सत्य का अनुसंधान कर लेना तथा उसके आधार पर अपने व्यक्तित्व का विकास करना प्रधान उद्देश्य होता था ।

आचार्याद्धयेव विद्याविदितासाधिष्य प्रापति ।

– छान्दोग्य उपनिषद् 4.9.3

उपनिषद युग में आचार्य का शिक्षण में विशेष महत्व था। अपने आप सीखी हुई विधा कच्ची ही समझी जाती थी।फिर भी तत्कालीन शिक्षण को गौरवान्वित करने में जिज्ञासु विद्यार्थियों की ज्ञान परायणता को ही प्रथम कारण कहा जाता सकता है। आचार्य से जो कुछ श्रवण किया, उसे मनन और लिपिशासन के द्वारा संवर्धित करके तद्नुकूल व्यक्तित्व का विकास करने वाले ब्रह्मचारी महान थे। उस समय विभिन्न आचार्यों से शिक्षा पाने के लिए उत्सुक विद्यार्थी सदैव तत्पर रहते थे। जहाँ कहीं ज्ञात हुआ कि कोई विद्वान दर्शन के उच्च तत्वों का ज्ञान रखता है।, झट विद्यार्थी उसके पास पहुँचकर उस नयी वस्तु को सीख लेते थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि वैदिक शिक्षा में भारतीय संस्कृति के सर्वोच्च अध्यात्मिक और वैज्ञानिक तत्व महर्षियों के द्वारा प्रतिष्ठापित हैं। अतः वैदिक शिक्षा पद्धति मनोवैज्ञानिक एवं क्रियात्मक शिक्षा पद्धति के रूप में आज भी उपादेय है ।

आचार्य शिष्य का निर्माण कैसे करेगा–

सबसे पहले उसके पास ऐसा वातावरण होना चाहिए जहाँ तक अपना प्रयोग आरम्भ कर सके और सांसारिक अशान्ति से सुरक्षित हो । वेद ने कहा–

उपहरे गिरीणांसगमे व नदीनां,
घिया विप्रो अजायत । – यजु. 27 । 15

उत्तम आदर्शों, उत्तम शिक्षकों और अनुकरणीय अनुकूल वातावरणों में शिक्षा का आरम्भ और विकास सम्भव हो सकता है। पर्वतों की घाटियों एवं नदियों के संगमस्थलों में उपस्थित विद्वानों में ही बुद्धि का उद्वेक होता है। इस कारण विद्वान आचार्य अपने शिल्पों को ऐसे वातावरण में रखने का यत्न करें, जहाँ बालक अपनी आँखें खोलकर प्रकृति के वैचित्रय और सौन्दर्य को निहार सकें। इसके साथ ही प्रकृति की व्यापकता की भाँति अपनी दृष्टि को भी व्यापक बना सकें ।

स्वस्थ मन और मस्तिष्क के लिए स्वस्थ शरीर भी आवश्यक होता है। इसलिए शिक्षा देने से पूर्व शिष्य की शारीरिक परीक्षा और न्यूनता निवारण भी अत्यन्त आवश्यक होना चाहिए । वाणी, दृष्टि, श्रवण आदि शक्तियों के बिना ज्ञान ग्रहण कैसे सम्भव हो सकेगा? मानव की जिन बौद्धिक शक्तियों के विकास का प्रयास शिक्षण कार्य में होना चाहिए उनका व्यापक वर्णन हमें वैदिक ऋचाओं में मिलता है। उन शक्तियों का विवेचन हम इस प्रकार कर सकते हैं–

1. **सावित्री** – कियात्मक शक्ति।
2. **ब्रह्म** – ज्ञान सूचनाओं का संग्रह, सिद्धान्त, तथ्य, घटनाएँ।
3. **श्रद्धा** – तर्क और अनुभव के आधार पर निष्ठा।
4. **मेघा** – शुद्ध बौद्धिकता, मौलिकता एवं प्रेरणा।
5. **प्रज्ञा** – समझने की शक्ति और स्वरूप् ग्रहण की क्षमता।
6. **धारणा** – प्राप्त ज्ञान को स्मरण रखने की शक्ति।
7. **सदसस्पति** – समूह पर नियंत्रण और सभा संचालन।
8. **अनुमति** – दूसरों के विचारों को जानना, सहमत होना और समझौता करना।

मानव–मस्तिष्क की ये कुछ शक्तियाँ हैं जिनका विकास बालक के शिक्षणालय में प्रवेश से आरम्भ होना चाहिए और उसे दैनिक जीवन में इनकी उन्नति के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। वर्ष में सत्रारम्भ के दिन नवीन प्रविष्ठ बालकों के साथ प्राचीन बालकों को भी इन शक्तियों का स्मरण आचार्य को कराना चाहिए। इसी दृष्टि से श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन उपाकर्म पद्धति का विकास किया गया था। वर्तमान में तो प्रवेश का न कोई नियम है और न स्वरूप। शिक्षाशास्त्रियों को प्रवेश की एकरूपता पर गम्भीर विचार करना चाहिए। आज की युवा पीढ़ी में जो उच्चश्रृंखलता, स्वच्छन्दता और स्वार्थपरता बढ़ रही है, उसका कारण भद्र भावना का अभाव ही है। आज की शिक्षा में इस तत्व की उपेक्षा है और इसी कारण शिष्य समाज नैतिक मूल्यों के महत्व को नहीं समझ पा रहा है। स्वस्थ शरीर स्वस्थ मस्तिष्क और पवित्र आत्मा का निर्माण स्वरूप विकसित करना ही वैदिक शिक्षा पद्धति का सारांश है ।

आज शिक्षा क्षेत्र में जो अशान्ति और अव्यवस्थ संव्याप्त है, उसका निराकरण शिक्षा के वैदिक दृष्टिकोण से ही सम्भव हो सकेगा। आज शिक्षा को व्यापार बना दिया गया है। शिक्षा का अर्थकारी होना ही शिक्षा की सार्थकता

मानी जाती है । परन्तु यह दृष्टिकोण दूरदर्शी नहीं है। जब तक शिक्षा को जान–दान और सेवाभावना से सम्पृक्त नहीं किया जायेगा, जब तक शिक्षा को विचार स्वातंत्रय नहीं मिलेगा, जब तक श्रवण–मनन, निदिध्यासन की प्रणाली का विकास नहीं होगा तब तक शिक्षा के लिए बड़े–बड़े, विशाल भवन भले ही बनते रहे, शिक्षा शिक्षा न बन सकेगी। शिक्षा का जीवन और चरित्र से अभिन्न सम्बन्ध होना चाहिए। प्रत्येक जीवन का दर्शन होता है और प्रत्येक व्यक्ति उसी दर्शन के आधार पर अपने चरित्र का निर्माण एवं विकास करता है। आज जीवन का दर्शन अर्थ और काम है। सारा चक्र इसी आधार पर घूम रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि धर्म और मोक्ष के अन्तर्गत अर्थ और काम को सीमित रखा जाय ।

वैदिक शिक्षा ने अर्थ और काम की उपेक्षा नहीं की। इस वैदिक दृष्टि का शिक्षा में समावेश ही आज की शिक्षा समस्या का समाधान है और मानव जीवन के लिए भय और आतंक से संत्रस्त मानव जाति के लिए विनाश से बचने का आदर्श सुपथ है। वर्तमान शिक्षा में पूरी तरह यान्त्रिक, निर्जीव और घातक हो जाती है। जिस शिक्षा के रहते अभाव, अशान्ति, हिंसा, झूठ, छल और अमानवीयता ही पनपती हो उसे शिक्षा नहीं माना जाना चाहिए। कम से कम भारत में तो ऐसे शिक्षा केन्द्र होने ही चाहिए, जिनके साहस, निर्भयता, मानवता, आत्मज्ञान आदि की शिक्षा दी जाये ।

शिक्षण विधि–

उपनिषदें भारतीय संस्कृत–साहित्य के अनमोल रत्न हैं। इनमें जिस आकर्षक, सरल पद्धति से गहन से गहन विषयों का ज्ञान दिया गया है। उसके कारण ये देश–विदेश में सर्वत्र लोकप्रिय सिद्ध हुई है। अध्यात्म विद्या के उच्च ग्रन्थों के रूप में तो ये प्रख्यात हैं ही, पर पाठक इनमें शिक्षा पद्धति के अनेक मनोवैज्ञानिक तत्वों की भी उपलब्धि कर सकते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय विचारधारा और संस्कृति की विषय वस्तु को सम्मिलित कर देने मात्र से कोई शिक्षा भारतीय नहीं बन जाती। शिक्षण विधि के अन्तर्गत मनुष्य को ज्ञान प्राप्ति करने के विभिन्न साधनों का अध्ययन किया जाता है। हमें भारत की उस उन मनोवैज्ञानिक पद्धतियों की खोज करनी होगी, जो मनुष्य की उन समस्त नैसर्गिक शक्तियों एवं उपकरणों को सजीव न बना देती है, जिनके द्वारा वह ज्ञान को आत्मसात् करना है। नवीन सृष्टि करता है तथा मेधा, पौरूष और ऋतम्भरा प्रज्ञा का विकास है, उस विपुल बौद्धिकता अध्यात्मिकता और अति मानवीय नैतिक शक्ति का रहस्य क्या था? जिसे हम वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, प्राचीन दर्शन शास्त्रों में भारत के सर्वोत्कृष्ट काव्य–कला, शिल्प और स्थापत्य में स्पन्दित होते हुए देखते हैं? हमें भारत के आदर्शों और उन पद्धतियों को अधिक प्रभावशाली और आधुनिकतम परिवेश के अनुरूप जीवित करना होगा ।

वर्तमान उद्दण्डता, अनुशासनहीनता, अनैतिकता चारित्रिक अधःपतन, माता–पिता तथा प्रतिबद्धाहीनता, राष्ट्रीय भावना की कमी स्वार्थान्यता आदि दोष इसी दूषित शिक्षा पद्धति के कारण है। परिचित द्वारा अपरिचित का तथा व्यक्त द्वारा अव्यक्त का उपदेश देना गुरु का महनीय कार्य रहा और इस कार्य की सार्वत्रिक सिद्धि के लिए उन्होंने आख्यानों का उपयोग किया है।

1. आख्यान शैली– आख्यान शैली का उदय बंद से प्रारम्भहोताहै।वेद की प्रत्येकसंहिता, ब्राह्मण तथा उपनिषद में न्यून तथा अधिक मात्रा में यह शैली समादृत हुई है. इस शैली को बच्चों की शिक्षा पद्धति में सम्मिलित किया जाना चाहिए किन्तु बच्चों और बालकों के लिए तथा प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रम में विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा यदि यह प्रणाली वर्तमान में अपनायी जाये तो शिक्षा व्यवस्था को और अधिक प्रभावकारी बनाया जा सकता है ।

2. प्रत्यक्ष – इस विधि से शिक्षा देने से बालकों का सर्वांगीण विकास होता है। वर्तमान समय में शिक्षा के पाठ्यक्रम की कहीं अधिक कठोर है। शिक्षकों को अपनी जिम्मेदारियों को व्यापक बनाते हुए छात्रों की कलात्मक, सृजनात्मक, अभिन्यात्मक अध्यात्मिक और प्रेरणात्मक आवश्यकताओं का ध्यान रखना चाहिए । हमारे भास्तीय तत्वदृष्टा महर्षियों ने परा एवं अपरा दो विधाओं का उपदेश दिया है–

द्वे विधे बेदितव्ये इति ह स्म यद्ब्रहाविदों वदान्ति परा चैवापरा च ।। – मुण्डकोपनिषद – 1 ।1 ।4–5

हमें शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक आदि भौतिक दृष्टि से उन्नत बनाने वाली जो विद्या है, वह अपरा विद्या है, जिसे हम भौतिक विद्या भी कह सकते हैं। प्रत्यक्ष शिक्षाविधि में गुरू परम्परा और गुरुकुलों का बहुत ऊँचा स्थान है, क्योंकि गुरू बिना ज्ञान नहीं होता।

3. अनुमान – वैदिक काल के उपासक महान् आशावादी थे, वे लोग इस लोक में धन–धान्य और दीर्घायु

के अभिलाषुक थे और परलोक में पितृलोक के सुख की कामना किया करते थे। हमारे ऋषिगण काल गणना और अनुमान के आधार पर समस्त ज्ञान का अर्जन करते थे। इस प्रकार देखा जाता है कि जिस ज्ञान को बालक प्रत्यक्ष विधि से नहीं ग्रहण कर पाता, उस ज्ञान को प्रदान करने के लिए अनुमान विधि से ज्ञान का विस्तार किया जा सकता है।

4. शब्द प्रमाण – जिस विषय का ज्ञान अनुमान एवं प्रत्यक्ष से मालुम नहीं हो पाता तो शब्द प्रमाण के सहायक ज्ञान को प्राप्त किया जाता है, यह ज्ञान मौखिक तथा लिखित वाणी के अन्तर्गत प्रयुक्त किया जाता है। व्यक्ति का समुचित बौद्धिक, भावनात्मक तथा शारीरिक विकास न हुआ तो परिपक्वता न आई हो तो कल्पना कीजिए उसका मानसिक संतुलन कैसे स्थिर रह पाएगा। शब्द प्रमाण के अन्तर्गत व्याख्यान, चर्चा, पुस्तक अध्ययन, कक्षा अध्यापन, योगचर्चा, आदि विधियाँ आती हैं जिसके द्वारा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में दायर करके शिक्षा में क्रांति लाया जा सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत में आज शिक्षा–व्यवस्था जिन हाथों में है, उनका एक प्रतिशत भी आभास पद के गौरव का अधिकारी नहीं है। शिक्षा को आज व्यापार का रूप मिला हुआ है। शिक्षा–संस्थाएँ कारखानें बनी हुई हैं। जहाँ बेरोजगार युवक तैयार होते हैं। देश की उन्नति और मानक के आदेश विकास के लिए देशवासियों को प्राचीन भारत के शिक्षा–आदर्शों को स्वीकार करना चाहिए। जितना शीघ्र देश यह करेगा, देश की शिक्षा पद्धति उत्तम और सार्थक बन सकेगी। 'विद्याविहीनः पशु' विद्यारहित मनुष्य का जीवन पशु तुल्य है। इसी योनि में विशेष ज्ञान लाभ द्वारा मानव अपना मुख्य उद्देश्य पूरा कर सकता है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऋग्वेद संहिता – प्रथम खण्ड, स्वरूप का लक्षण, मोतीलाल बनारसीदास, लाहौर–1939।
2. छान्दोग्योपनिषद् – शंकर भाष्य, गोविन्द भवन, गीता प्रेस, गोरखपुर, संवत्– 2941।
3. यजुर्वेदसंहिता – सात वेदों का श्रीपाद दामोदर सम्पादक, स्वाध्याय मण्डल, पारडी–1968।
4. मुण्डकोपनिषद् – शंकर भाष्य, गोविन्द भवन, गीता प्रेस, गोरखपुर, संवत्–2041।
5. शिक्षा सिद्धान्त एवं दर्शन – सिंह सत्यदेव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी–1971।
6. आधुनिक भारतीय शिक्षा : संरचना और समस्या – अग्रवाल जे. सी., आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नयी दिल्ली–1989।
7. शिक्षा तथा मानव मूल्य – डॉ. बी. एस., हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़–1992।

ABHINAV GAVESHNA

Multi Displinary Quareterly International Refreed/Peer Reviewed Research Journal

I.S.S.N. : 2394-4366

(Multi Displinary Quareterly International Refreed/Peer Reviewed Research Journal)

(in Multi Language: Hindi + English + Sanskrit)

`Abhinav Gaveshna'

Sector-K-444, `Shiv Ram Kripa' World Bank Barra-Kanpur-208027 (U.P.)

Contact- 08896244776

E-mail: mohittrip@gmail.com

Visit us : www:abhinavgaveshna.com, thegunjan.com

ISSN : 2349-9273

Received: 22 April, 2024; **Accepted:** 28 June-2024, **Published:** July-December, 2024 Issue

वैदिक काल से आधुनिकपर्यन्त चुनौतियाँ एवं भारतीय नारी

. प्रो. (डॉ.) अर्चना श्रीवास्तव
संस्कृत विभाग,
महिला महाविद्यालय, किदवईनगर,
कानपुर–208011 (उत्तर प्रदेश)

ई–मेल :
archnasrivastava@gmail.com

सारांश

(यह शोध पत्र वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक भारतीय नारी की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। यह वैदिक साहित्य में महिलाओं की अपेक्षाकृत सम्मानजनक स्थिति, मध्यकाल में उनकी स्थिति में आई गिरावट, और आधुनिक काल में समाज सुधार आंदोलनों और नारीवादी प्रयासों के माध्यम से हुए परिवर्तनों का निरीक्षण करता है। यह पत्र संवैधानिक प्रावधानों और कानूनी पहलों की भूमिका का भी विश्लेषण करता है, साथ ही आधुनिक भारत में महिलाओं द्वारा सामना की जा रही चुनौतियों और आगे की राह पर भी विचार करता है।)

भारतीय समाज में नारी का स्थान सदैव ही एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। समय के साथ, महिलाओं की भूमिकाओं और उनकी स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं। वैदिक काल में जहाँ महिलाओं को शिक्षा और धार्मिक कार्यों में भागीदारी का अधिकार था, वहीं मध्यकाल में उनकी स्वतंत्रता सीमित कर दी गई। आधुनिक भारत में, नारीवादी आन्दोलनों और संवैधानिक प्रावधानों के परिणामस्वरूप महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन लैंगिक भेदभाव अभी भी एक गंभीर चुनौती बनी हुई है।

वैदिक काल में नारी की स्थिति एक गौरवशाली अध्याय है। वैदिक साहित्य भारतीय इतिहास में एक ऐसा कालखण्ड प्रस्तुत करता है जब महिलाओं को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था। यह युग भारतीय नारी के लिए अपेक्षाकृत 'स्वर्णयुग' के रूप में देखा जा सकता हैं। वे न केवल शिक्षित थीं बल्कि धार्मिक और दार्शनिक चर्चाओं में भी सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। ऋग्वेद में कई विदुषी महिलाओं का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने मंत्रों की रचना की और यज्ञों का संचालन किया।[1]

वागाम्भृंण,सरस्वती जैसी देवियों को ज्ञान और विद्या के प्रतीक के रूप में पूजा जाता था, और उन्हें यज्ञों में आमंत्रित किया जाता था। अथर्ववेद में ब्रह्मचारिणी कन्याओं का उल्लेख है, जो उच्च शिक्षा प्राप्त करती थीं।[3] वैदिक काल में छात्राओं के दो प्रकार बताए गए हैं– सद्योद्वाहा, जो अध्ययन पूर्ण कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करती थीं और ब्रह्मवादिनी, जो आजीवन ब्रह्म–चिन्तन में रत रहती थीं। गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों ने दर्शन और मीमांसा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वैदिक समाज में कन्या के जन्म पर शोक मनाने का कोई प्रमाण नहीं मिलता है, बल्कि कुछ अनुष्ठानों का उल्लेख मिलता है, जो विदुषी पुत्री की कामना से किए जाते थे।[4] नारियों को सम्पत्ति का अधिकार था और उन्हें

अपना जीवनसाथी चुनने की स्वतंत्रता थी।[5] कुछ परिवारों में मातृसत्तात्मक व्यवस्था की झलक भी मिलती है, जहाँ पुत्रों को माता के नाम से जाना जाता था।[6]

बृहदारण्यक उपनिषद में महर्षि याज्ञवल्क्य और गार्गी के बीच हुए दार्शनिक संवाद का विस्तृत वर्णन मिलता है। गार्गी ने याज्ञवल्क्य जैसे प्रकाण्ड विद्वान को चुनौती दी और उनके साथ आत्मा और ब्रह्म के गूढ़ रहस्यों पर बहस की। यह संवाद नारी की बौद्धिक क्षमता और ज्ञान की पहुँच का स्पष्ट प्रमाण है।

'मैत्रेयी– यह याज्ञवल्क्य की पत्नी थीं, जिन्होंने भौतिकता की अपेक्षा आत्मज्ञान को महत्व दिया। बृहदारण्यक उपनिषद[7] (2.4.1–14) में मैत्रेयी और याज्ञवल्क्य के बीच 'अमृतत्व' (अमरता) पर एक प्रसिद्ध संवाद है, जहाँ मैत्रेयी स्वयं को केवल धन से संतुष्ट न पाकर आत्मज्ञान की खोज में लग जाती हैं। 'अपाला, घोषा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, श्रद्धा, इंद्राणी इत्यादि ऋग्वेद में लगभग 20 ऐसी ब्रह्मवादिनी ऋषिकाओं का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने स्वयं मंत्रों की रचना की और जिन्हें 'ऋषिकाएँ' कहा गया। उदाहरणार्थ ऋग्वेद मंडल 10, सूक्त 39 और 40 की कुछ ऋचाएँ घोषा द्वारा रचित मानी जाती है।

कुछ विद्वानों का मत है कि वैदिक काल में नारियों का भी उपनयन संस्कार (विद्यारंभ संस्कार) होता था, जो उन्हें वेदाध्ययन का अधिकार देता था। अथर्ववेद (11.5.18) में एक मंत्र प्राप्त होता है–'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्' अर्थात् ब्रह्मचर्य व्रत लेकर कन्या विद्याध्ययन करती हुई, युवावस्था में पति को प्राप्त करती है।

यह मंत्र अप्रत्यक्ष रूप से बालिकाओं के लिए ब्रह्मचर्य और शिक्षा की अवधि का संकेत देता है।

वैदिक युग में नारी को धार्मिक अनुष्ठानों और यज्ञों में सक्रिय रूप से भाग लेने का पूर्ण अधिकार था। उसे पति की 'सहधर्मचारिणी' माना जाता था।

किसी भी यज्ञ को पूर्ण और वैध नहीं माना जाता था यदि पत्नी पति के साथ उपस्थित न हो। ऋग्वेद में कई स्थानों पर पत्नी के यज्ञ में पति के साथ बैठने का उल्लेख मिलता है।

'पत्नीसाहस्रं हवींष्यनुतिष्ठति',

'अयज्ञियों व एषः योऽपत्नीकः।'

अर्थात् पत्नी अपने पति के साथ यज्ञों में हवि अर्पित करती है तथा पत्नी के बिना यज्ञ पूर्ण नहीं माना जाता था।

कुछ संदर्भ यह भी प्राप्त होते हैं कि वैदिक नारियाँ ऋत्विक् (यज्ञ कराने वाले पुरोहित) के रूप में भी कार्य करती थीं। वे स्वयं भी प्रार्थनाएँ करती थीं और देवताओं की स्तुति करती थीं। वे यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री तैयार करने में भी सक्रिय भूमिका निभाती थीं। वैदिक समाज में विवाहित स्त्री को 'शुभताः और 'समृद्धि' लाने वाली माना जाता था। उसके आशीर्वाद को महत्वपूर्ण माना जाता था।

यह भागीदारी न केवल उसकी धार्मिक महत्ता को दर्शाती है, बल्कि समाज में उसकी सम्मानजनक स्थिति और उसकी सक्रिय भूमिका को भी रेखांकित करती है।

वैदिक काल में विवाह एक पवित्र संस्कार था, और नारी को अपना जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता प्राप्त थी।

स्वयंवर प्रथा का यद्यपि व्यापक उल्लेख नहीं मिलता, पर कुछ राजकुमारियों के स्वयंवर के उदाहरण मिलते हैं, जहाँ नारी अपनी इच्छानुसार व्यक्ति को चुन सकती थी।कुछ वैदिक ग्रंथों में प्रेम विवाह (गांधर्व विवाह) को भी सामाजिक स्वीकृति मिली हुई थी।

विधवा पुनर्विवाह यद्यपि बाद के युगों में वर्जित हो गई परन्तु वैदिक काल में विधवा पुनर्विवाह के कुछ उदाहरण प्राप्त होते हैं। अथर्ववेद– (9.5.27–28) में एक मंत्र है जो विधवा के दूसरे विवाह का संकेत देता है–

'या पूर्वं पतिं वित्त्वाऽथान्यं विन्दतेऽपरम्।

पञ्चौदनं च तावजं ददातो नवि योषतः।।'[9]

अर्थात् जो दूसरा पति प्राप्त करती है। उसे पंचौदन (एक प्रकार का यज्ञ) देना चाहिए, ताकि वह उन्हें (देवताओं को) हानि न पहुँचाए। पारिवारिक मुखिया के रूप मेंगृहिणी के रूप में नारी का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता था।

वैदिक युगीन नारी की स्थिति का गहन अध्ययन यह दर्शाता है कि उसे समाज में एक महत्वपूर्ण, सम्मानित और अपेक्षाकृत स्वतंत्र स्थान प्राप्त था। उसे शिक्षा प्राप्त करने, धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेने और परिवार के निर्णयों में अपनी राय रखने का अधिकार था। गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषी नारियों और घोषा, लोपामुद्रा जैसी ऋषिकाओं के उदाहरण इस बात के अकाट्य प्रमाण हैं कि ज्ञानार्जन पर कोई लैंगिक प्रतिबन्ध नहीं था। विवाह और पारिवारिक जीवन में भी उसे सहधर्मचारिणी और गृहणी के रूप में महत्वपूर्ण माना जाता था।

यह सच है कि कुछ पितृसत्तात्मक रुझान मौजूद थे

और पुत्र की कामना की जाती थी, लेकिन यह बाद के युगों की कठोर पाबन्दियों और भेदभाव से बहुत अलग था। वैदिक साहित्य में नारी के प्रति जो सम्मान और सकारात्मक दृष्टिकोण झलकता है, वह भारतीय समाज के लिए एक प्रेरणा स्रोत रहा है। यह विश्लेषण यह स्थापित करता है कि नारी का अवनति बाद के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवर्तनों का परिणाम था, न कि वैदिक सिद्धांतों का। वैदिक युग एक ऐसा कालखण्ड था जहाँ नारी को उसके गुणों और क्षमताओं के आधार पर पहचाना जाता था, जो आधुनिक मानवाधिकारों के सिद्धान्तों के कई पहलुओं से मेल खाता है।

मध्यकाल में भारतीय नारी की स्थिति में महत्वपूर्ण गिरावट आई। सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों ने महिलाओं की स्वतंत्रता और अधिकारों को सीमित कर दिया। उन्हें शिक्षा से वंचित कर दिया गया और उनकी भूमिका घर और परिवार तक सीमित कर दी गई। बाल विवाह और सती प्रथा जैसी कुप्रथाएं समाज में व्याप्त हो गईं, जिससे महिलाओं का जीवन और भी कठिन हो गया। ''स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम् इति श्रुतेः'' जैसे कल्पित वचनों को धर्म के नाम पर प्रचारित किया गया, जिसने महिलाओं और शूद्रों को शिक्षा से वंचित रखने का समर्थन किया।

आधुनिक युग में, महिलाओं के अधिकारों की अवधारणा ने व्यापक रूप लिया है इसमें कानून और विभिन्न सामाजिक संगठनों का अपूर्व सहयोग भी प्राप्त हुआ है। संयुक्त राष्ट्र संघ और विभिन्न राष्ट्रीय कानून लैंगिक समानता और महिलाओं के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन पर जोर देते हैं।

संयुक्त राष्ट्र चार्टर लिंग, भाषा या धर्म के आधार पर भेदभाव के बिना सभी के लिए मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रता के सम्मान को बढ़ावा देता है। महिलाओं के स्तर पर आयोग और महिलाओं के विरुद्ध भेदभाव उन्मूलन पर समिति जैसी संयुक्त राष्ट्र की संस्थाएं महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देने और उनके सतत विकास के लिए काम करती हैं। लिंगीय भेदभाव की समाप्ति पर घोषणा पत्र (1967) लिंग आधारित भेदभाव को अन्यायकारी और मानव गरिमा के खिलाफ अपराध घोषित करता है । महिलाओं के विरुद्ध सभी प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन पर कन्वेंशन (CEDA) महिलाओं के साथ भेदभाव को समाप्त करने और पुरुषों के साथ उनकी समानता सुनिश्चित करने के लिए सदस्य राष्ट्रों पर दायित्व डालता है ।

भारतीय संविधान सभी नागरिकों को समानता और कानून के समक्ष समान संरक्षण की गारन्टी देता है। संविधान के भाग–3 में मौलिक अधिकारों का समावेश है, जो महिलाओं को भी समान रूप से प्राप्त हैं। भारत में महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और बढ़ावा देने के लिए कई कानून बनाए गए हैं, जिनमें शामिल हैं–'दहेज प्रतिषेध अधिनियम, 1961 (दहेज की कुप्रथा को रोकने के लिए बनाया गया)। 'भारतीय दण्ड संहिता (IPC) महिलाओं के खिलाफ अपराधों जैसे– बलात्कार (धारा 376), अपहरण (धारा 361, 363, 366), लज्जा भंग (धारा 354) और भ्रूणहत्या (धारा 315) के लिए दण्ड का प्रावधान करता है। चिकित्सीय गर्भपात अधिनियम कुछ शर्तों के तहत महिलाओं को गर्भपात का अधिकार देता है।

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग और राष्ट्रीय महिला आयोग जैसे संस्थान भी भारत में महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्राचीन धर्मशास्त्रों में महिलाओं के लिए कुछ नैतिक और सामाजिक कर्तव्य निर्धारित किए गए थे, और कुछ संदर्भों में उनके प्रति सम्मान भी दर्शाया गया था। हालाँकि, आधुनिक कानूनी ढांचा लैंगिक समानता के सिद्धांत पर आधारित है और महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार और अवसर प्रदान करता है। प्राचीन युग में महिलाओं की भूमिका प्रायः परिवार और समाज में उनकी स्थिति के आधार पर सीमित थी, जब कि आधुनिक अधिकार महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, राजनीति और व्यक्तिगत स्वतंत्रता सहित सभी क्षेत्रों में समान भागीदारी का अधिकार देते हैं।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि प्राचीन ग्रंथों में भी महिलाओं की विभिन्न भूमिकाओं और क्षमताओं को स्वीकार किया गया था, जैसा कि विदुषी नारियों के उदाहरण से स्पष्ट है। हालाँकि, इन उदाहरणों को अक्सर अपवाद के रूप में देखा जाता था, न कि नियम के रूप में। आधुनिक अधिकार महिलाओं को उनकी व्यक्तिगत पहचान और क्षमताओं के आधार पर विकसित होने और योगदान करने का अवसर प्रदान करते हैं।

प्राचीन भारतीय कर्तव्य एवं अधिकार की दृष्टि से नारी की स्थिति जटिल और बहुआयामी थी। कुछ ग्रंथों में उन्हें सम्मान और महत्व दिया गया था, जब कि अन्य में उनकी भूमिकाएँ सीमित थीं। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में,

महिलाओं के अधिकारों की अवधारणा ने एक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा है, जिसमें लैंगिक समानता, भेदभाव का उन्मूलन और महिलाओं की पूर्ण भागीदारी पर जोर दिया गया है। अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय कानूनी ढाँचे नारी को व्यापक अधिकार और सुरक्षा प्रदान करते हैं। यद्यपि प्राचीन आचार–विचार हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक हिस्सा हैं, परन्तु आधुनिक समाज में नारी के अधिकारों को पूरी तरह से मान्यता देना और उनकी रक्षा करना आवश्यक है ताकि एक न्यायपूर्ण और समान समाज का निर्माण किया जा सके।

टिप्पणियाँ

1. गैरोला, वाचस्पति, पृष्ठ संख्या – 398– 399।
2. ऋग्वेद– 10/17/07।
3. अर्थवेद, 11.5.18।
4. प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, पृष्ठ संख्या – 88।
5. तदेव, पृष्ठ संख्या – 88–89।
6. तदेव पृष्ठ संख्या – 90।
7. बृहदारण्यक उपनिषद, 2.4.1–14।
8. अर्थवेद, 11.8.18।
9. अर्थवेद 9.5.27–28

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – वाचस्पति गैरोला, पृष्ठ संख्या – 398–399।
2. 'धर्मशास्त्र का इतिहास, द्वितीय खण्ड, अध्याय सात – उपनयन – अध्ययन का अधिकार।
3. (क) हिन्दू सभ्यता (डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी) अनु. डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, अध्याय 4,5 व 6 दृष्टव्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. वाल्मीकीय रामायण – डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, अध्याय–3, परिच्छेद–3, कांडी, 1955।
5. मध्यकालीन कन्या युगान्तर विन्दते परिधि – अर्थवेद, 11/5/18।
6. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – आचार्य बलदेव उपाध्याय, त्रयोदश परिच्छेद, पृष्ठ संख्या – 420–421।
7. तदेव पृष्ठ संख्या – 421–422।
8. प्राचीन भारतीय सामाजिक एवं आर्थिक संस्थायें – डॉ. कैलाश चन्द्र जैन, अध्याय 12, पृष्ठ संख्या – 182।
9. प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, पृष्ठ संख्या – 88।
10. तदेव, पृष्ठ संख्या – 88।
11. समाज, दर्शन और राजनीति, पृष्ठ संख्या – 94।
12. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, पृष्ठ संख्या – 398।
13. प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, पृष्ठ संख्या – 88–89।
14. तदेव, पृष्ठ संख्या – 90।
15. समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में औद्योगीकरण एवं श्रमिक परिवार, पृष्ठ संख्या –119 एवं 121।
16. In Search of Answers : Indian Women's Voices from Manushi – वनिता, टण्डन, 1989।
17. तदेव, पृष्ठ संख्या – 298–99।
18. मानुषी अंक 87, मार्च–अप्रैल, 1995, पृष्ठ संख्या – 6–16।
19. बृहदारण्यक उपनिषद्, 1/4/1–2।
20. शतपथ ब्राह्मण – 5/2/1/10।
21. समाजदर्शन और राजनीति, पृष्ठ संख्या – 96–97।
22. तदेव, पृष्ठ संख्या – 99।
23. तदेव, पृष्ठ संख्या – 97।
24. स्त्री अस्मिता, पृष्ठ संख्या – 381–82।
25. तदेव, पृष्ठ संख्या – 387।
26. जैन, शशि एवं सुधा भटनागर : (1997) का अध्ययन।
27. विश्व स्वास्थ्य संगठन के आँकड़े।
28. संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जारी यूनिसेफ (1999) की रिपोर्ट।
29. प्रभा खेतान, उपेक्षित स्त्री।
30. मृणाल पाण्डे, परिधि पर स्त्री।
31. नासिरा शर्मा, औरत के लिए औरत।
32. राजकिशोर, औरत के लिए जगत।
33. राजेन्द्र यादव, हंस के नारीवादी विशेषांक।
34. क्षमा शर्मा, स्त्री का समय।
35. मृदुला गर्ग, चुकते नहीं सवाल।
36. अनामिका, स्त्री का मानचित्र।
37. जैन, अरविन्द स्त्री होने की सजा।
38. माहेश्वरी, सरला, समान नागरिक संहिता।

ISSN : 2349-9273

शोध पत्र लेखकों को निर्देश

'दि गुंजन' (मल्टी डिसिप्लिनरी क्वार्टरली इण्टरेनशल रेफ्रीड/पियररिव्यूड रिसर्च जर्नल) है, जिसमें सभी उपविषयों के मौलिक शोध पत्र, शोध समीक्षा, विचार एवं लेखों आदि का प्रकाशन किया जाता है। शोधकर्ता हिन्दी, अंग्रेजी अथवा संस्कृत भाषा में अपने शोध पत्र भेज सकते हैं। शोध पत्र भेजते समय कृपया निम्न बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दें–

◈लेखक अपना शोध पत्र **सर्वेश तिवारी 'राजन'** प्रबन्ध सम्पादक– 'दि गुंजन', के–444 'शिवराम कृपा' विश्व बैंक बर्रा, कानपुर–208027 (उ.प्र.) को अथवा **super.prakashan@gmail.com** पर प्रेषित करें।

◈प्राप्त शोध पत्र जर्नल में प्रकाशन के पूर्व पुनर्निरीक्षित किये जायेंगे। स्वीकृत शोध पत्र कहीं और प्रकाशित नहीं होना चाहिए और न ही उस शोध पत्र का कोई भी भाग सम्पादक की अनुमति के बिना कहीं और प्रकाशित किया जा सकता है।

◈अपने शोध–पत्र की पाण्डुलिपि निम्न भागों में तैयार करें– शीर्षक, सारांश, पाण्डुलिपि, निष्कर्ष एवं पुस्तक सन्दर्भ सूची। कृपया पुनर्निरीक्षण की गुणवत्ता में सहायता करने हेतु शोधालेख पर विशेष ध्यान दें।

◈**शीर्षक** : शीर्षक पाण्डुलिपि पर अवश्य दें, किन्तु अपना पूरा नाम, पद, विषय, संस्था, पता जहाँ पर निवास एवं अध्यापन कार्य सम्पादित किया गया हो, आपका दूरभाष, मोबाइल, फैक्स, ई–मेल पत्राचार की सुविधा हेतु अलग पृष्ठ पर अवश्य दें।

◈**सारांश** – सारांश कृपया शोध–पत्र का सारांश अधिकतम 200 शब्दों में दें।

◈**पाण्डुलिपि**– इसके अर्न्तगत मुख्य पाठ्य सामग्री होगी जो 5 से 8 पृष्ठों तक होनी चाहिए। शोध पत्र में 7–8 पृष्ठ का (सारांश, शब्द संक्षेप, निष्कर्ष एवं सन्दर्भ सूची सहित) से अधिक नहीं होना चाहिए, अन्यथा प्रकाशन हेतु स्वीकार नहीं किया जायेगा। लेखक को यह बात स्वीकार होनी चाहिए कि पुनर्निरीक्षण के दौरान किये गये संशोधन उन्हें मान्य होंगे। आलेख प्रकाशन के दौरान त्रुटि की सम्भावना न बने, इसका पूरा ख्याल रखा जाता है, फिर भी त्रृटि पाये जाने पर लेखक संशोधित री–प्रिन्ट प्राप्त कर सकता है।

◈**पुस्तक** – प्रकाशक का नाम, संस्करण, संख्या, प्रकाशन वर्ष, लेखक का नाम, पृष्ठ संख्या दें।

◈**पत्रिका** – पत्रिका का नाम, लेख का शीर्षक, लेखक एवं प्रकाशक का नाम, अंक, संख्या, माह, वार्षिक, अर्द्धवार्षिक, त्रैमासिक व मासिक जो भी हो स्पष्ट करें।

◈**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची** – कृपया शोध पत्र में कम से कम 8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची अवश्य दें।

◈**समाचार पत्र**– समाचार पत्र के प्रकाशक, प्रकाशन तिथि, वर्ष व पृष्ठ संख्या का उल्लेख करें।

◈**इण्टरनेट** – वेबसाइट, पृष्ठ संख्या, मुख्य शीर्षक, अन्तःषीर्षक का उल्लेख करें।

◈**मानचित्र एवं सारणी**– मानचित्र एवं सारणी अथवा चित्र शोध पत्र की समाप्ति के अन्त में दें। यह ब्लैक एण्ड व्हाइट ही होना चाहिए। इसका स्पष्ट संकेत पाण्डुलिपि में अवश्य दें (उदाहरण, सारणी संख्या आदि)।

◈**विशेष**– कृपया अपना शोध पत्र ई–मेल करने के बाद फोन अथवा मोबाइल से अवश्य सूचित करें। शोध पत्र के साथ फोटो, ई–मेल एड्रेस तथा हार्डकापी के रूप में स्पीड पोस्ट द्वारा लिफाफे में भेजें। शोध पत्र हिन्दी, संस्कृत (कृतिदेव हिन्दी फान्ट 14) एवं अंग्रेजी (टाइम्स 12) में तैयार कर मेल करें। शोध पत्र प्राप्त होने के तुरन्त बाद, उसी दिन लेखक की मेल पर स्वीकृति, कवर, इंडेक्स व पेपर प्रेषित कर दिया जायेगा। **super. prakashan@gmail.com** से प्राप्त शोध पत्र हेतु ई–मेल/वाट्सटप से स्वीकृति भेजी जायेगी। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व प्रबन्ध सम्पादक से मोबाइल/दूरभाष पर सम्पर्क अवश्य कर लें। रिसर्च जर्नल में लेख सम्मिलित करने का सम्पादक मण्डल अथवा सलाहकार समिति का निर्णय ही अन्तिम व सभी को मान्य होगा।

◈**सुझाव** – लेखकों एवं पाठकों को यह अंक कैसा लगा, इस सम्बन्ध में अपने–अपने विचार अवश्य लिखें। इससे मुझे अपनी त्रुटियों को जानने और भावी योजना बनाने में सहायता मिलेगी।

◈**विनम्र निवेदन**– सभी सम्मानित सदस्यों से निवेदन है कि अपने माध्यम से संस्था में अधिकत सदस्यों को पत्रिका परिवार से जोड़कर संस्था का सहयोग करें।

दि गुंजन

The Gunjan

मल्टी डिसिप्लिनरी क्वार्टरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड / पियर रिव्यूड रिसर्च जर्नल

Multi Disciplinary Quarterly International Refered/Peer Reviewed Research Journal

ISSN - 2349-9273

E-mail : super.prakashan@gmail.com Web Site: www.thegunjan.com

कार्यालय : सेक्टर 'के'-444 'शिवरामकृपा' विश्व बैंक बर्रा-कानपुर-208027

सदस्यता फार्म

श्रीमान् सम्पादक महोदय,

'दि गुंजन'

(मल्टी डिसिप्लिनरी क्वार्टरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड/पियर रिव्यूड रिसर्च जर्नल)

सेक्टर 'के'-444 'शिवरामकृपा' विश्व बैंक बर्रा-कानपुर-208027 (उ. प्र.) भारत

महोदय / महोदया,

निवेदन है कि मैं / हमारा महाविद्यालय आपके **'सुपर प्रकाशन'** द्वारा प्रकाशित **'दि गुंजन' (मल्टी डिसिप्लिनरी क्वार्टरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड/ पियर रिव्यूड रिसर्च जर्नल)** परिवार का ..... वर्षीय / आजीवन★ / व्यक्तिगत / संस्थागत★ सदस्य बनना चाहता हूँ / चाहती हूँ। मैं / हमारी संस्था **'सुपर प्रकाशन'** विश्व बैंक बर्रा, कानपुर-27 के नाम सदस्यता शुल्क ..... रुपये नकद / मनीआर्डर / चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट खता क्रमांक (**सुपर प्रकाशन - 52570200000355) IFS Code No. BARB0BUPGBX, बड़ौदा उत्तर प्रदेश ग्रामीण बैंक, शाखा-विश्व बैंक बर्रा (कर्रही) कानपुर-27** के नाम से दे रहा हूँ। (zero)

नाम (श्री/श्रीमती/डॉ.) :.....

पद का नाम (जहाँ वर्तमान में कार्यरत हैं) :.....

संस्था / निवास का नाम :.....

पत्र व्यवहार का पूरा पता (पिनकोड सहित) :.....

:.....

फोन / मोबाइल नं. :.....

स्थान व दिनांक :.....

: हस्ताक्षर

प्रबन्ध सम्पादक :

सर्वेश तिवारी 'राजन'

मोबा. : 08896244776

सम्पादक :

डॉ. सीमा मिश्रा

मोबा. : 09044808861